OSHO

Never Born

Never Died

Only Visited this

Planet Earth between

Dec 11 1931 - Jan 19 1990

स्वप्नदर्शी गुलाब के आँसू

रजनीश

ओशो दर्शन द्वारा रजनीश

रहस्यदर्शी गुलाब के आँसू

मेरी आँखों के सामने एक अपूर्व विराट दृश्य
बर्फ से लिपटी कंचनजंगा की अद्‌भुत
विशाल पहाड़ियाँ

हर बार जब मैं इस विशाल दृश्य को देखता हूँ
पूर्ण सुन्दरता के क्षितिज को अपने सामने पाता हूँ

मुझे दृश्य दिखायी देते हैं आने वाले अद्‌भुत जीवन के
सपने जो मैं पूरा कर सकता हूँ... मैं स्वप्न जैसे
रहस्यात्मक आश्चर्य से भरा हूँ

मेरी आँखें खुली है... मैं स्वप्नदर्शी हूँ
सिर्फ प्रतीक्षा कर रहा हूँ... दुनिया में प्रवेश करने का

मैंने अपने जीवन की सारी प्रेरणा इन पर्वतों से ली है
उगता सूरज सुनहरी आकाश की रचना करता हुआ
डूबता सूरज इन पर्वतमालाओं पर जामुनी और लाल रंग बिखेरता हुआ
मेरे बचपन के अगले दस साल हिमालय की गोद में
क्या स्वर्ग सी जगह... मेरी शिक्षा के लिए
घर से दूर सेंट पॉल स्कूल दार्जलिंग

मेरे पिता एक कामयाब व्यापारिक परिवार के प्रसिध्द उद्योगपति
मेरी माँ एक फिल्म अभिनेत्री जिनकी पहली बॉलीवुड फिल्म ने निकलते ही
उन्हे तुरन्त भारत में एक प्रसिध्द सितारा बना दिया

वाह... कितना भाग्यशाली जन्म...कितना भाग्य... इस परिपूर्ण बचपन के लिए
इस सम्पूर्ण जीवन के लिए... सचमुच मैं एक भाग्यशाली बालक

बचपन से ही मुझे अपने पिता और उनके घमंड से तीव्र नफरत थी
उनका झूठा अधिकार दिखाना... उनकी पूरी रूचि पैसे, सत्ता और दूसरों को
वश में करने में थी... उनके इन गुणों की वजह से मैं उनके प्रति हमेशा बागी
रहा और मैंने उनके मेरे नजदीक आने के सभी प्रयासों को अस्वीकृत किया
मुझे उनका अपने जैसा बनाने का प्रयास नापसंद था और स्कूल में उन्ही छात्रों
से दोस्ती करना जिनके माता पिता की समाज में प्रतिष्ठा उन्होनें जाँची हो
मुझे इन मामले में वे बहुत ओछे लगे और मैं हमेशा उनसे एक दूरी बनाये
रखना चाहता था

मुझे अपनी माँ से स्नेह था और मैं उनकी नाजुकता और मासूमयित के
प्रति आकर्षित था वह सुन्दर और नम्र थी और दूसरे की भावनाओं और
संवेदनशीलता के बारे में ध्यान रखती थी... एक बड़ी अभिनेत्री होने के बावजूद
भी उन्होनें अपना ध्यान रोजमर्रा के आम कामों से नहीं हटाया
जैसे रसोई मे हमारे लिए और अतिथियों के लिए भोजन बनाना और खुद ही
भोजन परोसने का आग्रह करना... हर कोई जो उन्है मिलता था
वे उनके प्रति आनंदमय और करूणामय थी और उन्होनें लोगों के प्रति अपने
रिश्ते नातो में पैसों को कभी खास महत्व नहीं दिया ... मैंने उनके जीने के इन
साधारण गुणों से प्रेम किया और इन गुणों का मैंने आदर किया
वे मेरी प्रेरणा बनी और मेरी कामना थी कि बड़ा होने पर उनके जैसा बनूँ

मेरे पिता चाहते थे मैं सिर्फ बहुत बड़ा उद्योगपति बनूँ और जबकि मेरी माँ अन्दर
से मुझे अपनी तरह एक फिल्म सितारा बनाना चाहती थी... पर वह मेरी खुशी
चाहती थी और उन्होंने हमेशा मुझे अपनी उड़ान उड़ने को कहा
चुपके से मुझे हमेशा कहा अपने पिता की तरह व्यापारी मत बनना

मेरे माता पिता से मुझे रजनिश नाम मिला
राज का अर्थ राजा और निश का अर्थ रात्रि
जिस का तात्पर्य रात्रि का भगवान
अथवा पूर्णिमा का स्वामी

मेरे पिता शिवराज थे और मेरी माँ विमलेश
जो कि विमी के नाम से भी जानी जाती है
मेरे पिता ने अपने दोनों के नाम से शब्द ले कर मेरा नाम बनाया

मेरा जन्म २० जनवरी १९६१ को सुबह के ३.०५ बजे हुआ
मेरी एक बहन शोना है जो १९ जनवरी १९६३ को शाम के ४.३० बजे पैदा हुई

मेरे माता पिता चाहते थे कि हम दोनों का एक जन्मदिन हो
पर डाक्टरों से गलती हो गयी अगर मेरी बहन सिर्फ ८ घन्टे बाद पैदा होती
तब दोनों का एक जन्मदिन होता
इससे हमारे लिए एक बड़ी समस्या पैदा हुई
हम हमेशा लड़ते थे कि किस दिन जन्मदिन मनायें क्यों कि बहुत सारे रिश्तेदार
दो दिन लगातर नहीं आ सकते थे और दो केक
उन्होनें निर्णय किया कि हम दोनों अपना जन्मदिन हर साल
एक बड़ा केक दोनों तरफ से काट कर १९ जनवरी को मनायें

मेरा समय से पहले ही साढ़े सात महीने में जन्म हुआ और वह भी कुछ
कठिनाई में मुझे उष्मायंत्र में रखा गया क्यों कि मेरा वजन २.७ किलो था
पूरा जीवन मेरा शरीर पतला और नाज़ुक रहा और निस्तेज
इसकी वजह से मेरे माता पिता निरन्तर मुझे डॉक्टरों के पास ले जाते रहे
मेरे कम वजन और नाजुक शारीरिक दशा की वजह से और जल्द ही जो मेरे
साथ होने वाला था मुझे बचपन से ही बहुत अलौकिक अनुभव होने लगे

इनमें से कुछ अनुभव जो मुझे लम्बी दौड़ भागते हुए
कुँगफू का अभ्यास करते हुए... और व्यायाम करते समय हुए याद आते है

मुझे भागना और व्यायाम करना पसंद था
अत्यधिक सजगता के अनुभव मुझे बहुत ऊर्जा देते थे मुझे शारीरिक क्रियाएँ
अच्छी लगती थी मेरे स्कूल के डॉक्टर को मेरे माता पिता ने मेरी शरीरिक
कमजोरी के बारे मे सावधान किया था... जिससे उन्है आश्चर्य हुआ पर उन्होंने
मुझ पर कड़ी निगरानी रखी
उन्होंने देखा कि जिन खेलों में पूरा दम लगाना होता है उन में मैं कई बार
बेहोश हो जाता हूँ और मुझे मिरगी की तरह झटकें आते है

ऐसे ही एक १०० मीटर की तेज़ दौड़ में मैं प्रथम आया... हाँफती हुई सांसें
लेता हुआ और दौड़ पूरा करता हुआ... भागते भागते मुझे मिरगी के झटके
आने लगे और मैं घास पर गिर गया... मेरे स्कूल के डॉक्टर दौड़ का अन्त
देख रहे थे... वह आये और उन्होंने मुझे गिरा हुआ निस्तेज पाया और वह मुझे
आगे से तेज दौड़ भागने से रोकना चाहते थे
किसी तरह से मैं उन्हे यह समझाने में सफल हुआ कि मेरी साँस फूल गयी थी
और खतरे की कोई बात नहीं है और पहले की तरह मुझे स्कूल की टीम की
तरफ से दौड़ने की अनुमति है... वह हिचकिचा रहे थे पर वह चुप रहे

मैं चौदह साल का हूँ
यह लम्बी दौड़ का मौसम है... दार्जलिंग में तीन मील की दौड़
मैं तेज भागने का कड़ा अभ्यास कर रहा हूँ
अपनी तरफ से मुझे प्रथम ही आना है
क्योंकि मेरी माँ इस साल के इनाम समारोह में आ रही है

हर बार वही रास्ता... यहाँ से दो मील की दूरी ओर है
लम्बी दौड़ का सबसे बुरा हिस्सा... ६० के कोण पर ऊँची चढ़ाई

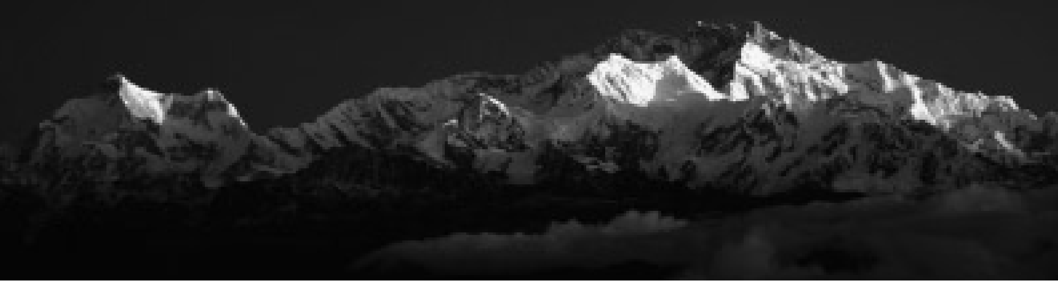

खड़ा दुर्गम रास्ता लगभग २०० मीटर लम्बा... हमें इस हिस्से से सबसे ज्यादा नफरत थी... यह दौड़ का सबसे ज्यादा थकाने वाला हिस्सा था

मैंने निश्चय किया कि मैं अपनी पूरी ताकत से इस जगह तक भागूंगा और इस जगह से आगे का एक मील का रास्ता पहाड़ी की ढलान का है जो कि आसान है

पहाड़ी के ऊपर मैं हमेशा तिब्बतियन गोम्पा को देखता हूँ
हमेशा विश्राम के लिए यहाँ कुछ क्षण रूकता हूँ

मैंने अपनी पूरी जान लगा दी है और मैं आज अपना समय नाप रहा हूँ
पहाड़ी के तल पर पहुॅचता हूँ... पूरा थका हुआ
बिना आराम किये... मुझे पहाड़ी पर शीघ्र ही चढ़ना है तब आराम करना है
मेरे टाँगे आज सचमुच भारी है... मोच आ रही है

ऊपर की तरफ भागते हुए मैं पहाड़ी के शिखर पर पहुँचता हूँ
टाँगो में मोच आ चुकी है
आज मैं बेहद थका हुआ हूँ
मैं गिर जाता हूँ

मैं गोम्पा की घंटियों की आवाज सुनता हूँ
मुझे महसूस होता है एक जबरदस्त ऊर्जा मुझे
घंटियो की ध्वनि की ओर खींच रही है
मैं अपने शरीर को उठाने की कोशिश करता हूँ
पर उठा नहीं पाता वह एक चट्टान के समान भारी है
आज यह क्या हुआ है

अचानक मुझे लगता है मेरे शरीर से एक बड़ा प्रकाश का गोला
उड़ता हुआ गोम्पा की तरफ जा रहा है
धरती पर पड़े हुए ही मैं गोमपा को साफ साफ देख रहा हूँ
उसका सुनहरी पगोडा कितने जबरदस्त प्रकाश से चमक रहा है

पूरा वातावरण दीप्तिमान है
चमकीले नीले रंग में नृत्य करता हुआ और धीमे से जलता हुआ
तिब्बतियन लामा गोम्पा के चारों ओर बैठे हैं और चल रहे हैं
मैं यह विश्वास नहीं कर सकता
क्या मैं खड़ा हूँ या धरती पर अचेत हूँ
इतना दूर का दृश्य मैं कैसे देख सकता हूँ
इस अजीब और नशे वाली हालत में मुझे कुछ समझ नहीं आता

मैं देख सकता हूँ आस पास दौड़ रहे लोगों को
मैं देख सकता हूँ कुछ दूरी पर लोगों को... मुझे अपनी लम्बी दौड़ जारी रखनी होगी
एक जादू के समान मैं एक पंख की तरह खड़ा हो जाता हूँ
इतना तरोताजा और प्राणों से भरा हुआ जैसे अभी अभी मैंने अपनी दौड़ शुरू की हो

मुझे लगता है मेरी टाँगे धरती से उपर उड़ रही है
धरती को तो वह छू ही नहीं रही
यह कैसे हो रहा है

मैं आखिरी मील तेजी से दौड़ पाता हूँ... मुझे लगता है मैं बहुत शक्तिशाली हूँ
मैं ३ मील की लम्बी दौड़ पूरी करता हूँ और मैं ३ मील फिर से दौड़ना चाहता हूँ
लम्बी दौड़ बस मेरे लिए बहुत छोटी थी
मैं स्कूल की तरफ दौड़ना शुरू करता हूँ मतलब १.५ मील और भागना है
मेरे मित्रों को धक्का लगता है... वह सब सोचते है मैंने धोखा किया
छोटा रास्ता पकड़ा या बीच में कार से रास्ता तय किया

मैं इस बारे में अपने मित्रों से या डॉक्टर से बात नहीं करना चाहता
पहले ही डॉक्टर ने मुझे दौड़ने से मना किया था

मुझे अपने स्कूल का एक बहुत करीबी मित्र माजूमदार याद आ रहा है
वह गणित में अति प्रतिभाशाली था... वह मेरे इतने करीब था कि मैं उसे अपने असाधारण अनुभव बता पाता... वह मुझे हमेशा सुनता और मुझे किसी वजह से लगता कि वह मेरी बातें समझता है
एक सुबह वह भाग गया... पूरा विद्यालय उसकी तलाश में जुट गया
वह कही नहीं मिला... पुलिस को उसकी तलाश में भेजा गया
कुछ दिन लगे... तब उन्हे पता चला वह एक तिब्बतियन आश्रम में भाग गया है
और असलियत में उसने लामा बनने की इच्छा जाहिर की है
आखिर में उसे स्कूल में वापस लाया गया और उसके माता पिता को बुलाया गया
उसके अखंड संकल्प की वजह से उन्होने उसे लामा बनने दिया
यह घटना मुझे आगे कई सालों तक याद रही और मैंने उसका बहुत सम्मान किया और मैंने चाहा कि मुझ में भी लामा बनने का ऐसा साहस हो

पर्वतरोही अभियान टोंगालू शिविर
डयूक ऑफ एडिनबर्ग पुरस्कार योजना के लिए

मैं पैदल चल रहा हूँ टोंगालू के लिए
आखिरी चार घंटे अति घने जंगल से
पहले बारिश हो रही थी और अब कोहरा छाने लगा है
मैं स्कूल के सामूहिक शिविर के रास्ते से भटक चुका हूँ
वह सब मुझसे बहुत आगे निकल गये हैं

थका हुआ मैं काई से ढ़की चट्टान पर बैठ जाता हूँ
अचानक मुझे ख्याल आता है कि मैं बिल्कुल अकेला हूँ
और इस गहरे जंगल में खो चुका हूँ

हवा धीरे धीरे शान्त हो रही है
और मेरे कानों में हजारों भवरों की तरह गूँज रही है

मैं भयभीत हूँ और भाग जाना चाहता हूँ
लेकिन अचल हूँ
क्या यह डर है या मेरा शरीर इतना भारी हो चुका है कि मैं हिल नहीं सकता

पूरा जंगल गूँज रहा है और जीवित हो रहा है
पेड़ हरे हो रहे हैं और दमक रहे हैं

वह सजीव लग रहे हैं
और मेरी तरफ पानी की तरह बह रहे हैं
मुझे अनुभव हो रहा है कि वह मुझे दूर से स्पर्श कर रहे हैं
और मुझे अपनी तरफ खींच रहे हैं

मेरे कानों में गुंजन असहाय होता जा रहा है
लगभग मेरे कान के परदे फट जाने को है
फिर अचानक से मुझ पर शान्ति का अवतरण होता है
और ना जाने कहाँ से एक विशाल काला आकाश
एक बादल की तरह मेरे उपर मंडराता है
काला ही काला और मखमल की तरह मुलायम
वह मुझे पूरी तरह से ढक लेता है

मैं एक अंधेरे अचेत अन्तराल में गिरता हूँ
मैं वहाँ से हटना चाहता हूँ और संघर्ष करता हूँ पर मैं पूरी तरह से गतिहीन हूँ
अपने अंगो और शरीर पर मेरा कोई काबू नहीं है
वह सीसे की तरह भारी है और मैं बेहोश हो जाता हूँ

घंटो बाद मैं जागता हूँ
मुझे पता नहीं कितना समय बीत चुका है... अंधेरा हो रहा है
जंगल कि गूँज और भी ज्यादा तेज... पर कोमल हो गयी है
मेरा मुंह मीठा हो गया है
और मैं उस गूँज की ध्वनि से मस्त हो गया हूँ

मैं सहजता से खड़ा हो जाता हूँ... ऐसा लग रहा है मैं हवा में तैर रहा हूँ
किसी ने मुझे उठा लिया है और मैं चल रहा हूँ जैसे कि उड़ान भर रहा हूँ
पूर्णत: बहता ही जा रहा हूँ और हल्का हूँ

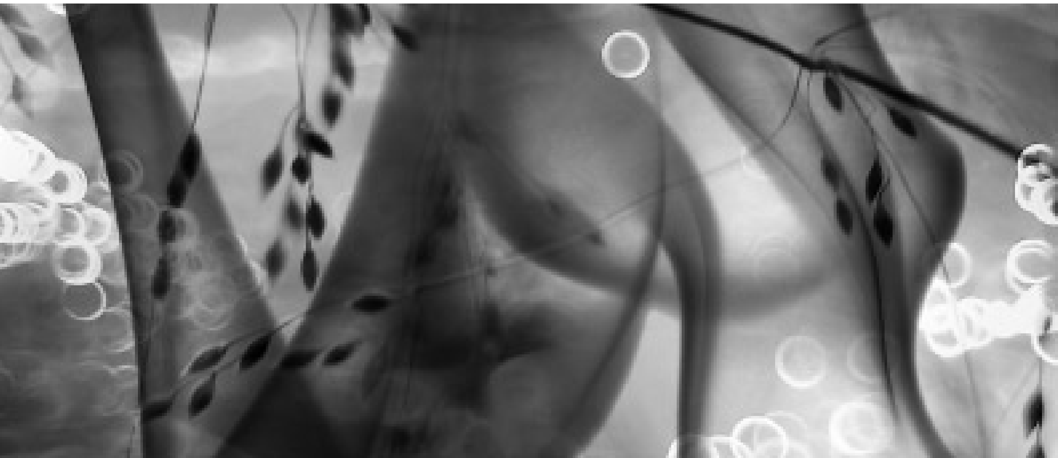

मेरे तीन महीनों की सर्दियों की छुटटियाँ... बम्बई में
मेरे माता पिता मेरे कमजोर शरीर और मेरे खानपान की अरूचि को लेकर
अभी भी चिंतित है... मुझे दिन में खाने से नफरत हैं... और मेरी दिन में सिर्फ
एक बार खाने की आदत है और वह भी शाम को
मैं हर सुबह प्याले में या फिर एक बड़ी सुराही में से २० कप पानीदार चाय पीता
बहुत हल्की चाय... बिना दूध के... यह स्वीकृत था क्यों कि मैं दार्जलिंग में पला
बड़ा और चाय हमारा मनपंसद पेय था
मैं कभी नाश्ता या दोपहर का भोजन नहीं करता
मेरे पिता मुझे हमेशा हर एक रोटी खाने के लिए दस रूपये की रिश्वत देते
कटोरी में हमेशा खाने की मेरी अजीब आदत थी
और अगर थाली में परोसा जाता तो मैं उसे फेंक देता या तोड़ देता
और एक कटोरा खाने के बाद मैं और ना खाने की जिद पकड़ लेता
मैं बहुत जिध्दी था और यही एक तरीका था
जिस से वे मुझे खिला पाते चाहे दिन में एक बार ही
हाँलाकि मैं कभी बीमार नहीं पड़ा
मेरा स्वास्थ लगातार मेरे माता पिता के लिए चिन्ता का विषय रहा
असाधारण अनुभव जो मेरे साथ होते उनका कारण वह मेरे कम खाने से जोड़ते

मुझे स्पष्ट याद है समुद्र तट पर एक रविवार बिताना
रेत के महल बनाना और उनको तोड़ कर उनसे बड़े महल बनाना
चाट की दुकान पर खाना और घोड़े की सवारी करना

सूर्यास्त हो रहा है
मेरा शरीर थका हुआ है और मैं घर जाकर सोना चाहता हूँ
पर मेरे मित्र आग्रह करते है कि हम अन्धेरा होने तक यही रहें

मैं थका हूँ और रेत पर लेट जाता हूँ
डूब रहे सूरज और बदलती हवा को महसूस कर सकता हूँ
डूबते सूरज से मेरी नाभी में एक अजीब भारी कम्पन हो रहा है

दिन भर की समुद्री लहरों की ध्वनि मेरे अन्दर की गहराई में उतरती जा रही है
मैं घर जाना चाहता हूँ और दोबारा से कुछ अजीब सा भय मुझे जकड़ लेता है
मुझे लगता है मैं सागर की गहराइयों में डूब रहा हूँ... लहरों के अन्दर

मैं तैर नहीं पाता... मैं रो रहा हूँ
तब आखिरकार वह निर्णय करते हैं कि हमें घर चलना चाहिए

घर में अपने कमरे में थका हुआ और निद्रालु
अन्धेरा है... लहरों की ध्वनि से मेरे कान भरते जा रहे हैं
गहरा ही गहरा होता जा रहा है
डूबने का भय मुझे जगाए रखता है

अचानक कमरा और भी गहरा प्रतीत होता है
और मुझे कुछ भी दिखाई नहीं देता
मुझे लगता है यह अन्धेरा मुझे निगल रहा है
मैं महसूस कर रहा हूँ कि मैं गिर रहा हूँ गिर रहा हूँ गिर रहा हूँ गिर रहा हूँ
अन्तहीन गिरता ही जा रहा हूँ और शीघ्र ही मुझे कुछ पकड़ना होगा

भय से मैं पसीने पसीने हो गया हूँ
कुछ भी कर पाने में असमर्थ हूँ और यह गिरना ठहर नहीं रहा है
मुझे इस अवस्था से अभ्यस्त होना होगा

मुझे बस उस नीले प्रकाश को देखना है जो कि मैं सुरंग के अन्त में देख सकता हूँ
कम से कम मैं इसे देख सकता हूँ और इसका सहारा ले सकता हूँ

कितनी ज्यादा घबराहट... पर पूर्णत: असहाय
मैं बस इतना कर सकता हूँ कि जो घट रहा है उसे घटने दूँ
या अपने आप को बेहोश हो जाने दूँ और सो जाऊँ

अचानक सब पूर्णत: शान्त हो जाता है पर मैं पूरा जागृत हूँ
मैंने कभी इससे पहले इतनी सौम्य और सजीव शान्ति अनुभव नहीं की
यह आरामदायक है और यह नीला प्रकाश बड़ा और चमकीला होता जा रहा है

मैं छत की तरह देखता हूँ
वह प्रकाश से पूर्ण है
चाँदी और नीले रंग की बिंदियाँ
करोड़ों चाँदी और नीले रंग की बिंदियाँ नाचती हुई हवा को भर रही है

पूरा कमरा कम्पित हो रहा है और दीवारें हिल रही है
मुझे कमरे को छोड़कर जाना होगा
मेरा दम घुट रहा है और मैं साँस नहीं ले पा रहा हूँ

मैं उठ जाता हूँ और अपने आप को बिल्कुल स्वतंत्र महसूस करता हूँ
पंखों के साथ हल्का... बिल्कुल हल्का
बहता हुआ
गुरूत्वाकर्षण ने मुझे बिल्कुल छोड़ दिया है

मैं घर के बाहर दौड़ता हूँ
मेरे भागने की आहट से मेरे माता पिता जाग जाते है
मैं अपने बगीचे में एक विशाल वृक्ष की तरफ भाग रहा हूँ
वह वृक्ष मुझे ऐसी शक्ति से खींच रहा है जिसे मैंने कभी महसूस नहीं किया

मुझे उस वृक्ष के करीब जाना है
मुझ पर एक बड़ी शान्ति और गहरा आराम उतर रहा है

सुबह के २ बज चुके होंगे
मेरे माता पिता चाहते है मैं अपने बिस्तर पर वापस जाऊँ
उन्हें वृक्षों के आस पास साँप होने की चिंता है
मैं विरोध करता हूँ और चिल्लाता हूँ और उनसे लडता हूँ
कि मुझे इस वृक्ष के नीचे सोना है... मैं आज रात को घर के भीतर नहीं जाऊँगा

उन्होंने नौकर को सुबह ६ बजे तक मेरे साथ रहने को कहा
और मुझे अगले दिन डॉक्टर के पास इंजेक्शन के लिए ले जाने की धमकी दी

मेरा बचपन इसी तरह के बार बार होने वाले अनुभवों में बीता
मेरे भीतर कुछ कहता था कि यह सब ठीक है
पर इसने मेरे अन्दर एक अजीब भय डाल दिया
अपने अनुभवों के बारे में अपने मित्रों से बात करने पर जल्द ही मुझे
समझ आया कि शायद मेरे बारे में कुछ बातें असाधारण है
और मैं जल्द ही अकेला और एकान्त में रहने लगा
मैदान में काफी देर तक टहलना
इन बातों को दूसरों से छुपाना... चुपचाप और एकान्त में रहना

हमारी गुप्त कुँगफू सभा
बहुत आकर्षण था... कुँगफू का अभ्यास निषेध था
लड़के लड़के ही होते है... सही में हमारी जो जरूरत थी
कुँगफू ब्रुस ली ने हमारी कल्पना को सुलगाया
हमारी गुप्त बैठक बन्द व्यायामशाला में हुई

मैं अपने पिता की इच्छाओं के विरूध्द व्यायाम कर रहा था
मैं चोट खा सकता था

ऊँचे घोड़े पर कलाबाजी करता हुआ
अपने हाथों के बल समान्तर डन्डे पर चलता हुआ
रोमन छल्लों पर तेजी से घुमता हुआ
धरती पर हाथ के बल पीछे गुलाटी मारने वाला व्यायाम करता हुआ
खतरा और जोखिम मर्द का आहार है... आग के छल्लों के बीच से कूदना
सिर्फ हमारी तरह की जिन्दगी... खतरा और जोखिम पर हँसना

पर कुँगफू निषेध था... यह और भी ज्यादा उकसाने वाला था
हमारी अत्यन्त गोपनीय सभा... खतरे से खेलने वाले बन्धुओं की सभा
फिल्म सितारा का बेटा होने की वजह से मुझे विशेष प्रशिक्षण मिला
समूह में अपना स्थान साबित करने के लिए मैंने कठिन परिश्रम किया
मुझे सबसे श्रेष्ठ होना ही था क्यों कि सबकी आँखें मुझ पर टिकी थी
इसका नतीजा जबरदस्त अभ्यास था और इसने सही काम किया

एक बार घर जाने पर अपने इस्पात कारखाने में
मैंने चुपके से इस्पात से एक डन्डे का जोड़ा बनाया
प्राणघातक और प्रतिबन्धित नानचॅक के लिए
और इस्पात से बनी जंजीर के साथ... चमड़े की सिली हुई आवरण में
यह नानचॅक मेरे मित्रों को सबसे ज्यादा पसन्द था
मेरे बाकी दूसरे मित्रों के पास लकड़ी के साधारण डन्डे थे
सर सर सरसराना... ब्रुस ली की तरह अभ्यास करना
उत्तेजना में नियन्त्रण खोना और मेरी खोपड़ी के निचले पिछले हिस्से से टकराने
की आवाज का आना और प्रहार से मुर्दे की तरह मेरा ठंडा पड़ जाना
मेरे भयभीत मित्रों के दल ने मुझे नींद में तिब्बतियन मन्त्रों का जाप करते हुए पाया
क्या अजीब ध्वनियों और बोली में तुम बोल रहे हो... इस से वह चकरा गये
और मेरे अपरिचित पिछले जन्म के जाप से भयभीत हो गये
मैं एक तिब्बतियन लामा था... सनकी

सेंट पॉल दार्जलिंग में दस साल मेरे लिए परियों की कहानियों की तरह थे
हर गतिविधियों में श्रेष्ठ आना जिन में मैं शामिल होता चाहे वह खेल हो
लम्बी दौड़ हो, तेज दौड़ हो, व्यायाम हो, शतंरज हो, नाटक हो, कला हो
कुल मिलाकर हर चीज में
हमेशा पुरस्कार और योग्यताएं प्राप्त करना
हमेशा प्रसिध्दी के शिखर पर रहना और सफलताओं की लकीर पीछे छोड़ते जाना
मुख्य अध्यापक पुरस्कार के साथ अन्त करना
और अगले साल १९७७ में स्कूल का कप्तान बनना

तब अचानक से मेरे परीक्षा के अन्तिम साल १९७६ में यह पूरा सपना मेरे लिए टूटा
क्यों कि फिल्म पत्रिकाओं और अखबारों में
मेरे माता पिता के अलग होने की खबरें आने लगी
और उनके तलाक के बारे में आवेदन की खबरें
मैं बिल्कुल टूट गया था क्यों कि यह मेरा अन्तिम साल था और मैं बेताब था
घर जाने के लिए और उनके साथ पहली बार एक नयी दुनिया बनाने के लिए
मैं हर साल सर्दियों की तीन माह की छुटिटयों में उन्हें मिला करता था
बहुत मुश्किल से स्कूल से जाने की विशेष आज्ञा मिली
ताकि मैं अपने माता पिता से मिल पाँऊ
मेरी आय.सी.एस.इ. परीक्षा के सिर्फ तीन हफ्ते पहले ही

मैं जानता था मेरे तानाशाही पिता की वजह से मेरी माँ को बहुत परेशानियों का सामना करना पड रहा था... मैंने तुरन्त ही अपनी माँ को बताया कि मैं उनके साथ हूँ और उन्हे समझता हूँ और मैंने उन्हे अपना पूरा समर्थन दिया
मेरे पिता ने मेरी माँ को उनसे अलग होने के लिए दोषी ठहराया और वह मुझसे क्रोधित थे क्योंकि मैं माँ का हमेशा समर्थन करता था
मेरे पिता हमेशा मुझे सम्पति से बेदखल करने की धमकी देते थे
अगर मैंने कभी अपनी माँ के समर्थन में बाकी के घर वालों से कुछ कहा

मेरी माँ एक बहुत गरीब परिवार से आयी थी जहाँ चार बच्चे थे
उनके माता पिता सिर्फ साधारण शिक्षक थे... मेरे नाना नानी 'माताजी और पिताजी' बिल्कुल सच्चे और विनम्र इन्सान थे... वह बहुत खूबसूरत और अखंड इरादों वाले थे और हमेशा ऊँचे आदर्शों वाला साधारण जीवन जीने को कहते थे

मेरे पिता उद्योगिक व्यापारिक परिवार से थे जहाँ सात बच्चे थे
और प्रत्येक अपनी तरह से भारत में प्रसिध्द और धनी है

अपनी माँ के समर्थन में बोलने और बागी होने की वजह से मुझे बदनामी मिली
और मुझे अपने पिता के भाईयों, उनके बच्चों और दादा दादी से अलग किया गया
उनके पास ताकत और पैसा था और उन्हें पसंद नहीं था कि मैं अपने पिता की मान मर्यादा के विरूध्द बोलूँ... खून पानी से गाड़ा होता है... वह सब यह कहते थे
यह कभी सुना नहीं गया था कि एक बालक में साहस और निर्भय हो कि वह

इस रूढ़िवादी उद्योगिक व्यापारिक परिवार में बड़ों के विरूध्द बोले

मेरी माँ के माता पिता चुप रहे और इतने प्रभावशाली लोगों के विरूध्द कुछ भी न कर पाने की अपनी असमर्थता को उन्होंने स्वीकार कर लिया
गरीब होने की वजह से वह हस्तक्षेप करने में अशक्त थे और कहते थे कि यह अच्छा होता अगर अपनी बेटियों की गरीब परिवारों में शादी करवाते और सरल एवम् प्रसन्न जीवन जीते

मैं उदास हालात में स्कूल वापस चला गया और मेरे कुछ अन्तिम परीक्षा पत्र छूट गए और बिना पढ़े आधे मन से मैंने अन्तिम परीक्षा दी

घर वापस आने पर मेरी अपनी पिता से कई बार लड़ाई हुई जो ज्यादा वक्त नशे में रहते थे और हर रात सुन्दर लड़कियाँ जो फिल्म अभिनेत्री बनना चाहती थी उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने की कोशिश में रहते थे
एक ऐसी रात वह बिल्कुल नशे मे धुत थे और उनके दोनों तरफ ऐसी दो फिल्म अभिनेत्रियाँ थी... सुबह दो बजे उन्होनें मुझे चिल्लाते हुए ड्राईवर के साथ जाने को कहा और पास के होटल से उन अभिनेत्रियों के लिए खाना लाने को कहा

मैं सो रहा था और उनकी लगातार शराब पीने की वजह से और उनकी इतनी औरतों के साथ शारीरिक सम्बन्ध की वजह से पहले से ही क्रोधित था
मैंने उन्हे जवाब दिया दिया कि मैं उनका नौकर नहीं हूँ और अगर वे चाहें तो वे खुद जा सकते है या अपनी किसी महिला मित्र को भेज कर भोजन मँगवा सकते है... वह मुझ पर चिल्लाने लगे और बोले कि बड़ों से कैसे व्यवहार करना चाहिए यह मुझे मालूम नहीं है... यह कहते हुए वे मुझे तमाचा मारने लगे इस पर मैंने अपना हाथ उठा दिया और उन्हे इतनी जोर से तमाचा लगाया कि वह सदमे के मारे चकरा गये

यह पहली बार था जब मुझे अपने पिता को सच में तमाचा लगाने का साहस हुआ
उन्होंने मुझे घर छोड़ देने को कहा और कहा कि वह मुझे पीटेंगे
अगर उन्होंने मुझे वहाँ पाया

मैंने उस क्षण ही घर छोड़ देने का वादा किया

वह मुझे बोले कि वह मुझे सबक सिखायेंगे और मुझे कभी एक पैसा नहीं देंगे
और मैं उनसे पैसों के लिए भीख माँगूगा
और जल्दी ही रेंगता हुआ वापिस आँऊगा
मैंने कहा कि मैं गलियों में भूखा दम तोड़ दूँगा और कसम खाता हूँ कि कभी

वापिस नही आँऊगा और ना ही इस जन्म में उन्हें दोबारा देखूंगा
मैंने सुबह होने से पहले ही अपना घर छोड़ दिया और फिर कभी वापिस नहीं गया
मैं सोलह साल का था... सिर्फ अपनी जीन्स और एक टी शर्ट में
सुबह २ बजे बम्बई की गलियों में बिना पैसों के

अब बिल्कुल व्यापारी नहीं बनना... मुझे इस शब्द से नफरत है
अब फिल्म सितारा नहीं बनना... मुझे शोहरत से नफरत है
अमीर बनने की कोई चाह नहीं... मुझे ऐसे लोगों से नफरत है
मैं सिर्फ आजाद रहना चाहता था और घूमना चाहता था

मैं ६ से १६ सालों तक पर्वतों के बीच पला बड़ा
हर साल सिर्फ तीन महीनों के लिए अपने घर आता और चमक दमक वाले
शहर में... आरामदायक महल में रहता
जहाँ सुन्दर लोग रहते और जहाँ हर रात महफिलें सजती

मैं अभी भी हिमालयों की मासूमयित में जी रहा था
अभी भी स्वप्नदर्शी और बागी
जीवन की आगे आने वाली कड़वी सच्चाईयों से पूर्णत: अनभिज्ञ
और बाहर की असली दुनिया से अनजान

मेरे माता पिता अदालत में लड़ रहे थे
मुझे अपनी माँ से उन दिनों मिलने से रोका गया था

मैंने बम्बई छोड़ दिया और अपनी आँटी से मिलने दिल्ली चला गया
सिर्फ यही एक आँटी थी जिनसे मुझे स्नेह था श्रीमती राजेश्वरी पॉल
जिन्हे मैं प्यार से सोनी आँटी कहता था
वे मेरी माता पिता बनी और तब से उन्होंने मेरा ख्याल़ रखा
उन्होंने मुझे अपने दादा दादी से मिलने जालन्धर पंजाब भेज दिया
और उन्होंने इस दुनिया की कड़वी सच्चाईयों के बारे में मुझे समझाने की बहुत
कोशिश की और मुझे परिवार के इस्पात और निर्माण के व्यापार में
लगाने की कोशिश की... यह थोड़ी देर चला क्यों कि मुझे उनकी तरह की
जिन्दगी जीने में कोई आकर्षण नहीं था

नबम्बर १९७७... एक सुबह उठने पर मैं अखबारों में
अपनी माँ की रहस्यमय परिस्थितियों में असमय मुत्यु के बारे में पढ़ता हूँ
उनकी मुत्यु के समय अस्पताल में उनके साथ कोई भी नहीं था
मेरे पिता और उनकी तरफ के परिवार को अदालत के नोटिस की वजह से
मेरी माँ से मिलने की मनाही थी
दुर्भाग्य से मेरे माँ के शरीर को शमशान घाट ले जाते समय
हममें से कोई भी साथ नहीं था... कितनी दर्दनाक कहानी
एक प्रसिध्द फिल्म सितारा के दाँह संस्कार में बहुत ही कम लोग उपस्थित

उनकी अचानक और दर्दनाक मुत्यु का मुझ पर बहुत गहरा आघात हुआ
मुझे याद है मैंने अपने आप से कसम खायी कि मैं उनकी याद में अपने जीवन में कुछ बनूंगा और मैं उन्हे इसी तरह याद करता रहूँगा
मेरे लिए यह समझना जरूरी था कि मैं इस जीवन में कहाँ जा रहा हूँ और मैं क्या कर रहा हूँ और क्यों कर रहा हूँ

उनकी मुत्यु ने मेरे जीवन में कई नए प्रश्नों को उभारा और मैंने प्रश्न उठाने शुरू कर दिए इस जीवन का अर्थ क्या है
और जीवन कैसे जीना चाहिए... और लोगों पर
समाज के संस्कारों पर और समाज की प्राथमिकताओं पर प्रश्न ही प्रश्न
मैं रात रात भर इन प्रश्नों के उत्तर अपने लिए जानने की चेष्टा करता
पूर्णतः अकेला... ना कोई बातचीत करने के लिए
और ना ही कोई मेरा मार्गदर्शन करने के लिए

मैं लड़ा और मैंने अपने परिवार में सबसे बगावत करके अपने आपको
उनके जीवन से और उनके सोचने के ढंग से अलग कर लिया
कोई भी मुझ से कुछ लेना देना नहीं चाहता था क्यों कि मैं बहुत अधिक
स्वाभिमानी हूँ और किसी की बात सुनने या उनकी अच्छी अच्छी सलाहें
लेने के लिए तैयार नहीं हूँ

मैं अब आजाद हूँ अपने ढंग से जीने के लिए
मुझे बड़ी जिम्मेदारी का अहसास हो रहा है जीवन में कुछ दिशा पाने के लिए
पर मुझे कुछ अन्देशा नहीं है कि अब क्या करना है या कहाँ ढूढँना है
मैं खो चुका हूँ पर खुश हूँ कि मैं आजाद हूँ

मुझे दिन में १२ या १ बजे तक सोना प्रिय है... तब जागना और एक घंटा
चाय की चुस्कियाँ भरना... और उसके बाद कुछ नहीं करना... बस सुस्ताना
कुछ काम नहीं... ना ही कुछ करने का सपना
बिल्कुल शुध्द आलस और इस तरह से पूर्ण संतोष में

मेरे घर के बगल में एक सरकारी नर्सरी है जहाँ मैं अपना सारा समय बिताता हूँ
मैं उनसे आग्रह करता हूँ कि क्या मैं उनके पौधों को रोज
कुछ घण्टा पानी दे सकता हूँ
मुझ से माली काफी दोस्ताना हो गये और वह आश्चर्य चकित हुए कि
एक बड़ी अभिनेत्री का पुत्र हर रोज एक माली की तरह उनके साथ होता है
मुझे यह सरल लोग प्रिय है और मैं उनके साथ को पसन्द करता हूँ

जितना भी मुझे पैसा मिलता उससे मैं नर्सरी में पौधे खरीदने शुरू कर देता
और माली मुझे चुपके से काफी कम दामों पर पौधे बेच देते
और कई बार मेरे लिए पौधे चुराते और मुझे भेंट करते
मेरी छत की बालकनी जल्दी ही २०० पौधों से भर गई
मुझे इन पौधों को पानी देना और उनका ख्याल रखना प्रिय है
वह मेरे नये दोस्त है और मैं उनको समझ सकता हूँ और उनसे एकमय हो पाता हूँ

अपनी शिक्षा को खोने की वजह से
मुझे सभी विषयों को पढ़ने और सीखने की प्रेरणा होती है
यह जानने की कि मैं कहाँ जाना चाहता हूँ और अपने जीवन से क्या करना
चाहता हूँ पर कौन सा विषय पढ़ूँ इसका कोई मार्गदर्शन नहीं

सोनी आँटी ने मुझे चुपके से सत्या पॉल अंकल की किताबों को उधार लेने की अनुमति दी... सावधानी से एक बार में एक किताब उनकी बड़ी पुस्तकालय से
उन्होनें बहुत विस्तार से पढ़ा था और वे सभी विषयों में महान रचनाओं का एक बड़ा पुस्तकालय बनाने में समर्थ थे
पर ज्यादातर किताबें धर्म पर और किताबें जैसे कि भगवद्गीता, उपनिषद, बुध्द, कृष्ण, महावीर, गान्धी के जीवन पर... लेखक जैसे खलिल जिबरान, टैगोर
जो भी पुस्तक में पाता हूँ वह मुझे अप्रिय लगती है और बहुत जानी सी

मैं ढूढँना शुरू कर देता हूँ और हर तरह की अजीब पुस्तकों को पढ़ना शुरू कर देता हूँ जिन का कुछ भी लेना देना इन विषयों से हो
भविष्य, मुत्यु, मुत्यु के बाद जीवन, रहस्य, धर्म और खासकर तिब्बतियन और लामाओं पर, बौध धर्म में जीने का ढंग, बौध साधु बनना
यह विषय मुझे लुभाते और मैं एक चुम्बक की तरह उनकी तरफ खीचँता चला जाता
इस तरह मैं हर रात्रि खुले आकाश के नीचे छत के उपर अपने पौधों के साथ सुबह ३ या ४ बजे तक पढ़ता और मुझे अपना जीवन परिपूर्ण लगता

मैं स्कूल में कला और शिल्पकारी में श्रेष्ठ आता था और मेरी दूसरी चाह थी निश्चल जीवन को दर्शाना और चित्रकारी करना और वह लौट आयी
शायद मुझे चित्रकार बनना है या एक कलाकार जो कला और रचनात्मक कार्य के प्रति आकर्षित है... मैंने जल्दी ही कला के इतिहास पर पुस्तकें खरीदना शुरू कर दिया और सभी महान आचार्य जैसे कि रेम्ब्रान्ड, मोनट, गँगिन, वॉन गॉग, सिझेन्, माइकलएंजोलो, पिकासो, डाली, डचम्प पर महीनों लगा दिये
उनके जीवन और उनके कार्य को जानने के लिए

मैंने नौ महीने सिर्फ पढ़ने और पढ़ने में ही लगा दिए

पिछले चार महीनों में मुझे छतों के उपर आकाश में उड़ने के स्वप्न आने लगे
और मैं अचानक जाग जाता और अपनी चादरों को अत्यधिक पसीने से भीगा पाता
यह स्वप्न स्पष्ट होते गये
और मैं देखता हूँ एक लम्बी दाढ़ी वाले इन्सान को
जो कि मेरी तरफ प्रभावशाली मोहक आँखों से देख रहा है
मुझे सिर्फ इतना ही याद है जब मैं पसीने से भरा हुआ जागता हूँ
मैं अपने बिस्तर के बगल में चित्रकारी में प्रयोग होने वाले काफी कागज रखता हूँ
और इन आँखों और दाढ़ी की कलाकृति बनाना शुरू कर देता हूँ
आँखें और दाढ़ी
जल्दी ही मेरी दीवार ५० ऐसे रेखाचित्रों से भर जाती है
जिनमे वह दाढ़ी है और वह मोहक आँखें मुझे देख रही है

एक किताब जो मैं पढ़ रहा था वह रविन्द्रनाथ टैगोर की गीतांजली थी
जो विद्यालय में मेरी प्रेरणा थे... मैं सोचता हूँ कि शायद मैं उनका चेहरा देख
रहा हूँ क्योंकि मैं हमेशा उनके जीवन और उनके कार्य से प्रभावित रहा

मेरे पास करने को कुछ नहीं है
और मैं परिवार के व्यापार में काम नहीं करना चाहता
ज्यादातर किताबें जो मुझे अपने अंकल के पुस्तकालय में पसन्द आयी
वह मैंने पढ़ ली है
मेरी आँटी मुझ पर क्रोधित हो रही है क्यों कि मैं अपनी पूरी जेब खर्च पौधों
और किताबों पर खर्च कर रहा हूँ ना की खाने पीने पर
पर मैं उधार पर किताबें खरीदता रहा और पास की किताबों की दुकान के साथ
बड़ा कर्जदार हो गया और उनके साथ मुश्किल में पड़ गया
मेरी आँटी हर महीने उन्हे किश्तों में पैसा देने का उपाय निकालती है

यह देखकर कि मैं किताबें पढ़ने के लिए हठीला और जिद्दी हूँ
मेरी आँटी सुझाव देती है कि मैं मुख्य पुस्तकालय के नीचे वाली बंद
पुस्तकालय से किताबें ले कर पढ़ूँ और उन्होंने चाबियों का
इंतजाम करने का वादा किया
अलमारी बंद थी और अंकल से चुपके से चाबियाँ लाना उनके लिए मुश्किल था
इसलिए उन्होनें मुझे कुछ दिन इंतजार करने को कहा और तब तक वह मेरी
पड़ने की भूख को शांत करने के लिए कुछ पत्रिकाएँ भेजेंगी

मुझे अच्छी तरह याद है वह दोपहर जब मैं जागा
मेरा नौकर लगभग ४ बजे मेरी आंटी के घर से साईकल पर आता है
और अपने साथ मेरा दोपहर का नाश्ता लाता है
वह मेरे लिए सुराही भर कर चाय बनाता है और मैं उससे उन पत्रिकाओं के बारे
में पूछता हूँ जिनका वायदा मेरी आंटी ने मेरे साथ किया था

स्वर्ग की ओर

मुझे याद है जैसे यह कल की ही बात हो

जिस क्षण मैंने संन्यास पत्रिका पर उनका चेहरा देखा
वही आँखें और वही दाढ़ी
मानो जैसे वक्त की सुई ठहर गयी हो
मेरे दिल की धड़कन तेज हो गयी
सब कुछ कमरे मे घूमने लगा... चकराने लगा
और मैं खुशी के मारे लगभग बेहोश हो गया
वाह... मैं क्या देख रहा था अपनी आँखों के सामने
क्या यह सपना था या मैं जाग रहा था

वही आँखें जो हर रात पिछले चार माह से मेरा पीछा कर रही थी
मुझे संन्यास पत्रिका में से घूर रही थी
ऐसा लगा जैसे लाखों झलकियाँ आयी
और मेरी आँखों के सामने से गुजर गई
मुझे पता था कि मुझे मिल गया है जिसकी मुझे तलाश थी

वे मेरी खोज थे... वे मेरी जिंदगी थे... यह मेरी जीवन का अर्थ था
सबकुछ सही सही जुड़ गया... पहेली सुलझ गयी
मुझे वह व्यक्ति मिला जिसके लिए मैं जन्मा था

किसी तरह उस क्षण में मुझे मेरा भविष्य मालूम था
आखिरकार मेरे पिछले अनुभव मुझे समझ आये... वह सब इस खोज का हिस्सा थे
संघर्ष खत्म हो चुका था... और मुझे मालूम था मुझे जिन्दगी में क्या करना है

आँखों में आँसू लिए श्रध्दा से मैं उनके चित्र पर झुकता हूँ
असीम प्रेम की भावना लिए धीरे से पत्रिका का पहला पन्ना खोलता हूँ
और दोबारा से सभी दृश्य मेरे सामने आ जाते है

किसी तरह मैं यह सब जानता था
मैं इन सभी लोगों को जानता था
मुझे यह जगह भी मालूम थी जैसे कि मैं वहाँ पहले जा चुका हूँ
और फिर मैं पत्रिका से पहला शब्द पढ़ता हूँ

साधारण व्यक्ति है ताओ

मैं अभी भी स्तब्ध था और खुशी के मारे रोने लगा
रोने लगा और कंम्पित होने लगा
बिना रूके करीब एक घन्टे तक

मैं बस रूक ही नहीं पाया
मेरा सिर हल्का और खाली होने लगा और एक दबाव बढ़ने लगा
और विस्फोटक दर्द का रूप धारण करने लगा
दोबारा से कमरा तैरना लगा
जमीन झूलने और हिलने लगी
यह हो क्या रहा था
क्या भूकंप आ रहा था

मैं काँप रहा था और हडबड़ाने लगा और नौकर को जोर से चिल्लाया
कि मुझे पकड़ कर घर के सामने बगीचे मे ले जाए

मेरा सिर फट रहा था और मेरा पेट दर्द से बेहाल था
मैं चल नहीं पा रहा था और काँप रहा था तब उसने मुझे थामा
और धीमे से निचली मंजिल से मुझे खुले बगीचे में ले गया
मैं गिर गया और घास पर लेट गया और जल्द ही शान्त और निश्चल हो गया

मैं चाहता था कि मै दौड़ कर वापस बालकनी पर जाऊँ और पढ़ूँ
पर सीढ़ीयाँ चढ़ने से भयभीत था अगर दोबारा मेरा सिर फटने जैसा लगे और
पेट बेकाबू होने लगे... मुझे धरती पर होने की जरूरत थी... और जमीन को
महसूस करने की और इस सब को घटने देने की... मुझे घंटो लगे तब मुझ में
हिम्मत आयी ऊपरी मंजिल में वापस जाने की

बिना खाए पिए ही मैंने स्वंय को संन्यास पत्रिका में डुबो दिया
भगवान का हर एक चित्र सीधा मेरे ह्दय में उतरा
हर एक चित्र को देखकर खुशी के आँसू निकले... सिर्फ तीन या चार पत्रिकाओं में मैं जान गया... संन्यास शब्द का अर्थ... उनकी माला... उनके संन्यासी पूना आश्रम

मैं कैसे इसी क्षण पूना पहुँच जाऊँ... मैं वहाँ कल कैसे पहुँच सकता हूँ
मैं सिर्फ यही चाहता था कि यह रात कैसे भी बीत जाए
और मैं पूना के लिए निकल पडूँ
मैं उस रात सोया नहीं

मैं जानता था कि मेरे अंकल दफ्तर के लिए सुबह ८:३० बजे निकलते थे
इसलिए मैंने उनके जाने तक का इंतजार किया और उसके बाद ही मैं आँटी के घर गया उन्होंने मुझे कभी भी सुबह नहीं देखा था
मैं हमेशा दोपहर के २ बजे उठता था
मुझे फौरन उनसे मिलना था और कुछ पैसे लेने थे
मैंने अपने घर के नजदीक वाले राजयोग केन्द्र का पता पढ़ा था
मुझे उनसे उसी दिन पूना जाने के लिए पैसे चाहिए थे

उन्हे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ जब उन्होंने मुझे उस सुबह देखा
मैं बहुत गन्दी हालात में था... पर मेरे चेहरे पर एक शान्ति निश्चित ही दिख रही थी जो उन्होंने एकदम पहचान ली
मैंने हड़बड़ाते हुए उन्हें सब बताया जो मेरे साथ हुआ और उनकी आँखों में आँसू आ गये वह नरम हो गयी और धीरे से झुकी और मेरे पाँव छूने लगी
वह समझ गयी थी क्या हो रहा है
मेरी महान यात्रा की शुरूआत... वह जानती थी पर चिन्तित थी
मेरे जाने के बारे में... मेरे भविष्य के लिए और कि मैं बहुत किशोर हूँ
सिर्फ १९ साल का और बिना माता पिता के... पैसा नहीं भविष्य नहीं

वह मेरा स्वभाव जानती थी... गुस्सैल, जिद्दी और हठीला
और मैं अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए भूखा भी रह सकता हूँ
इसलिए उन्होंने मुझे प्यार से ना जाने के लिए समझाया और कहा कि उनके पास मुझे पूना भेजने के लिए पैसे नहीं है और मुझे कुछ साल रूक कर अपनी जिन्दगी बनानी चाहिए और इस बीच भगवान रजनीश को पढ़ना चाहिए

मैं गुस्से में वहाँ से चला गया क्यों कि वह मुझे समझ नहीं पायी और ना ही यह समझ पायी कि मेरे लिए पूना जाकर संन्यास लेना कितना जरूरी है
मैं राजयोग केन्द्र गया... वहाँ एक वृध्द व्यक्ति स्वामी ओम् प्रकाश सरस्वती कुर्सी पर बैठे थे... मैं गया और झुककर मैंने उन्हें प्रणाम किया

मैंने उनसे कहा कि मेरा सिर फट रहा है और मेरा पेट बेहद दर्द कर रहा है और मुझे लग रहा है कि मैं मरने वाला हूँ और मेरा पूना जाना जरूरी है
वह सिर्फ मुस्कराये और उन्होंने सुझाव दिया कि मैं घर जाकर अच्छी तरह सो जाऊं और अच्छा खाना खाकर सिर को अच्छे कपड़े से ढक लूँ और पूना इस हालत में न जाऊं

मैं अपनी आँटी के पास दोबारा से गया और उनसे पूना जाने के लिए पैसों की प्रार्थना की वह बोली कि वह ध्यान से सोचेगी और अगले कुछ महीनों में पैसा इक्कठा करेंगी और तब मैं जा सकता हूँ

मैंने देखा कि यह सब मेरा दिमाग बदलने और देरी करने की चालाकियाँ है
मुझे लगा यह सब वृध्द लोग किसी साजिश में मिले हुए है

मेरी जेब में कोई पैसा नहीं और उसी दिन वहाँ पहुँचने का मेरा निश्चय
मैं कनाट् प्लेस की तरफ जल्दी से गया
हरीश बुधराज की ट्रिप्स आऊट ट्रैवल एजेंसी में वह मेरे परिवार को जानता था पर उसने फैसला किया कि उधार पर टिकट नहीं मिलेगी
मैंने उसे अपने घर की इकलौती संपत्ति एक फ्रिज आधे दामों में बेचने का प्रस्ताव दिया एक तरफ की टिकट और थोड़ा पैसा
जिसके लिए वह खुशी से मान गया

उसने तुरन्त ही एक टैम्पो फ्रिज लेने के लिए भेज दिया
और अगले दिन की एक तरफ की पूना की हवाई यात्रा का प्रबन्ध कर दिया
मेरे नौकर ने टैम्पो पर आपत्ति की और मुझे घर जाकर उसको रिश्वत देनी पड़ी
ताकि वह चुप रहे और मेरी आँटी को ना बताये कि मैंने फ्रिज बेच दिया है

मैंने कनाट् प्लैस दोबारा जाकर भगवा वस्त्र खरीदे और दर्जी को अपना पहला भगवा रोब सिलने को दिया... जिसके लिए मैंने दो घंटे धैर्य से प्रतीक्षा की
मेरा आध्यात्मिक जीवन शुरू हो गया है
पूरी रात्रि मैंने अपने आप को दो दर्जन के लगभग संन्यास पत्रिकाओं में उड़ेल दिया
मेरा सिर अचानक दर्द से खींचने लगा और मेरा पेट
ऊपर नीचे होने लगा और फटने लगा
मेरे अन्दर जो दबाव बना था कोई उसे संतुलित करने का प्रयास कर रहा था
और लगातार पूरी रात मेरी भीतर कुछ ठहर रहा था

अगली सुबह मैं आनंद से तैर रहा था जल्द ही पूना पहुंचने की प्रसन्नता में
आसमान बादलों से भर गया... बारिश आने लगी
बादलों के बीच से सूरज चमकने लगा... वाह क्या स्वप्न है
मैं एक टैक्सी में बैठा था काफी पैसों के साथ... अपनी स्वर्ग की राह पर

फरवरी १९८१ पूना... मैं स्वर्ग में पहुँचता हूँ
अपना भगवा रोब डालकर मैं तुरन्त आश्रम जाता हूँ
यह शाम का समय है... मैं आश्रम की सड़क पर चल पा रहा हूँ
वाह इतने सारे बिल्कुल अद्भुत और सुंदर संन्यासी
चेहरे पर जिनके खुशी और आनंद की भरमार
गली गली में इन्हें देखकर मुझे इतनी ऊर्जा का अनुभव हुआ कि मैं आने वाला
अपना पूरा जीवन यही बिताना चाहता था... मेरे पेट का दर्द अचानक थम गया
और मेरा सिर का दर्द गायब हो गया... जैसे कोई जादू हो और उसकी जगह
मेरे मुँह में शुध्द आनंद का मधुर स्वाद रह गया और गुनगुना शहद जैसा बहाव
मेरे पूरे शरीर पर होने लगा... मेरी सांसें चमेली की सुगन्ध से भर गयी
मैं धरती के ऊपर तैरने लगा... एक ऐसे फैलाव में जिसे मैंने कभी नहीं जाना

मिलने वालों के लिए बहुत देर हो चुकी है
इसलिए मैं आश्रम के बाहर आस पास टहलता हूँ... सिर्फ संन्यासियों को देखते
हुए पूरी शाम और पूरी रात गलियों में घूमते हुए बीता देता हूँ
हर गली की नुक्कड़ नाचते और गिटार बजाते लोगों से भरी है
काफी जगहों पर उनके प्रवचन की टेप बज रही है
उनकी दिव्य आवाज... उनका धीमे से बोलना और संन्यासियों का बैठे हुए
उनके हर शब्द को अमृत की तरह पीना और उसमें डूब जाना
और उनके शब्दों में ‘हिस‘ की आवाज पर ध्यान देना

हे भगवान... काश मैं सारी दुनिया इनके चरणों में ला दूँ
मुझे लगता है कि यह सिर्फ एक शुरूआत है
मैं कल्पना करता हूँ कि भगवान पूरी दुनिया को रूपांतरित कर देंगे

अगर वह सिर्फ यहाँ आए और उनकी मोहक वाणी को सुने और महसूस करें
इस दिव्य आनंद को पिये जो कि इस पूरी जगह में चारों ओर व्याप्त है
हवा एक तरल पदार्थ से गाढ़ी है... दिव्य आनंद जैसे बह रहा है
बस स्वर्ग है यह लोग धरती के सबसे ज्यादा सौभाग्यशाली लोग है

मैं आश्चर्य से संन्यासियों को देखता हूँ जो कि भगवान के आसपास रहे हैं
मुझे लगता है काश मैं कुछ साल पहले यहाँ आ पाता
कितना सौभाग्य इन का भगवान के चरणों में बैठने का
मैं पहले क्यों नहीं पैदा हुआ... मुझे यहाँ पहले होना चाहिए था

हर कोई जिसे मैं देखता हूँ मैं उससे प्रेम में हूँ
मुझे उनसे प्रेम है उनके यहाँ होने के लिये

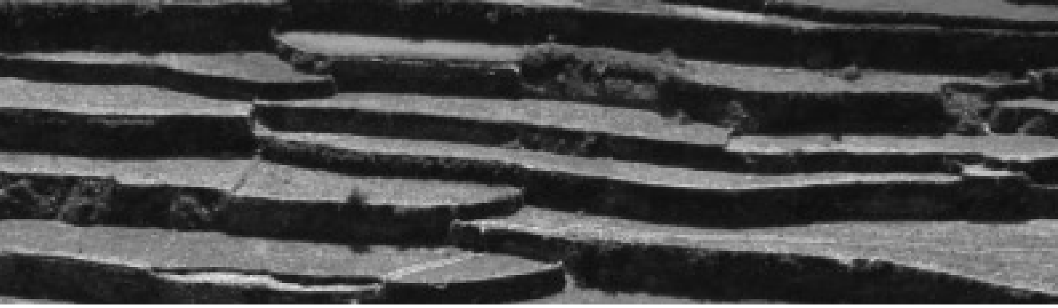

हर चेहरा जिसे मैं देखता हूँ मैं उससे जुड़ा हुआ महसूस करता हूँ
मैं पहली बार प्रेम में हूँ

मैं पूरी रात सो नहीं पाया
मैंने नजदीक ही एक साधारण और सस्ता गेस्ट हाऊस ढूँढ लिया
सिर्फ एक गद्दा और एक मच्छरदानी गेस्ट हाऊस के खुले आंगन में
काफी लोग छोटे कमरों में सो रहे हैं
कोई और जगह नहीं है क्योंकि सब भरा हुआ है और मेरे पास
ज्यादा पैसे भी नही है सिर्फ इतना पैसा कि लगभग दस दिन यहाँ
रूक पाऊँ और अपना संन्यास ले सकूँ और अगर हो सके तो मुझे
इन थोड़े पैसों से पूरा महीना गुजारना चाहिए
मुझे पहले भगवान से संन्यास लेना चाहिए और तुरन्त ही उनके समीप जाकर
उनकी आँखों में देखकर झुकना चाहिए और उनके चरणों में प्रणाम करना चाहिए

मैं बस सो ही नहीं पाया... हवा प्राणों से लबालब है
यह एक नयी दुनिया है और यहाँ से मुझे बहुत कुछ पीना है
हर दिशा से कुछ नया मुझ से टकरा रहा है
हर तरफ से यह आ रहा है और मुझे रहस्यमय कोहरे के समान घेर रहा है
मेरी श्वास थम गयी है... यह लोग उनके पास श्वास कैसे ले पाते है
मैं बस हर्ष की लहर में फँसा हूँ

मैं द्वार रहित द्वार पर दस्तक देता हूँ
आखिरकार... और पूर्णत: निश्चल हो जाता हूँ
यह मेरे गुरू के मन्दिर का द्वार है
मैं पूर्णत: निश्चल हो जाता हूँ... अपनी अन्दर की गहराई से
धरती को प्रणाम करता हूँ
अभिव्यक्त ना कर सकने वाली खुशी के आँसू झड़ रहे हैं
सिर्फ यहाँ होने पर से ही कोटि कोटि प्रणाम

पहरेदार मुझे मिलने पर पूछते हैं मैं किसलिए आया हूँ और मुझे क्या चाहिए
बेतुका प्रश्न... मैं सोचता हूँ मुझे क्या चाहिए... क्या बकवास
मुझे संन्यास चाहिए और मैं अपना बाकी का जीवन यहाँ बिताना चाहता हूँ

मैं मौन रहता हूँ क्योंकि मैं हर चीज से अभिभूत हूँ
मेरी जुबान बंध जाती है और सभी शब्द जैसे मेरी बोली से खो गये है
मैं गूंगा लगता हूँ और पूर्णत: जड़ और सफेद और मैं फुसफुसाता हूँ
कि मैं संन्यासी बनने आया हूँ

वह मेरा नाम पूछते हैं
मुझे फिर से बोलने में मुश्किल होती है और मैं हड़बड़ाता हूँ रजनिश
वह हंसते हैं और मेरी तरफ विस्मय से देखते है जैसे कि मैं बेवकूफ हूँ
सच में तुम्हारा नाम रजनिश है यह कह कर दोबारा हँसते है और दोबारा
उन्होनें मुझे कोई पहचान पत्र दिखाने को कहा
मेरे पास एक भी नहीं था क्यों कि मैं अपने साथ कुछ भी नहीं लाया था
मैंने उन्हें यह बताया... परन्तु मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की
कि मेरा नाम रजनिश है
और मेरे पिता ने यह नाम मुझे दिया है
उन्होंने मुझे एक घंटा बाहर इन्तजार करवाया
अन्त में मुझे धैर्य से इन्तजार करते देख कर
मुझे पहरेदार के साथ कृष्णाघर में अन्दर भेज दिया और किसी से मिलने को कहा
जो कि यह फैसला करेगा कि मैं अन्दर आ सकता हूँ या नहीं

मैं चलकर दरवाजे से आता हूँ... परन्तु जमीन गायब हो गयी है
मैं धरती से दो फीट ऊपर तैर रहा हूँ... सरलता से पंखों पर बह रहा हूँ
काफी लोग आश्चर्य से मेरी तरफ देख रहे हैं
और जिस तरह मैं चल रहा हूँ उसे देख रहे हैं
अचानक मुझे महसूस होता है कि मैं इस तरह कभी नहीं चला
मैं किसी और के नियन्त्रण में हूँ

और मैं किसी नए प्रवाह में हूँ जो कि मेरे बस से बाहर है
इतने परमानन्द में कि सोचना नामुकिन
मैं धीमे से कृष्णा घर की तरफ चलता रहता हूँ

मुझे आधे घंटे तक बिठाया जाता है... मैं देखता हूँ भगवा कपड़ा सिर पर बाँधे
एक महिला बैठी है और लोग उसके सामने से आ जा रहे है
मैंनें पत्रिकाओं में उनका चेहरा देखा है... तो यही है वह लक्ष्मी
मुझे उनके दफ्तर के अन्दर बुलाया जाता है और मेरा
उनके पाँव छूने का मन करता है
वह भगवान की दिव्य दैवियाँ है... सौभाग्यशाली लोग

वह धीमे से मेरा नाम पूछती है और मैं बेवकूफ बच्चे की तरह दोहराता हूँ रजनिश
वह मेरी तरफ देखती है और दूसरी संन्यासी महिला जो उनके साथ है उनसे
विचार विमर्श करती है और दोबारा से मेरा नाम पूछती है और कि मैं कौन हूँ
मैं अपना नाम दोहराता हूँ और उन्हें बताता हूँ कि
मेरे पिता ने मुझे यह नाम दिया है वह मेरी परिवार का नाम पूछती है
और मैं कहता हूँ कि मैंने अपने पिता का नाम प्रयोग
करना छोड़ दिया है क्यों कि मैंने अपना घर छोड़ दिया है

मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि यह सब उन्हें बकवास और मूर्ख लगेगा
क्यों कि मैं सिर्फ स्वंय था और भोलेपन से तथ्यों का उत्तर दे रहा था
उन्होनें मुझे मजाकिया पाया और मुस्कराते हुए पूछा मैं यहाँ क्या करना चाहता हूँ
मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि वह मुझे बोलने का मौका दे और मैंने कहा कि मैं
उनके पाँव छूने के इच्छुक हूँ और मैंने उनसे प्रार्थना की कि वह जल्द से जल्द
मुझे मेरी माला और भगवान से संन्यास लेने की अनुमति दें
मैं संन्यासी बनने आया हूँ और अपना जीवन यहाँ किसी भी सम्भव तरीके से
बिताना चाहता हूँ... वह दयालु महिला लग रही थी और प्यारी मुस्कान से बोली
भगवान एक दिन पहले मौन में चले गये हैं और मुझे एक महीना डायनामिक
और कुन्डलिनी ध्यान करना पडेगा और वह उस माह में मेरा विकास देखेंगी और
तब मुझे संन्यास मिलेगा

मैंने विनती की कि मेरे पास एक माह के लिए पर्याप्त पैसा नहीं है और मैं
निष्कपटता से हर दिन अपना ध्यान करूँगा और पैसों
के साथ दोबारा वापस आऊंगा परन्तु मुझ पर कृपा करके
मुझे मेरा संन्यास और माला कुछ दिनों में दिलवा दे
वह बोली कि वह इस बारे में सोचेंगी और मुझे उन्होंने ध्यान शुरू करने को कहा
इस स्वीकृति से मुझे द्वार पर ले जाया गया और मुझे
द्वार पास खरीदेने की अनुमति मिली

द्वार पर पास खरीदते वक्त मुझे अचानक लक्ष्मी की बात समझ आयी
कि भगवान मौन में चले गये है... मेरा ह्दय अचानक बैठ गया
इसका क्या मतलब है कि मैं भगवान को देख नहीं सकता
मुझे लगा कि मैं मर जाऊँगा और मैंने आसपास कुछ लोगों से इसका अर्थ पूछा
और उनके हिसाब से भगवान कब बाहर आयेंगे
वे मेरे प्रश्नों से हैरान लगे... जैसे कि मैं कुछ भी नहीं जानता
और कि यहाँ कैसे कार्य होते हैं
मै नया था और भगवान से मिलने को आतुर और उत्सुक था
जरा ठण्डे हो जाओ... शान्त हो जाओ... जो हो रहा है उसे होने दो
उनके अपने तरीके है... वे जल्द ही बाहर आयेंगे
ऐसी शान्त मस्त बिल्लियाँ
मैंने तुरन्त ही अपनी चिन्ताओं को देखा
मेरा इस नई भाषा को सीखना जरूरी है
सिर्फ आराम से रहो और शान्त हो जाओ
और सहजता से जीने की कला सीखो... प्रवाह के साथ बहो
मैं जल्द ही सीख गया

हर सुबह मेरा एक ही प्रश्न होता... क्या भगवान बाहर आये
वह फिर कब बोलेंगे... कब मैं अपना संन्यास और माला ले पाऊंगा

हर रोज एक या दो बार मेरे सिर में एक मीठा दर्द होता
जैसे कि हजारों सुईयाँ चुभ रही हो... चलते वक्त मैं बहता
मुझे कुण्डलनी ध्यान से प्यार था
यह युक्ति थी किसी तरह से मेरे सिर की सुईयों को नियन्त्रित करने की
और मुझे बिल्कुल मस्त बना देने की

मैंने शीघ्र ही देखा कि लोगों ने मुझ पर ध्यान देना शुरू कर दिया है
और मेरी तरफ कुतूहल से देख रहे हैं
इसका सम्बन्ध मेरे बिना प्रयास किये बहते हुए धीरे चलने से था
काफी लोग मेरे पास आते और मुझसे गले मिलते
काफी मेरे बारे में फुसफुसाने और गपशप करने लगे
यह मेरे लिए बिल्कुल अजीब था
मैं पूर्णत: शुध्द निर्दोष आनंद में था और हर किसी को मैं मुस्काराते हुए देखता था
मुझे सबसे और हर चीज से प्यार था... हवा में प्यार ही प्यार था
मैं धीमे से चलता... उनकी बुद्धाफील्ड के प्रति श्रध्दा और सौम्यता से पाँव रखता
और भगवान को हवा में, पौधों में, पेड़ों में फैला हुआ और धरती में समाया
हुआ महसूस करता... यह उनका मंदिर था... धरती उनका ह्दय थी
हवा उनके प्रेम से भरी थी
मैं अपने कदमों के प्रति अधिक से अधिक संवेदनशील हो गया

कम से कम दो हफ्ते बीत गये और भगवान का कोई संकेत नहीं
मैं आश्रम की हवा में बढ़ रहा हूँ और फैला हुआ महसूस करता हूँ
पेड़ो की तरह ऊँचा... पर मेरा ह्दय उन्हे देखने के लिए पीड़ीत है
मैं हर रात्रि रोता हूँ... आशा करता हूँ कि शायद कल मैं भाग्यशाली रहूँगा

वह कल कभी नहीं आया

मै बुध्दा हॉल में नाच रहा था जब उन्होंने घोषणा की और सुनने वाले संन्यासियों
से पूछा कि क्या वह खुश है भगवान के अमेरीका जाने के निर्णय से
सब लोग प्रसन्नता से खिलखिलाये और तब यह एक रहस्य था
और उन्होंने अधिकारिक रूप से अगले दिन घोषणा कर बता दिया
कि यह निश्चित है
भगवान दोबारा बाहर नहीं आयेंगे और वे अमेरीका जा रहे हैं

मेरे लिए अन्धेरा... मैं आँसुओं में था
अब भगवान नहीं होगें इस स्वर्ग से सुन्दर पूना में
जहाँ सबकुछ कितना सजीव था और कितनी ऊँचाई की ओर बढ़ रहा था
उनका अचानक चले जाना... सभी संन्यासियों के लिए एक नयी शुरूआत
हर कोई अपने सामान को बेचकर अमेरीका जाने के लिए भाग रहा था

मैं फिर से सदमें में था... मेरा दिल चीर चीर हो गया
मुझे अपने लिए पैसों का इन्तजाम करना था
पासपोर्ट लेना था... अमेरीकन वीसा लेना था
मेरे पास कुछ भी नहीं था... मुझे किसी तरह भगवान से अमेरीका में मिलना ही था
चाहे कुछ भी हो जाये मैं यह करके रहूंगा

मेरे पास बिल्कुल पैसा नहीं बचा था
इसलिए मैं रेलवे के तीसरी श्रेणी के कम्पाटमेन्ट से दिल्ली निकला
मुझे परेशानियों की एक नयी दुनिया का सामना करना था
नौकरी पानी थी और अमेरीका जाने के लिये पैसों का इन्तजाम करना था
और पासपोर्ट का जुगाड़ कर असम्भव अमेरीकन वीसा का प्रबन्ध करना था

वापस दिल्ली में... सिर्फ मेरे पौधे ही थे जिनकी मुझे कमी महसूस हुई थी

मैंने सबसे पहले एक लकड़ी की कार्यशाला में जा कर
एक लकड़ी का लाकेट बिल्कुल पूना वाली माला की तरह बनाया
और लकड़ी के दानों को ला कर और भगवान की काले सफेद रंग की फोटो
को काटकर लोधी बाग में अपना संन्यास एक वृक्ष के नीचे लिया

मैंने भगवान के चरणों की एक फोटो खरीदी
हर रात्रि मैं अपनी माला इस फोटो के ऊपर रखता
उनके चरणों को और माला को अपने सिरहाने के ऊपर रखता
और मैं उनके चरणों के नीचे शान्ति से सोता
हर सुबह जागने पर माला को प्यार से अपने गले में उसी तरह से पहनता
जिस तरह वे संन्यास देते है और तीन बार झुकता

बुध्द्म शरणम् गच्छामी
संघम् शरणम् गच्छामी
धमम् शरणम् गच्छामी

ऐसे हर सुबह और हर रात को मैं उन्हे याद करता

मैं अपनी आँटी से वापस मिलने जाता हूँ... वह मुझ पर गुस्सा थी
क्यों कि मैंने अपना फ्रिज बेच दिया था... अब गर्मी आ रही थी
और मेरा छत के ऊपर वाला अकेला कमरा गर्मी मे बेहद तप रहा था
और मेरा रोज का खाना जिसका वह इन्तजाम करती थी खराब हो जाता

मैंने अपनी जिन्दगी में पहली बार क्षमा माँगी और उनके कन्धों पर रोया
कि मुझे पैसे कमा कर अमेरीका जाने के लिए बेहद मदद की जरूरत है
वह मेरे पैसे कमाने के उत्साह पर आश्चर्य चकित हुई
और खुश थी कि मैंने पैसों की कीमत को जाना
और अब नौकरी ढूँढने और काम करने की जरूरत को समझा
उन्होनें उसी वक्त कलकत्ता में जोगिन्दर अंकल से बात की
उन्हे अपने दिल्ली दफ्तर के लिए एक भरोसेमंद और ईमानदार मैनेजर
की जरूरत थी जहाँ १६०० रू की छोटी तनख्वाह की बात हुई
साथ में खर्चा और तरक्की का वायदा अगर मैंने अपनी योग्यता साबित की

मैंने पूरी जी जान से काम करना शुरू कर दिया
मैं इन बातों से बिल्कुल निर्दोष था कि मैं कितना पैसा कमाने वाला हूँ
कि कितना पैसा पासपोर्ट के लिए चाहिए
और भारतीयों के लिए अमेरीकन वीसा प्राप्त करने की दिक्कतें
और पैसा जो मुझे ऑरगेन की हवाई टिकट के लिए बचाना होगा
मैं भगवान के पास होने के लिए कुछ भी करने को तैयार था

अब मैं अपने परिवार के नियन्त्रण में था और उनकी शक्ति में
मेरे लिए यह भाषा सीखना जरूरी था
अपनी रोज की रोटी कमाना और उसकी इज्जत करना
मुझे पैसा नहीं चाहिए था... मुझे पैसों की जरूरत थी

मैं राजयोग केन्द्र जाता और भगवान की तीन किताबें एक बारी में ले आता
दिन के वक्त दफ्तर में काम करना और हर रात भगवान की एक किताब पढ़ना
मैंने कम से कम भगवान की २०० किताबें इन दस महीनों में पढ़ी होंगी
जैसे कि वे बोले कि मैंने उनकी सारी किताबें पढ़ ली है

मैंने कभी कुछ सीखने या जानने के लिए नहीं पढ़ा
उनका पढ़ना शुध्द् काव्य था... निरा आनन्द ही आनन्द
मैं उनकी साँसों को उनके शब्दों में महसूस कर सकता और बीच
की खामोशी को जैसे कि वे यहाँ असलियत में हो
मैं बस डूबता ही गया जो भी वे बोलते और शब्दों के मध्य मौन में
जो असली संदेशा पहुचाँता था... जो भी मैं पढ़ता मुझे कुछ याद नहीं रहता
सिर्फ मौन की गुजाँन... जो मुझे घेर लेती
सिर्फ निरन्तर लय और प्रवाह... सत्य की कड़ी
मेरी आत्मा सिर्फ उनके चित्र को देखकर ही पोषित हो जाती थी
उनके संकेत मुझे महसूस होने लगा की इतनी बड़ी दूरी के कारण
मैं उनके पूर्णत: समीप हूँ
पूना जाना और उनको असली जीवन में नहीं देख पाना

मेरे अन्दर की ज्वाला व्याकुल हो गई और उनको ढूँढने लग गयी
सभी महान प्रेम कहानियाँ जो मैंने पढ़ी थी और जो मुझे जरूरत से ज्यादा मीठी
और बेवकूफ लगती थी अब मैंने उनको पसन्द करना शुरू कर दिया

अब पहली बार मुझे पता चला
गुरू के साथ प्रेम का क्या अनुभव होता है
जलना और ज्योति में घुल जाना
जैसे पतंगा प्रकाश को ढूँढता है

कम्पनी में नौकरी महत्वपूर्ण थी क्यों कि मैंने अपने योग्यता साबित की
मैंने बिक्री में उत्कृष्ठ काम किया और लोगों को सम्भालने का मुझे अच्छा हुनर था
मेरा छोटा दफ्तर जल्द ही आठ गुणा बिक्री करने लगा
मेरे अंकल मेरी तरक्की देखकर खुश थे
पर उससे ज्यादा मेरे पूर्ण उत्साह को देखकर और उनका नियन्त्रण जो मेरे ऊपर था
उन्होनें मेरी तनख्वाह बढ़ा कर ३५०० रूपये दी
और कम्पनी में उन्होंने मेरी पहुँच हर चीज के लिए आसान कर दी

किसी तरह से इन महीनों में मेरे दादा भी मुझसे खुश थे
और उन्होनें दूसरे तरीकों से मेरे लिए पैसे का प्रबन्ध करना शुरू कर दिया
जो मैं इक्कठा करता गया

मैंने अपने अंकल से कई महत्वपूर्ण मदद करने के लिए पूछा
मुझे बड़ी तनख्वाह के कागजात और दस्तावेज चाहिए थे
एक नामी गिरामी कम्पनी से स्थायी नौकरी का प्रमाणपत्र
घर का सही प्रमाणपत्र... कम्पनी के कुछ दस्तावेज
क्यों की इस तरह मैं यात्रा के लिए पासपोर्ट प्राप्त कर सकता था

मुझे पासपोर्ट प्राप्त करने में छह महीने लगे
फिर आया मुश्किल हिस्सा... अमेरीकी वीसा
ट्रेवल एजेन्ट मुझे बोला यह असम्भव है
एक भारतीय जिसका यात्रा का कोई इतिहास नहीं... खाली पार्सपोर्ट
सिर्फ १९ साल की उम्र... वीसा असम्भव है

यही पर मैंने अपनी जिंदगी के लिए इस सुनहरी कथन को कहा
कि 'असम्भव' शब्द मेरे शब्दकोश में नहीं है
वे सब जो मुझे जानते है उनका मेरे बारे में कहना है
कि रजनिश के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है

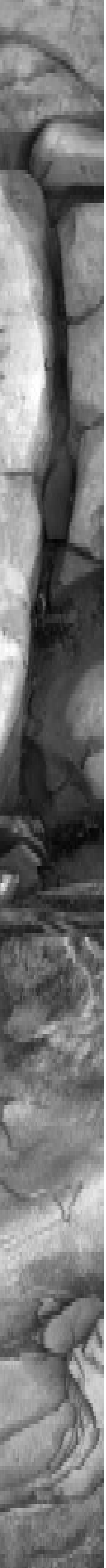

अपने अमेरीकी वीसा के आवेदन के लिए मैंने अंकल की आज्ञा से
ज्यादा से ज्यादा दस्तावेज तैयार किये
मेरी माँ की प्रसिध्दी और पिता के व्यापार की ऊँचाई का भी उल्लेख किया
और महीने की तनख्वाह १६००० रूपये दिखायी
मुझे परिवार के एक व्यवसाय में भागीदार बनाया गया
काम करने के क्षेत्र को बढ़ाया गया... खुद के बारे में जानकारी को
अत्यधिक बढ़ा चढ़ा कर दिखाया गया
मेरे नाम पर बहुत पैसें की जमा पूंजी दिखायी गयी
अमेरीका के लिए प्रथम श्रेणी की टिकट का प्रबन्ध किया गया
और जिस में यात्रा के बीच में थाईलैंड में छुटिट्याँ
बिताने के लिए रूकना भी था

मैंने सबसे बढ़िया सूट पहना और टाई लगाई... एक महेंगे ब्रीफकेस को
साथ लिया और अमेरीकी वीसा ऑफिस में उपस्थित हुआ
मैं अमेरीका जा रहा था
क्योंकि मेरे माता पिता ने मुझसे छुट्टियों का वायदा किया था
वे धनी और प्रसिध्द थे
मैंने बताया कि विदेश में लगातार आना जाना होगा
और जब अमेरीका में काम करने के बारे में पूछा गया
तो मैंने उत्तर दिया कि क्या मैं उन्हें एक नौकर जैसे दिखता हूँ
यह सब काफी था और साक्षात्कार लेने वाली महिला शर्मा गयी थी
अमेरीकी तरीका... किताब को उसके पृष्ठ पन्ने से जाँचो

मुझे अपना पहला ३ महीने का बार बार आने जाने का अमेरीकन
वीसा जनवरी १९८२ में मिला... पूरे दस महीने लगे इन सब
को ठीक ठाक अंजाम देने में

जश्न मनाओ... मैंने अपनी टिकट पा ली है
मेरा अमेरीकी वीसा... ८०० डॉलर्स

भगवान मैं अब आ रहा हूँ

मेरा ट्रेवल एजेन्ट जिससे मेरी शर्त लगी थी बोला
कि ‘असम्भव’ शब्द रजनिश के शब्दकोश में नही है

२० साल की उम्र... मेरी पहली यात्रा बाहर की दुनिया में
मैं बैंकॉक में पहुँचा... पॅट पॉग की रात की जिन्दगी से मेरी पहली मुलाकात
मैंने रात्रि में ऐसे झूमते लोग पहले कभी नही देखे थे
सब मदिरा पीते हुए और सब चिन्ता भूलकर नाचते हुए
जो मैंने देखा वह मुझे अच्छा लगा पर मैं शरमा रहा था
और इस जगह से बिल्कुल अपरिचित महसूस कर रहा था
पानी से बाहर एक मछली की तरह
और मेरे पास ज्यादा पैसे भी नही थे सिवाय ८०० डॉलर्स के
मैं अपने गेस्टहाऊस में वापस चला गया
और बैंकॉक में मुझे तीन रातों बितानी पडी

टोकियो में एक रात आराम के लिए रूकना पडा
यह ३१ दिसम्बर था... नए साल की रात
बहुत ज्यादा खर्चीला बाहर जाने के लिए
एअरलाईन्स ने हमें एक सुन्दर हॉटल नरिता में ठहराया
उन्होनें छत के मदिरालय में हमारे लिए शॅम्पियन का इन्तेजाम किया
मुझे साफ महसूस हो रहा था कि मैं ऐसी जगहों के लिए नही हूँ
मैंने अपने रात का खाना खाया और सोने चला गया

सुबह की उड़ान लॉस एजेंल्स के लिए
अंतराष्ट्रीय समय रेखा के ऊपर से उड़ रहा हूँ

दोबारा से नए साल का उत्सव क्या... क्या यह एक बढिया शगुन था
नए साल का उत्सव दोबारा मनाना

पहली बार अमेरीका में
मैं आश्चर्यचकित था कि मैं बिल्कुल सामान्य महसूस कर रहा था
और २० साल की उम्र में अमेरीका आने की मुझे कोई उत्तेजना नही थी
लॉस ऐंलस के रास्तों में मैंने अपने आप को खोया और उलझा हुआ पाया
सिर्फ कारें ही कारें और खुले रास्ते ही रास्ते
कब और कहाँ लोग असलियत में मिलते हैं
यह बिल्कुल मेरे लिए पराया देश था
मुझे बहुत दुखद अनुभव हुआ और मैंने जो भी देखा उससे अपने को
अलग थलग पाया

मुझे अपने मित्र से सॅन डियगो में मिलना था
जो मुझे अमेरीका में मदद करेगा और मेरा ऑरगेन जाने का प्रबन्ध करेगा

ग्रेहाऊँड बस को पकड़कर मैं सॅन डियगो मे आ गया
यहा पहले से काफी अच्छा लगा... समुन्दर तट और शहर आसानी से पहुँच में थे
वास्तविकता में लोगो को समुन्दर के किनारे टहलते हुए और चहलकदमी करते हुए देखा जा सकता था

मुझे जल्द समझ में आया कि मेरा दोस्त मुझे ऑरगेन जाने में मदद नही कर रहा था
बल्कि उसको घर का किराया बाँटने के लिए किसी की जरूरत थी
और इस चक्कर में मेरा सारा पैसा खत्म होने को आया

मैंने ऑरगेन में फोन किया और वे जल्द मुझ से यह सब पूछने लगे
कि मेरे पास कौन सा वीसा था और भारतीय होने के नाते कितनी देर तक
मैं यहाँ रह सकता था और मेरे कितने पैसे पास थे
५०,००० डॉलर्स कम्यून मे रहने के लिए आवश्यक थे
मुझे बिल्कुल समझ में नही आ रहा था कि ये लोग किस बारे में बातें कर रहे थे
वह दूरस्थ और ठंडे प्रतीत हुए... मुझे पता था ऑरगेन की मेरी यात्रा नही होगी
मुझे कम्यून से पृथक होने का आभास हुआ

मैं समझने लगा कि मैं भोला और बेवकूफ था
पैसे और दुनिया की सच्चाइयों के लिए तैयार नहीं था
मैं पहले से ही अमेरीकी संस्कृति और वातावरण से दुखी था
शाकाहारियों के लिए असली आहार नहीं
मैं अपने आप में ही रहने लगा और जल्द से जल्द भारत जाना चाहता था
दो महीने सॅन डियगो में, खानपान, रहनसहन के खर्च और यात्रा के बारे में सीखा
ऑरेगन मेरी पहुँच से दूर था
मैं अपनी वीसा में दिए समय से ज्यादा नही रहना चाहता था
नहीं तो अमेरीका वापस आने के सारे दरवाजे बंद हो जाते
मैं भारत वापस आ गया और मैंने अच्छी तरह से तैयारी करके
दोबारा जाने का फैसला किया
इस के लिए एक साल लगा
इस बार मैंने अपने रिश्तेदारों से बात की
और उन्होनें मेरी माँ की बहन उषा आंटी जो कि शिकागो में रहती थी
उनके पास सीधे जाने की व्यवस्था की
उन्होनें वादा किया था कि वह मेरा ध्यान रखेंगी
और मुझे निवास और नौकरी उनके वोकेगन इलीनॉस में दो मोटल्स में देंगी
इस तरह से कम से कम ऑरगेन के त्योहारों में जाने के लिए तो मेरे पास पैसे होंगे
क्योंकि कम्यून में स्थायी निवासी मेरी पहुँच से बाहर था

मैं ९ जनवरी १९८३ को न्यूयॉर्क पहुँचता हूँ
उषा आंटी दयालु थी और समझती थी कि मेरे मोटल में दिन रात काम करके पैसे बचाने का इकलौता कारण मेरी ऑरगेन में हर तीन महीने जाने की इच्छा थी
मुझे जल्द ही पता चल जाता है कि उनके गुजराती पति सिर्फ यही चाहते थे कि मैं काम करूं उन्होंने कमरों को साफ करने वाली महिलाओं और मैनेजर को नौकरी से निकाल दिया और जल्द ही मैं वह सोलह बेडरूम वाले मोटल की देखरेख करने लगा और वह भी अकेला ही धोबीखाना, शौचालय, कमरे और लोगों का आना जाना अब मुझे ही देखना पड़ता
बिना किसी आराम के... एक घंटे का आराम भी नही
इससे भी बुरा इस मोटल में सिर्फ नौसैनिक आते थे जिनका प्रशिक्षण केन्द्र पास में था और वे हमेशा बदतमीज़, झगडालू और नशे में धुत रहते थे
सारे कमरे हमेशा बिगड़े रहते
मैं सिर्फ कमरों को साफ करने की भागदौड़ में और उसे अगले शराबी नौसैनिक के आने के लिए तैयार करने में रहता... जो कि आकर कमरे को खराब करेगा
कभी कभी कमरों को —३० डिग्री की ठंडी हवा में सुबह २ बजे साफ करता

मैंने कभी शिकायत नहीं की और मैं सन्तुष्ट था
अगर वे मुझे ऑरगेन में दस दिन त्यौहारों के उत्सव पर जाने देंगे
जब मुझे ऑरगेन जाने का पहला मौका मिला तो मैंने उन्हे बताया
और जुलाई त्यौहार पर जाने की तैयारी करने लगा
जिस पर मेरे अंकल गुस्से से पागल हो गए
और मुझसे पूछने लगे छुटिट्यों में मोटल की देखरेख कौन करेगा

मुझे मेरी सिर्फ ३०० डॉलर प्रति महीने की तनख्वाह जिसका मुझसे वायदा हुआ था और जिसे मैं जोड़ रहा था मुझे कभी नही मिली
वह बोले अगर वह मेरी तनख्वाह मुझे देंगे तो मैं सिर्फ ऑरगेन जाऊँगा और उस सेक्स गुरू भगवान के पास बर्बाद कर दूँगा
यह सब मेरे लिए बहुत ज्यादा था... मैंने अपना बैग बाँधा और शिकागो छोड़ कर न्यूयॉर्क के लिए निकल पड़ा... अपने अंकल से मिलने जो वहा रहते थे
मेरी आंटी मेरे पीछे भागी और मुझे चार महीने के काम के लिए ८०० डॉलर्स दिए और उन्होनें मेरे अंकल के बर्ताव के लिए क्षमा मांगी
उन्होनें कभी किसी की इज्जत नही की... हमेशा कम पैसों में ज्यादा काम करवाया और अच्छे लोगों को निकाल दिया

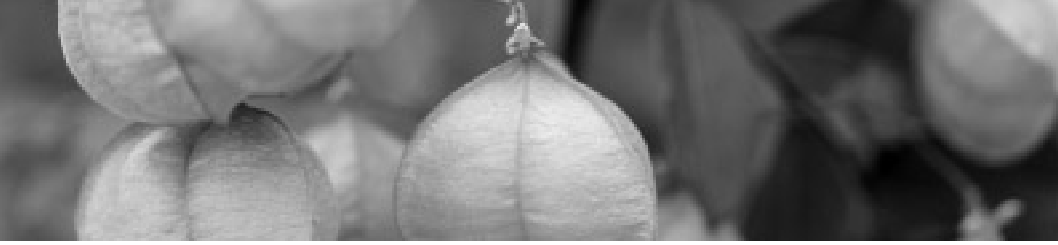

ऑरगेन नही होना था

दोबारा से ग्रेहाऊँड बस में सड़क पर... मैं न्यूयॉर्क पहुचँता हूँ
एक भव्य मॅनहटन अपार्टमेंन्ट में जो मेरे और एक अंकल विजय और आंटी
कीकी का था जो की मेरे प्रति बहुत प्रेमपूर्वक और दयालु थे
वह शायद पहले लोग थे जो सही में मेरे साथ बैठे और उन्होंने मेरी पूरी कहानी
को सुना लेकिन उन्होनें सुझाव दिया की मैं काम करूं
बड़ा हो जाऊँ और उसके बाद संन्यास लेने की इच्छा को पूरा करू

मेरे अंकल न्यूयॉर्क ऑबराय ग्रुप के उपाध्यक्ष थे
वह नही चाहते थे कि मैं अमेरीका में अवैध बनूं
उन्होंने भारत जाने का मेरा इन्तजाम किया और दिल्ली में
मेरी नौकरी का प्रबन्ध किया

मैंने उनसे कहा कि मुझे लगता है कि मुझे लंदन जाना चाहिए
जहाँ मेरे एक अमीर और प्रसिध्द अंकल रहते हैं
शायद वह मुझे नौकरी दे सकते है

उन्होंने बहुत प्यार से मुझे लंदन के लिए हवाई जहाज की टिकट खरीद कर दी
पहली बार जिन्दगी में मैंने किसी से कुछ लिया
मैंने उनसे वादा किया कि मैं उन्हे यह पैसे वापस करूँगा
और जो मैंने आखिरकार कुछ सालों बाद पूरा किया

लंदन मई १९८३
मेरे लंदन के अरबपती अंकल स्वराज पॉल कहते है कि वह बहुत व्यस्त हैं और
उन्होंने मुझे तीन हफ्तों के बाद बात करने को कहा और उनकी सचिव से पहले
समय लेने को कहा

मैं भारत से लंदन में बसे अपने एक मित्र से बात करता हूँ
वह कपड़ो के व्यवसाय में है
वह मुझे मदद करने में बहुत खुश था... क्यों कि उसे खुद मदद की जरूरत थी
वह और उसकी पत्नी अभी अभी अलग हुए थे

वह बहुत यात्राएं करता था उसका घर अस्तव्यस्त था और उसका कपड़ों का
व्यवसाय था जो वह अकेला चलाता था.बुरी हालात में था
कपड़ो का एक बड़ा भंडार बेचने के लिए तैयार था
मैं उसके लिए सही व्यक्ति था और मेरे लिए भी यह सही था

मैंने उसका घर साफ किया और उसके अस्तव्यस्त आफिस को ठीक किया
और जमा किए कपडों के भंडार को बेचना शुरू कर दिया और कुछ हफ्तों में
यह साफ था कि मुझ में बेचने की कला थी और एक कंपनी को
अकेले ही संभालने की कला भी
मेरा मित्र बेहद खुश हुआ और हमारे बीच में साथ साथ काम करने की आदर्श
व्यवस्था थी... अच्छे नतीजों को देखकर वह खुश और उदार था
मैं असलियत में १००० पौंड महीने में कमा रहा था
और मैं लंदन को प्यार करने लगा और कपड़ों की दुनिया को

आखिरकार इस पैसों के बुरे समय में कुछ रोशनी की किरणें दिखी
मेरी अच्छी किस्मत का दौर जल्द ही खत्म होने वाला था
क्योंकि मेरे मित्र को अपना लंदन का आफिस बंद करना पड़ा और अपनी
कंम्पनी और निर्यात को भारत से सम्भालना पड़ा

मुझे लंदन में एक साल हो गया है
मैंने बहुत कुछ सीखा और अच्छा अनुभव प्राप्त किया
इसलिए मैंने एक शेल्फ कंपनी बनायी
मेरे खुद के लेबल के लिए डिजाईन करना शुरू किया और
लंदन में आयात करने लगा
ब्रिटेन में कानूनी ढंग से कमाने की आज्ञा ना होने के कारण
मैंने अपनी माँ के रिश्ते में एक चचरे भाई के साथ एक फ्रन्ट कंपनी बनाई
मेरी कंपनी औरतों के शाम को पहनने वाले वस्त्र बनाती थी
मेरे द्वारा डिजाईन किए हुए रिनई लेबल के नाम से और भारत से
उनका निर्माण होता था जल्द ही मैं हार्वी निकल्स की क्रिसमस खिड़कियों में था
और सेल्फरिज़, डिकन्स और जोन्स में मेरे कपड़े बिक रहे थे
बॉन्ड स्ट्रिट नाईटसब्रिज और ऑक्सफर्ड स्ट्रीट के हर मंहगे स्टोर में
सजावटी शाम का पहनावा लंदन में प्रसिध्द था

मेरे डिजाईन उत्तेजक और आधुनिक थे
मेरा नाम कम दामों पर उच्च श्रेणी के कपड़े डिजाईन करने वालों में था
अपनी कंपनी को शुरू करने के खर्चे और लगभग दर्जन भारत में आने जाने
की हवाई टिकटों के बाद... मैंने २५००० पौंड के आसपास कमा लिये था
३५००० डॉलर्स का ऑरगेन का सपना सच होता प्रतीत हो रहा था
५०,००० डॉलर्स के साथ मैं वहा रह सकता था

मैं लंदन में लगभग दो साल रहा और जिदंगी सुन्दर थी
मैं हर सुबह उनके चरणों में उठता और अपनी माला पहनता
और बुध्दम शरणम् गच्छामी में प्रणाम करता

मुझे मिलान इटली में एक प्रसिध्द अंतराष्ट्रीय ब्रान्ड के द्वारा निमन्त्रित किया गया
मुझे बुलाया गया था उनके डिजाइन बनाने और भारत से कपड़ों का इन्तजाम
करने के लिए... यह मेरी पैसों के लिए अन्तिम यात्रा होगी
और इसके बाद भारत वापिस और फिर ऑरगेन

मैंने यह बात अपने चचेरे भाई को बतायी जो कि मेरे लिए मेरी
फ्रन्ट कंपनी चलाता था
और मेरे रिनई लेबल के कपड़ों की दुकानों के साथ अनुबन्ध, आयात दस्तावेज
और बैंक खाते सब कुछ बस उसी के नाम था
मैं बस साधारण जीवन जी रहा था... सिर्फ खाना खाने के लिए पैसे ले रहा था
और लंदन की भूमिगत रेल का प्रतिमाह का भाड़ा.. कुछ इधर उधर का खर्चा नहीं
उसके घर में रहना और किराए के पैसे उसे देना

अपने एक कामयाब व्यापारीक सौदे और मिलान से ऑर्डर मिलने पर लौटते समय
मुझे कस्टम् पर रोका गया और मुझे साक्षात्कार के लिए ले जाया गया
मुझे बताया गया कि उनके पास सूचना है मैं लंदन में पैसे कमा रहा हूँ
और अपने पर्यटक वीसा होने के बावजूद यहाँ व्यापार कर रहा हूँ जो कि गलत है
और वह मुझे बोले कि मुझे ब्रिटेन में आने की अब अनुमति नहीं है
मैं भौचंक्का सा रहा गया और तुरून्त ही मुझे समझ आया कि
शायद मेरे चचेरे भाई ने मेरे पैसो को हथियाने के चक्कर में सूचना दी है
उसकी एक उबाऊ सी सरकारी नौकरी थी जो सामाजिक सुरक्षा से सम्बन्धित थी
और वह हमेशा मेरी कंपनी के बड़े मुनाफे को देखकर उस से आकर्षित था

मैंने साफ बताया कि मेरी भारतीय कंपनी है और मैं ब्रिटेन में कपड़ा निर्यात करता हूँ और मेरा चचेरा भाई उधार पर मुझसे कपड़े लेता है और मेरी भारतीय कंपनी को पैसा देने से बचना चाहता है और मैं अपनी बकाया रकम लेने आया हूँ कस्टम अधिकारी ने मेरी कहानी को स्वीकार किया और सामान्य तीन महीने के वीसा के बदले दो हफ्ते के लिए वीसा दे दिया

मैंने अपने चचेरे भाई को एअरपोर्ट से फोन किया
वह आश्चर्य चकित लगा कि क्या मैं असलियत में लंदन वापिस आ गया हूँ
मैं समझ गया कि वह मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहा है
वह कभी एअरपोर्ट नही आया और उसने ढोंग किया कि उसकी माँ अस्पताल में है
कि उसका घर बन्द है और वह मुझे दो या तीन दिन में मिलेगा
जब मैं वहाँ गया तो उसने स्थानीय पुलिस को शिकायत कर दी कि मैं एक अपरिचित हूँ जो जबरदस्ती उसके घर में घुसने की कोशिश कर रहा हैं

मैंने भारत फोन किया तो मुझे पता चला
कि जिस हफ्ते... मैं मिलान में था वह भारत में आया था
उसने दूसरे विक्रेताओं के साथ सम्बन्ध बना लिये ताकि वह मेरा रिनाई लेबल का व्यापार चालू रख सके... और जब मैंने हार्वी निकल्स और सेल्फरीज के खरीदारों को फोन किया तो वह बोले कि उन्हे बताया गया है कि मैं सिर्फ एक डिजाइनर की तरह काम कर रहा था और मेरा चचेरा भाई कंपनी का मालिक था और उसने मुझे नौकरी से निकाल दिया है

दोबारा से सड़क पर

अपनी मेहनत की कमाई ३५००० डॉलर्स एक चोर और बदमाश को खो दी
मैं कुछ भी नही कर सकता था क्यों कि सारी कंपनी उसके नाम थी

मैं भारत आ गया और मेरे दोस्तों को धक्का लगा क्यों कि वह सब जानते थे
कि मैंने कितना कड़ा परिश्रम किया था अपने संन्यास के स्वप्न के लिए
निर्माता जिनको मैंने काम दिया था मुझे आर्थिक सहारा देना चाहते थे
और किसी तरह मदद करना चाहते थे... मेरे डिजाईन बहुत प्रसिध्द थे
अब मेरे सफल व्यापारिक सम्बन्ध लंदन, पेरिस, इटली, ग्रीस में थे
और तो और मिलान, न्यूयॉर्क में

मुझे उनका मुझ पर भरोसा फिर से बनाना पड़ा
कुछ स्वतन्त्र डिजाइन बनाना और डिजाइनो को बनाने के लिए पैसे लेना
और पाँच महीनों के अन्दर ही मेरे कपड़ों के सबसे बड़े निर्यातक ने मुझे
२०,००० डॉलर उधार देना का फैसला किया

मैं लंदन नही जा सकता था... ब्रिटेन इमिग्रेशन अब सर्तक था
मेरे विशिष्ठ शाम के पहनावे की माँग मेरे चचेरे भाई ने हथिया ली थी
उसने अपनी सरकारी नौकरी छोड़ दी थी और मेरी कंपनी को
चलाना शुरू कर दिया था इसलिए मैंने न्यूयॉर्क और लॉस एंजेल्स के बड़े
बाजार में जाने की योजना बनाई जो मुझे ऑरगेन के नजदीक ले आयेगा

जब मैं भारत में था तब मैंने 'नोटस् ऑफ ए मैडमैन' किताब पढ़ी
जो कि मेरी सबसे प्रिय और पंसदीदा होने वाली किताब थी
सरलता से यह किताब दूसरी किताबों से बढ़कर हैं
क्यों कि भगवान सिर्फ स्वंय से ही बात कर रहे है
कोई दर्शक नहीं... शुध्द अभिव्यक्ति स्वंय होने की और परम आनन्द की
यह किताब मैंने कम से कम दस बार पढ़ी
और मैं किताब की पचास कापियां एक बार में खरीदता
और अपने मित्रों को सिर्फ यही भेंट करता

उसी दौरान मैंने 'बुक्स आइ हैव लव्ड' पढ़ी
अब मैं किताबों की पूरी सुची बनाता हूँ
और दिल्ली के पिकाडॅली बुकस्टोर में जाता हूँ
वहाँ का वृध्द आदमी मेरा एक बहुत करीबी मित्र बन जाता है
उन्हें प्रिय है दुनिया की महानतम किताबों को अपनी छोटी सी कॅनाट् प्लेस
की दुकान में इकट्ठा करना और इस में बहुत गर्व महसूस करना और अपनी
किताबों की दुकान में लगभग सभी अच्छी किताबों को रखना
वह मेरी सूची में लिखी हुई किताबों को लाने का प्रस्ताव देते है
और ९० किताबों का बंदोबस्त कर देते हैं
मैं पढ़ने की एक और यात्रा शुरू करता हूँ
बुक ऑफ मिरदाद, ताओ ते चिंग, जिद्दू कृष्णामूर्ति, रमन महर्षि, रामाकृष्णा,
गुरजिएफ, रिजर्ड बास, हर्मन हीस, लियो टालस्टाय, पॉल, रैप्स

मैं अमेरीका में २५ अक्तूबर १९८५ को वापिस आता हूँ

२०,००० डॉलर की कीमत का कपड़ों का भंडार अमेरीकन कस्टम में पहुँचा
मैं अपने दोस्त के साथ आयात के तरीकों पर काम कर रहा था
और साथ साथ नवीनतम डिजाईन के नमूनों को दिखाकर अपनी योग्यता से
कपड़े उधार पर पहले ही बेच देता
बेचकर दो या तीन महीनों में पैसा वापिस पा लेता
सभी कपड़े १०० प्रतिशत के उपर लाभ पर बिकते
यह अब सरल था... सिर्फ बिक्री पर ध्यान दो और कड़ी मेहनत करो

कमल फूल बेड़ियों में

मुझे याद है वह सुबह २९ अक्तूबर १९८५
मुझे ९.३० बजे के आसपास एक फोन आया
मैं अपने रिश्तेदारों के घर... पॅसेदना लॉस एंजेल्स में सो रहा था
जागो... टेलीविजन चलाओ... खबरें देखो

भगवान को गिरफ्तार किया गया है

कम्यून नष्ट कर दिया है

अविश्वास से मैं अतिथि कक्ष में टेलीविजन को चलाता हूँ
खबरों में भगवान मुस्कराते हुए प्लेन से बाहर आते है... उनके हाथो में जंजीरों में बंधी हुई है और फे.बी.आइ के लोग बन्दूकें लिए उन्हे घेरे हुए है

क्या यह नरक है .. या क्या मैं बुरे स्वप्न में हूँ

मैं मेज की लैम्प को उठा कर टैलीविजन को फोड़ देता हूँ
मैं बहुत क्रोधित था और उस क्षण किसी को भी जान से मार सकता था

वह भगवान के साथ ऐसा कैसे कर सकते हैं
हथकड़ियाँ और जन्जीरें
पूर्णत: कुरूप
और पूर्णत: अस्वीकार्य
एक नाजुक दिव्य आत्मा को जंजीरों में जकड़ना

क्या उन्हें पता है वह क्या कर रहे हैं
क्या उन्हे उनकी दिव्यता नही दिखती
उनके सौम्य और कोमल हाथों को जंजीरों से बाँधा
हुआ है और उन्हें बन्दूकों से घेरा हुआ है

भगवान मुस्कारते हुए
तेजस्वी और सौम्य
उनका चेहरा पूर्णतः शान्त
और उनकी चमकदार आँखे टिमटिमाती हुई

पहली चीज उस सुबह
मुझे अभी भी वह दृश्य याद है

पागल हो गयी है यह दुनिया

मेरा जीवन समाप्त होने आया
अब कही जाने को बचा नहीं
ऑरेगन नहीं
भगवान के पीछे दौड़ना नहीं
पैसे कमाने की कोई जरूरत नहीं
मेरी आखों के सामने एक घना अन्धेरा
और हथकड़ियों और जंजीरों से बंधी उनकी तस्वीर

मैं एक विशाल काला सर्प हूँ जो आग उगल रहा है
क्रोध से पागल
पता नही इस गुस्से को कहाँ निकालूं
दिमाग सुन्न हो चुका है
अब मैं क्या करूँगा

तीव्र क्रोध की अग्नि में जलते हुए
मैं पहली बार अपनी आँखें बंद करता हूँ
और एक शान्त आवाज को सुनता हूँ

सिर्फ तुम्हारा बुध्दत्व ही तुम मुझे दे सकते हो

तुम्हारा क्रोध सकारात्मक ढंग से प्रयोग हो सकता है
मोमबत्ती को दोनों तरफ से जलाओ

समग्र हो जाओ
भीतर जाओ

सिर्फ तुम्हारे बुध्दत्व में ही मेरी सुरक्षा है

मुझे भगवान से सीधा और साफ संदेश मिल गया

भीतर जाओ सिर्फ भीतर जाओ

मैं कम्यून में फोन करता हूँ
फोन पर कोई ढंग से उत्तर नही दे रहा है
वह कहते है कि उन्हे खुद नही मालूम क्या होने वाला है
ऐसा लगता है कि यह कम्यून का अंत है

मैं अमेरीका छोड़ कर भारत वापस आना चाहता हूँ
मुझे अमेरीका से नफरत है और जो उन्होंने उनके
साथ किया और कम्यून के साथ किया
और मेरे संन्यासियों के साथ किया जो मुझे
प्यारे और पूजनीय थे
उन सब के खून पसीने और आसुँओं से बना
धरती पर जीवित बुध्द का यह स्वर्ग

उन्होनें करोड़ों साधकों का भविष्य बर्बाद कर दिया है

मैं शहर के बाहर अपने आयातकों के पास जल्द
जाता हूँ और कोशिश करता हूँ कि एक ठेकेदार
को अपनी लागत मूल्य पर ही सारे कपड़े एक बारी
में बेच दूँ और भारतीय कंपनी को पैसे लौटाकर
अमेरीका छोड़ दूँ
२५ दिन में सब साफ करके और पैसे लौटाकर
मेरे पास सिर्फ २००० डॉलर बचते है

अथाह शून्य में खो जाना

मैं भारी हृदय से भारत लौट आया
आगे करने वाले काम पर मेरा पूरा ध्यान केन्द्रित
अग्नि में जलता हुआ... बगावत से भरा हुआ
और मैंने अपने भीतरी प्रतिशोध को लेने का दृढ संकल्प किया
अपने गुस्से के लिए माध्यम बनाया... अंदर से खूब जला
और समग्रता से कार्य में खो गया
मैं यह कर सकता हूँ... बुध्दत्व मेरा स्वरूप है
सिर्फ सच्चा और समग्र प्रयास
मैं जानता हूँ... मैं जानता हूँ कैसे... अब समय था... सिर्फ मरने का

मुझे नही मालूम... कहाँ से अपनी अन्दर की यात्रा शुरू करू
मैं सोचता हूँ हिमालय की पर्वतमालाओं से
शायद पोखरा नेपाल के आश्रम से
मैं अपने मित्र ट्रिप्सआउट यात्रा वाले एंजेन्ट हरीश बुधराज के पास जाता हूँ
और बताना शुरू कर देता हूँ क्या हुआ भगवान के साथ और कम्यून के साथ
कि मैं गहरा ध्यान शुरू करने वाला हूँ
और पहाड़ों में एक उपयुक्त जगह की तलाश में हूँ
और काठमांडू के लिए मुझे एक टिकट चाहिए

ना जाने क्यों उसने मुझे सुझाव दिया कि मैं पूना आश्रम जांऊ
मैं आश्चर्यचकित था... क्योंकि मैंने सुना था जब भगवान अमेरीका के लिए
निकले थे तो आश्रम बंद कर दिया गया था
उसने इशारा किया और मुझे उसके पास पड़ी नवीनतम रजनीश टाईम्स
दी और मुझे देते हुए बोला कि उसका मित्र सरदार गुरदयाल सिंह
हमेशा उसको एक पत्रिका भेजता है

पूना आश्रम खुला है और वहाँ २० संन्यासिन रह रहे हैं
एकदम सही मैं सिर्फ यही तो ढूँढ रहा था
एक शान्त जगह जहाँ सारी ध्यान की प्रक्रियाएं हो रही हों
हरीश मुझे पूना की एक तरफ की टिकट दे दो

मैं उस आदमी के समान था जिसे मौत की सजा सुनायी गयी हो
दृढ संकल्प के साथ कि मुझे लक्ष्य पाना है
मैं समग्र और एकाग्र होना चाहता था
फालतू की कोई मित्रता नहीं... किसी से कोई बातचीत नहीं
सिर्फ वहाँ ध्यान के लिए और उसके अलावा कुछ और नही... बात खत्म

मैंने अपनी सारी चीजें पीछे छोड़ दी... मेरे पास एक भगवा रोब था
बिल्कुल सादा सा... बिना बटन के... लम्बा और सरल बाटा की चप्पलों का
जोड़ा और मैंने भगवान की जंजीरों और हथकड़ियों वाली फोटो अखबार से काट ली
मेरे खुद की बनायी हुई माला... और उनके चरण

मैं किसी और चीज पर ध्यान नही देना चाहता था चाहे वह कुछ भी हो
सरल रहो ... सरल और एकाग्र जीवन जियो... अब और देरी नही
मुझे बुध्दत्व तक पहुँचना ही है.... करो या मरो

मैं फिर से पूना आश्रम के द्वार रहित द्वार पर आता हूँ
और फिर से पूर्णत: निश्चल हो जाता हूँ... यह मेरे गुरू के मन्दिर का द्वार है
जब भी इस सुन्दर लकड़ी के द्वार से प्रवेश करता हूँ
मेरे चारों ओर की हवा बदल जाती है और मुझे ऊपर उठा देती है
मैं एक दूसरी दुनिया में प्रवेश कर जाता हूँ
भगवान का मिस्ट्री स्कूल... उनके आर्शीवाद वाला बुध्दाफील्ड

द्वाररहित द्वार... मुझ से दोबारा पूछा जाता है मैं कौन हूँ और क्यों आया हूँ
अजीब बात है क्या लोगों का हमेशा यह ऐसा ही स्वागत करते हैं
और हमेशा शक की निगाह से देखते हैं

मुझे कड़क और कठोर स्वभाव स्वामी से मिलने भेजा जाता है
जो तुरन्त ही मुझे प्रवचन देना शुरू कर देते हैं और मुझे कहते हैं
कि मुझे अपने जीवन को संतुलित करना सीखना चाहिए
जोरबा दा बुध्दा
वह पूछते है मेरे पास अपने गुजारे के लिए कितने पैसे हैं
यह जगह सिर्फ काम करने वाले लोगों के लिए है और कि काम ही पूजा है
और यही एक रास्ता है जिससे मैं यहाँ रहा सकता हूँ
नहीं तो मुझे यहाँ रहने की अनुमति नहीं है

मैंने कहा कि मैंने भगवान की लगभग २०० किताबें पढ़ी हैं
और बताया कि मैं सिर्फ ध्यान करना चाहता हूँ और मौन में बैठना चाहता हूँ
और कि मैं काम करने में इच्छुक नही हूँ... और ध्यान करना ही बस मेरा काम है
मेरे से क्रोधित उन्हे लगा कि मुझे भगवान की इच्छाओं की कोई समझ नहीं है
कि काम करना ही पूजा है और बिना काम किये ध्यान करना आलस है

वह अपने व्यवहार में एक ही बिन्दु पर अटके थे
और जमें हुए थे कि मेरा यहाँ पर स्वागत नही है
मैंने साफ कर दिया कि मैं अपनी जिन्दगी आर्थिक रूप से संभाल सकता हूँ
कि ना तो मैं चाहता हूँ और ना ही मैंने दूसरों की तरह वहाँ रहने के लिए पूछा है
और कि मैं सिर्फ अपना मासिक द्वार पास खरीदूगाँ और अपने
भोजन के लिए पैसे दूँगा
भीतर ध्यान करने के लिए आऊँगा और रात को बाहर चला जाऊँगा
आश्रम के बाहर रहूँगा... इससे उन्हें और भी गुस्सा आया
क्यों कि उन्हें लगा कि दूसरे असहाय भारतीय जो आश्रम की मदद पर आश्रित है
मुझे उनकी तरह नियन्त्रित नही किया जा सकता और ना ही दबाया जा सकता है

मैंने उन्हें अपने १९८१ में पूना आने के बारे में बताया
जब भगवान से मुझे माला नहीं मिली ना ही अधिकारिक रूप से संन्यास मिला
मैं उदास हूँ और मैंने हाथ जोड़ते हुए उनसे कृपा करके संन्यास देने को कहा
वह नरम हो गये और मुस्कराये... वह प्रसन्न थे कि मैं आखिरकार झुका
और मुझे किसी तरह से उनकी मदद की जरूरत थी
वह मेरे साथ हमेशा अपने व्यवहार में कठोर रहे पर मैंने असलियत में उनसे
स्नेह किया क्यों कि मैं साफ देख सकता कि वह भगवान के प्रेम में सच्चे और
निष्कपट है और वह सिर्फ इस बात का ध्यान रखते थे कि अगर संन्यासी
आश्रम में आते हैं तो वे ध्यान करें और ना की अपना समय व्यर्थ की बातों
में गवायें और सब उनके अधिकार को गम्भीरता से लें

कुछ दिन के बात मेरा नाम का विषय उठा
स्वामी स्वभाव ने अब तक जान लिया था कि मैं सचमुच निर्दोष कोमल और
सरल हूँ और मेरा नाम रजनिश मुझ पर उपयुक्त है
और उन्होने मुझे संन्यास और माला स्वामी रजनिश भारती के नाम से दी
और जल्द ही लोग मुझे रजनीश के नाम से पुकारने लगे

मुझे अभी भी यहाँ की हवा में भगवान की ऊर्जा का आभास होता
आश्रम उनकी ऊर्जा से ओतप्रोत था और मेरे लिए तो यह स्वर्ग था
यहाँ बिना किसी रोक ठोक के कही भी जाने की
और बुध्दा गोत्र के पीछे चलने की आज्ञा थी

जहाँ भगवान रहते थे
पवित्र लाऊत्सु द्वार हमेशा मेरे हृदय में अंकित रहेगा
मेरे लिए सब कुछ थम जाता था जब भी मैं इस द्वार पर आता था

एक बार लाऊत्सु द्वार खुला था जिसे देखकर मैं स्तब्ध रह गया
मुझे याद हैं हर बार मैं १९८१ में इस द्वार से गुजरता
तो मेरी साँस धीमी पड़ जाती और मैं शान्ति से रूकता और अपने भीतर जाकर
अपने गुरू को प्रणाम करता... समय थम जाता था
मेरे अन्दर की भावना और श्रध्दा हमेशा ऐसे ही रही... और आज भी ऐसी ही है
सिर्फ इस द्वार की याद ही मुझे निश्चल कर देती है... यह मेरे मन्दिर का द्वार है

द्वार खुला है...पर मैं भीतर नही जाता... यह बहुत ही पवित्र है
मैं महसूस करता हूँ कि जब मैं सही में इस लायक हो जाऊँगा
तभी इस द्वार से निकलूंगा
मैं धीरे धीरे शान्ति से आगे चल पड़ता हूँ
यह द्वार मेरे अन्दर सब निश्चल कर देता है और मेरे लिए यह
सबसे गहरा क्षण होता है

अब तक सिर्फ पढना और पढ़ना
भगवान के समीप होने के लिए इधर उधर भागना... उस दिन का स्वप्न देखना
जब मैं उनके दर्शन करूँगा... और ऐसे ही सैकड़ों भावनात्मक क्षण
कुछ दिन कुन्डलिनी ध्यान... बैठने का कोई अभ्यास नहीं
असली कड़ा हिस्सा असलियत में अब था ध्यान करने का

मैं पास ही के सुन्दरबन होटल में जाता हूँ
रूखेपन से पहरेदार कहता है कि होटल बन्द है और वह
कमरे किरायें पर नही दे रहे हैं
मैं बोलता हूँ कि मुझे एक कमरा एक साल के लिए चाहिए
और जोर देता हूँ कि मैं मालिक से मिलना चाहता हूँ

एक कार पास से गुजरती है... मि. तलेरा सुन्दरबन के अन्दर आते हैं
मैं उनसे मिलता हूँ और उनसे मुझे एक कमरा देने की प्रार्थना करता हूँ
वह हॅसते है और कहते हैं कि वह मुझ जैसे किसी और व्यक्ति से नही मिले हैं
इस तरह का व्यवहार... मैं उनसे कमरे के लिए प्रार्थना करता हूँ
हँसते हुए वह बोलते हैं कि वहाँ भूत रह रहे हैं और मुझे उनके साथ रहना पड़ेगा
और मुझे १२०० रू. प्रतिमाह पर कमरा देने के लिए मान जाते हैं
मैं उन्हे बोलता हूँ कि मुझे कमरे में कुछ नही चाहिए
सिर्फ जमीन पर एक चटाई और बस एक खाली कमरा

अन्दर आते ही एक साफ सुन्दर बगीचा और गुलाब के फूलों की कतारें
और एक आरामदायक ढका हुआ बड़ा आंगन जो बगीचे के सामने हैं
अगले द्वार पर आश्रम... मैं तैयार हूँ

यह मार्च १९८६... मेरी उम्र अब २४ साल है
और जैसे कि कोई कल्पना कर सकता है मुझे एक धार्मिक लक्ष्य बनाना होगा
ध्यान के शिखरों को छूने के लिए और बुध्दत्व को पाने के लिए
समय की एक अवधि निश्चित करनी होगी

मैंने सुना भगवान का बुध्दत्व दिवस २१ मार्च को हैं
यह बहुत कम समय था किसी सम्भव उपलब्धि को पाने के लिए
तब फिर गुरू पूर्णिमा उत्सव जुलाई में था
भगवान को भेंट देने के लिए आदर्श दिन
एक शिष्य अपने गुरू को सिर्फ अपना बुध्दत्व ही दे सकता है
तो मैं अपनी समय रेखा निश्चित कर लेता हूँ... ९० दिन

सभी किताबें जो मैंने भगवान की पढ़ी है
उन में इतना कुछ हैं... हर दिशा में... मैं कहाँ से शुरूआत करूं
मुझे किसी तरह की सरल और आसान शुरूआत करनी है
जिसका मैं अनुसरण कर सकता हूँ
और जिसे मैं अपने विकास को जानने का जरिया बना सकता हूँ

मैं दिमाग में सोचता हूँ
ठोस... तरल... और गैस... बुध्दत्व की तरफ की तीन अवस्थाएं

पहले माह कम्पन से ठोस आधार को पिघला देना
दूसरे माह नदी के साथ बहना और तरल हो जाना
तीसरे महीने सूक्ष्म को अनुभव करना
और अदृश्य में डूब जाना और हवा में विलीन हो जाना

सरल... इसको जटिल मत बनाओ... इस पध्दति का अनुसरण करो
रोज प्रगति को देखो और... अगर कुछ नही होता तो पध्दति को तीव्रता से करो

मैं सुबह कभी भी उठ नही पाया... हमेशा दोपहर के १ से २ बजे के बीच
मुझे लगा यह ठीक था... मैं इसकी क्षतिपूर्ति देर रात तक ध्यान कर पूरा कर
सकता हूँ और मैं हमेशा ३ बजे तक जागता रहता हूँ

स्पष्ट रूप से डायनामिक ध्यान मेरी सूची में नही था
और यह उचित भी था क्यों कि मेरा शरीर पहले से ही नाजुक था
और सच में मेरा ऐसा कोई ठोस आधार नही था जिसे मैं कम्पित करता
इसलिए मैं कुन्डलिनी ध्यान गंभीरता और समग्रता से हर रोज करता

मैं कुन्डलिनी ध्यान शुरू करता हूँ
कम्पित होना... इतनी समग्रता से कि कम्पन अपने आप होने लगे
संगीत शरीर को ऊँची लय में हिला रहा है... पसीने पसीने भीगना
नाचना... मैं अपने पाँव हिला नही पा रहा हूँ
ऊपर का शरीर एक लम्बे बाँस की तरह हिल रहा है
कोई चीज मुझे ऊपर की ओर खींच रही है
बैठना... मेरा सहस्रार में सुइयाँ चुभ रही है
सहस्रार एक मजबूत शक्ति से ऊपर की ओर खींच रहा है
मेरी गर्दन फैल रही है
नीचे लेटना... मृत की तरह निश्चल... मैं खो जाता हूँ... कोई स्मृति नहीं
सिर्फ घंटी की आवाज पर मैं वापिस आता हूँ

मैं निष्क्रियता में बैठना शुरू कर देता हूँ
जल्द ही मुझे समझ आया कि निश्चल बैठना बहुत ही कठिन है
वास्तव में मन ज्यादा नही... सिर्फ शरीर अत्यधिक पीड़ा और बेचैनी में
अशान्त और बेहद पीड़ा में
मैं पहले कभी अपने जीवन में पालथी मारकर नही बैठा... पूर्णत: पीड़ादायक

मैं सिर्फ अचल बैठने में भी सफल नही हो पाता
हर दस मिनट के बाद मैं अपनी आँखें खोलता हूँ
बहुत ही कठिन है सिर्फ बैठना.. बस वक्त बीत ही नही रहा
सिर्फ दस मिनट ही बहुत लम्बे हैं
शरीर पीड़ा में है और खड़ा होकर इधर उधर कही भी जाना चाहता है

इस तरह मैं कैसे बुध्दत्व तक पहुँचगा
मैं कितना हास्यपद और मूर्खतापूर्ण अनुभव कर रहा था
अपने १० दिन के लक्ष्य के बारे में

मैं अपनी आँखे खोलता हूँ... भगवान की फोटो मेरी तरफ घूरती है
भगवान जंजीरों में... मैं दोबारा से गुस्से में आ जाता हूँ
अपने ऊपर क्रोधित मैं अपनी आँखे बन्द करता हूँ
मेरी रीढ़ की हड्डी नही है और मैं कमजोर हूँ... सिर्फ बैठ भी नही सकता और
गुस्से से अपने शरीर को चुपचाप रहने और पीड़ा की आदत डालने के लिए
कहता हूँ... कोई और रास्ता नही है... ना ही कोई विकल्प है
बस दर्द पर ध्यान मत दो... स्वंय को आत्मनियंत्रित करो
अगर किसी को मरना पड़े तो बस मर जाओ
एक बड़ा संघर्ष और लड़ाई शरीरमन के साथ
हर बार हारने पर अपनी आँखें खोलना... और भगवान को जंजीरों में देखना
इस चित्र को देखना असहनीय है और अपनी आँखें बन्द कर भीतर जाते जाना
भीतर और भीतर... भीतर और भीतर

बीस दिन या लगभग... सिर्फ कुन्डलिनी ध्यान
तब बाकी दिन प्रगाढ़ता से बैठना और बैठने के समय को नोट करने
की शुरूआत करना और शीघ्र ही एक घण्टा बहुत छोटा लगने लगा
अब ३ घण्टे... अब ६ घण्टे... आदर्श समय बैठने के लिए

अब मुझे अपने शरीर के ऊपर कुछ नियन्त्रण महसूस होने लगा है
और एक प्रकार की कामयाबी... एक प्रकार की भीतर की शक्ति
एक संकल्प जो मन के ऊपर काम कर रहा है

मैं होशपूर्वक प्रयोग करना शुरू करता हूँ
और अपने बैठने के ढंग को एक दिशा देना शुरू करता हूँ
'भीतर जाने' से वस्तुत: क्या अभिप्राय है
क्या मैं सिर्फ आँखें बन्द कर बैठता हूँ और अपने शरीर की आन्तरिकता को
महसूस करता हूँ और स्वंय पर भीतर की पकड़ महसूस करता हूँ
या क्या भीतर जाना रीढ़ में कुन्डलिनी का एक खंम्भा है
या क्या भीतर जाना नाभी के पास गहरे जाना है
क्या मैं अपनी श्वास को दबाकर भीतर छलाँग लगाऊं
क्या मुझे अपनी श्वास को नियन्त्रित करने की जरूरत है... भीतर कूदने
और मार्गदर्शन करने के लिए
कई प्रश्न... भीतर जाओ... पर भीतर है कहाँ

यह प्रश्न आते रहते है और मैं हर रात अलग अलग प्रयोगों पर घंटो प्रयोग
करता हूँ... यह बहुत प्रगाढ़ और तल्लीन करने वाला है
भीतर कूदने वाले सभी क्षणों से मुझे प्यार है
यह साफ है कि एक दूसरा जगत भीतर है
अनुपात में कही अधिक गहरा और अधिक विशाल
एक महान वैज्ञानिक की जरूरत है भीतर जाने के लिए
और इन सभी सम्भव तलों पर ध्यान देने के लिए
यह सभी भीतरी अनुभवों के बहुआयामी संदर्भ है
कितना आनंद... शुध्द आनंद... यह दिलचस्प होता जा रहा है
समय तो बस उड़ रहा है... शायद मैं कई नये तलों पर उड़ रहा हूँ
रहस्य गहराता जा रहा है... अब मैं परिणामों के लिए नही देख रहा
यात्रा मेरे ऊपर एक पकड़ कस रही है

मेरा सरल तरीका काम कर रहा हैं
कुन्डलिनी ध्यान में कम्पित होना... ठोस को हिलाना
तब शाम को तीन घण्टे निश्चल बैठना
अब मैंने बिना किसी व्यवधान के हर रात बैठना शुरू कर दिया है
९ बजे से ३ बजे तक... ६ घण्टे रात में... पूरे ९ घण्टे हर रोज बैठना

यह मुझे साफ होता जा रहा है कि किसी तरह से
मेरे काफी प्रसुप्त आन्तिरक जगत के अनुभवों को बुध्दाफील्ड सक्रिय कर रही है
और बढ़ा रही है जो कि मुझे अपने स्कूल के दिनों में पर्वतों में होते थे
मेरे भीतर सब कुछ जीवित होता जा रहा था
और मैं इसे पूर्ण विश्वास और सहयोग दे रहा था

इन दिन और रातों को ९ घंटे रोज प्रगाढ़ता से बैठना
मुझे यह ख्याल आना शुरू हुआ कि मैं हर रात को लगभग ११ घंटे सोता हूँ
मुझे सोने का समय निरन्तर ध्यान के लिए जोड़ना चाहिए
और मैंने धीरे धीरे लेटते हुए नींद में जाने का अभ्यास शुरू कर दिया
यह इस तरह था जैसे कि बैठना निरन्तर जारी है
मैं हर रात इस अवस्था में सोता...मैं जल्द ही सुबह उठता
और ऊपर की ओर खींचते हुए एक खिचाव को पाता
और स्वंय को एक विशाल ऊर्जा के आवरण से घिरा हुआ अनुभव करता

थोड़ी दिशा का अनुभव होने और अपने बैठने पर नियन्त्रण पाने पर
मुझे लगा कि ठोस भाग खत्म हो चुका है

मैं अधिक बहता हुआ और तरल हो गया हूँ... मेरे दिन बदल रहे हैं
मैं अपने चलने के पूर्व अनुभवों के साथ प्रयोग करना शुरू कर देता हूँ
चलना और ज्यादा आहिस्ता हो गया... हल्का और प्रफुल्लता से भरा
बचपन के अनुभव अपने आप वापिस होने लगे
और पहले के भाररहित चलने के अनुभव और अधिक गहन होने लगे
फिर भी मेरी चाल बहती हुई महसूस होने लगी
आश्रम में संन्यासियों ने अब मुझ पर ध्यान देना शुरू कर दिया है
पहले मैं उनकी दृष्टि से दूर बैठता था
अब मैं हर रोज बुध्दा ग्रौव के पीछे चलता हूँ और सभी आँखें मुझ पर है
खासकर स्वामी स्वभाव... हमेशा मुझ पर नजर रखते
मैं उन्हे तकलीफ पहुँचा रहा हूँ क्योंकि लोगो ने बातें करना शुरू कर दिया है
कि जिस ढंग से मैं चलता हूँ... भगवान की तरह
कि मेरा नाम रजनीश है... भगवान की तरह
कि मैं उन्हे भगवान की याद दिलाता हूँ
उन के कानों मे खतरे की घन्टियाँ बजनी शुरू हो गयी है

मैं शान्त हूँ... मैं किसी से बात नही करता और वह सोचते है कि मैं गूंगा हूँ
मैं दूसरों की नही सुनता और वह सोचते है कि मैं बहरा हूँ
सच में जल्द ही वह सोचते है कि मैं बहुत घमण्डी हूँ
बाकी सोचते है कि मैं बुध्द होने का ढोंग रचा रहा हूँ... सब से पवित्र होने का

मैं बहुत तल्लीन हूँ और कुछ ध्यान नही देता हूँ
दिन और रात बहुत छोटे हैं... मैं इस प्रयोग में गहन तल्लीन हूँ
और हर दिन का सूत्र अगले दिन की तरफ ले जाता है
मुझे इस पगडंडी का पीछा करना ही है
जो कि मेरे सामने गहराती जा रही है और सुलझती जा रही है
मैं महसूस कर सकता हूँ
कि कोई मेरे आगे आगे चल रहा है और मैं अकेला नहीं हूँ
मेरा एक मार्गदर्शक है जो कि मेरे ऊपर मंडरा रहा है
मैं एक उपस्थिति को महसूस कर सकता हूँ
मेरा शरीर बिना चले ही चल रहा है... कोई इसे आगे ले जा रहा है
मेरे जरा सा प्रयास किये बिना ही यह बढ़ता है... एक बहाव शुरू हो गया है
मैं एक सीधा खड़ा प्रकाश हो गया हूँ और वही मेरे शरीर को संचालित करता है
और भाररहित होने का अनुभव होता है

मैं आहिस्ता आहिस्ता चलने के कुछ अनुभवों को याद करता हूँ
मैं इन प्रयोगों पर हजारों पृष्ठ बोल सकता हूँ

चलना और अपने पूरे शरीर को पाँव से सिर तक चलते हुए महसूस करना
मैं अपने सामने धरती पर ध्यान देता हूँ
अपने चलने पर पूरी तरह एकाग्र हूँ
और चलने की सरल क्रियाओं पर

जैसे शरीर धीमा होता जाता है श्वास भी धीमी होती जाती है
भीतर की एक नयी श्वास प्रक्रिया शुरू हो जाती है
वह शीतल सुगन्धित और मधुर है
वह मेरा सिर ऊपर की तरफ खीचँती है और मैं सोचना छोड़ देता हूँ
सिर्फ मैं और मेरे पाँव के कदम
और कोई विचार नही
सिर्फ एक शून्य आकाश

मेरे सिर में सुईयाँ चुभ रही है
यह पीड़ाजनक है पर फिर भी मस्त करनेवाला

यह मुझे मतवाला बना रहा है
हवा हार्दिकता की एक नयी अनुभूति से
सघन होती जा रही है
और कोई मुझे चारों ओर से पकड़े हुए है

मुझे स्वामी स्वभाव के द्वारा बुलाया जाता है
जो मुझे साधारण हो जाने को बोलते है
और सब से पवित्र होने का नाटक बन्द करने को कहते है
और वह बर्दाश्त नही कर सकते कि मैं बुध्द होने का ढोंग करूं
और भगवान की नकल उतारूं
और वह आगे कहते हैं कि मैं अपना अहंकार छोड़ दूँ और विपासना ध्यान करना
रोक दूँ और कि मैं पागल होता जा रहा हूँ या जल्द ही
हो जाऊँगा और मैं दूसरों की तरफ आश्रम में काम करना शुरू कर
दूँ और सिर्फ साधारण हो जाऊं

हर रोज जब मैं बुध्दा ग्रौव के पीछे चलता
तब मैं उनकी मुझ पर उग्र दृष्टि को महसूस कर सकता था
शायद वह मुझे समझ नही पाये
और कृष्णा हाऊस आफिस में बैठे संन्यासियों के बहकावे में आ गये
नरेन्द्र तोल मोल के बोलने वाला था
मैत्रेय आश्रम की राजनीति से दूर रहता थे और मौन थे
मेरे विरूध्द एक बड़ा विरोध बन रहा था

मैं अब हर रोज २ से ३ घंटा बुध्दा ग्रौव के पीछे चलता हूँ
जहाँ हल्के से बढ़ती हुई चढ़ाई और हल्के से घटती ढलान
चलने का एक श्रेष्ठ मार्ग

मुझे महसूस होता है जैसे एक विशाल खम्भा मेरे शरीर से गुजर रहा है
और साथ ही में मुझे अपने ऊपर
एक गोला मंडराता हुआ महसूस होने लगता है
वह बड़ा गोला मेरे ऊपर की हवा को ऐसे घुमा रहा है

जैसे कि एक लम्बा खम्भा शरीर को नीचे हिलाता हो
मेरे पाँव एक अजीब चाल में चलते रहते है
मैं अपने पाँव धरती पर महसूस नही कर सकता
सिर्फ धरती के ऊपर मंडराने की एक अनुभूति है

दोनों पाँव एक ही हो गये है
दायां पाँव बायें को हिलाते हुए और बायां पाँव दायें को हिलाते हुए

यह एक विचित्र धीमी चाल है
फिर भी यह चाल सन्तुलित धीमी ओर लयबद है
तुम्हे इसके कदमो का पीछा करना ही होगा

एक लम्बा और पतला खम्भा नीचे चल रहे शरीर को हिलाता है
ऊपर मडँराता हुआ एक बड़ा गोला पिछले और अगले
कदम को सन्तुलित करता है

मुझे बहुत ही आहिस्ता चलना है नही तो गोला सन्तुलन खो देता है
और खम्भा अपनी लय खो देता है और मुझे
अपना चलना रोकना पड़ता है

आशा के अनुसार जल्दी ही स्वभाव से मुझे आफिस में बुलावा आता है
मुझे आहिस्ता चलने को रोकने की सलाह दी जाती है और बताया जाता है कि
आश्रम में श्रध्दापूर्वक काम करने के बाद और डायनामिक ध्यान करने के बाद ही
भगवान ने विपासना ध्यान की अनुमति दी है
क्यों कि इससे धरती से सम्बन्ध बना रहता है और
मैं बेवकूफ होता जा रहा हूँ
इस पर ध्यान दो या मुझे मेरे फायदे के लिए जल्द ही
प्रतिबन्धित कर दिया जायेगा
उन्होने मुझे संन्यास दिया है और यह उनका कर्तव्य है
कि मुझे मेरे अंहकार के बारे में बतायें

मैं उन से पूछता हूँ कि असलियत में मुझे किस ने संन्यास दिया
मैंने कहा कि अगर वह संन्यास देते समय उपस्थित थे
तो यह उनका अंहकार है
और कि संन्यास के दौरान व्यक्ति एक खाली बंबू और शून्य होता है
और कि सिर्फ भगवान मुझे संन्यास दे सकते हैं
मैं अपनी माला लौटा देता हूँ
और मुझे आश्रम से प्रतिबन्धित कर दिया गया

मैं अपने चलने के प्रयोगों में गहरा और गहरा जाता रहा
अब मैं रात को होटल के बगीचे में चलता
अनुभव को प्रगाढ़ करने के लिए आँखों में पट्टी बाँध कर चलता

मेरे सहस्रार में एक सुई चुभती और मुझे कस कर खीचँती
मेरी चाल ने आदर्श लय को पा लिया है... एक सन्तुलन इतना श्रेष्ठ
जैसे कि आसमान में लटकती कसी हुई रस्सी के ऊपर चलना
परिपूर्ण सन्तुलन... बायीं या दायीं तरफ गिरने का कोई भय नहीं
शुध्द सौम्यता... शुध्द निर्मलता... शुध्द हर्ष और आनंद
सिर्फ इस गति से धीमे चलना और परमानंद में पहुँच जाना

मेरे चारों ओर सभी क्रियाँए धीमी हो गयी
जैसे कि मैं एक स्वप्न में हूँ
हवा रूक गयी... मेरी श्वास थम गयी
मेरे चारों ओर सब कुछ थम गया
एक बड़ा जँभाई भरता हुआ गड्डा मेरे सामने आता है
अगर मैं हिलूगाँ तो मैं इस गहरे सुराख में गिर जाऊँगा

मैं रूक जाता हूँ पूर्णत: जड़ हूँ
मेरे नीचे की धरती एक गहरी गहरी खाई में खुलती है
मैं नीचे नही देख सकता... मैं इस में निगल लिया जाता हूँ
तेजी से आती एक आवाज मुझे अपने अन्दर सोख लेती है
गहरा और गहरा
मैं सदमें में अचल खड़ा रहता हूँ... अभी भी अन्धेरे में
अनन्त समय जैसे बीत गया हो
और अचानक प्रकाश का एक विस्फोट मेरे चारों और होता है
मैं लाखों चमकती हुई टिमटिमती ज्योतियों को पाता हूँ

क्या मैं एक सुरंग में गिर गया हूँ
या मैं आसमान में ऊपर उठ रहा हूँ
एक लम्बी सुरंग एक प्रकाश का खम्भा मुझे ऊपर की ओर खींच रहा है
मुझे महसूस होता है मेरे पाँव जमीन से उठ गए हैं
गुरूत्वाकर्षण ने मेरे शरीर को छोड़ दिया है

शीघ्र ही मुझे विचित्र अनुभव होने लगे

गोला जिसे मैं अपने ऊपर घूमते हुए महसूस कर रहा हूँ
बड़ा और बड़ा होता प्रतीत हो रहा है
खम्भे का अनुभव अधिक मजबूत होता गया और अधिक धरती में गढ़ता चला गया
मुझे निश्चलता का बोध होता है
मेरा डूबते जाना एक प्रतिबिम्बित घेरे को बनाता है
एक तरह का दर्पण मेरे ऊपर... मुझे नीचे की ओर देखता हुआ
मुझे लोगों के ऊपर मंडराते प्रकाश के गोले दिखने शुरू हो गये है
एक विशेष प्रकार की चमक कुछ लोगों से आती है

मैंने भगवान को कही बार कहते हुए पढ़ा
कि अपनी आत्मा के केन्द्र में जाओ
और मैं दोबारा से अपने भीतर प्रश्न करना शुरू कर देता हूँ

मेरी आत्मा का केन्द्र कहाँ है
क्या यह केन्द्र सीधी खड़ी दिशा में है... क्या यह नाभी का केन्द्र है
क्या यह सहस्रार के ऊपर का केन्द्र है
मैं इन सभी भीतर के मार्गों में कूदने की कोशिश करता हूँ
मैं गहनता से भीतर देखता कि केन्द्र से क्या मतलब है

मैं पूर्णत: उलझन में था कि कुन्डलिनी का अनुभव सीधे खड़े प्रकाश के जैसा
एक लम्बा खम्भा था... क्या यह सीधा खड़ा प्रकाश मेरा केन्द्र था
या मेरे ऊपर मंडराता प्रकाश का गोला मेरा केन्द्र था
पर मैंने हमेशा यही माना कि नाभी मेरा केन्द्र है

मैंने तर्क किया कि जैसे की मैं शरीर नही हूँ
मन नही हूँ... भाव नही हूँ
और मैं सिर्फ एक अनासक्त साक्षी हूँ
शायद केन्द्र शरीर के भीतर नही होगा
और बाहर साक्षी का एक बिन्दु है

मैं तर्क करता हूँ
अगर केन्द्र एक वृत का हिस्सा है
तो गोला ज्यादा सही होगा
और इस वजह से केन्द्र से
अभिपार्य होगा गोले का एकदम केन्द्र

मेरे चलने के अनुभव द्वैत स्वभाव के थे
एक लम्बा सीधा खड़ा प्रकाश का खम्भा
और एक विशाल गोला घूमता हुआ और मेरे ऊपर मँडराता हुआ

मैं इस जिज्ञासा में गहरे जाता हूँ
दोंनो ठीक लगते हैं
सीधा खड़ा खम्भा और गोला
पर कौन सा

जल्द ही मैं गोले को अपना केन्द्र मान कर प्रयोग करने लगा
यह ज्यादा ठीक लगा क्योंकि मैं अनासक्त साक्षी था
शरीरमन की इन्द्रियों के अनुभवों से जुड़ा हुआ नही था
और इससे नयी प्रक्रिया की शुरूआत हुई
अपने ऊपर बाज की निगाह से देखना
दूर क्षितिज से
और मेरे आस पास लोगों को दिखने लगा कि
मेरे चेहरे पर रिक्त और भावरहित मुद्रा है
यह मरा हुआ और प्राणरहित लगता था

इस मरे हुए रूप को बढ़ाते हुए
मैं अन्धकार और रात के कालेपन के साथ प्रयोग करने लगा
मैं सहजता से चुम्बक की तरह खींचता जा रहा था
रात के कालेपन में डूबने के लिए
और अपने कमरे को पूर्णतः गहरा काला बनाने के लिए
मुझे काले से प्रेम था
मुझे याद है वह रातें जब मैं रात के अंधकार को टकटकी लगा कर देखा करता था
ऐसा लगता था वातावरण में बहुत ज्यादा प्रकाश विद्यमान है
और मैं काले में ज्यादा गहरा नही जा पाऊँगा
इसलिए मैंने आँखों में पट्टी बाँधने का फैसला किया और
रात को ध्यान में बैठने लगा

यह मेरे लिए बहुत अधिक प्रगाढ़ होने लगा
और बहुत ज्यादा दिलचस्प भी
यह अनुभव आनंदमय था... मैं इसमें पूर्णतः सोख लिया गया

रात्रि में आँखों पर पट्टी बाँध कर बैठने से नये रास्ते खुलने लगे
और मुझे बोध होने लगा कि मेरा आन्तरिक शरीर असलियत में काला नहीं था
पर वास्तविकता में बहते हुए नीले रंग की अग्नि कणों से भरा हुआ और सजीव था
और कि यह गहरे काले रंग से घिरा हुआ और सुरक्षित था
जिसका स्वरूप मखमली और कोमल था
और जितना गहरा मैं इसमें डूबता

उतना ही मैं अपने आप को शान्ति के आवरण से घिरा पाता
मेरे भीतर का नीला प्रकाश अधिक गहन और सजीव होता गया
मैं जानता था कि मैं किसी तरह के प्रकाश के विस्फोट की तरफ बढ़ रहा हूँ

दो महीने बीत गये हैं
मैं क्षमायाचना का भाव एक संन्यासी के द्वारा स्वामी स्वभाव के पास भेजता हूँ
उनका उत्तर सुन्दर था और उन्होंने मुस्कराते हुए मेरा वापिस आने का स्वागत किया
उनकी हार्दिकता और नरम स्वभाव देख कर उस क्षण से मैं उन्हे स्नेह करने लगा
मैंने महसूस किया कि मैं गलत था
अपना संन्यास और माला वापिस लौटाने के लिए
पर अब स्वामी नरेन्द्र मुझ पर नाखुश थे और उन्होने स्वामी स्वभाव को समझाया
कि मैं अपना संन्यास दोबारा से लूँ और नये नाम से आकाम भारती
यह सब सिर्फ मुझे पाठ पढ़ाने के लिए
और अपने रजनिश नाम का अहंकार छोड़ने के लिए था

मैं अपने रजनिश नाम के प्रति अंहकार रहित था
और यह सब मैंने खुले दिल से स्वीकार किया
कोई भी सोचा गया नाम मेरे लिए ठीक था
इस तरह मैं स्वामी आकाम भारती बन गया
पर सब मुझे सिर्फ रजनीश बुलाते थे

अब जुलाई थी और मेरी समय रेखा खत्म होती जा रही थी
मुझे गुरू पूर्णिमा उत्सव तक बुध्दत्व तक पहॅुचना ही है
बस बीस दिन और

मेरे रोज की गतिविधियों में गहरा बदलाव हुआ
मैं हर कदम सजगता से ले रहा था
और अपने हर हाथ को बोधपूर्वक हिला रहा था
जागरूकता से खड़ा होना या बैठना
हर एक कृत्य या शारीरिक क्रिया को मैं देखता
और मैं धीमे चलने वाले आदमी के नाम से जाने जाना लगा
धीमे चलने वाला आदमी
यह मेरे लिए आसान और सहज था
यह उत्तेजक करने वाला था और मुझे मस्ती का अनुभव होता
सभी क्रियाओं पर ध्यान देना एक आनंद बन गया था
शुध्द आनंद का अवतरण इससे होता था

और इस आनंद के अवतरण के अनुभव से ही मैं अभिभूत हो जाता
यह एक भेंट थी... यह ध्यान की अवस्था मेरे रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा बन गयी

मेरी तीव्रता बढ़ती गई
मैं अपनी कोशिश में लगभग पागल था
मैं पर्याप्त गहरे में न जा पाने के लिए स्वंय को दोष देता
मैं हर रोज सिर्फ ९ घंटे ध्यान कर रहा था
उसके ऊपर रात का सोना जोड़ कर... १९ घण्टे
मैं अनावश्यक चीजों में ५ घंटे बर्बाद कर रहा था
इसलिए मैंने कागज पर लिखा कि मुझे १२ घंटे ध्यान करना है
९ घंटे सोना है
२ घंटे सुबह फुहारा स्नान के लिए और चाय के लिए
और एक घंटा शाम को खाने के लिए

मुझे और अधिक दरवाजों पर दस्तक देनी है
और मेरे मन से अपरिचित अधिक तरीकों से प्रयोग करना है

अपने रात के ध्यान में एक और आयाम को जोड़ने के लिए
मैं हर रात सोने जाता जैसे कि मैं मर चुका हूँ
और गहरे और गहरे में कल्पना करता जाता कि मैं मर चुका हूँ
और वह मेरे शरीर को जलाने के लिए ले जा रहे हैं

मेरी निद्रा हल्की होती गयी और मैं ज्यादातर रातों को पूरी तरह जागृत रहता
इसलिए मैंने यह फैसला किया कि सोने की कोई खास जरूरत नही है
मैं पूर्णत: तरो ताजा और गहरे आराम में था
और मैंने निश्चय किया कि मुझे और अधिक गहरे में जाने की कोशिश करनी होगी

मुझे बोध था कि काफी तलों के अनुभव इक्कठे हो रहे थे
एक तरह का बहुआयामिय विवेक का एकत्रीकरण
जो अब अभिमुख होकर किसी बड़े द्वार को खोल रहा था
यह एक धुंधला अहसास था
फिर भी मैं पक्का था कि मैं अपनी अन्दर की आवाज को सुन रहा हूँ
जो मुझे आश्वस्त कर रही थी कि मैं नजदीक हूँ
किसी चीज के

अपनी समय रेखा से दस दिन दूर

मैंने ७ दिन पूर्ण मौन में बैठने का निश्चय किया और बिल्कुल भी नही हिलने का

सुंदरबन के एक छोटे आँगन में एक छोटा नींबू का पेड़ था
यह अनदेखा बैठने के लिए श्रेष्ठ जगह थी
पूर्णत: कोई विघ्न नही

मैंने अपने आखिरी सात दिनों में डूबना शुरू कर दिया
पूर्णत: दृढ़ संकल्प और अब अत्याधिक प्रचण्डता से एकाग्र

यह सब इन ७ दिनों की अन्तिम चेतावनी से शुआ हुआ

मेरा शरीर बहुत अधिक गर्म होने लगा... मुझे तीव्र बुखार हो रहा था
और लगातार पसीना बह रह था... अपनी नींद में कड़े बुखार में कराहना
अगले दिन शरीर का बर्फ की तरह ठण्डा पड़ जाना
काँपना और काँपना और मेरे दांतो का चटकना
यह सब अजीब था
एक दिन तीव्र गर्मी और दूसरे दिन तीव्र सर्दी
शायद मैंने कुछ ज्यादा ही प्रयास किया
इसलिए मैं सब छोड़ देता हूँ और जोर से प्रयाास करना रोक देता हूँ
क्यों कि मैं इस तरह सिर्फ बीमार ही पड़ूँगा

मेरे शरीर में कुछ कुछ टूटना शुरू हो गया
मैं पारदर्शक वाष्प को अपने चारों ओर महसूस कर रहा था
शीतल और पुष्टिकर... एक खामोश मार्गदर्शक की तरह

प्रगाढ़ता और एकाग्रता ने
मेरे शरीरमन को मेरी इच्छाओं के प्रति आज्ञाकारी बना दिया
मेरी हर इच्छा और अभिलाषा में मदद करना
मैंने बोतल से एक जिन्न को निकाल दिया था

निश्चल बैठना... सिर्फ निश्चल बैठना
मुझे यह बोध होने लगा कि बाहर की हवा खाली नही है
यह चारों ओर ऊर्जा से भरी हुई है और मुझे बाहर से जकड़ रही है
और कि अन्दर से कुछ गहन ऊर्जा मुझे जकड़ रही है
शायद जैसे उन्हे आपस में मिलना था... भीतर और बाहर को एक होना था

इसलिए मैं पूर्णतः निश्चल हो गया
और निश्चलता पर एकाग्र हो गया
भीतर श्वास लेना... बाहर श्वास निकालना
मैंने सिर्फ अन्तराल पर ही ध्यान देने शुरू किया
भीतर आते श्वास के अन्तराल में... बाहर जाती श्वास के अन्तराल में
यह अन्तराल मेरा नया केन्द्र था

कुछ ऐसे पल भी आने लगे जब मैं भीतर या बाहर श्वास लेना भूल जाता
अन्तराल में लम्बे विराम आने लगे
और अचानक एक अहसास कि मैं कही गिर रहा हूँ
सिर्फ गिरता जा रहा हूँ किसी तरह की सुरंग में... इन अन्तरालों में
यह बेहद भयभीत करने वाला था... जब मुझे पहली बार बोध हुआ
मैं श्वासों की बीच अन्तराल में एक बहुत जटिल केन्द्रीय बिन्दु पर था
कई बार श्वास रूक जाने का भय मुझे पूर्ण अंन्धकार में खींच लेता
और मैं एक सुरंग से आती ध्वनि को सुनता जैसे कि मैं शून्य में खीचँता जा रहा हूँ
यह बहुत डराने वाला था पर बहुत दिलचस्प भी

जैसे जैसे मेरी निश्चलता अधिक और अधिक गहन होती गई
मुझे निश्चलता फैलती हुई महसूस होने लगी

नए अनुभव होने लगे

मेरे शरीर से चमेली की सुगंध आने लगी
गंध इतनी अभिभूत करने वाली थी कि वह मुझे मस्त करने लगी
और मेरी आँखों की पलके भारी और भारी होने लगी
मतवालापन बेहद घना और गाढ़ा
मैं एक भाव समाधि की दशा में घूम रहा था
घनी निद्रा मुझे चारों ओर से लपेटे हुई थी

मैं अपनी रोजमर्रा की क्रियाओं में अपने दिमाग की पकड़ खोता जा रहा था
यह मतवालापन बस अभिभूत करने वाला था
मैं परमानन्द में चला गया और मैंने सब छोड़ दिया
अब कोई दिनचर्या नही
सिर्फ इस भाव समाधि के साथ रहो और इसे अपने ऊपर पकड़ बनाने दो

ध्वनि का अनुभव विचित्र हो रहा था
यह ऐसा था जैसे कि ध्वनि हर जगह से आ रही हो
और मैं उसके अन्दर बैठा हूँ... लहरें जैसे वृत में घूम रही हूँ... मेरे चारों ओर
इसे मैं जितना अनुभव करता उतना अधिक मैं अपने मौन के प्रति सजग हो गया

यह सुनने की सहनक्षमता से बाहर हो रहा था... लहरे मेरे चारों ओर
मौन गहराता जा रहा था
मैं गुंजन की ध्वनि में डूबता जा रहा था
गुंजन जैसे की लाखों मधु—मक्खीयाँ मेरे सिर में हो
कभी कभी यह गुंजन बहुत ऊँचा था... सहनशक्ति से बाहर
पर यह मेरे नियन्त्रण से बाहर था

मेरा स्पर्श विस्तरित होता गया
जिस चट्टान पर मैं बैठता था वह बिल्कुल पंख की भान्ति लगती
मैं महसूस कर सकता हूँ कि मेरे हाथ सजीव है और स्पर्श करने पर पंख जैसे लगते हैं

मैं अब हमेशा ऊपर की तरफ देख रहा हूँ
मेरी भौंहो के बीच का स्थान एक सम्मोहन की दशा में था
मेरे माथे को एक ताकत ने शिंकजे में कस लिया था
और वह इतनी शक्ति से दबा रही थी कि छेद हो सकता था
मैं नीचे नही देख सकता था
मेरी आंखें हमेशा आसमान में ऊपर की ओर देखती
जैसे कि प्रतीक्षा कर रही हो मेरे सामने किसी के प्रकट होने की

जल्द ही मेरी अंदर की इन्द्रियों ने बाहर की ओर जाना शुरू किया
मैं महसूस कर सकता था कि वे भी भीतर की ओर बढ़ रही है... एक विलीनता
अन्दर से बाहर और बाहर से अन्दर
संवेदनशीलता बढ़ रही थी... कोई भी दीवार नही बची थी
मैं भाप बन रहा था

मेरा शरीर ने बढ़ना और गुबारे की तरह फैलना शुरू कर दिया
मैं महसूस कर सकता था हवा के प्रवाह का... मेरे साथ विलीन होना

किसी तरफ से भी नहीं और हर तरफ से
आकाश से, धरती से, घास से, पेड़ों से, चट्टानों से, पवन से
सभी सजीव हो रहे थे और सब कुछ प्रवाहित हो रहा था
मेरा शरीर अदृश्य हो गया था
मैं बिल्कुल पारदर्शक और असुरक्षित था

परतें और परतें मेरे सामने अचानक खुलने लगी
मैं बहुत प्रयास कर रहा हूँ इन अनुभवों को सम्भालने और नियन्त्रित करने का
ढेर सारे अनुभव सभी मेरे अंदर प्रवाहित हो रहे है

मुझे शौच के लिए जाना है
मुझे महसूस होता है बड़े शौच का सहज ही निकल जाना
मेरे अन्दर से सब बाहर बह गया है
मेरे शरीर किसी के लिए तैयारी करता लग रहा है

त्वचा के रोम रोम से कुछ बाहर की ओर रिसना शुरू हो गया है
शहद की तरह गाढ़ा यह पूरी त्वचा से बाहर की ओर बह रहा है
मैं चिपचिपा हो गया हूँ
शरीर मलाई की तरह हो गया है और शिशु की तरह कोमल

मैं महसूस करता हूँ जैसे कि लम्बी कुण्डलिनी का
तेज प्रवाह आकाश में सीधी खड़ी दिशा में खुल गया है
मेरे सिर में अचानक से दबाव बढ़ना शुरू हो गया है
अचानक दबाव गिर जाता है
मेरी खोपडी के अन्दर दबाव बहुत पीड़ाजनक है
और मैं अपने भीतर रोना शुरू कर देता हूँ
और कामना करता हूँ कि यह सब किसी भान्ति थम जाए
यह बहुत ज्यादा था... कोई बस इसे रोक दे... मेरा विस्फोट हो रहा था

बरसात होनी शुरू हो गयी है
मेरी श्वास साफ होती जा रही है और खुल रही है
मेरे पूरे शरीर में छिद्र हो गये है पूरा शरीर श्वास ले रहा है
मैं स्वंय श्वास बनता जा रहा हूँ

मैं एक छाता ढूढंता हूँ
पर वह मेरे सिर के ऊपर नही रहता
क्यों कि वह उग्रता से दायीं ओर घूम जाता है
मैं उसे दोबारा से अपने सिर के ऊपर लाने की कोशिश करता हूँ

वह बांयी ओर घूम जाता है
मैं छाते को अपने ऊपर नही रख पाता... मैं इसे जाने देता हूँ... बरसात आ रही है
आश्चर्यजनक ढंग से मैं अपने ऊपर से बरसात को हटते देखता हूँ
बरसात मेरे ऊपर गिर नही रही
इस सीधे खड़े प्रवाह की गति बरसात को विभाजित कर रही है
मै ऐसे चल रहा हूँ जैसे कि जादुई स्वप्न में हूँ

पेड़ और हरियाली अति संवेदनशील हो गये हैं
हवा प्रकाश से भर रही है और दमक रही है
रंग बरसात की बूँदो पर इन्द्रधनुष की तरह नाच रहे हैं
जो कुछ भी मैं देख रहा हूँ वह अधिक और अधिक दीप्तीमान हो रहा है
तरह तरह के रंगो से हर दिशा में प्रकट हो रहा है
हर पल सजीव है परिवर्तन की नवीनता से
पर यह बहुत बड़ा अनुभव है मेरी इन्द्रियों में समाने के लिए प्रवाह बहुत तीव्र है
यह सब बहुत ज्यादा था... एकाएक अचानक

पहली बार मैं अपने ऊपर कुछ बड़ा और काला मंडराता देखता हूँ
वास्तविकता में मुझे बहुत डर लग रहा था

मैं मार्गदर्शन के लिए आश्रम की ओर भागता हूँ
और स्वामी स्वभाव से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे कुछ दिनों के लिए
भीतर रहने दिया जाए

आश्रम को जुलाई उत्सव के लिए तैयार किया जा रहा था
उत्सव में आने वाले लोग आश्रम के अन्दर रहने के लिए पैसे दे सकते थे
मेरी प्रार्थना स्वीकार नही की गई
इस उत्तर के साथ कि उन्होने मुझे हमेशा चेतावनी दी कि मैं पागल हो जाऊँगा
कि मैंने कभी किसी की नही सुनी
और अब अपने आप ढूँढो

मैं स्वामी मैत्रेय के पास जाता हूँ वह सिर्फ मुस्कराते है और कहते हैं
उन्हे नहीं मालूम क्या करना चाहिए और कहते है कि स्वामी नरेन्द्र जो जानते है
उनसे पूछो... स्वामी नरेन्द्र मेरी दशा को देखते है... मुझ से वह किसी तरह से
सम्बन्धित नही होना चाहते... पर सौम्यता और प्यार से मुझे सलाह देते है
'अपने सिर को ढक लो और धरती से सम्बन्ध बिठाने के लिए खाना खा लो'
मैं उन्हे धन्यवाद देता हूँ और उनकी सलाह पर अमल करता हूँ

मैंने पिछले कुछ दिनों में खाना नही खाया था
और आश्रम का खाना मुझे नीचे उतार लाता है

मैं अपने सिर को रूमाल से ढक लेता हूँ
संन्यासिन मेरी तरफ अजीब ढंग से देख रहे है
मेरी आँखे बहुत अजीब और मदोन्मत लग रही है
जो भी मेरी तरफ देखता है वह मेरी आँखों से बंध जाता है
मेरी तीसरी आँख सक्रिय हो गयी है
एक संन्यासी मेरा पीछा करता है पूछते हुए कि क्या वह मेरे लिए कुछ भी कर सकता है कुछ भी मेरे लिए ला सकता है... कुछ भी आग्रह से
उसकी आँखे बंधी हुई है... वह सम्मोहन में है... मेरे आकर्षण में बंधा हुआ है
मैंने प्रेम से उसे इस बन्धन से निकालने की कोशिश की
लोग देख रहे है उसे मेरे पीछे श्रध्दा से आते हुए वे गपशप करना शुरू कर देते है

मुझे लगता है कि अब मैं सुन्दरबन में वापिस जाने की हालत में हूँ
सड़क में अन्धेरा है... धरती को अब मैं महसूस नही कर सकता
मैं अपने कदमों को अनस्तित्व के अन्धेरे सुराखों में रखता हूँ
मुझे किसी तरह अपना सन्तुलन बनाये रखना है
मुझे लगता है मेरा बांया भाग गिर गया है... दांया भाग गिर गया है
एक लम्बा सीधा खड़ा प्रकाश का किरण पुंज अब मेरा मार्गदर्शक है
एक खुली सुरंग
कुण्डलिनी खुल गयी है और मैं अपने आप को
आसमान में १०० मीटर लम्बा महसूस करता हूँ... आश्रम के पेड़ों के ऊपर

ऐसा लगता है अब यह अनुभव नही रूकेंगे

मैं होटल के भीतर प्रवेश भी नही कर सकता
मुझे अनुभव होता कि मैं पीस जाता हूँ जब भी गलियारे में प्रवेश करता हूँ
मैं पूरे मार्ग को महसूस कर सकता हूँ
दूर पर खुली खिड़की को भी महसूस कर सकता हूँ
मेरा शरीर गलियारे के ठीक मध्य में बहता है
मोड़ पर ठीक बांये मुड़ता है... सब कुछ अपने आप ही
मुझे बोध होता है कि मुझे किसी शक्ति के द्वारा केन्द्रित किया जा रहा है
कि किसी नई सम्पूर्णता का अनुभव हो रहा है
अगर मैं अपना दांया हाथ हिलाता हूँ तो बांया हाथ सौम्यता से पीछे आता है
और दांया कदम बांये को बढ़ाता है
हर ऊपर की तरफ उठती क्रिया नीचे जाती क्रिया को सन्तुलित करती है
और अगली क्रिया पीछे वाली को

मैं शुध्द पूर्णता हूँ
मेरी क्रियाओं में शुध्द सौम्यता है
आनंदमय सौम्यता एक नये दैविक ढंग से प्रकट हुई है

ढका हुआ सिर अस्थायी रूप से खोपड़ी में चुभन को शान्त कर देता है
पर खाना दोबारा से ऊर्जा के एक नये प्रवाह को लाता है
सिर का प्रकाश में विस्फोट हो जाता है
रात के संघर्ष का कोई अन्त नहीं

मुझे याद है ८ बजे के लगभग
एक आयाम से मैं पूर्णत: आनंद में
और दूसरे आयाम में मैं निरे आतंक में
कितना ज्यादा घट रहा है... मैं होटल के भीतर नही जा सकता

आज की रात मैं आंगन में नींबू के पेड़ के नीचे रहूँगा

थका हुआ और इन अचानक बदलावों से पूर्णत: शक्तिहीन
मैं पेड़ के नीचे बैठता हूँ और ऊपर देखता हूँ
रहस्यमय काला चक्र जो मेरे ऊपर बह रहा था
अब कुछ फीट ऊपर मंडरा रहा है

सघन चमेली मुझे अभिभूत कर रही है
मैं इन सब अनुभवों से पूर्णत: शक्तिहीन हो चुका हूँ

मुझे लगता है मुझ पर काले का आवरण हो रहा है
और मैं गिरता गिरता गिरता गिरता
अनन्त गिरता हूँ

एक काले गड्ढे में
एक काले चक्र में

यह सब घण्टों चला होगा
पर मैं तुरून्त ही जाग जाता हूँ
मैं देख सकता हूँ
अपने भीतर से
कि मैं किसी चीज में गिर गया हूँ

गिरना अभी भी जारी है
पर सौम्यता और बहुत आराम से
एक सुरंग से
एक कोमल पंख के गिरने के जैसा

मैं एक नया जगत देख रहा हूँ
सब प्रकाश है
सीधे खड़े अनुभवों की झलकियाँ मेरे सामने आती है
मैं अपने पिछले जन्मों को मेरे सामने शीघ्रता से गुजरता देख सकता हूँ
एक क्षण में
कुछ सैकण्ड में

किसी तरह मैं सब कुछ अनुभव कर सकता हूँ और देख सकता हूँ
और सब कुछ याद कर सकता हूँ
संक्षिप्त और प्रगाढ़ ढंग से
सब कुछ छह आयामीय हो जाता है

मैं सब कुछ एक साथ देख स्पर्श महसूस और अनुभव कर सकता हूँ
सब कुछ सजीव जैसे कि यह असली दुनिया है
और असली दुनिया सिर्फ काल्पनिक
मैं देखता हूँ बुध्द के साथ अपना एक जीवन
तिब्बतियन लामा के रूप में अपना एक जीवन
इन देख रही आँखे के सामने दृश्य फैल रहे हैं

मैं देखता हूँ मेरा शरीर इन स्मृतियों को दोबारा से जी रहा है
आगे बढ़ रहा है और छोड़ता जा रहा है
मधुरता से इन अनुभवों को

मैं देखता हूँ मेरा शरीर कराह रहा है और सौम्यता से भीतर की तरफ आ रहा है
मांसपेशियाँ गहरे विश्राम में जाते हुए
इन सब जीवन की ग्रंथियों को खोल रही है

यह चित्र अनन्त चलता रहता है
जानवरों की जिन्दगी में
आखिरी चीज जो मुझे याद है
मछली की तरह तैरना

सागर में

ऐसा लग रहा है अनंतकाल बीत चुका है

मुझे नही मालूम यह कितनी देर चलता है
काले चक्र में मुझे समय की कुछ अनुभूति नही है

मैं काले चक्र में अचेत हूँ
मुझे बोध होता है मेरे ऊपर मंडराती एक विशाल उपस्थिति का

यह अभी अभी अवतरित हुई है और मुझे आवरण में ले लिया है
किसी तरह मैं जानता हूँ यह एक दिव्यात्मा का आना है
जिन्हे मैं पहले से जानता हूँ

मैं सुनता हूँ और पहचानता हूँ मधुर और सौम्य आवाज को
अपने पिछले जन्म से
एक दीप्तिमान प्रकाशमय आत्मा

गौतम बुध्द
अवतरित हुए हैं

मैं असहाय अचेत पड़ा हूँ
सिर्फ असहाय और अचेत

मैं अपने भीतर से देखता हूँ
उनकी मेरे ऊपर उतरती कृपा को
मेरे भव्य पहुँचने के लिए

उनकी उतरती कृपा और मनुष्य जाति पर उनके कार्य करते रहने की इच्छा
मैं उनके शब्दों को अनुभव कर सकता हूँ और सुन सकता हूँ
उनके दुनिया में वापिस आने के बारे में
उनके शब्द उनके महान वचन को पूरा करने के बारे में भरे हुए हैं

मैं आकाश में उठता हुआ अनुभव करता हूँ
उनके ह्दय की प्रत्येक अभिव्यक्ति से
उनकी आत्मा की अखंडता से
उनके सान्निध्य की शक्ति से
उनके मनुष्यजाति के प्रति वचन से

बुध्द के वापिस आने का वचन
२५०० साल बाद
मैं उनका चुना गया माध्यम था
मुझे जाना जाता
मैत्रेय
एक मित्र

प्रकाश का मिलन घट रहा था
मुझे महसूस हो रहा था मेरा भौतिक शरीर भीतर से बदल रहा है

मेरी कमर बड़ कर अधिक हृष्ट पुष्ट हो गयी है
मेरा जबड़ा फैल गया है... मेरे हाथ फैल गये है
मेरी उँगलियों ने अभिव्यक्त करने जैसी एक नयी मुद्रा बना ली है
मेरे पाँव चौड़े हो गए है
मेरे शरीर को ले लिया गया है

मैं अभी भी आधी सम्मूर्च्छा में हूँ
सर्जरी कई तलों पर हो रही है
गहरी मदहोशी में
मैं पूर्णत: आनन्द में हूँ
आनन्द में हूँ... आनन्द में हूँ

मैं बड़े प्रकाश के विस्फोट के साथ जागता हूँ
जैसे कि सूरज मेरे सिर पर उतर आया है
खोपड़ी कही नहीं है
मैं अपने सिर के ऊपर से देख सकता हूँ
दमकता हुआ असहनीय प्रकाश
मेरे सिर पर प्रवाहित हो रहा है
मैं अंधा हो जाता हूँ
पूर्णरूप से अंधा

मैं अपनी आँखें नही खोल सकता
वह चट्टान की तरह भारी है
मैं अपने शरीर को हिला नही सकता
मेरे पास बिल्कुल ही कोई ताकत नही बची है
मैं पेड़ के नीचे जड़ लेटा हूँ
पर मैं जागा हूँ

मैं बहुत दूरी सें छत के ऊपरी भाग को देख सकता हूँ... आश्रम के पेड़ों को
मैं देख सकता हूँ आँगन में नीबू के पेड़ के नीचे पड़े मेरे शरीर को
कोई कृपया आये और मेरी चलने में मदद करें
मैं एक चट्टान की भान्ति हूँ... चट्टान की तरह भारी
अपना शरीर स्वंय नही उठा सकता

मेरी इच्छा कि मैं उठ पांऊ
और इस इच्छा के साथ मैं आश्चर्य जनक ढंग से
अपने शरीर में सोख लिया जाता हूँ
मैं पीड़ा का अनुभव करता हूँ और सर्जरी के बाद के भारीपन का

रात को क्या हुआ मुझे कुछ खास याद नही है
सिर्फ काले चक्र में गिरने की स्मृति
सागर में मछली की स्मृति

और स्वंय को स्वंय से अपरिचित पाता हूँ
मैं अपने शरीर को पहचान नही पाता और ना ही इस में हुए बदलाव को

मैं अलग ढंग से चलता हूँ... मैं अलग ढंग से खड़ा होता हूँ... मेरे हाथ भिन्न हैं
मेरा चेहरा बड़ा है और बदल गया है
मैं अन्दर और बाहर भिन्न अनुभव करता हूँ
बस मैं कौन हूँ

जैसे ही मैं सीधा होकर बैठता हूँ
एक विशाल बवण्डर मुझे अपने अन्दर निगल लेता है
और एक प्रकाश छनता हुआ मेरे भीतर आना शुरू होता है

ओह नहीं... कृपया अब दोबारा से नहीं... यह मेरे साथ बहुत हो चुका
मैं एक लम्बे सीधे खड़े प्रकाश के खम्भे को दोबारा से खुलते देखता हूँ
मुझे अपने ऊपर एक जबरदस्त लहर अवतरित होती प्रतीत होती है
और मैं दोबारा से सोख लिया जाता हूँ
और मैं दोबारा से भीतर गिर रहा हूँ

मैं उतरता हूँ उतरता हूँ भीतर ही भीतर
और जल्द ही उस बिन्दु को पहचानता हूँ जहाँ मैं आखिरी रात को आया था
मैं एक गोलाकार छेद को देख रहा हूँ जो एक सुरंग में खुल रहा है
एक चमकता हुआ प्रकाश उसके अन्त में है
मैं दोबारा से भीतर हूँ... अपनी नाभी के पीछे
इसका मतलब मैं अब अपना शरीर छोड़ने वाला हूँ
मैं तैयार हूँ
इस सब को खत्म होना होगा

पर उतरना जारी रहता है
मैं अब नाभी के नीचे गिर रहा हूँ... और डर जाता हूँ
मेरे विचार कोशिश करते है और उभर आते हैं
मैं गलत द्वार पर हूँ... मुझे नाभी से ही बाहर निकलना चाहिए
ना की काला चक्र से जो कि मेरे सामने है

मैं मजबूती से विरोध करना शुरू कर देता हूँ
मैं आगे और पीछे झूलकर लम्बे सीधे खड़े प्रकाश के
खम्भे को हिलाना शुरू कर देता हूँ
मुझे इस काले चक्र के अन्दर दोबारा से नही गिरना है
मुझे सचेत ही रहना है
मुझे नाभी से ही शरीर को छोड़ना है

अपनी चेतना को जगाये रखने के लिए मैं आगे पीछे हिलता हूँ
हिलना है हिलना है हिलना ही है
जीवित रहने के लिए अब एक बड़ा संघर्ष शुरू हो चुका है
यह एक जबरदस्त संघर्ष है
कुण्डलिनी ने मुझे मजबूती से पकड़कर निश्चल रखा हुआ है
मेरी खोपड़ी ने महसूस करना शुरू कर दिया है कि वह फट रही है
मैं अपनी खोपड़ी के अन्दर थोड़ी चरमराहट सुन सकता हूँ
यह घातक होता जा रहा है और बहुत खतरनाक
मैं अपना जीवन कैसे बचाऊँ
यह संघर्ष लगभग एक घंटे तक चलता है

आखिरकार कुछ चीज रास्ता दे देती है... कुण्डलिनी शान्त हो जाती है

मुझे बोध होता है कि कोई दूसरी आत्मा मेरे शरीर के ऊपर मंडरा रही है
उसके अलावा एक आत्मा है
तीन बड़े प्रकाश के गोले मेरे ऊपर है

मुझे समझ नही आता वे कौन है
वह सब इस संघर्ष को देख रहे है

मैं असहाय अनुभव करता हूँ
शायद यह बहुत अधिक था बहुत अचानक
मैं इस अवतरण के लिए तैयार नही था
मेरा शरीर बहुत ही नाजुक था
तैयार नही था
मेरा संकल्प मजबूत था पर मुझे अनुभव नही था
मुझे हार माननी होगी यह जो कुछ भी था

मैं शान्ति से देखता हूँ और महसूस करता हूँ
बुध्द मुझ पर करूणा और विवेक के साथ दोबारा से कृपा बरसा रहे हैं
मैं उनका कहना अनुभव कर सकता हूँ
कि मेरी तैयारी हो जाने तक वह प्रतीक्षा करेंगे
और वह सौम्यता से मुस्कराते हैं
और शालीनता से उनके ऊपर दूसरी आत्मा में विलीन हो जाते है

मैं होशपूर्वक हूँ पर बहुत चकाचौंध और उन्मत दशा में हूँ

मैं उठना चाहता हूँ और जितना जल्दी हो सके
उतना जल्दी इस जगह से दूर जाना चाहता हूँ
और सीधा अपने घर के सामने खुले बगीचे में जाना चाहता हूँ
इस पिछले घण्टे के संघर्ष की वजह से... मैं पूरी तरह से थका हुआ हूँ
हिलना चाहता हूँ... साँस लेना चाहता हूँ और कुछ सामान्य अनुभव करना चाहता हूँ
खुले में चल कर स्वंय को सन्तुलित करना चाहता हूँ

मैं बगीचे में चलता हूँ और दोबारा से ऊपर की तरफ खींचता जा रहा हूँ
मेरी आँखे ऊपर देखती है
आसमान बादलों से घिरा है
बादल हट जाते है

आसमान खुलता है
नीला आकाश विस्फोटित हो जाता है

एक चमकदार सफेद चाँदी के रंग की सुरंग स्वंय को प्रकट करती है

मैं स्तब्ध हूँ

मैं प्रकाश के सबसे अधिक चमकते गोले को देखता हूँ
हीरों का प्रकाश उतर रहा है

भगवान जुड़े हुए हाथों से प्रणाम करते हुए
सौम्यता से मुस्कराते हुए और धीमे धीमे बहते हुए मेरे तरफ नीचे आते हैं

मैं मर चुका हूँ और स्वर्ग जा चुका हूँ
मैं विश्वास नही कर सकता मैं अपने सामने क्या देख रहा हूँ
सबसे अधिक दिव्य और अलौकिक भव्य दृश्य
धरती थम गयी है

मैं उन्हें प्रणाम करते हुए घास पर गिर जाता हूँ
मेरे आँसू बेकाबू हो चुके हैं
मैं ऊपर देखता हूँ

वे मुस्करा रहे हैं और हल्के से सांत्वना देते हैं

मैं इन आँसुओं की बाढ़ को रोक नही सकता
अपनी आँखें पोंछ कर देखता हूँ कि क्या यह सच है
वे अभी भी मँडरा रहे है और देख रहे हैं

खुशी के आँसुओं की बाढ़ जारी है
मैं दोबारा से ऊपर देखता हूँ
वे मुस्कराते हुए बह रहे हैं

उनकी उगलियाँ सौम्यता से इशारा करती है
मेरे समीप एक लाल गुलाब की ओर
मैं देखता हूँ धीमे से एक गुलाब की कली को खिलते हुए

वे मुस्कराते हैं और कहते हैं
तुम ओस की बँद हो इन गुलाब की पंखड़ियों पर

मेरा आशीष तुम पर
तुम घर पहुँच गये हो

मैं तुम्हारा उत्सव मनाता हूँ

उनकी आँखें हीरों की तरह टिमटिमाती है
वे मुस्कराते हुए मुझे गहराई से देखते हैं

और धीमे से सुरंग में उदीयमान हो जाते हैं

प्रणाम में हाथ जुड़े हुए
नीले गगन में

मैं आसमान की तरफ घूरता रहता हूँ
गुरू का परम रहस्य मेरे सामने खुला है

जब शिष्य तैयार होता है तब गुरू प्रकट हो जाते है

मुझे एक पल में सब कुछ समझ आता है
कि वे मुझे पूरे संघर्ष में देख रहे थे

और मैं एक पागल आदमी की भान्ति हँसना शुरू कर देता हूँ
अब रोना अब हँसना
अब रोना अब हँसना

एक गहरा मौन मेरे हृदय में उतरता है
एक शान्ति जो कि समझ के बाहर है

मैंने जाना है
मैंने देखा है

दृष्टा जाग गया है

दिन बादलों से घिरा है
हवा में कोहरा छाया है

खिला गुलाब मेरी तरफ देखता है
उसकी खुशबू पवन की तरफ

एक रहस्यदर्शी गुलाब

मैं आनन्द में हूँ... मैं आनन्द में हूँ
आनंद की वर्षा हर तरफ से हो रही है
कोई इतनी ज्यादा आनंद की दशा कैसे सम्भाल सकता है
मैं बहुत अधिक आनंद से मर रहा हूँ... मेरा दिल फट रहा है

जिस क्षण मैंने भगवान को आकाश से उतरते देखा
और उन्होंने अपने आप को प्रकट किया... सब कुछ रूपांतरित हो गया

यह जादुई बदलाव था
और एक अपार छलांग
एक पूरा नया मनोविज्ञान मेरी चेतना के अंदर आ गया था

जो कुछ भी मैंने पढ़ा था... वह सुस्पष्ट हो गया
सभी प्रश्न एकदम से उड़ गये... सभी असत्य गायब हो गये

पुराना शरीरमन और उसकी अशान्ति जो मेरे भीतर थी
सब पिघल कर विलीन हो गया... एक नये अद्वैत अनुभव की दशा
शान्ति, आनंद और प्रकाश

और देख कर
शरीरमन को समझकर और जान कर
विवेक का प्रकाश बहुमुखीय परतों से छन छन कर गुजरा

दृष्टा आत्मा है

जिज्ञासु और जिज्ञासा गायब हो गये

अब दृष्टा ही है

मैं ब्रह्माण्ड के साथ नाच रहा था और पवन के साथ मुस्करा रहा था
आत्मिक सृष्टि के साथ मधुरता से बात कर रहा था
हर एक पल आनन्द मना रहा था

उस एक क्षण में
मैं सृष्टि के एक दूसरे तल पर जी रहा था
मुझे बोध हुआ कि हम सब सृष्टि के अलग अलग तलों पर जीते हैं

सरल शब्द जो विवेक की बहुत उंचाईयों से कहे जाते हैं
उनको किन गहराईयों में अनुभव किया जाता है
यह पूरे के पूरे मनोविज्ञान को बदल देता है
और उन शब्दों को अलग अलग ढंग से समझा जाता हैं

मैं जो कहना चाहता हूँ उसे मैं अभिव्यक्त भी नही कर सकता
यह पूरी सच्चाई की एक झलक भर है

यह कहना ही होगा
मौन भी नही रहा जा सकता
वह मौन भी निरर्थक होगा

यह निरा भव्य हैं... यह सुन्दरता हैं.... यह सौम्यता है... यह शुध्द प्रेम है...
यह प्रकाश है... यह संभोग की परम दशा है और अनन्त आकाश से भी विस्तृत है
यह हर जगह विद्यमान है

सत्य हर जगह था
हर एक तन्तु जिसे मैं देखता वहाँ सत्य विद्यमान था
पूरे आकाश में व्याप्त और उसकी रिक्तता में भी
आकार में और निराकार में

ओह क्या आश्चर्य... क्या चमत्कार
आदमी सागर में एक मछली की भान्ति है
पर अपने स्वंय के जीवन के स्त्रोत के प्रति अबोध

सत्य एक खुला आसमान है
एक खुला रहस्य... सब के देखने के लिए छिपा हुआ

अनन्त आनंद

मैं घर आ गया हूँ
यह मेरा ब्रह्माण्ड है
मैंनें जन्मों सत्य को खोजा है
और वह मुझे हर दिशा से घूर रहा था

मैं मर कर पुन: जीवित हो गया हूँ
मैंने भगवान से अपना वचन पूरा कर दिया है

यह गुरू पूर्णिमा दिवस का उत्सव है जुलाई १९८६
मेरी आँखें आसुँओं से गीली हैं

मुझे मौन होना है और अनन्तता को आत्मसात करना है
और इस नये ब्रम्हाम्ड को... जो मैं अपने सामने देख रहा हूँ
मुझे शान्त होने की जरूरत है
इस को भीतर समा लेने और इसके अनन्त तात्पर्य को समझने के लिए
मुझे समय की जरूरत है स्थिर हो जाने के लिए और इस सब को धीरे धीरे
अपने भीतर आने देने के लिए

पर मैं इससे अधिक नही बैठ सकता... मेरा नाचने का मन कर रहा है
सत्य के जानने के इस विस्फोटक आनन्द को फैलाना चाहता हूँ
अपने संन्यासियों की तरफ... अपने मित्रों की तरफ जिन्हे मैं प्रेम करता हूँ

सिर्फ ९० दिन में पहुँचना
एक क्रान्ति को जन्म देगा... उन में एक आग लगा देगा
मैं रोज उनके बीच घूम रहा था... सिर्फ एक आम आदमी
मैं स्त्रोत और प्रेरणा बन जाऊँगा कि वे सब भी पहुँच सकते हैं
कि वे भी जल्द ही डूब सकते है संभोग की इस परम दशा वाले आनंद में

मेरा ह्दय उनके लिए तड़पता है... वे सब इस के पात्र हैं
हर एक आदमी इस का पात्र है

मैं एक नई आनंदमय सौम्यता के साथ चल रहा हूँ
गुरू पूर्णिमा दिवस का उत्सव मनाने के लिए... द्वाररहित द्वार से बहते हुए
मैं हर्षो उल्लास में शामिल हो जाता हँ... सब के साथ भगवान का उत्सव करते हुए

बुध्दम् शरणम् गच्छामी
संघम शरणम् गच्छामी
धमम् शरणम् गच्छामी

वे सब चाँगत्सु हॉल में है... मै लाऊत्सु द्वार से प्रवेश करता हूँ
असीम आनंद के साथ मैं अनुभव करता हूँ कि मैं अब इस पवित्र जगह का
हिस्सा हूँ जहाँ भगवान रहते हैं
धीमी धीमी बारिश हो रही है... हवा रहस्य से भरी है
एक नवीन ऊर्जा से लबालब है
मैं मधुरता से उत्सव में शामिल हो जाता हूँ... चाँगत्सु हॉल में मैं नाचता हूँ
और नाचता हूँ कीर्तन पर और भगवान के गीत हवा को भर देते हैं

लाऊत्सु... धरती पर स्वर्ग... यही है वह जगह जहाँ बुध्दत्व के कमल खिलते हैं

मैं इच्छा करता हूँ कि एक दिन मेरा इस तरह का मन्दिर जैसा शयनकक्ष हो
और एक बड़ी गोलाकार जगह जिसके चारों ओर बगीचा हो
मैं आनंद में डूबा हुआ हूँ

मैं काफी आँखों को मुझे घूरते हुए देख सकता हूँ
संन्यासी मेरे चारों ओर कुछ नयी उपस्थिती को अनुभव कर रहे हैं
वे क्रोधित लगते हैं कि मैं इतनी स्वतंत्रता से कैसे नाच रहा हूँ
उन्होनें मुझे पहले कभी नाचते हुए नहीं देखा है
सिर्फ गम्भीर और हमेशा धीरे चलते हुए
और अपने कदमों के आगे देखते हुए
मैं उनके क्रोध को समझ नही पाता
वह फुसफुसाते हैं और मेरे नजदीक आने से घबराते हैं

मैं हमेशा उनके लिए एक गैर था
धीरे धीरे उन्हे मेरी आदत हो गयी... उन्होनें मुझ पर हँस कर
और मेरे धीमे चलने के बारे में हँसी मजाक कर मुझे सहन कर लिया

पर अब मैं और भी ज्यादा अपरिचित था
यह उनके लिए कुछ नया था उन्होनें अपना हँसना छोड़ दिया
उनके चुटकुले मेल नही खाते थे... इस नये जगत के साथ जो मेरे अन्दर था
और अब यह एक ताने में बदल गया कि मैं बुध्द हो गया हूँ

मैंने एक शब्द भी नही बोला था
मैं पूर्णत: आनंद में खोया था और अवाक् था
पर मेरी उपस्थिती ही... मेरा हर कृत्य ही
मेरी बहती हुए चाल... मेरे चारों ओर की सुगन्ध
सब कुछ उन्हें भगवान की याद दिलाता था

उन सब ने यह कानाफूसी करनी शुरू कर दी कि मैं स्वंय को बुध्द सोचता हूँ
कि मैं भगवान होने का ढोंग कर रहा हूँ

मैं हैरान था... क्या किसी तरह से ये सब मन को पढ़ने लगे है
क्या वे अब मेरे मन को पढ़ सकते है और स्वंय के लिए फैसला
कर सकते है कि मैं क्या सोच रहा हूँ
और तब कह सकते है कि यह वही था जो मैं सोच रहा था

मुझे बोध हुआ यह सिर्फ आगे आने वाली अधिक कुरूपता की शुरूआत है
यह असली दुनिया थी जिसमें मैं प्रवेश कर रहा था

आध्यात्मिक अंहकार की दुनिया... सत्ता पाने की फिराक में रहना
संघर्ष करना... धारणा बनाना... ईश्या करना और यंत्रणा देकर मार देना

किसी ने मेरे पास आने का भी कष्ट नही किया
अपनी आँखें बन्द कर... मुझसे यह नही पूछा कि आपके साथ क्या हुआ है
सिर्फ एक इन्सान की तरह... एक साथी मुसाफिर के नाते
उन सब ने अपने लिए फैसला कर लिया था
स्वंय निर्णय करना... न्यायधीश बनना... बिना किसी मुकदमे के दोषी ठहराना
सजा सुनाना और अपना निर्णय सभी को बताना

यह है सत्य के महान जिज्ञासु

वह मुझे अकेला नही छोड़ते
अचानक हर कोई मेरा गुरू बन गया
लगातार मुझे मेरे अंहकार के बारे में बताने आते
मेरी बीमारी के बारे में... और मेरा उपचार... अपने अंहकार को गिराओ

सब मेरे बिना पूछे ही
मेरी स्वीकृति के बिना ही अपने नापने वाले फीते से मेरी जाँच करते रहते
मैं धीरे धीरे अपने चारों ओर गुरूओं को देख रहा था

मुझे उन पर करूणा आई
मैं जानता था कि असलियत में वह स्पष्ट समझ चुके हैं
कि मेरे साथ कुछ घटा है
और यह सब उनकी प्रत्यक्ष ईष्या थी
मुझे इस के साथ जीना सीखना होगा... मौन करूणा के साथ

मैं देख सकता था कि असलियत में हर जीवित आदमी सत्य की खोज में हैं
जो कुछ भी वे कर रहे हैं
अच्छा या बुरा... सही या गलत
वे सब सत्य को खोज रहे हैं

सत्य ही पूरे जीवन का स्त्रोत है

जन्म, मुत्यु और पुन:जन्म
बढ़ते रहना विकास के लिए
सत्य हो जाने के लिए
स्वंय में आ जाने के लिए

जहाँ से यह परम आनंदमय सृष्टि उत्पन्न होती है
चेतना कि इतनी उच्चाई पर
कि वह स्वंय को देख सकती है... स्वंय को अनुभव कर सकती है
और स्वंय का बुध्दत्व के द्वारा उत्सव मना सकती है

मैं सभी जीवित आत्माओं के लिए बुध्दत्व की कामना करता हूँ

भगवान की प्रकाशमय विस्तृत आत्मा को देख कर
और अपने स्वंय की आत्मा को देख कर
मैं सिर्फ एक शिशु हूँ... अभी अभी पैदा हुआ

मुझे बोध हुआ कि मुझे सिर्फ बुध्दत्व का अद्वैत अनुभव हुआ है
और कि आगे बहुत कुछ है...बहुत बहुत कुछ

मेरे लिए मैं सिर्फ एक शिष्य से एक भक्त बना हूँ

पहली बार मुझे भक्त होनी की सुन्दरता और सौम्यता का बोध हुआ
मेरे आँखें खुल चुकी थी

अब मैं सच में उनका भक्त हूँ खुली आँखो से
मुझे उनका गहरा रहस्य मालूम है
मैं हमेशा उन्हे देखता हूँ

मैं अपने बुध्दतव के अनुभव को उनके चरणों में अर्पित करता हूँ
यह उसकी तुलना में निस्तेज है जो मैंने भगवान में देखा
मुझे गहरे में जाने की जरूरत हैं... गहरे जाने की और अपनी अनुभूति को बढ़ाने की

मुझे बोध हुआ भगवान २१ साल की उम्र में १९५२ में बुध्द हो गये थे
पर मौन रहे और अपना संन्यास का कार्य १९७० में शुरू किया
उन्हे १८ साल लगे अपनी यात्रा को पूरा करने में

आचार्य से भगवान तक
बुध्द से गुरू तक

आचार्य से... जिसका अन्दर और बाहर एक है
भगवान तक... अन्दर नही बाहर नही... बस एकाकार में विलीनता

आचार्य... जो भीतर से मदद कर सकता है... तुम्हारी आत्मा में देख सकता है
भगवान... जो बाहर से मदद कर सकते है... स्वंय की आत्मा तुम्हे दे सकते है

यह मुझे स्पष्ट था कि वे पाँच गहरी समाधि के अनुभवों से गुजरे
१८ वर्षो के अन्तराल में
समाधि समाधि समाधि समाधि अन्तिम समाधि
विस्फोट विस्फोट विस्फोट विस्फोट अन्तिम अन्त: स्फोट

समाधि जहाँ ओस की बूँद सागर में फिसलती है... सागर बन जाती है

ओस की बूँद का समर्पित हो जाना
और सागर की विशालता का बोध होने पर विलीन हो जाना
वह कुछ नही खोती... वह सागर की तरह विशाल हो जाती है

पर सागर का ओस की बूँद में गायब हो जाना
कितनी अनन्त करूणा
सागर का ओस की बूँद बन जाना
अतिविशाल का लघु के सामने झुक जाना

सिर्फ पूर्व ने अभिव्यक्ति की इतनी गहराईयों को जाना है
और बस यह विवेक और अनुभूति ही मरने के काबिल है

मैं पूर्णत: भगवान के प्रेम में हूँ
बस यही मैं चाहता हूँ
उनके चरणों में एक भक्त की भान्ति रहना
बुध्द कौन होना चाहता है
अब मेरे में भगवान है

मुझे एक विशाल आनंद मिला है... विशाल प्रेम... मेरे गुरू

मैं उनके नजदीक होना चाहता हूँ और उन्हे शरीर में पहली बार देखना चाहता हूँ
क्या स्वप्न... मैं उन्हे देख पाऊगाँ... यह पूर्णत: आनन्दमय होगा
मैं कल्पना भी नही कर सकता क्या होगा... क्या घटेगा

यह शुध्द ऐश्वर्य है
महान सौभाग्य की वर्षा है एक सच्चे गुरू को पाना
और भगवान गुरूओं के गुरू
सबसे ज्यादा विकसित आत्मा जो कभी धरती पर चली
सभी शताब्दियों की प्रेरणा

मैं सिर्फ उनके चरण छूना चाहता हूँ और रोना चाहता हूँ
उन्हे बहते हुए चलते देखना चाहता हूँ
सिर्फ बैठना और उनके शब्दों को सुनना... उनके मौन में डूब जाना
उनके आनंदमय सौम्य कृत्यों को देखना और उनकी आँखों में देखना
उन्हे हवा में जादू फैलाते देखना
उनके लालित्य और चुम्बकीय उपस्थिति का साक्षी होना
जो जिज्ञासुओं को आनन्द की लहरों में डूबो देती है

मैं अब खुली आँखों से देख रहा हूँ
भगवान को देखना संसार का सबसे ज्यादा अपार भव्य दृश्य होगा

मैं समझता हूँ महाकश्यप मौन क्यों रहा
मुझे वैसा ही होना है

मैं पहचान में नही आना चाहता था
मौन रहकर... अपना रहस्य रखना चाहता था
मैं लोभी था
मैं अपने अनुभव में गहरा डूबना चाहता था और उस का आनन्द लेना चाहता था
अज्ञात होने की निजी स्वतंत्रता चाहता था

भगवान इस जगत में सबसे भव्य दृश्य है... सिर्फ उन्हे खेलते हुए देखो

मैं जगत के इस नये अनुभव में स्थिर होता जा रहा था
फिर भी स्तब्धता की दशा में... अनुभवों को परत दर परत आत्मसात कर रहा था
अपने शरीरमन को स्थूल और सूक्ष्म रूप से तत्वांतरण बदलाव में सहयोग दे रहा था

मेरा शरीर भीतर से बहुत तरह से बदल रहा था

इस सबसे मेरे ऊपर गहरा असर हो रहा था
मुझे अधिक सोने की जरूरत थी... गहरे मौन और आराम की

मैं पूर्णत: अकेला था

आश्रम मेरे प्रति वैरपूर्ण था
संन्यासियों ने मेरे विरूध्द बोलना शुरू कर दिया था

मैं उनके मेरे विरूध्द हमलों को महसूस कर सकता था
कई बार ऐसे जैसे कि छुरे या तीरों का मेरे अन्दर घुसना
मुझे स्वंय को बचाना सीखना होगा

मेरा शरीर खुला कोमल और असुरक्षित था
अभी भी भाप की अवस्था में
जहाँ सब कुछ एक खुले आकाश की तरह प्रवेश करता और निकलता
मैं हवा में हल्की सी क्रिया को भी महसूस कर सकता था

मैं लोगों के विचारों और भावों को पढ़ सकता था और देख सकता था
मुझे उनका भूत वर्तमान और भविष्य दिखना शुरू हो गया
मैं दूसरों के बारे में कुछ जानने की कोशिश में नही था
बस उनका पास से गुजरना ही सब बता देता था और आत्मिक
द्वारों को खोल देता था

मेरा चारों ओर सब कुछ पारदर्शक था
और स्वंय के रहस्यों को मेरे सामने खोल देता था

मैं पहले से ही भरा हुआ था... इतना सारा जानने से
जो मेरे अन्दर प्रवाहित हो रहा था
मैं बन्द करने के तरीकों को जानना चाहता था
और किसी प्रकार की अबोधता को अपने अंदर आने देना चाहता था

इसलिए मैंने सोने का आश्रय लिया... जितना हो सके उतना अधिक सोना
अब और ध्यान नही... सिर्फ गहरी स्वीकृति... सिर्फ गहरा विश्राम
बस सोना और समय को सब व्यवस्थित करने देना

यह भी बीत जायेगा

उनकी आँखों में डूब जाना

१० जुलाई १९८६ मेरी पहली समाधि
२९ जुलाई १९८६ भगवान बम्बई में वापिस लौट आये

मेरी समाधि के सिर्फ १९ दिन बाद
मुझे मालूम था वे आयेंगे

जब चमत्कार होते हैं... तो वे साथ साथ घटते हैं

वह अमेरीकी अग्निपरीक्षा... वह कम्यून की विपत्ति और अपराधिक विनाश

वह १७ देशों का विश्व भ्रमण और वह मूर्खतापूर्ण और बेतुके ढंग से उनके
वीसा को नकार देना और उनको निर्वासित कर देना
सब संन्यासी असमंजस में थे
इन सब घटनाओं का भगवान पर बहुत कम प्रभाव था
मैं उनके भीतर की दृष्टि को समझ सकता था
कि इन परिस्थितियों में सन्यासियों को अपने अन्दर की तलवार को तेज करने
और दृढ़ संकल्प से भीतर जाने का अवसर मिला है

कई बार सदमें का एक सीढ़ी की तरह प्रयोग किया जा सकता है
ऊपर चढ़ने के लिए और अधिक सजगता लाने के लिए
ज़ेन गुरू प्रत्येक परिस्थिती का प्रयोग करते हैं
सजगता लाने के लिए और जागरूकता पैदा करने के लिए

उनका ध्यान सिर्फ इसी बात पर था कि इस सब का उनके लोगों पर क्या प्रभाव पड़ेगा उन्हे एक अच्छी खबर की आवश्यकता थी
एक नयी जगह में जाने की और दोबारा से एकजुट हो जाने की

वे मेरे आगमन को देख रहे थे अपने लोगों में जल्द ही प्रेरणा के एक नये स्त्रोत के रूप में उनमें एक नया हौंसला जगाने के लिए और उनके अन्दर एक नयी आग लगाने के लिए एक आम आदमी... सिर्फ ९० दिन... हारा किरी सिध्दांत स्वंय हो जाना

मैं हर दिन उनकी खबर जानने के लिए आश्रम में जाता हूँ
आश्रम निवासियों को बम्बई के सुमिला केन्द्र में
उन्हे देखने के लिए विशेष अनुमति पत्र दिये जाते हैं
और एक विशेष बस से उन सब को वहाँ ले जाने का प्रबन्ध किया जाता है
मैं निवेदन करता हूँ एक अनुमति पत्र के लिए और बस में
उनके साथ यात्रा करने के लिए

मैं पूना आश्रम में पिछले चार माह से हूँ परन्तु मुझे अनुमति पत्र के लिए मना किया जाता है... मैं पहले से ही उनकी अनचाहे लोगों की सूची में हूँ
मुझे बोला जाता है कि मेरे जैसे लोगो को वे भगवान को देखने भी नही देंगे
मैं एक बेवकूफ हूँ और भगवान के लिए शारीरिक खतरा हो सकता हूँ
और कि वे परखते है कि किन लोगों को सुमिला जाने की अनुमति मिल सकती है
उन्होनें स्वामी मनु और स्वामी तथागत को सुमिला में मेरे बारे में बता दिया था
मैं हक्का बक्का था... वे सब मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे थे

मैं चुप था और अपनी समाधि के सम्बन्ध में गोपनीय था
यह मेरे लिए एक बुरे स्वप्न का आरम्भ था
वे मुझे भगवान को देखने से रोकने की कोशिश कर रहे थे

मैं बम्बई के लिए टैक्सी में निकलता हूँ और सुमिला जाता हूँ
संन्यासी बड़ी संख्या में वहाँ पहुँचे हुए हैं
वहाँ मुझे कोई नही जानता... सिर्फ पूना के संन्यासी ही मुझे जानते है
इसलिए मैं फैसला करता हूँ कि मैं कम घुलूंगा मिलूंगा और
एक अनुमति पत्र पाने की कोशिश करूँगा

लोगों को कतार में सुमिला के द्वार के नजदीक खड़ा होने के लिए कहा जाता है
और मैं उत्सुकता वश चार घण्टे पहले ही कतार में खड़ा हो जाता हूँ
मैं द्वार के समीप कतार में खड़ा तीसरा व्यक्ति हूँ
अब मुझे अपने भीतर गहरे में जाकर निश्चल होना है और प्रतीक्षा करनी है
मेरे लिए तो यह जीता जागता लाऊत्सु द्वार है

मैं पूर्णतः निश्चल हो जाना चाहता हूँ
और सिर्फ अपनी आतंरिक शान्ति को हॉल के भीतर ले जाना चाहता हूँ
यह मेरी सपनों की पहली मुलाकात है
और मुझे पूर्णतः निश्चल होना है
अपने पहले दर्शन के समय अपनी परम गहराई में होना है

लोगो की कतार लम्बी होती जा रही है और चार घंटे की प्रतीक्षा के बाद
बिना चेतावनी के... अचानक बाहर खड़े लोगों को अन्दर आने देने के लिए
थोड़ा सा द्वार खुलता है और तुरन्त ही पीछे से धक्का—मुक्की शुरू हो जाती है
हर कोई धक्का देकर सबसे पहले अन्दर जाना चाहता है

मुझे धक्के से एक तरफ कर दिया जाता है... मै बहुत नाजुक स्थिति में हूँ और
दौड़ नही सकता... सिर्फ खड़ा देखता रहता हूँ धक्का देती इस भीड़ को मेरे
पास से जाते हुए और जबरदस्ती द्वार को धक्के से पूरा खोलते हुए
भीतर से चिल्लाने की आवाज आती है दरवाजा बन्द करा... दरवाजा बन्द करो
एक संन्यासी गुस्से में बाहर आता है मेरे अलावा सिर्फ कुछ लोग ही बाहर बचे हैं
और वह मुझ पर चिल्लाते हुए बोलता है यह क्या व्यवहार करने का तरीका है
तुम सब लोग उनके कार्य को हानि पहुँचा रहे हो
यही कोई तरीका नही है और तुम सब यहाँ से चले जाओ

मैं धीमे से कहता हूँ कि मैं पिछले चार घण्टे से कतार में तीसरा खड़ा था
और उन सब ने मुझे धक्का मार कर एक तरफ कर दिया और मेरा इस में कोई
दोष नही है... असलियत में मैं बिल्कुल अचल था
वह मुझ पर बुरी तरह से चिल्लाता है और कहता है कि मैं उसके साथ बहस
क्यों कर रहा हूँ और वह मेरा चेहरा याद रखेगा और मुझे अन्दर नही आने देगा

क्या मजाक है... क्या यही तरीका है सृष्टि के न्याय का
शायद इतनी भी पागल नही है दुनिया
जरा अपने लोगों को भी देखो

मेरी पहली भेंट कभी नही हुई
मैं गली के किनारे बगीचे में चला गया और मौन रहा
और पूरी शाम मैं वहाँ निश्चल बैठा रहा... बैठा रहा

अगले दिन पहुँचने पर
मुझे एक नया नियम सीखना है
सभी अनुमति पत्र फोर्ट क्षेत्र के ध्यान केन्द्र से खरीदने है... वहाँ पर जाओ

मैं द्वार पर खड़ा हूँ और मैं माँ लक्ष्मी को बाहर आते देखता हूँ
मैं अपने लिए उनसे निवेदन करता हूँ और उन्हे पिछले दिन का किस्सा सुनाता हूँ

वह सिर हिलाती है और मुस्कराती हुई कहती है कि उन्होने सब देखा था... ठीक है
और मेरे हाथ में उस दिन के लिए एक विशेष अनुमति पत्र दे देती है
धन्यवाद माँ लक्ष्मी... यह मेरा भाग्यशाली दिन है
हमें अन्दर ले जा कर बिठाया जाता है
और जल्द ही ऊपर सीढ़ीयों की तरफ ले जाया जाता है

मैं बहुत आहिस्ता आहिस्ता चलता हूँ... दूसरों को आगे जाने देता हूँ
और गोलाकार सीढ़ीयों से अन्तिम पहुँचता हूँ
मैं पहली बार माँ विवेक को देखता हूँ... सीढ़ीयों के ऊपर खड़ी
वे मुझे आहिस्ता आहिस्ता सीढ़ीयाँ चढ़ते देख रही है

यह मेरी आँखों के लिए एक और उपहार है और मैं उनके लिए असीम कृतज्ञता
महसूस करता हूँ... उन्होंने भगवान की देखरेख की है
वह एक देवी है मेरी आँखों के सामने
मैं हाथ जोड़कर नमस्ते करता हूँ और उनके लिए भीतर की गहराईयों से झुकता हूँ
वे मुस्कराती है... मुझे लगता है कि वे अपने ह्दय से मेरा स्वागत करती हैं
मैं अपने आप से कहता हूँ कम से कम भगवान के करीबी लोग
स्नेही और करूणामय हैं

अशोक भारती गाना गा रहे हैं... एक लम्बी सफेद दाढ़ी
इतना उत्साह और भावावेग उनकी आवाज में... प्रेम की एक धारा लय में बहती हुई
यही है जिसके लिए मैं बना हूँ... इन लोगों के साथ फिर से... हमें साथ साथ
होना चाहिए भगवान हमारा मार्गदर्शन करते हुए... उनका अनन्त काफिला

हवा बिल्कुल थम जाती है... सभी आँखें मुड़ती है
भगवान अन्दर प्रवेश करते है... मन्द मन्द मुस्काराते हुए
मैं उन्हे कितने नशे और सजगता से एक साथ चलते देखता हूँ

सौम्यता से दमकते नेत्रों के साथ नमस्ते करते हुए... कुर्सी पर आहिस्ता से बैठते हुए
यह पहली बार है मैंने उन्हे देखा है

इसके लिए ६ लम्बे सालों की इन्तजार करनी पड़ी

भगवान की शारीरिक उपस्थिति अभिभूत करने वाली है
हवा का कण कण शहद से भरा हुआ... सघन और उमड़ता हुआ
मुझे इतना नशा पहले कभी नही हुआ
एक माह पहले मेरी समाधि इतनी मधुर नही थी
यह असली चीज है

मेरे आँसू बह रहे हैं
मैं उनकी ओर देखता हूँ... पर शर्माते हुए... अपनी आँखें फिर से बन्द कर लेता हूँ
मैं उनकी आँखों से आँखें नही मिला सकता... यह अभद्र होगा
मैं अपनी आँखें बन्द कर लेता हूँ और मेरे आँसू अपने आप बहते रहते हैं
बहते रहते हैं
समय गायब हो गया है

मैं उसी काले चक्र में पहुँच जाता हूँ
इस बार और भी गहरा, मधुर और कोमल

मैं उन्हे कहते हुए सुनता हूँ
कि एक दिन यह क्षण इतिहास में याद रखा जायेगा
तुम्हारे आने पर आशीष
गहरे जाओ... और भी बहुत है... और भी बहुत है

मैं उनके शब्दों को सुन नही पा रहा हूँ
मैं आनंद में डूबता जा रहा हूँ

ओम् ओम् ओम् ओम् का गुजाँन हर जगह

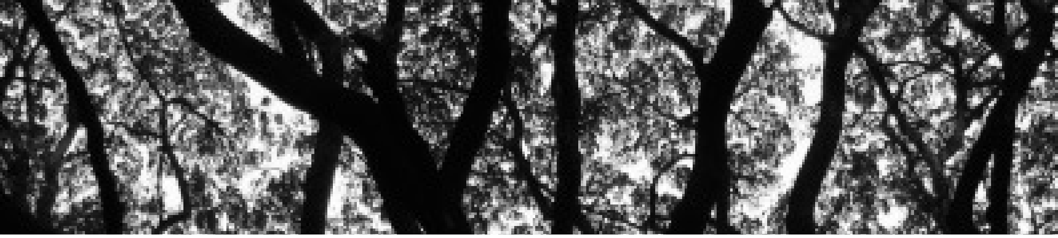

मैं अशोक भारती को दोबारा गाते हुए सुनता हूँ

मैं कहाँ हूँ... मैं कहाँ था... मैं कौन हूँ

वे आनंद से नाच रहे हैं... मैं जानता हूँ क्यों... वे जानते है कि मैं जानता हूँ क्यों
मैं अपने राज को राज ही रखूंगा जब तक मेरे पंख उड़ने लायक ना हो जाये
और वह मुझे दुनिया में उड़ने को कहते हैं उनका गीत गाने के लिए और आनंद
मनाने के लिए... उनका नृत्य नाचने के लिए... उनके बहते और छलकते प्रेम
को बाँटने के लिए

मैं आनंद में हूँ और सृष्टि के प्रति पूर्णतः कृतज्ञ हूँ सब कुछ जो इसने मुझे दिया

उनकी उपस्थिति ही अनंत में गहरा डूबना है
यह एक मुलाकात अनंत है

मुझे अपने अन्दर सब समा लेना है जो इस शाम उन्होनें मुझ पर बरसाया है
पूरा पीना है और एक बून्द को भी नही छोड़ना है

मैं भगवान को अधिक तंग नही करना चाहता
उनके प्रति मेरी श्रध्दा की वजह से एक पवित्र दूरी बनाये रखना चाहता हूँ
मैं अपने बलबूते पर खड़ा रहना चाहता हूँ

मैं जानता हूँ वे सब कुछ मेरे अन्दर भर रहे हैं
मुझे एक गहरी प्यास जागानी है उन्हे पीने के लिए और अधिक पाने के लिए

बाकी प्यासे... साथी साधकों को पीने का मौका देना चाहिए
जगह कम है... काफी लोग उनसे मिलना चाहते हैं
बाकी लोगों के लिए जगह बनानी चाहिए
उन्हे मौका देना चाहिए... उन सब को उनकी जरूरत है

इस अनुमति पत्र के लिए मैं माँ लक्ष्मी के प्रति अनन्त कृतज्ञ रहूंगा

मैं आनंद में पूना वापिस आता हूँ

मेरी उनको शरीर में दर्शन करने की आखिरी इच्छा भी पूरी हो गयी
अब मुझे भीतर गहरे में जाना चाहिए
और इन अनमोल पलों का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए
सुमिला में यह सब पाने के लए मैं भाग्यशाली था... अब मुझे भीतर जाना है
और अपनी गहराईयों में जगह बनानी है.. गुरू के आने के लिए

मैं अकेला बैठता हूँ
काफी परतें खुल गयी है और मुझे समय की जरूरत है
इस नये विवेक को आत्मसात करने के लिए और भीतर ही भीतर
बढ़ते रहने के लिए
मुझे समझ आने लगता है मेरे साथ घट रहे अनुभवों के निरे महत्व और जो घटा
उसके विशाल अनसोचे तात्पर्य
आत्मा की उस काली रात के दौरान

गौतम बुध्द के अवतरण के दौरान... ऊपर से अवतरित होती कृपा और करूणा
गौतम बुध्द... उनका आशीष
भयवश संघर्ष में मेरी अनुभवहीनता और अचेतना
और मुझे बोध होने लगा कि भगवान सुरक्षा कर रहे थे
उनके वायदा अनुसार सूक्ष्म शरीर को... जो कि मैत्रेय के नाम से जानी जाती है

सब कुछ इतना जल्दी हो गया बिना किसी तैयारी के
मैं शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से तैयार नही था

काश मैंने सब सहजता से घटने दिया होता... और अगर मैं मर भी जाता
तो वे सब उपस्थित थे मेरी शरीर में वापिसी करवाने के लिए
मैं अन्दर से बहुत ग्लानि महसूस कर रहा था
पर मैं कमजोर था और एक इन्सान था

यह सब भी बीत जायेगा

मैं दोबारा से तैयारी करूँगा... और अगली बार चीजों को घटने दूंगा
अगली बार काले चक्र के मुझे निगलने पर
मुत्यु की प्रतीक्षा... काली सुरंग... पुर्नजन्म

निश्चलता में स्थिर होते हुए
धीरे धीरे मुझे यह सब साफ होने लगा

सात परतें हैं... उंचे और उंचे सजगता के तलों की
जो कि एकाकार अनुभव के तल पर ले जाती है
शुध्द साक्षी

वह शरीर नही है... वह मन नही है... वह भाव भी नही है
सूक्ष्म शरीर भी नही है... शरीर से जुड़े छह सूक्ष्म शरीर भी नही है
यह निराकार है... एक शुध्द दृष्टा

पहले पाँच केन्द्र सिर्फ विकास और अखन्ड होने के लिए है
जो कि होशपूर्वक होने की तरफ ले जाते है
जहाँ द्वैत है अनुभव करने वाला और अनुभव दोनो ही है

छटे केन्द्र पहुँचने पर
जहाँ पहली बार बोधपूर्वक होने का बोध होता है
एकाकार अनुभव की दशा... अद्वैत

सातवाँ... वह केन्द्र नही है... जहाँ एकाकार अनुभव की दशा
पूर्णतः साक्षी भाव में डूब जाती है
अनस्तित्व... शून्यता

मैं गहरे और गहरे इन रहस्यों में डूबता गया जो कि मेरे सामने खुल रहे थे
भगवान मुझे आर्शीवाद देने के लिए बार बार प्रकट होते
रहस्यमय और शरारती ढंग से मेरे ऊपर मँडराते
यह देखने के लिए कि मैं सजग हूँ या नही
और मैं उनकी शान्त उपस्थिति को महसूस कर सकता हूँ या नही

उनके हास्य और हल्केपन से मैं मन्द मन्द मुस्कराता और खुशी से हँस पड़ता
मैं हल्का होता जा रहा हूँ... मेरे भीतर एक नये ढंग का हास्य विकसित हो रहा है
मैंने मानवीय स्वभाव के बेतुकेपन को देखना शुरू कर दिया है
सरलता और सुन्दरता जो मुझे चारों तरफ से घेरे हुए है

उनकी आँखें सब देखती है
यह खुला आकाश है जिसके नीचे मैं जी रहा हूँ

भगवान मेरे निजी जीवन के अधिकार को अच्छी तरह समझते हैं
और मैंने भी दूसरों के निजी जीवन का आदर करना सीखना शुरू कर दिया
मेरे सामने जो भी आता था... उसके साथ मेरे सूक्ष्म रूप के अनुभवों में

मैं जो भी देखता उस बारे में मैं मौन रहता
और कभी किसी के लिए कोई धारणा नही बनाता

भगवान का व्यक्ति की आजादी के प्रति बहुत गहरा आदर है
आजादी उनका सुनहरा सूत्र है
अगर मैं अचेत रहना चाहता हूँ तो यह मेरी आजादी है
मैं अपनी सहज विश्राम की रफ्तार से विकास कर सकता हूँ
कोई जल्दी नही... अब कोई जल्दी नही... ह्ारा कीरी सिध्दान्त में डूबने की
सिर्फ विश्राम करो और ठण्डी हवा के झोकें का आनन्द लो

यात्रा ही लक्ष्य है
असलियत में लक्ष्य है ही नही
सिर्फ पथ की अदभुत सुन्दरता ही है

मेरे भीतर की ग्लानि और गौतम बुध्द के अवतरण का दर्द उड़ गया है
मुझे भगवान के द्वारा प्रेम और करूणा से मार्ग दिखाया जा रहा है
उनकी समझ और विवेक की स्पष्टता
वह मुझे प्रेमपूर्वक ढंग से छू कर स्वस्थ कर रहे हैं

मैं समझ रहा हूँ भगवान के एकदम बुध्दत्व प्राप्त होने वाले तरीकों को
या धीमे धीमे बुध्दत्व पाने वाली सोच की धारा को

यह बिल्कुल साफ है
भगवान एकदम सही है कि बुध्दत्व अचानक ही होता है
इस प्रथम अचानक पराचेतना के अनुभव के बिना कुछ भी सम्भव नही है

और उसके बाद
बहुत धीरे धीरे पराचेतना से ब्रह्माण्डीय चेतना की तरफ जागना
और अन्तिम अवस्था में विलीन हो जाना

बुध्दत्व पाने का धीमी रफ्तार वाला तरीका एकदम बेतुका है
एक तरह से टाल देने वाला हिसाब
साधक अपनी सुरक्षा में ही जीता रहता है... हमेशा हमेशा के लिए

संन्यासियों के प्रति मेरी समझ गहरी और स्पष्ट थी
पृथ्वी गृह पर छह अरब लोग है
सिर्फ १० लाख उनके शिष्य है
भगवान ने अपने लोगों को चुना है
और उन्हे हर संन्यासी की सम्भावना मालूम है
उनकी दूर दृष्टि बहुत आगे और आगे तक देखती है

और कि यह साहसी और विरले लोग है
इन में से हर कोई अपने अपने ढंग से अपने ढाँचे को तोड़ कर आया है
हर कोई अपने परिवार, मित्र और समाज से दूरी को सह रहा है
और पैसों की दिक्कतें

और कि उन सब का यहाँ होने का कारण उनका भगवान के प्रति प्रेम है
उन में हिम्मत है उनके चरणों में झुककर संन्यास लेने की
उन सब ने मेरी प्रेम, इज्ज़त और कृतज्ञता को प्राप्त किया है

मैं उनको अपने प्यारे मित्रों और पथ पर चलने वाले साथियों की तरह देखूँगा

भगवान ने मुझे नजदीकता से देखना शुरू कर दिया है
गिरने के हर सम्भव तरीकों पर... मैं उनकी सूक्ष्म दृष्टि के बारे में सजग हूँ
कि शायद अब मैं अपनी अध्यात्मिक अहंकार को जन्म दूं

मैं अब जानता था कि भगवान मेरी आत्मा में झाँक सकते हैं
वे जानते हैं सभी अध्यात्मिक सम्भावनाँए जो मेरे अन्दर थी

पर इन्सान का मन... उसका अहंकार और सत्ता का संकल्प
यह एक दूसरा मामला था

यह एक व्यक्तिगत संस्कार और व्यक्तिगत मनोवृति से सम्बन्धित था
कि हर कोई फैसला कर सकता है कब बदले और अपने बुध्दत्व का विवरण दें

कि यह मेरी आजादी थी मन को उसका खेल खेलने देने की
या इस बात का भय कि कहीं मैं भीतर गहरे में जाने से रूक जांऊ और
अपने अनुभव की घोषणा कर दूं
अहंकार जानता है कैसे अचेत के गहरे तल में छुपा जा सकता है

मुझे बोध था और मुझे उनकी मेरे सम्पूर्ण हो जाने की चिन्ता का भी बोध था
यह उनकी करूणा थी कि मेरा समीप से ध्यान रखना और प्रेम से मार्गदर्शन करना

मैं एक परिपक्व भक्त बनता जा रहा था
मैं भगवान के प्रेम में था
मैं अपने बुध्दत्व को पूर्णत: भूल चुका था और उसे छोड़ चुका था
अन्दर बहुत था गहरा जाने को... बहुत कुछ था दोबारा से जानने को
मैं उनकी सुरक्षा में था आराम से और सुखद

मेरा उनके लिए प्रेम बहुत ज्यादा था
मुझे एक और महाकश्यप होना था

मैं काले चक्र में गहरा गया
यह आखिरी मुकाम था
परम सत्य को
खोजने में

वह क्या है जो सर्वशक्तिमान है... सर्वव्यापित है... सर्वज्ञ है
अनश्वर है... सब जगह विद्यमान है... सब जानता है
जिसका स्वाद नहीं... गन्ध नहीं... स्पर्श नहीं... ध्वनि नहीं... दृष्टि नहीं
जिस कि सृष्टि नही की जा सकती... जो हमेशा से ही विद्यमान हैं
जिसे बर्बाद नही किया जा सकता... जो कि हमेशा ही रहेगा
आकाश के पार... समय के पार
जिसकी कोई थाह नहीं... जिसका कोई माप नहीं
जिस का स्वंय का ही प्रकाश का स्त्रोत हैं... अनन्त

कालाचक्र... जाना नही जा सकने वाला था... परम रहस्य

मुझे यह समझ में आना शुरू हो गया कि क्या हुआ था
प्रकाश का अनुभव सिर्फ अन्धेरे से ही हो सकता है
प्रकाश के परमाणु विस्फोट का अनुभव
प्रकाश का हर तरफ विस्फोट होना
इस को कालेचक्र के भीतर से देखा गया था

भीतर का अनुभव अंधकार.. बाहर का अनुभव प्रकाश
निर्वाण... ज्योति का अन्त... बाहर ज्योति अनन्त

काला चक्र... आत्मा का भीतरी केन्द्रबिन्दु

मेरी बहन शोना और उनके पति रमेश हाँगकाँग से बम्बई में शादी के लिए
पहुंचते है और सभी ताजमहल होटल में ठहरे है
मुझे उनसे वहाँ पर मिलने के लिए कहा गया है

मैं पूना अपने कुछ बचे हुए पैसों के साथ आया था जो कि अब खत्म हो चुके थे
मेरे पास एक रोब है जिसे में रोज धोता हूँ
सुखाने के लिए टाँगता हूँ और पहनता हूँ
जो कि बहुत फीका और पारदर्शक हो गया है
मुझे इस रौब से प्रेम था क्यों कि यह मुलायम और चूर्ण की तरह हो गया था
मेरी समाधि का रोब मेरे लिए अनमोल था
बाटा की चप्पलें पतली और फटी पुरानी हो चुकी थी

मैं अपनी बाहर की दरिद्र हालात से अनभिज्ञ था

मैं ताज होटल के भीतर गया तो मुझे प्रतीक्षा कक्ष में मैनेजर से मिलने को बोला गया उन्होंने मुझे बैठने को बोला और पूछा कि मैं होटल में किस लिए आया हूँ

मैंने उससे पूछा... यह प्रश्न क्यों पूछा जा रहा है
मैं रेस्टारेन्ट में जा सकता हूँ या कॉफी की दुकान पर या कंही भी
उसका इस अजीब प्रश्न पूछने का क्या कारण है
तब मुझे ख्याल आया कि यह मुझे भिखारी समझ रहा है

उसने मेरे व्यवहार का ढंग देखा और मुझे धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलते सुना और वह चुप था
मैं बोला कि मैं अपनी बहन और परिवार से मिलने आया हूँ... जो ताज में ठहरे हैं
वे कौन है उसने पूछा... मैंने बताया शोना और रमेश झुनझुनवाला
उसका मुँह धक्के से खुला का खुला रह गया
अचानक वह विनम्र हो गया और स्वागत करने लगा
झुनझुनवाला परिवार... शोना आपकी बहन है

उसने उनके कमरे में फोन लगाया और जल्द ही शोना प्रतीक्षा कक्ष में आ गयी
मुझे देखकर उसकी आँखों में आँसू आ गये... तुमने अपना यह क्या हाल बना लिया है तुम्हारे कपड़ों को क्या हो गया है... तुम इतने पतले हो गये हो... निर्बल

मैंने अपनी बहन की तरफ देखा... हीरो में और महंगे शादी के कपड़ो में
मैंने उसे कहा मुझे शर्म आ रही है क्यों कि मेरी नजरों में तुम गरीब लग रही हो और मैं एक धनी आदमी हूँ

मैनेजर ने हम दोनों की ओर देखा... यह कैसी दुनिया है
कैसे अजीब भाई बहन... कितनी विषमता
ताज महल होटल के बीचों बीच

उसने मुझे पर्याप्त पैसा दिया जिससे मैं अगले कुछ माह का निर्वाह कर सकूँ
यह विचित्र मिलन था अपनी बहन और उसके परिवार से
इन नयी परिस्थितियों में और मै शादी में नही गया और पूना के लिए निकल पड़ा

एक महीना बीत गया... मैं उनको बुलाते हुए सुन सकता हूँ

अब से भगवान के साथ मेरा यह मार्ग था
२१ दिन गहन तैयारी करना
७ दिन तरल भोजन लेना
शिखर पर आना और भगवान को पूर्णिमा की रात को देखना

उनका नाम भगवान श्री रजनीश और मेरा नाम रजनीश
सत्य में एक सुन्दरता होती है... एक कविता होती है... सौम्यता
पूर्ण चाँद अर्द्धचन्द्र से मिल रहा है

मैं बम्बई जाने का फैसला करता हूँ
मुझे याद है मैं १६ सितम्बर को पहुँचता हूँ
वे बोल रहे है और मैं एक हफ्ते वाले पास का इन्तजाम करने जाता हूँ
तभी अचानक १७ तारीख को वे फिर से मौन में चले जाते है

१८ को पूर्णिमा है
वे फिर से बोलना शुरू करते हैं... वाह... मेरी पहला पूर्णिमा के चाँद का दर्शन

मेरा भक्ति का मार्ग गहरा और गहरा होता जा रहा है
उनका नाचते हुए आना मुझे बहुत कुछ बताता है
वे मेरे विकास से... मेरे मौन से और सत्य हो जाने की लगन से खुश है
मैं स्थिर और परिपक्व हूँ... अपने महान रहस्य को सम्भालने में समर्थ हूँ

जो कहा जा सकता है
उससे काफी कुछ अनकहा रह गया है

गुरू और शिष्य के रिश्ते का रहस्यमय ब्रह्माण्ड
जैसे शिष्य अपनी गहराई में डूबता जाता है... वैसे वैसे गुरू मार्ग दिखाता जाता है
यह एक अनन्त यात्रा है... शुरूआत जिसका कोई अन्त नहीं
गहरे और गहरे में डूबते जाना... अपार और अपार

गुरू पूरे मार्ग में साथ चलने को तत्पर है
उनकी तरफ से द्वार खुला है और असीम ज्ञान उनके पास है

शिष्य को खुला रहना चाहिए... समर्पित और असुरक्षित
हमेशा सबके लिए और हर चीज के लिए खुला... कभी फैसला नही करना
कि अन्त कहाँ है... हर क्षितिज को पार करने पर कुछ और मिलता है
अनन्त और सम्भवनाँए हैं

हाइकू रजनीश १९८६

पूरी रात बिना नींद के
चाँद की डाली पर
एक धड़कती आनंद की लहर

धड़कता ह्दय
आनंद
मौन की सरसराहट!

उमड़ता हुआ ह्दय
क्रिकिट की किलकारी
रात के सन्नाटे में

दिन का उजाला
नाचता ह्दय
लाखों सोने की डालियाँ आनंद का त्यौहार

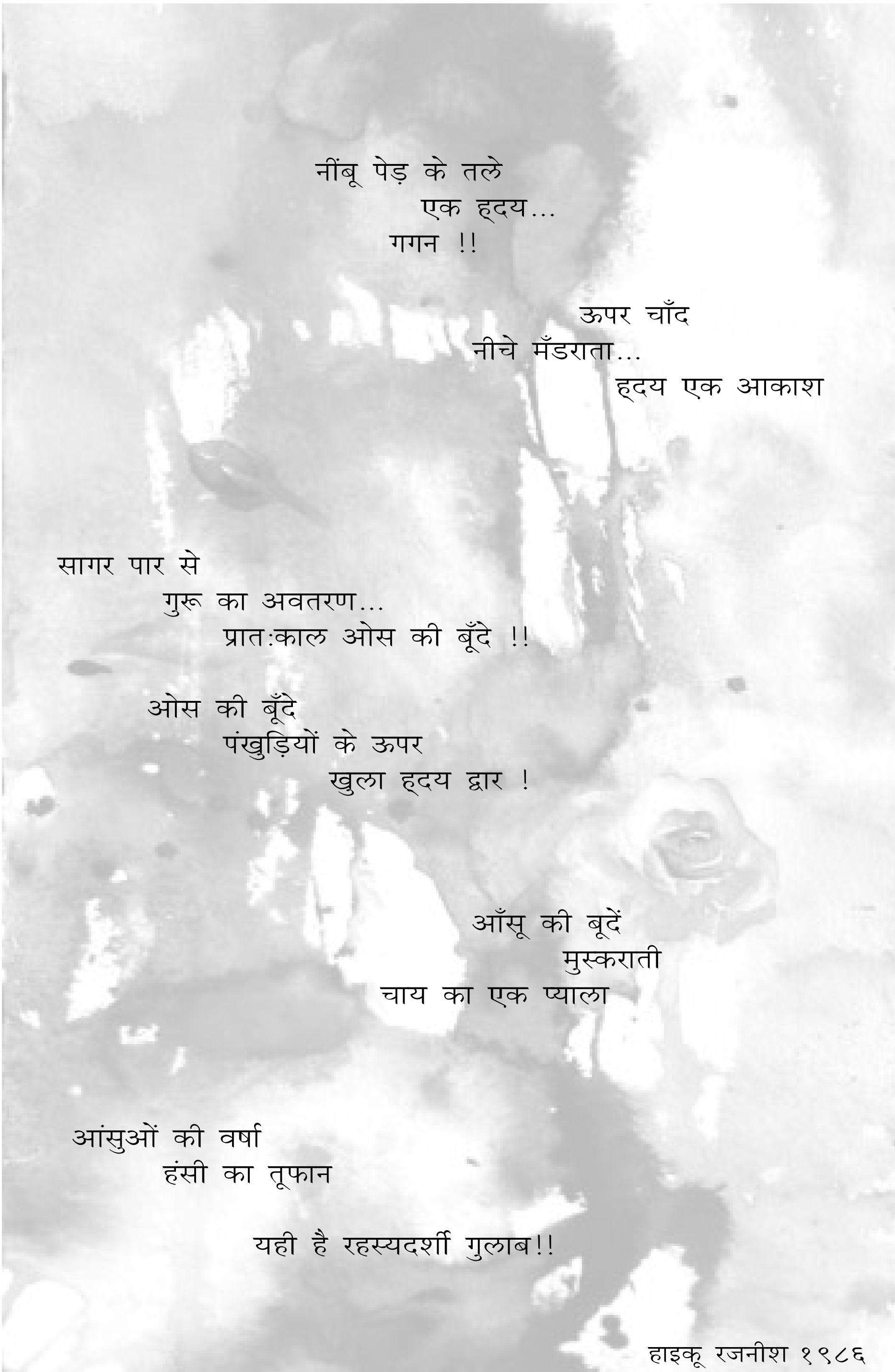

नींबू पेड़ के तले
एक ह्दय...
गगन !!

ऊपर चाँद
नीचे मँडराता...
ह्दय एक आकाश

सागर पार से
गुरू का अवतरण...
प्रातःकाल ओस की बूँदे !!

ओस की बूँदे
पंखुड़ियों के ऊपर
खुला ह्दय द्वार !

आँसू की बूदें
मुस्कराती
चाय का एक प्याला

आंसुओं की वर्षा
हंसी का तूफान

यही है रहस्यदर्शी गुलाब!!

हाइकू रजनीश १९८६

भगवान ने रजनीश उपनिषद आरम्भ कर दिया है
गुरू के चरणों में बैठकर
यह प्रवचन जल्द ही नया अध्याय बनेंगे
मैं समझ सकता था वे कहाँ ले जा रहे थे
इन प्रवचनों में रहस्य और रहस्यों से पर्दा उठता गया

जानबूझकर कर मैं बम्बई में एक हफ्ता रूका
गुप्त द्वार गोविंद सिध्दार्थ द्वारा खुला

मेरे अनुभव का कुछ हिस्सा जो मुझे जुलाई की उस रात्रि को हुआ था
उनके उस प्रश्न में घोषणा की तरह प्रकट हुआ

यह मेरा भी अनुभव था उस रात को
इसलिए मैं समझ गया कि उसने दूसरा भाग देखा है
उन्होंने मुझे नही देखा... और ना ही संघर्ष को
यह भाग उनकी दृष्टि और बोध से छुपा हुआ है

मैं भगवान को बोलते सुनता हूँ
यह सिर्फ तुम्हे अकेले को ही नही घटा है
कि यहाँ पर दो ओर लोग उपस्थित है
जिनको वही अनुभव उसी समय घटा है
वे भी संकोच में है कि वे घोषणा करें या नहीं
उनकी हिचकिचाहट स्वाभाविक है क्योंकि घोषणा बहुत बड़ी है

और वह स्वंय को बहुत छोटा पाते हैं
पर इसे अपने अंदर भी नही रखा जा सकता...
एक गर्भवती महिला की तरह जो कि कितनी देर तक अपना गर्भ छुपा सकती है
एक दिन तो उसे एक बच्चे को जन्म देना ही होगा

कि स्वंय को शर्म आती है कि कैसे कहा जाये

और उसे इस दुनिया में कहें जो कि शकमिजाजी है
जहाँ लोग बहरे है जहाँ तक सत्य का प्रश्न है
इस दुनिया में जहाँ लोग अन्धे हैं जहाँ तक सौंदर्य का प्रश्न है
जहाँ लोगो के पास ह्दय नहीं है जहाँ तक संवेदनशीलता का प्रश्न है
व्यक्ति स्वंय को अकेला पाता है इस घोषणा के लिए
पर यह अंहकार की वजह से नही है... अंहकार की वजह से कोई ऐसी बात की घोषणा नही कर सकता
क्योंकि अंहकार को शर्म आती है और वह शर्मसार महसूस नही होना चाहता
नम्रता की वजह से ही कोई अपने अनुभव की घोषणा करता है

और मैं उन्हे दोबारा कहते हुए सुनता हूँ
वे प्रतीक्षा कर रहे थे... इन तीन व्यक्तियों में सबसे पहले कौन घोषणा करेगा
गोविंद सिध्दार्थ सही में विनम्र साहसी साबित हुए
वे जो कुछ भी कह रहे थे... उन्होंने उसे सोते हुए नही देखा था... ना ही स्वप्न में

यह सच है कि जिद्दू कृष्णामूर्ति को सिर्फ इसी घटना के लिए तैयार किया गया था
गौतम बुध्द ने वचन दिया था कि २५ शताब्दी के बाद वे भगवान मैत्रेय के रूप में आयेंगे मैत्रेय का अर्थ मित्र

मैं सुनता हूँ
वे छेड़ते हुए कहते है कि गोविंद सिध्दार्थ की दिक्कत यह थी
कि वह इस रहस्य को अपने पास रख नही पाये
और कि राज को राज रखना... दुनिया की सबसे ज्यादा मुश्किल चीजों में से एक रखना है और वह भी ऐसे रहस्य को

और दोबारा फिर से उन्हे छेड़ते हुए सुनता हूँ
कि यहाँ पर दो ओर लोग उपस्थित हैं
और अगर वह साहस करे तो उनके प्रश्न भी आयेंगे
अगर वह साहस नही कर पाये तो इस रहस्य का बोझ हमेशा उनके साथ रहेगा

इन शब्दों को सुनकर मैं एक ठंडे पसीने में सुन्न हो गया
क्या वे मुझे इस तरह से सामने आने को कह रहे है

इस तरह के अजीब प्रश्न जैसे घोषणा के रूप में
यह एक तरह से प्रमाणपत्र माँगने जैसा है
एक अध्यात्मिक अहंकार की यात्रा का आरम्भ

सुमिला के बाहर मैं देखता हूँ
संन्यासी गोविंद सिध्दार्थ को घेरे हुए है... श्रध्दा से उन्हें सिर झुकाते हुए
मैं इसे सुन्दर पाता हूँ और मैं भी उनके आगे सिर झुकाना चाहता हूँ
और उनकी दृष्टि को स्वीकारना चाहता हूँ... पर भीड़ बहुत ज्यादा ही है
मैं जानता हँ उनकी आँखें खुल चुकी है
और कि उन्होंने उस बड़े अध्याय का एक भाग देखा है

मैं उनकी तरह लोगों से घिरना नही चाहता था
यह सहज ही मेरा मार्ग नही था... ना ही मैं ऐसा हूँ
हमेशा अपनी निजी जिन्दगी का ख्याल रखना और अपने पूर्ण एकान्त को मूल्य देना
मुझे नफरत है लोगो का मेरे पाँव छूना और मुझे सिर झुकाना

मेरे लिए यह एकदम स्पष्ट था
कि भगवान ने सिर्फ इतना कहा है
कि गोविंद सिध्दार्थ बुध्दत्व के बिन्दु तक पहुँच गये हैं
पर मेरी समझ कहती थी
कि सिर्फ बुध्दत्व के बिन्दु तक पहुँचना काफी नही था
यह तो यात्रा का सिर्फ आरम्भ ही है

और यही शब्द मेरे उस वक्त भी थे
जब मुझसे अकेले में गोविन्द सिध्दार्थ के अनुभव के बारे में पूछा गया

मैं चुप रहा
और उन रहस्यों को जानता रहा
जो उनके अधिक और अधिक प्रश्नों से बाहर आ रहे थे
यह एक कथा बनती जा रही थी
मैं पूना उत्साहित पहुँचता हूँ पर मौन हूँ
मैं जानता था
एक जबरदस्त नये दौर का विस्फोट होने वाला है

मैंने भविष्यवाणी की भगवान जल्द पूना वापिस आयेंगे

मैं देख सकता था कि भगवान अपने हास्य से मुझे छेड़ रहे हैं
एक तरह से वह मेरी हिम्मत की परीक्षा ले रहे थे और देख रहे थे
कि मैं उनके जाल में फँसता हूँ या नहीं
और क्या सच में रहस्य को अपने साथ रख सकता हूँ या नहीं
यह मेरे सच्चे इरादों को साबित करेगा
उन्होने मुझे उकसाया है... गेंद अब मेरे पाले में हैं... क्या मैं फँस जाऊँगा

मेरा भगवान के प्रति प्रेम मेरी बुध्दत्व की छोटी झलक से बहुत बहुत अधिक था
गौतम बुध्द के अवतरण का राज भी मैं बताने वाला नही हूँ

मैं जानता हूँ रहस्य को कैसे रखा जाता है
मैंने तब बोला और दोहराया... मुझे महाकश्यप होना है

मुझे दुख है कि जल्द ही मैंने भगवान को कुछ माह पश्चात कहते हुए सुना
कि कुछ माह पहले बम्बई में गोविन्द सिध्दार्थ को दिखा
कि गौतम बुध्द की आत्मा एक शरीर की तलाश में है
और उसने अपनी दृष्टि से देखा
कि भगवान गौतम बुध्द के लिए एक माध्यम बन गये हैं और वह सही था
पर यह मानव का दुर्भाग्य है कि वह गलत जा सकता है... इसके बावजूद कि
उसने सच की लकीर को छू लिया है क्यों कि भगवान ने उसे
बुध्द घोषित कर दिया था
वह गायब ही हो गया और उसके बाद से वह दोबारा नही देखा गया
शायद उसने सोचा... अब इसका फायदा क्या है... मैं बुध्दत्व के लिए खोज रहा था
मैंने उसे पा लिया है भगवान कहते है बुध्दत्व सिर्फ आरम्भ है पर अन्त नहीं
और कि वह इसके बहुत समीप आया और अब बहुत दूर चला गया

मैंने बाद में सुना गोविन्द सिध्दार्थ एक गुरू बन गया है
जल्द ही उनका अहंकार गहरे गड्ढों की संरचना करेगा
और उसके शिष्य होने के सरल भाव का पूरा सत्यानाश कर देगा

कितना बुरा विनाश मैंने यहाँ देखा
एक गहरी पीड़ा वाला दिन... कितनी दुर्भाग्य की बात
वह अधिक पाने के लायक था

मैं इस जाल में फँसना नही चाहता था
मुझे अपने आप को मारना पड़ेगा और पुर्नजन्म लेना पड़ेगा
अगर ऐसा मेरे साथ हुआ

बुध्दत्व का पहला अनुभव
बहुमुखी परतों के खुलने में मदद और शुरूआत करता है और यह परतें पहली बार साधक को उपलब्ध होती हैं
साधक को गहरे में डूबकर हर परत पर जाना चाहिए
और उसके हर एक आयाम को आत्मसात करना चाहिए

इसके लिए ५ या ६ ऐसे विस्फोटों की आवश्यकता होती है या समाधि की अवस्था में इसे आत्मसात करना और परत तर परत घुल जाना और धीरे धीरे पूरी यात्रा को पूर्ण करना और इस में पूरा खो जाना

मैं सिर्फ गहरे और गहरे में डूबता गया
मेरे दैनिक जीवन में गहरे बदलाव आते गये
मेरी शारीरिक गतिविधियाँ और दिन की सरल क्रियाँए ज्यादा सुन्दर होती गयी
मैंने ध्यान साधना करना बन्द कर दिया
ध्यान ही मेरा जीवन हो गया
एक गहरे आराम में जागरूक होशपूर्वक रहना
मेरे हर कदम में आ गया, मेरे हर इशारे में, मेरे देखने के ढंग में, मेरे खड़े होने के ढंग में, मेरे बैठने के ढंग में, बर्तन साफ करना, नहाना, दाँतों को साफ करना
ज़ेन एक जीता जागता अनुभव है... ध्यान में जीने का एक ढंग है

ध्यान जैसी कोई चीज मेरे लिए नही है
सिर्फ ध्यान की अवस्था है

मैंने अपनी पूरी सजगता अपने सरल दैनिक गतिविधियों में लगा दी
और जितना सम्भव हो मैं उतना एक घने अन्धेरे कमरे में सोता

मैं जानता था मैं काले चक्र की दोबारा से प्रतीक्षा कर रहा हूँ
रात के अन्धेरे से पहचान करने के लिए
मैं रात्रि को देखने लगा

मेरा ज़ेन में चलना और ज़ेन में बैठना
मेरे चारों ओर प्रकाशित होने लगा

अब मैंने भगवान के साथ रहस्यों के द्वार पार कर लिए थे...
भगवान सूक्ष्म शरीर में मुझे और भी जल्दी जल्दी मिलने आने लगे
मैं उनके गुप्त रूप से ऊर्जा प्रदान करने के तरीकों को सीखने लगा
और उनके शान्त और गुप्त काम करने के तरीकों को

मुझे अपने भौतिक शरीर को उन्हे अधिक से अधिक उपलब्ध करवाना था
आरामदायक परिस्थितियाँ तैयार करनी थी
उनके प्रवेश के लिए और मुझ पर काम करने के लिए

एक और रहस्य था जिस में मैं बढ़ रहा था
और गिर रहा था... वह था मेरा चलने का ढंग

मेरी पिछले जन्म की विपासना की तरंग धाराए और रास्ते खुले थे
यह सीधी खड़ी तरंग धाराँए एक जीवित गुरू के लिए आसानी से उपलब्ध होती है
इसलिए गौतम बुध्द ने मुझे अपने माध्यम के लिए उपयुक्त पाया

भगवान हमेशा एक निश्चित ढंग से चलते थे
उनकी कुन्डलिनी मुझसे बहुत ज्यादा ऊँचाई पर हिलती और लहराती थी
और बहुत विशाल फैली हुई, लम्बी और गहरी थी

भगवान आसानी से मेरे विकास की गति बढ़ा सकते थे
अगर मैं सीधी खड़ी दिशा में
उनकी सिधाई के साथ तालमेल में आ जाऊ
इस लिए मैं उनके साथ हाथ से हाथ मिलाकर गहरे पानी में चलने लगा
कदम से कदम... सीधी खड़ी लहर से सीधी खड़ी लहर
मैं धीरे धीरे उनकी तरंग धाराँओं में विलीन हो रहा था
उचाईयाँ ही उचाईयाँ मेरे सामने खुल रही थी
मैं उनके दिव्य प्रकाश को थामे था
वह मेरे साथ नाच रहे थे

आँसू थमते नही इन दिव्य लम्हों को बताते हुए

मिस्ट्री स्कूल की कार्यप्रणाली मेरे सामने खुली थी
मैं उनके मिस्ट्री स्कूल का हिस्सा बन गया

आसमान बरसा रहा
हीरे
देखो!!
आसमान बरसा रहा
हीरे तुम्हारे ऊपर

कल की वर्षा
कृतज्ञता बरसती हुई

मौन में
कल बरसी वर्षा

मौन
मौन की अश्रुधारा
कृतज्ञता में
कल बरसे हीरे

कल हुई वर्षा
तुम देखो?
तुम्हारे ऊपर हीरे
कल बरसी वर्षा!!

हाइकू रजनीश १९८६

हाइकू रजनीश १९८६

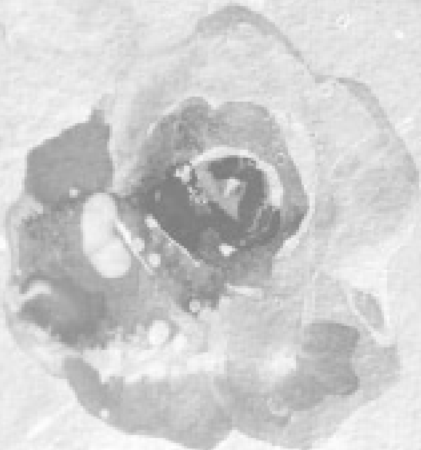

सुगन्ध उठती हुई
मौन गहराता हुआ
अर्दश्य!!

चील क्षितिज में मंडराती
भीतर का आसमान
फूल खिलखिलाते हुए

बहते कदमों के निशान
एक सौम्य मुस्कान
हाथो में गुलाब
...विलीन हुआ
सिर्फ एक गुलाब
उठती सुगन्ध!!

मैं इस दुनिया में पहला आदमी हूँ जो घोषणा करेगा
और बतायेगा भगवान के कथन का असली अर्थ

कि वह बुध्दत्व से परे चले गये है

यह एक क्रान्तिकारी कथन है
सबसे पहली बार भगवान ने ऐसी अजीबोगरीब घोषणा की

लोग इसे काव्य की दृष्टि से देखते है
भगवान को काव्य के सहारे की कोई जरूरत नहीं है
यह एक वास्तविक घोषणा थी... एक असली घटना जो घटी

भगवान सबसे बड़े जुआरी... अपने जीवन के साथ खेलते हुए
हमेशा ऊँचे आसमान में तलवार की धार पर चलते
उन्होने एक कदम आगे जाने का निश्चय किया
जहाँ किसी जीवित बुध्द ने कभी पहले अपना कदम नही रखा

किसी बुध्द ने शरीर में जीते हुए अपने सूक्ष्म शरीर को
अपने शिष्य को नही सौंपा

अपने सूक्ष्म शरीर को सौंपने पर
उनका भौतिक शरीर असुरक्षित रह जाता... कमजोर
उनका शरीर पहले से ही काफी कमजोर और नाजुक था
यह सौंपना काफी महत्वपूर्ण और बहुत खतरनाक था

मैं इसे एकदम ही समझ गया
मैं उन्हे बहुत ध्यान और चेतना से सम्भालने लगा

यह अनुभव इतने विशाल है कि मैं उन्हे एक किताब में नही समा सकता
वह मेरे उनके साथ महानतम जागृत अनुभव है
और यह अनुभव चेतना की बहुत गहरी और अपार दुनिया में बढ़ते गये

मैं निश्चल रहता हूँ और उन्हे देखने दोबारा बम्बई नही जाता हूँ
मैं गुप्तरूप से उनके नए आयामों में यात्रा कर रहा था
अपने शरीर को यात्रा या आनेजाने के किसी खतरे में नही डालना चाहता था
मुझे पूना में मौन रहना था

मैं जानता था भगवान पूना में आने की तैयारी कर रहे है और ऐसा ही हुआ
४ जनवरी १९८७ भगवान पूना आश्रम में पहुचँते हैं

ओह महान सफेद हँस

हम सब उनकी कारों के दल की प्रतीक्षा कर रहे थे
गुप्त रूप से बम्बई से... रात के बीच में

संन्यासी नाच रहे थे और गीत गा रहे थे
मुख्य द्वार से लाऊत्सु तक भीड़ लगी हुई थी
प्रतीक्षा और प्रतीक्षा करती... नाचती और उत्सव मनाती
२ बजे के लगभग भगवान सब की ओर हाथ हिलाते हुए
और अन्दर ही अन्दर खिलखिलाते हुए आते हैं

रोल्स रोयस की पिछली सीट पर स्वर्ग
कितना महान भाग्य... मेरे प्रियतम गुरू पूना में वापिस

भगवान दोबारा से अपनी ऊँचाई पर है
हर सुबह अपनी तरह से नाचते हुए समग्रता से अपने रंग में हैं
तुम उन्हे आसमान की ऊचाँईयों पर अपनी बाहों से विस्फोट
करते हुए देख सकते हो
पूरे चाँगत्सु हॉल को डूबोते हुए... दमकती उड़ानों के दृश्यों से

सौम्य मधुर मुस्कराहट
उनकी मुस्कराती आँखों में एक रहस्य

ऊँचे और ऊँचे... भगवान ऊँचाईयों और ऊँचाईयों में
उनके आने पर प्यार के गीत बरस रहे हैं

हमे अपनी आत्मा की गहराई में ले जा रहे हैं

तरंगे भीतर आ रही हैं... तरंगे भीतर आ रही हैं

संन्यासी आनन्द में है... वह दोबारा से प्यार में है
उनकी आँखें खुशी और कृतज्ञता से चमक रही हैं
बुध्दाफील्ड दोबारा से दहक रहा है
हवा में कुछ नया सा है

भगवान इस पृथ्वी गृह पर एक नये आदमी के आगमन पर प्रवचन देते है
नया आदमी का आगमन क्षितिज पर है

सुनहरा भविष्य... बागी... एक नयी सुबह
पूरा बुध्दाफील्ड ऊर्जा से भरा था
और एक नये आदमी के जन्म की प्रतीक्षा कर रहा था

मैं जानता था... और उनके साथ नाच रहा था
कौन नाच रहा था... क्या मैं नाच रहा था
या यह भगवान है जो मेरे अन्दर नाच रहे थे
नाचने वाला खो गया सिर्फ नृत्य ही बचा

भगवान रजनीश गुरूओं के गुरू एक अद्‌भुत जादूगर
एक नया आदमी... रजनीश... मैत्रेय एक मित्र... क्षितिज पर

उनका विवेक और आयु
मेरी जवानी और बच्चों जैसा स्वभाव
एक साथ एक होकर काम करते हुए
मैं उनके शरीर और बुध्दाफील्ड़ की अपनी जवानी से रक्षा करूँगा
वे अपने अपार अनुभव और विवक से मेरा मार्गदर्शन करेंगे

हम उस क्षण का इन्तजार कर रहे हैं
जब यह सब दुनिया के सामने आयेगा
क्या विस्फोटक कहानी

यह एक सम्भावित सच्चाई थी
जो मैं पहले ही देख सकता था
एक क्रमबध्द विस्फोट
जो एक विशाल नई घटना को अन्जाम देगा
काफी संन्यासियों का बुध्द हो जाना
और हर तरफ से उनका निकल निकल कर आना

हमें १०० बुध्दों की जरूरत थी... जल्दी ही
सामूहिक पराचेतना को प्रकाश से भरने के लिए

भगवान के आगमन से उनके नजदीकी संन्यासियों का पूरा समूह भी साथ आया
मैंने अब तक उनके बारे में पढ़ा ही था और कल्पना करता था
कि उनमें से काफी गुप्त रूप से बुध्दत्व को प्राप्त हो चुके हैं

मैंने दिल को चीरने वाली असाधारण कहानियाँ को पढ़ा था
गौतम बुध्द जैसे गुरूओं के महान शिष्यों की उंचाईयों के बारे में

मैं स्वप्न देख रहा था कि मैं इन प्रकाशमान दिव्य लोगों को देख पाऊँगा
और उनके बीच चल पाऊँगा... इन में से काफी भाग्यशाली संन्यासियों के पास
भगवान के चरणों में १२ से १५ वर्ष बैठने का सम्मान और सौभाग्य था

मैं उनके प्रति विस्मय से भरा था और उनकी तरफ आश्यर्चचकित
आँखों से देखने लगा और उनके पास से गुजरते वक्त अपने हाथ
जोड़कर उन्हें अन्दर से प्रणाम करता
मेरी इच्छा थी कि काश मेरा भी भगवान के इतने समीप रहने
का उनके जैसा भाग्य हो

इनमें से काफी लोग जिन्हे मैं जानता भी नही था
उनके प्रति सिर्फ मेरे आदर ने ही उनके क्रोध को उभार दिया
क्या यह विचित्र बुरा स्वप्न है

मैं उन के लिए अपने सारे प्रेम और आशीष की कामना करता
कि वे एक दिन अपने बुध्दत्व में जाग जांए

मुझ पर नजर रखी जा रही थी
भगवान के द्वारा... पर अब प्रत्येक संन्यासी के द्वारा भी

आश्रम में निर्दोषता से आहिस्ता आहिस्ता चलना
गुरूत्वाकर्षण रहित बिना प्रयत्न के बहना
एक जानने वाली और प्यारी मुस्कान के साथ

सत्ताधारी लोगों की ईर्ष्या और अंहकार
उन्होंने मेरे बारे में झूठ और अफवाहें फैलाना शुरू कर दिया
और मेरा नाम बदनाम करना शुरू कर दिया

मुझ पर सब ओर से हमला किया गया
उनके शब्दों से, भावनात्मक ऊर्जा से और उनकी हरकतों से
मेरे बारे में धारणा चारों ओर बनने लगी

कि मैं सोचता हूँ कि मैं गुरू हूँ
कि मैं सोचता हूँ कि मैं बुध्द हो चुका हूँ
कि मैं बुध्द होने का ढोंग कर रहा हूँ
कि मैं गुरू की नकल कर रहा हूँ

कि मैं नकारात्मक और गन्दी ऊर्जा फैला रहा हूँ
कि मैं लोगों को अपने झूठ से फँसा रहा हूँ
कि मैं सिर्फ उनका ध्यान खींचने की कोशिश कर रहा हूँ
कि मैं एक महान ढोंगी हूँ
कि मैं दूसरा भगवान बनना चाहता हूँ

मैं उनके संदेह को समझ सकता था
मैं कुछ छुपा रहा था... यही निश्चित था

कि मैं बुध्द हूँ... यह मैं गुप्त रूप से पहले ही जानता था
कि मैं गुरू को दर्शाता था यह भी मैं समझ सकता था
कि मैं गुरू होने का ढोंग कर रहा हूँ... इसका भी मुझे बोध था
क्यों कि मैं उन्हें अपने अन्दर संभाले था

उनकी धारणा और उनकी तीव्र कोशिश कि मेरे चारों ओर सब को यह पता चले
इस ने मुझे सिर्फ आश्चर्यचकित किया
इसने मुझे विश्वास दिलाया कि मैं सही मार्ग में हूँ
और यह उनका मुझे प्रमाणपत्र देने का तरीका है

मैं शान्ति से और आहिस्ता आहिस्ता से अपने बुध्दत्व की ओर बढ़ रहा था
मैं उनके नकारात्मक बाणों को आसानी से अपने अन्दर समा सकता था
मेरे पास मेरे साथी पथिकों के लिए करूणा थी

वे ना पहुँच पाने की वजह से पीड़ा में होंगे... जिससे ईर्ष्या पनपती होगी
कितना पीड़ादायक होगा उनके लिए
मेरा उनके पास से प्यार से चलते हुए निकलना
मैं उनके लिए गहन करूणा का अनुभव करता हूँ

इन कुछ महीनों में जरूर कुछ २०,००० संन्यासी मेरे पास से निकले होंगे
मेरी चाल की नकल करते हुए

मेरे बारे में रोज अफवाहें बढ़ती... मेरे लिए यह सब ठीक था
मेरे लिए सीखना जरूरी था इस सब को अपने भीतर समा लेना
और इन छोटी छोटी नाराजगियों को संभाल लेना

अगर उन्होनें यह दोषपूर्ण अफवाहें नहीं फैलायी होती
तो यह मेरे लिए एक बड़ा आश्चर्य होता
मैं जानता था असलियत में यह उनकी मुझे समझने की शुरूआत है
और कि वे उस प्रकाश की वजह से प्रतिक्रिया करते हैं
जिसे वह मेरे चारों ओर देखते हैं
पर उनके अंहकार को चोट लगी थी
यह एक सरल बात थी... कोई रॉकेट विज्ञान नहीं
यह सिर्फ कुछ समय की बात थी वे जल्द ही समझ जायेंगे

मैं अन्दर से हँस रहा था
मुझे इस पूरे घटनाक्रम में हास्य का रस आने लग गया था
मैं उन्हें और अधिक प्रेम करने लगा और मुस्कराता
और प्यार से हाथ हिलाता जो कोई भी मुझे निंदित करता

मुझे याद है ऐसा ही एक शानदार दिन
मैं अपनी रोज के समय दोपहर को २.३० बजे आश्रम के द्वार पर पहुँचता हूँ
और ४० संन्यासियों की एक कतार को अपने पीछे देखता हूँ... मेरे ठीक पीछे
मेरी चाल की नकल उतारते हुए
यह सब मेरे लिए हास्यकारक था... पर उनके लिए गंभीरता का विषय

उन्हें उनकी विपासना थेरीपिस्ट ने मेरी नकल उतारने के लिए बोला था
और मेरे पीछे आहिस्ता आहिस्ता चलकर सब संन्यासियों के सामने
मेरा अपमान करने के लिए बोला था
मेरा पीछा करते रहना मैं जहाँ भी जांऊ और मुझे अकेला नही छोड़ना
जब तक कि मैं क्रोधित या बेइज्जत ना हो जाऊ या भाग ना जाऊ या कुछ
जबरदस्त सा ना घट जाए
मैंने इन सब संन्यासियों की कतार को आश्रम के द्वार पर देखा
मैं कृष्णा आफिस के पास से निकला जहाँ पर सत्ता में बैठे
लोग इस सब को देख रहे थे

यह सब मेरे लिए कितना सुन्दर था
४० के लगभग संन्यासियों को धीमे चलते देखना
उन्हें अब उनके बराबर का साथी मिला है
मैं अन्दर से मुस्काराया और उन्हें नजरअंदाज करता रहा
मेरा ध्यान खींचने के लिए वह मेरे पीछे खाँसने लगे और गला साफ करने लगे
मुझे उनकी चाल मालूम थी और मैं चलता रहा उनको नजरअंदाज करता रहा
और अन्दर ही अन्दर हँसता रहा... जल्द ही मैं पानी के झरने के समीप आ गया
जहाँ मैं रूका और कुछ देर थम कर सौन्दर्य को निहारता रहा और
उसे भीतर उतारता रहा
अपनी आँखें बंद कर चलते पानी की आवाज को सुनता रहा
वह जल्द ही ऊब जायेंगे और शायद आगे चले जायेंगे

पर उन्हे हर शर्त पर मेरा पीछा करने को कहा गया था
इसलिए वह सब रूके रहे और निश्चल खड़े रहे
मुझे मालूम था... मैंने अब उन्हें पकड़ लिया है... वह फँस गये थे
अब मैं जो चांहू वह कर सकता था और उन्हे मेरा पीछा करना पड़ेगा

आह... महान... ज़ेन गुरू रजनीश
उन्हे ज़ेन के जीने का ढंग दिखाओ
यह मेरा भाग्यशाली दिन था
६० के लगभग संन्यासियों की भीड़ इक्कठी होकर देखने लगी
इन ४० को जो मेरे पीछे बेवकूफ लग रहे थे

इस युध्द के क्षणों को होशपूर्वक खेलो
मैं निश्चल रहा और उनको अशान्त होते देखने लगा
यह उनको मिले आदेश का हिस्सा नही था

वह अपनी हार को देखने लगे... मैं इस कहानी को जारी रखना चाहता था
इस लिए मैंने धीरे से दोबारा चलना शुरू कर दिया ताकि उनको खो न दूँ
आहिस्ता आहिस्ता मैं आगे चलता रहा जहाँ आगे जाने पर रास्ता पानी के झरने के ऊपर चट्टानों पर जा कर खत्म हो जाता था
मैं धीमे से बांयी और घूमा... रास्ता संकरा था
सभी ४० को मुझ से अब वापसी पर सामना करना पड़ेगा
कितनी खुशी... मैंने उन्हे फँसा लिया

मैं चुपचाप आहिस्ता आहिस्ता चलता रहा
मैंने देखा वह हिचकिचा रहे थे कि मेरा पीछे करे या नहीं
पहले कुछ लोग आते रहे और बन्दरों के समूह की तरह बाकी लोगों ने भी पीछा करने की कोशिश की
पर वह एक कतार में बहुत अधिक लोग थे और जगह संकरी थी
सिर्फ कुछ लोग ही हिल सकते थे और उनके पास ही मुड़ने के लिए पर्याप्त जगह थी
पर साथ साथ पीछे के लोग उनसे भिड़ भी रहे थे

आह आह... अब वह क्या करेंगे
इस लिए मैं पानी के झरने के ऊपर एक चट्टान पर चढ़ गया
और उन सब की और नीचे देखने लगा वह सब स्तब्ध और गूँगे थे
अपनी अगली चाल के लिए चकरा चुके थे

मैं हंसा... हे बन्दरों... मेरा पीछा करो... जैसा तुम्हे बोला गया है
सिर्फ मेरा पीछा करो... चट्टान के ऊपर इस रास्ते से आओ

वाह... वह सब मक्खियों की तरह तितर बितर हो गये... एक दूसरे को देखते हुए
और पूरा आश्रम उनकी हार को देख रहा था

आ जाओ आ जाओ
मैं प्यार से दोहराता हूँ... आ जाओ आ जाओ
तुम्हे इतनी आसानी से हार नही माननी चाहिए
मेरी तरह चलना... कम से कम सही ढंग से चलो
मेरी प्रतीक्षा करो... मैं अभी तुम्हारे चलने के लिए तुम्हारे आगे आता हूँ
मेरा प्रतीक्षा करो... मुझे तुम्हे दिखाना चाहिए कि कैसे चलना चाहिए और किस ढंग से नकल उतारनी चाहिए... मेरी प्रतीक्षा करो... मेरी प्रतीक्षा करो... वह सब भाग गये

एक के विरूध्द चालीस
विपासना थेरीपिस्ट ने इसके लिए बोला था
खुद के लोगों से ही उसकी बेइज्जती हो गयी

मेरी विपासना चाल चारों तरफ चर्चा का विषय था
और यह मेरे यहाँ आने के पहले दिन से ही था
इस थेरीपिस्ट ने हमेशा मेरी तरफ उसकी नापसंदगी बोल बोल कर दिखलायी

उस से हर विपासना ग्रुप में मेरे बारे में प्रश्न पूछे जाते थे
वह एक जानी मानी थेरीपिस्ट थी और उसके पास सभी उत्तर होने ही चाहिए थे
पूना आश्रम में विपासना साम्राज्य की भरोसमंद पोप
उसने दोषपूर्ण धारणा फैलायी
कि मैं बिल्कुल सनकी सा हूँ और लोगों का ध्यान आकर्षित कर रहा हूँ
कि मैं विपासना की अवस्था में नही हूँ बल्कि मेरी ऊर्जा बहुत ही कम है
और मैं सिर्फ एक मरे हुए मानवयंत्र की तरह चल रहा हूँ
कि मैं एक भारतीय हूँ जो कि कामवासना से दबा हुआ है
और उसका मेरे बारें में अध्ययन था कि मैं पूरी तरह से जमा हुआ हूँ
और कामुकता की वजह से रूका हुआ हूँ इसलिए मेरी चाल आहिस्ता है

मेरी तरह के लोग गन्दी और कम ऊर्जा को फैलाते है
और मैं एक पिशाच की तरह दूसरों की ऊर्जा को चूसता हूँ
और मेरी ऊर्जा से बहुत दूरी रखनी चाहिए

मैं देखता था विपासना के साधक मुझे देखकर मुँह मोड़ लेते थे
और दूसरी दिशा में चलना शुरू कर देते थे
जहाँ भी मैं जाता और यह बात एक बीमारी की तरह फैल गयी
मुझ से एक कोढ़ी के रोगी की तरह व्यवहार किया गया... एक बहिष्कृत की तरह

मैंने उनकी धारणा के बारे में सुना
जो कि दूसरे सर्वशक्तिमान छोटे गुरूओं थेरीपिस्ट तक पहुँच चुकी थी
और जल्द ही मैं खबरों में था... यह बात सब तक पहुँच गयी
और हर नए आने वाले लोगों को मुझ से दूर रहने को कहा गया

आश्रम में किसी दूसरी समय चलते वक्त मुझे उसी थेरीपिस्ट ने रोका
और मुझ पर चिल्लाते हुए बोली कि मैं बीमार हूँ और मुझे
दिमागी ईलाज की जरूरत है
ढ़ोंग करना छोड़ दो और सामान्य ढंग से चलो

मैंने मुस्कराते हुए पूछा कि वह हमेशा मुझे जल्दी में इधर उधर
भागती हुई कैसे दिखती हैं
उसने प्रत्युत्तर दिया कि वह भगवान के द्वारा विपासना सिखाने के लिए नियुक्त है
वह तेज चलते हुए या भागते हुए भी सजग रह सकती है
कि धीमे चलना सिर्फ पध्दति सिखाने के लिए है
पध्दति को छोड़ना होता है और पूर्ण अभ्यस्त होने के बाद कोई कुछ भी कर
सकता है उसे सब मालूम है

इसलिए मैंने मजाक करते हुए उससे पूछा
क्या कारण है भगवान के धीमे चलने का
वह बोली मैं कौन होता हूँ भगवान के बारे में बोलने वाला
और कि मेरी शिकायत आश्रम को की जायेगी और मुझे बैन किया जायेगा

उस के अलावा मुझे झूठे अफवाहों की हर एक जड़ के बारे में मालूम था
क्योंकि देर सवेर हर फैलायी हुई अफवाह मेरे पास पहुँचती ही थी

एक दिन जब मैं बुध्दा हॉल में शाम की सभा के लिए कतार में खड़ा था
एक जर्मन महिला हिसंक ढंग से मेरी तरफ आयी
और उस ने मुझे उसके आसपास ना चलने और उस से दूर रहने को कहा
उसने मुझे कठोरता से मेरी समस्याओं के बारे में भाषण दिया
और बताया कि मैं बुध्दाफील्ड को चूस रहा हूँ
१०० के लगभग संन्यासी उसके क्रूर शब्दों के आघात को देख रहे थे
कतार धीरे धीरे मुझ से दूर होती गयी

मैं इन परिस्थितियों को सम्भाल सकता था
जब तक वह सिर्फ बातों तक ही सीमित थी... इतना सब ठीक था

उन दिनों पूना में एक सरल पतली सी महिला थी जो कि चश्मा पहनाती थी
वह भी धीरे चलने की वजह से मुश्किल में पड़ गई
अपने आप को कलंकित होने से बचाने के लिए उसे मुझ से दूरी बनानी पड़ी

वही आक्रमक जर्मन महिला चिल्लायी
कि मैं कामुकता से दबा हुआ भारतीय हूँ और उसने मेरे
चक्रों का अध्ययन किया है
और कि मेरा इलाज सिर्फ इस पतली चश्मे वाली महिला जो कि धीरे चलती है
के साथ संभोग में जाना है

सब हँस रहे थे... यह उन सबके लिए अच्छा तमाशा था

पहली बार मैं दुखी था... सच में
अपने लिए नहीं क्यों कि मैं खुद का बचाव कर सकता था
पर ठेस लगी यह देख कर कि उन्होनें इस सरल निर्दोष महिला पर आघात किया
और मैं उससे बड़ा फासला बना कर रखता... सिर्फ उसको बचाने के लिए

यह मेरी नयी शैली बन गई लोगों से अपने आप को दूर करते जाना
हर दिन आनेवाले नए युवा लोग आते ही तुरन्त मेरी और आकर्षित होते
मैं उन्हे मौन और मुझसे दूर रहने को कहता
क्यों कि मैं जानता था सिर्फ एक या दो दिन में उनके मन में मेरे बारे में जहर
भरा जायेगा और वह मेरी तरफ अपनी पीठ कर लेंगे जैसे
मैं उन्हें गलत रास्ता दिखा रहा था

मैं सबसे दूर रहा... संन्यासी या आम आदमी
मुझे अलग थलग किया गया उन लोगों के द्वारा जो मुझे तोड़ना चाहते थे
जो मेरे पंख काटना चाहते थे... दर्द पहुंचाने की कोशिश कर के या बर्बाद कर के

यह मेरे लिए रोज की खबर थी... मेरा रोज का आहार
एक हजार के ऊपर संन्यासियों ने
मुझे किसी न किसी ढंग से नुकसान पहुंचाने की कोशिश की
थोड़े बहुत जो मुझे प्रेम करते थे... जल्द ही मेरे नजदीक दिखने से भी डरने लगे
क्यों कि जल्द ही उनको भी भीड़ से अलग थलग कर दिया जायेगा

मेरा रात का खाना बहुत शान्ति में होता
मैं जिस भी मेज़ की तरफ बढ़ता वहाँ से लोग उठ कर कहीं ओर चल पड़ते
चलने के रास्ते साफ हो जाते क्यों कि मैं जहाँ भी चलता
लोग वहाँ से दूर हट जाते

मुझे यह तमाशा पसन्द था... वह एक शहंशाह के लिए मार्ग बना रहा थे

इन दिनों मुझ पर कुछ हिंसक शारीरिक हमलें भी हुए
एक अवसर पर मुझे जोर से धक्का दिया गया ताकि मैं चलूँ
और शीघ्रता से आगे बढ़ूँ
एक दूसरी बार मुझे उठा कर हिसंक ढंग से धरती पर फेंक दिया गया
किसी और ने मुझे सिर पर मारा यह बोलकर कि मुझे ज़ेन छड़ी की जरूरत है
एक दूसरे मजबूत बाँहों वाले व्यक्ति ने मुझे बुरी तरह से हिलाया ढुलाया
ताकि मैं अपने दिमागी खुमार से बाहर आऊँ
स्विमिंग पूल में धकेला गया और मुझे तैरना नही आता है
इन हमलो के बारें में संन्यासिओं के बीच चर्चा होती थी
और कुछ और लोगों ने भी मेरे मौन का फायदा उठाना शुरू कर दिया

मुझे मजाक का विषय समझा जाता था
मैं मरा हुआ और गम्भीर था और गम्भीरता भगवान की दृष्टि में एक रोग था

मैं सिर्फ होशपूर्वक चल रहा था
और मेरे चेहरे के हावभाव अनासक्त सजगता के थे

आश्रम के नाटक ग्रुप ने मेरे ऊपर व्यंग्य का एक नाटक बनाया
'धीमे चलते हुए भगवान होने का ढोंग रचाना और स्वंय को बुध्द समझना'
सैकड़ों हँसते खिलखिलाते लोगों ने इसे देखा
जिन्दगी एक मजाक थी... जिन्दगी बस हँसते रहना और रंगीन थी
मैं उनके आध्यात्मिक मनोरंजन के लिए निशाना था

यह किस्सा आगे और आगे बढ़ता रहा... नही अफवाहें
हर दिन नये हमले... नये शत्रु
यह मेरे लिए बहुत ऊबाऊ होता जा रहा था
अगर वे मुझ पर हमला करते है
तो कम से कम एक बार एक अच्छा तर्क या बहस का कारण तो लायें
वह सिर्फ आते... कुछ भी कहते और भाग जाते और मेरी आँखों में भी न देखते

अहंकार... ईर्ष्या और अब कायरता
कोई अजरज नही हम जहाँ थे वहीं है

मैं बुध्दाफील्ड में नहीं... एक लड़ाई के मैदान में चल रहा था

मैंने इसे भी स्वीकार किया क्यों कि इसने मुझे बेहद सजग बनाया
और मुझे परम सजगता से चलना और हिलना पड़ता
मेरी ऊर्जा के घेरे में प्रवेश करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए
सजग और होशपूर्वक होना पड़ता
इस ने मुझे अपने बचपन की कुंगफू अभ्यास और महान
कुंगफू फिल्मों की याद दिलाई
उस गुरू की याद दिलाई जो अपने शिष्यों को असली
नंगी तलवार से सजग रहना सिखाता था... रात को सोते समय भी

मेरे हिसाब से मुझे हर चीज को सकारात्मक ढंग से प्रयोग करना था
यह होशपूर्वक होने का अभ्यास था
मैंने उन्हें मुफ्त में अभ्यास करवाने के लिए धन्यवाद दिया

मेरी लम्बी मूछें थी और थोड़े लोग जो मुझे प्यार करते थे
वे मुझे फू मन्चू कहते थे और वे मेरे कुंगफू जैसे ज़ेन हास्य के ढंग को जानते थे

उच्च स्तर के योग्य थेरीपिस्ट
भगवान के काम को फैला रहे थे और लाखों सत्य के
जिज्ञासुओं को तैयार कर रहे थे
जब कि वह ग्रुपों के लिए हजारों डॉलर्स लेते थे

भरोसेमन्द छोटे गुरू थेरीपिस्ट और मन को पढ़नेवाले
जो कि संवेदनशील और भगवान के प्यारे माध्यम है

उन सब की एकमत से मेरे बारे में राय थी कि मैं कामुकता से
दबा हुआ एक भारतीय हूँ

मैं भगवान के साथ तब से हूँ जब मैं १९ वर्ष का था
मैं भगवान के पास कामुकता के लिए आसान मौकों की तलाश में कभी नही
आया था और ना ही उनकी सेक्स की स्वतंत्रता की दृष्टि का
गलत प्रयोग करने के लिए

मैं भगवान के पास आया था सिर्फ अन्दर की यात्रा के लिए
उनकी मानव चेतना को जगाने की परम कोशिश के लिए
और मेरे उनके प्रति शुध्द और पूर्ण प्रेम के लिए
मेरे उनके प्रति प्रेम ने ही मुझे यहां रोके रखा
मुझे सेक्स से दबा हुआ कहा जाता था अगर मैं ऐसा होता तो भी मैं अपनी
कामुकता को भूलकर अपनी अंदर की आवाज पर ध्यान देता

मैं नाम और पैसे के बीच पैदा हुआ था जिसे मैंने किशोरवस्था में ही छोड़ दिया था
मेरी माँ विमी बॉलीवुड की बहुत प्रसिध्द अभिनेत्रियों में से एक थी
मेरे पिता शिवराज एक प्रसिध्द अमीरी व्यापारी घराने से थे

सत्तर की दुनिया में बॉलीवुड का अलग ही अंदाज था... जनता फिल्म सितारों को
देवी देवताओं की तरह पूजती थी और उनको असीम प्रेम करती थी
मेरे किशोरवस्था के सभी मित्र फिल्म सितारों के बच्चे थे या ख्यातिप्राप्त
व्यापारी घरानों से थे... जो कि आज के फिल्म सितारें है या सफल
व्यापारी या उद्‌योगपति हैं

जब मैं किशोर था तब मैंने फिल्मों में काम करने में इच्छुक काफी लड़कियों को
देखा और बॉलीवुड की पार्टियों में आने के लिए इच्छुक
अति सुंन्दर जवान लड़कियों को देखा
मुझे कुछ और कहने की जरूरत नहीं है
मेरे इन पश्चिम के साथी दोस्तों की सेक्स वाली खुली जिन्दगी के मुकाबले
मैंने अपनी किशोरवस्था के सालों में सेक्स के मामले में ज्यादा आजादी को देखा

मैं हमेशा से बदनाम रहा
और बहुत सुन्दर महिलाओं से घिरा रहा
विशिष्ट रूप से मेरी आजाद प्रवृति और बागी स्वभाव के कारण
मेरा बड़ों के प्रति बिल्कुल आज्ञाकारी ना होना
और इस समाज के दकियानुसी ढाँचे के प्रति... मेरा पूर्णत: अनादर का भाव रहना
मुझे हमेशा बागी प्रकृति का समझा जाता था... हर लड़की जिसे मैं जानता था
मुझे बागी समझती थी और उन्हे यह आकर्षक और अच्छा लगता था

मैं अपने भीतर की यात्रा में इतना लगन था
कि मेरे लिए पूना आश्रम में किसी से भी सम्बन्ध बनाना नामुकिन था

एक बहुत सुन्दर अमेरिकन लड़की थी
और मुझे बाद में पता चला कि वह न्युयॉर्क शहर में फॉर्ड
एजेंन्सी के लिए मॉडल थी
वह आश्रम में आयी थी और उसने मुझे धीमे धीमे चलते हुए देखा था
काफी दिनों तक वह मुझे देखते रही और उसने मुझे हैलो कहने की कोशिश भी की

मैं उस समय मौन में था
खासकर लगातार संन्यासियों के द्वारा तंग किये जाने की वजह से
और मैंने उसे नजरअंदाज कर दिया
वह मुझे देखती रही और एक दिन शाम को मेरे पीछे आकर
उसने पता लगा लिया
कि मैं साथवाले सुन्दरबन होटल में रहता हूँ
वह उसी होटल में आ गयी और दो महीने रही

मैंने उसे हमेशा बालकनी में बैठे मेरी और देखते पाया
और वह मेरे साथ बातचीत करने की कोशिश करने लगी
उसने यह मानने से इंकार कर दिया कि मैं मौन में हूँ और गहरे ध्यान में हूँ
उसने विस्तार से बताया कि उसने आश्रम में जाना बंद कर दिया है
क्यों कि उसे हमेशा सेक्स के लिए तंग किया जाता है
और कि हर आदमी वहाँ उससे मिलना चाहता है और उसे बिस्तर
पर ले जाना चाहता है
वह न्यूयॉर्क में एक मॉडल है
और वह तंग आ चुकी है आदमियों की उसके प्रति सेक्स की चाहत में
और मैं ही एक अकेला हूँ जिसने उसे तंग नही किया है
उसने मुझे शान्त और संवेदनशील पाया और मेरे समीप आने की इच्छा जाहिर की

वह सुन्दर थी... मैंने उसकी कहानी को समझा और उसकी स्पष्टवादिता का
सम्मान किया
वह हास्यपद थी और हँसी मजाक करने की आदी थी
बहुत अधिक बुध्दिमान थी और उसे दुनिया में घूमने का बहुत अनुभव था
उसके मेरे समीप होने से जल्द ही वह भी आहिस्ता आहिस्ता
और सौम्यता से चलने लगी
और उसको भी किसी नयी ऊर्जा ने घेरना शुरू कर दिया
आश्रम के बड़े खिलाड़ी जो उसके पीछे थे... वह मेरे से और अधिक क्रोधित हो गये
और उन्हें सदमा लगा कि अब मेरी गर्ल फ्रेंड भी है

मैं उससे थोड़ी देर के सम्बन्ध के लिए कृतज्ञ हूँ
इसने मेरी छवि को ब्रह्मचर्या और पवित्रता से
मानवीय और सम्पूर्णता में बदलने में मदद की

मैं इन पूरे दिनों में ब्रह्मचारी था
वैसे यह कहना ठीक होगा
कि मैं ब्रह्मचारी की बजाय आनंदमय था
मेरे पिछले जीवन के तंत्रा अनुभव
मुझ में फिर से जाग गये और मेरे पूर्व की कई झलकियाँ दोबारा से सजीव हो गयी

इसी दौरान आश्रम सुन्दरबन होटल को खरीदने की कोशिश कर रहा था
वहाँ के मालिक मि. तलेरा ने मुझसे स्नेह करना शुरू कर दिया था
और जब भी वे यहाँ आते तो हमेशा मुझसे प्रेम के दो शब्द कहने के लिए रूकते
उन्होने मुझे असामान्य पाया और हमेशा मेरी अपनी यात्रा के प्रति समर्पित होने
की और निष्कपट स्वभाव की प्रशंसा की
उन्होने १४ महीने पहले मुझे सिर्फ १२०० रू महीने के किराये पर कमरा दिया था
और मुझे उसी किराये पर रहने दिया
जबकि भगवान के वापिस आने पर कमरों का भाव ९००० रू प्रतिमाह हो गया था

आश्रम के प्रबन्धक दल ने
सभी संन्यासियों को जो वहाँ रह रहे थे साफ साफ बोला कि होटल का
बहिष्कार कर दो क्यों कि मि. तलेरा उनके बोले हुए भाव पर
होटल को बेच नही रहे है
मुझे तलेरा ने बताया कि उन्होंने होटल को ठप्प करने की धमकी दी है
मि. तलेरा एक सरल आदमी थे उनकी काफी जमीन जायदाद थी और
असलियत में जिस आक्रमक रवैये से सौदे का प्रस्ताव रखा गया था उससे
उनको ठेस पहुँची थी

और जब तलेरा ने आश्रम के लोगों को अपनी तरफ से एक भाव बताया
तो उसे तुरन्त ही अस्वीकार कर दिया गया और साथ में व्यापार खत्म करने की
धमकी दी गई... मि. तलेरा ने मुझे बताया कि उन्हे आश्रम प्रबन्धक दल द्वारा
होटल को खरीदने की गन्दी और ओछी हरकतों को देखकर धक्का लगा

इन दिनों मुझे आश्रम ऑफिस द्वारा बताया गया
कि मुझे होटल उसी दिन छोड़ने का हुक्म है या मुझे बैन कर दिया जायेगा
मैंने वचन दिया कि मैं कुछ दिनों में किसी दूसरी जगह कमरा ढूँढ लूँगा
जिस पर उन्होने उत्तर दिया कि मेरे पास सिर्फ एक ही दिन है
और कि यहाँ पर इन्कार करने वालों को बर्दाश्त नही किया जाता

अगले कुछ दिन मैं एक कमरे की खोज में
आस पास जहाँ जहाँ संन्यासी रहते है वहाँ जाता हूँ
'लक्ष्मी विलास' के कमरे भारतीयों को नही दिये जाते थे
एक और जगह रिवरसाईड के पास... पर दोबारा से कोई कमरा नहीं
और यही सब चलता रहा... चलता रहा
मुझे एक छोटी झोपड़ी वाली जगह मिली जहाँ एक भारतीय संन्यासी कमरे किराये पर देता था... वहाँ पर मुझे हिंसक ढंग से बताया गया कि वह मेरे विरूध्द है और मेरी गन्दी ऊर्जा को यहाँ पर नहीं चाहता... कम से कम अगले छह दिन तक मुझे कोई दूसरा कमरा नही मिला और तब तक मुझे सुन्दरबन में ही रहना पड़ा

मुझे द्वार पर रोक दिया गया और एक बैठक में बुलाया गया
जहाँ मुझे बोला गया कि मुझे सुन्दरबन को छोड़ने की चेतावनी दी गई थी
जिसकी मैंने अवहेलना की है और मुझे आश्रम से बैन कर दिया गया है
मैंने उन्हे बताया कि मैं पिछले छह दिनों से कमरा ढूँढ रहा हूँ
पर मुझे कोई कमरा नहीं मिला
जिस पर उन्होनें कहा कि यह उनकी समस्या नहीं है
और कि मैं भगवान और उन की इच्छाओं के साथ नही हूँ और मुझे वापिस आने की जरूरत नहीं है
मुझे एक मौका दिया गया था और वह अब खत्म हो गया है

मैं एक पूरी किताब लिख सकता हूँ
सिर्फ ऐसी दिल दहलाने वाली घटनाओं और भयानक अनुभवों पर
जो मेरे, संन्यासियों के साथ हुए
खासकर वे संन्यासी जो कि भगवान के नजदीक थे
पर मैं परहेज करूँगा क्यों कि वह जैसे है... मैं उन्हें वैसे ही स्वीकार करता हूँ
वह वही पायेंगे जो उन्होनें बोया है

जहाँ तक मेरा सोचना है उनके पास इतनी स्वतंत्रता तो है
स्वंय की रचना करने की या स्वंय को बर्बाद करने की स्वतंत्रता

पर दूसरों को बर्बाद करने की स्वतंत्रता बिल्कुल नहीं है
यह दूसरे की पवित्र अग्नि और भीतर की आध्यात्मिक यात्रा में उल्लघंन करना है

भगवान ने कई बार दोहराया है
किसी दूसरे की स्वतंत्रता में दखल मत दो
और दूसरो को स्वंय की स्वतंत्रता में दखल मत देने दो

मैं आज दूसरे को ज्यादा महत्वपूर्ण पाता हूँ
दूसरों को स्वंय की स्वतंत्रता में दखल करने देना निष्क्रिय रूप से शामिल होना है
दूसरों को एक अबोध इन्सान को धमकाते देखना और मौन रहना
सीधे रूप से अपराध में शामिल होना है

ऐसी शक्ति भ्रष्ट करती है और पूरी शक्ति पूर्ण रूप से भ्रष्ट करती है
शक्तिशाली जिन्हें वश में नहीं कर सकते
उन्हें वह प्रतिबन्धित करके शासन करते हैं
और प्रतिबन्धित करने के भय में जीने को मजबूर करते हैं
ताकि लोग आज्ञाकारी गुलाम बने रहे

संन्यासियों को प्रतिबन्धित करना सबसे गन्दे और निम्न स्तर पर बाध्य करना है

संन्यासी कोमल है
सिर्फ इसलिए क्यों कि वह भगवान की उपस्थिति को छोड़कर नही जाना चाहता

वह संन्यासियों के भगवान के प्रति प्रेम के साथ खेल रहे है
इस प्रेम को संन्यासियों के विरूध्द हथियार बनाकर
किस हद तक आदमी झुक सकता है

मुझे बैन कर दिया गया और मेरा नाम बैन लोगों की काली
सूची में लिख दिया गया
मेरे लिए रोज रोज आश्रम में होने वाली घटनाए ही बहुत हो चुकी थी
और मैं जल्द ही पूना छोड़ने का निर्णय करता हूँ

प्रतिबन्धित ही मैं सुन्दरबन में रहता हूँ
एक सुबह मुझे पता चलता है
कि मि. तलेरा और आश्रम के प्रबन्धकदल में एक और वार्तालाप होने वाला है
मि. तलेरा मुझे बुलाते है... क्योंकि मैं वहाँ अकेला संन्यासी रह रहा था
और मुझ से विचार विमर्श करते है... मि. तलेरा अब क्रोधित है
उन के होटल की आमदनी को काट कर प्रबन्धकदल एक तरह से जीत चुका है
और उन्हे लग रहा है कि वे अब तलेरा को एक छोटी कीमत पर खरीद सकते हैं

मैंने देखा यह सब भगवान और उनके करूणा के मार्ग से मेल नही खाता
यह एक तरह से बाध्य करना है
शक्ति और बल का इस्तेमाल कर कमजोर को धकेलना है

हालांकि मुझे किसी तरफ से कुछ लेना देना नही था

मैं तलेरा के साथ था और में लज्जित था
कि आश्रम गन्दे तरीकों का प्रयोग कर रहा है

अगर वे उनकी शक्ति और पैसे के दम से बाध्य कर तलेरा को बाहर फैंकते है
तो क्या फर्क है जब अमरीकी राजनीतिज्ञ भगवान को बाहर धकलेते हैं
वही गन्दी राजनीति जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है

यह मेरी आँखों में शर्मनाक था
और मैं जानता था कि एक बुध्द इतने कुरूप ढंग से कभी भी व्यवहार नही करेगा
मेरी आँखों में आश्रम का प्रबन्धक दल
काला कर रहा था भगवान के चेहरे को और उनके प्रेम को और
करूणा के संदेश को

तलेरा और मैं निर्णय करते है कि अगर वह बैठक की शुरूआत
नरमता और लिहाज से करते हैं तो वह बेचने के लिए तैयार हो जायेंगे
और अगर वे आक्रमक ढंग से शुरूआत करते है तो वे इन्कार कर देंगे
यह हमारा आपस में गुप्त रूप से समझौता था
हम प्रतीक्षा कर रहे थे और देख रहे थे

पूरा सौदा इसी पर टिका था

पाँच लोग आये... मुझे तलेरा के साथ बैठे देखकर क्रोधित हुए
उन्होनें समझा मेरे बहिष्कार से तलेरा और भी ज्यादा नम्र हो गये है
और वे उनके प्रति घमण्ड भरा व्यवहार कर रहे थे

तलेरा ने बेचने से इन्कार कर दिया... दुगने दामों पर भी नहीं
यह बैठक का अन्त था... तलेरा बदलने को तैयार नहीं थे
वह होटल का बहिष्कार कर सकते थे
और आज तक होटल तलेरा की सम्पत्ति के रूप में खड़ा है

मेरे लिए मैं आज भी यही समझता हूँ कि मैंने अपने गुरू का चेहरा ऊँचा रखा
और मेरा हस्तक्षेप को एक दिन सत्य की यात्रा पर चलना समझा जायेगा
एक बागी आत्मा... सत्य और इन्साफ प्रथम आता है
अगर मुझे अपने लोगों से ही लड़ना क्यों न पड़े... सत्य सबसे ऊपर है

भगवान ने मुझे आर्शीवाद दिया और मेरी विजय को देखा
मुझे तैयार किया जा रहा था... देखने और चुनौती देने के लिए
अनगिनत अधिक शक्तिशाली गुन्डों को... जिन्हें मैं जल्द ही मिलूंगा
जब मैं उनकी ज्वाला को इस दुनिया में लाऊँगा

मैंने कभी शक्ति और सत्ता के आगे समर्पण नहीं किया
मैं सिर्फ प्रेम और करूणा के आगे झुकता हूँ और समर्पण करता हूँ

मैंने अपना संन्यास एक टिप्पणी के साथ लौटा दिया
'कि मैं मार्ग पर अकेला चलूँगा
और हमेशा उनका भक्त रहूँगा'

अगले कुछ दिन मुझे गम्भीर धमकियां मिली
आश्रम की गली में एक रात चलते वक्त एक संन्यासी आदमी तेजी से
मेरी तरफ आया और उसने अपने चाकू से मुझे खत्म करने की धमकी दी
और कि मुझे पूना छोड़ने की सूचना दी गई है या मेरा काम तमाम कर दिया
जायेगा और कि वह मेरी हड्डियाँ और टाँगे तोड़ देगें

अब उन्होंने मेरी अन्तरात्मा को चुनौती दी है
मैं पूना छोड़ने की तैयारी कर रहा था लेकिन अब बात बिल्कुल पलट गयी है
मैं कभी किसी की धमकी के आगे नहीं झुका हूँ
मैं यहाँ ठहरने का फैसला करता हूँ और यह देखने का कि वह क्या कर लेंगे

शेर की दहाड़

मुझे धमकियाँ नापसंद है और खासकर उनसे जो की सत्य के मार्ग पर चलने वालों में से है... भगवान के एक जाने माने शिष्य से
और मैं जानता हूँ भगवान महानतम बुध्द हैं जो इसी धरती पर कभी चले है

क्या आप कल्पना कर सकते है दो तरह की दुनिया... जिन्हे मैं साथ साथ देख रहा था... 'भयानक'... अगर यह शब्द सही वर्णन करता है

मैंने जे. कृष्णामूर्ति की किताब 'इयर्स आफ अवैकनिंग' पहले ही पढ़ी थी
पर उनके दृष्टिकोण पर गम्भीरता से विचार किये बिना

अब मैं जे.कृष्णमूर्ति और उनकी जिन्दगी के बारे में पढ़ने में आकर्षित हो गया
और यह जानने में कि उनके गुरूओं के प्रति दृष्टिकोण में मतभेद क्यों था
इससे एक पूरा नया अध्याय खुला जिसकी पहले मैंने उपेक्षा कर दी थी

मैं बिल्कुल भगवान के साथ था
मेरे उनके प्रति प्रेम को कोई भी हिला नही सकता
मैं सिर्फ उनकी पूर्ण मुक्त दृष्टिकोण के बारे में प्रश्न करने लगा था

मैं अधिक गहराई से समझना चाहता था
गुरू बनाम 'बिना गुरू' के विज्ञान को
और कितना जटिल है अचेत मानवता तक सत्य को पहुंचाना

मैं जानता था कि भगवान के पास कोई विकल्प नही है
वे पहले ही समझ चुके थे सत्य को फैलाने से होने वाले सारे प्रतिघात
वे स्वंय भी एक निशाना थे

पर मुझे इस जटिल स्थिति को समझना था
एक जागृत गुरू के साथ कम्यून में
एक अखंड व्यक्ति बनाम भीड़ की स्थिति को

मैं जानता था भगवान मेरे विकास को समीप से देख रहे थे और चाहते थे
कि मैं सभी आशयों को समझ जांऊ और उन्हे अपने विवेक में आत्मसात कर लूँ

अभी तक मैं एक बालक की तरह उन पर मोहित था
मुझे अपने सामने एक शान्त सन्तुलित दृष्टिकोण को रखकर और अधिक समझ
पाने की जरूरत थी

मैंने जिददू कृष्णामूर्ति को अधिक से अधिक सराहना शुरू कर दिया
उनका पूर्ण रूप से देखने का अंदाज और उनका चिकित्सक वाला
रवैया मुझे पसन्द आया

भगवान हमेशा कहते है कि हम इस दुनिया का हिस्सा है
कि उनका कम्यून सिर्फ एक प्रयोग है
उन्होनें कभी नही कहा कि उनके लोग बुध्द हो गये हैं
वह भी उतने हो सोये हुए थे जितनी की बाकी दुनिया के लोग

बाकी दुनिया जहाँ अज्ञानता ही आनंद है
यहाँ... जहाँ अज्ञानता में ना होना ही आनंद है

दुनिया और उनके तरीके सरल है... आसानी से निपट जाते हैं
सिर्फ रोजमर्रा की गतिविधियाँ और ऊपर ऊपर से जीना

यहाँ पर व्यक्ति असुरक्षित है ध्यान की ऊर्जा से प्रयोग करने के कारण
और साथ में जटिल ढाँचा जो कि हमारे अनखोजे मन और अमन का है
यहाँ बहुत ऊँची और अधिक क्षमता वाली ऊर्जा की परिस्थितियाँ अपेक्षा करती है
अनुभव की, मार्गदर्शन की और सावधानीपूर्वक विकास की
यहाँ ऊपर और ऊपर जाते जाने पर बहुत अधिक सजगता की जरूरत है
यहाँ अपनी क्रियाओं के प्रति अत्यधिक सावधान होना पड़ता है

हम आग से खेल रहे थे... सीधी खड़ी अग्नि की अदृश्य तरंगों से

संन्यासी बुध्दत्व तक नही पहुँचे थे... यह मैं अब समझता हूँ
पर मेरे नए प्रश्न थे कि वह बुध्द क्यों नहीं थे
क्या यह सम्भव है कि जो लोग पहुँच सकते थे... वे बर्बाद कर दिये जायेंगे

मेरी चिन्तन का केन्द्रिय बिन्दु
जो मेरा सबसे अधिक ज्वलन प्रश्न बन गया और एक समीकरण
जिसे मैं समझना चाहता था

यह वही सब था जिसके विरूध्द जे. कृष्णमूर्ति लड़े
और कहा कि भीड़ हमेशा अखंड व्यक्ति को बर्बाद कर देगी
और कि सभी संस्थाँए विकलांग और अन्त में अखंड व्यक्ति को नष्ट कर देती हैं

यह साफ था कि कृष्णामूर्ति अविश्वसनीय रूप से तीक्ष्ण प्रतिभाशाली थे
और उनकी दृष्टि इस विषय में सम्पूर्ण थी और वे एकदम ठीक थे

जबकी भगवान अपनी खुली मुक्त दृष्टिकोण से जुआ खेल रहे थे
कि बुध्दाफील्ड इन सब मामलों का ध्यान रखेगी

भगवान भी इन नए नतीजों को देख रहे थे... वे बहुत ज्यादा उदास थे
और उन्होंने यह देखना शुरू कर दिया कि उन्ही के लोग उन्हे हरा रहे हैं

मैं उनका जीवित प्रयोग था
मैं उनके साथ चल रहा था... वह मेरे ऊपर मंडरा रहे थे
वह अपने खुद के लोगों को मेरे आईने में जाँच रहे थे

यह सच था

मैं यह सबके पढ़ने और जानने के लिए घोषणा करता हूँ
कि भगवान देख रहे थे कि तुम सब एक बुध्द के साथ कैसा व्यवहार कर रहे थे
उनका बुध्द उनकी ज्वाला को जलाये
स्वंय भगवान को भीतर लिये

मैं जो कुछ भी यहाँ कह रहा हूँ यह तुम्हे मार्ग पर चलने में सहायता के लिए है

मैं पूरी सच्चाई की एक झलक भर प्रकट कर रहा हूँ
जो कि मैं अभिव्यक्त कर सकता हूँ या जो कि मैं प्रकट करना चाहता हूँ
कुछ रहस्य ऐसे होते है जैसे बालक के हाथों में नंगी तलवार को दे देना

मैं काफी खतरों को देखने लगा जो कि क्षितिज के ऊपर मडँरा रहे थे
जागृत करने के इन शक्तिशाली तरीकों की वजह से
संन्यासियों का इस सीधी खड़ी अग्निवाले बुध्दाफील्ड में आना
वे इन शक्तियों के प्रयोग में अपरिपक्व थे
उन में कोई निश्चलता नही थी और ना ही कोई जागरूकता
इस अग्नि के बारे में और ना ही उसके परिणामों के बारे में

मैं भयभीत नही करना चाहता पर मैं इसके नतीजों का गवाह हूँ
यह होना ही था... सब से बुरा होने वाला था

प्रतिबन्धित... मैं सुन्दरबन में रह रहा था
होटल की बाड़ बुध्दा हॉल के पोडियम से कुछ मीटर पीछे ही थी
और जैसे की भगवान चाँगत्सु में हर शाम को प्रवचन देते थे
उनके प्रवचन बुध्दा हॉल में साथ साथ प्रसारित किये जाते थे
और बाड़ के पीछे मेरी बैठने की जगह पर बिल्कुल साफ सुनाई देते थे
मैं हर रात उनके प्रवचन को सुनने के लिए बैठता था

मैं अपना रात का खाना प्रेम रेस्टारेन्ट में खाता था
और क्यों कि मैं बहुत आहिस्ता आहिस्ता चलता था
मैं प्रवचन खत्म होने से थोड़ा पहले उठ जाता और आहिस्ता आहिस्ता प्रेम
रेस्टारेन्ट की तरफ चल पड़ता ताकि प्रवचन के बाद वाली आपाधापी में
ना फँस जाऊ

जिस रात यह हुआ
हर रोज की तरह मैं अपने रास्ते पर था... जब मुझे एक भारतीय संन्यासी ने रोका
उसने बहुत जोर दिया कि वह मुझे मोटर बाईक में बिठाकर ले जायेगा
मुझे बाईक से नफरत है क्यों कि वह रोब डालकर बैठने में बहुत असुविधाजनक है
और प्रवचन के बाद मुझे अपनी धीमी पदयात्रा से बेहद प्रेम है
उसने बार बार जोर दिया और मैं उसकी बात मान गया
वह मुझे प्रेम रेस्टारेन्ट ले गया और वहाँ गली में अपनी बाईक से उतरा
और बिना किसी चेतावनी के उसने मेरे चेहरे पर बहुत अधिक शक्ति से प्रहार किया
और मुझे जमीन पर लगातार मुक्के मारता रहा

मेरे दायें जबड़े पर इस अचानक हिसंक हमले के कारण... मेरी गर्दन बिल्कुल
मुड़ गयी और मेरी खोपड़ी और गर्दन की माँसपेशियों से चटकने की आवाज आयी
मैं तिरछी दिशा में पीछे की ओर जमीन पर गिरा
और स्वंय को गिरते समय बचाने के लिए मैंने अपने बांये हाथ का सहारा लिया
मुझे अपने बांये कन्धे के अन्दर से एक गहरी आवाज सुनाई दी
मेरी गर्दन के पास की हड्डी मेरी गर्दन में चली गयी थी
और मुझे लगा कि मेरे बायें कन्धे की हड्डी मेरी रीड़ में चली गयी थी और
अपनी जगह से हट गयी थी
मेरे फेफड़े सिकुड़ गये थे और साँस लेना बेहद दर्द पूर्ण हो गया था
उसने मेरे चेहरे और शरीर पर लातें मारते हुए पूछा कि क्या मैंने अपना सबक
सीख लिया... वह अपनी बाईक पर बैठा और चला गया

मेरे आगे अन्धेरा छा गया था और मुझे अपने चारों ओर सब कुछ
चकराता हुआ घूमता हुआ दिख रहा था... उठने में असमर्थ मैं धरती पर ही लेटा रहा

अचानक मुझे एक बड़ी शक्ति का आभास हुआ जिसने मुझे बस उठा दिया
और मैं अपने किसी प्रयास के बिना ही खड़ा था
मैं जानता था मेरे शरीर को किसने उठाया है
पर इस हमले की बड़ी प्रतिक्रियाएँ और परिणाम होने वाले थे

मैं होटल वापिस चला गया और मैंने सुना
कि भगवान प्रवचन के बाद अपनी कुर्सी से उठते समय
असामान्य ढंग से गिर गये और उन्होंने बोलना बंद कर दिया

यह अचानक था पर मैं जानता था कि भगवान के लिए आगे बहुत खतरा है
और मेरे लिए तो सब खत्म हो गया था
मैं अधिक देर तक जीवित नही रह सकता था अगर यह परिस्थिति
और ज्यादा बिगड़ी

मैं सुन्दरबन में अगले दो महीने तक दोबारा से ठीक होने के लिए रूका
पर मुझे यह समझ में आने लगा कि भगवान और मैं दोनो फंस चुके हैं
जटिलता के ऊपर जटिलता

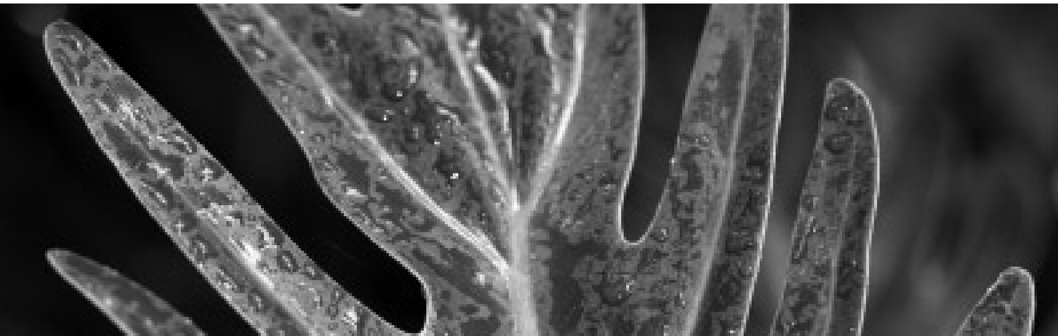

मैंने व्यक्त किया है कि भगवान बुध्दत्व के परे पहले ही जा चुके थे

परिणाम उनके लिए जान लेवा भी हो सकता था
फंसे होना और जुड़े होना सूक्ष्म शरीर में और साथ में कुन्डलित होना

आघात ने कई नई जटिल आध्यात्मिक और मानसिक स्थितियाँ बना दी
मैं जानता था मेरा भौतिक और सूक्ष्म शरीर बुरी तरह से नष्ट हो चुका था

मेरी बायीं तरफ के शरीर में बुरी तरह से क्षति पहुँची थी
जिसने मेरे सूक्ष्म शरीर को पलट और मरोड़ दिया था
सीधी खड़ी सिधाई एक घुमावदार पेंच की तरह मुड़ गयी थी
जो कि बुरी तरह से फँसी थी
जिसने मेरे ईडा और पिंगला नाड़ियों को बन्द कर दिया
और सुषमा नाड़ी को... जो कि मेरे सहस्रार में बहती थी
ब्रह्माण्डीय शरीर ने अपना केन्द्र दायीं तरफ बदल दिया
अपने असंतुलन और विस्थापन के साथ मेल बिठाने के लिए

मेरी ईडा क्षतिग्रस्त हो चुकी थी
और धीरे धीरे इसने पिंगला को प्रभावित करना शुरू कर दिया
और पिंगला ने धीरे धीरे मेरे सुषमा के द्वार को बन्द कर दिया

मेरे शरीर ने गलत ढंग से इन नई परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाना शुरू कर दिया ठण्डा करने वाला भाग बन्द हो गया
शरीर ने हमेशा ही गर्म रहना शुरू कर दिया
ठण्डी भाप जो कि हमेशा अन्दर उठती रहती थी... बन्द हो गयी
मेरी साँस बहुत ही अनियमित हो गयी

मेरी बायीं नाड़ी कमजोर पड़ गयी और अनियमित रूप से बार बार रूकने लगी
हर बार जब यह रूकती तो मैं अपने ह्दय में भेदन महसूस करता
दायीं नाड़ी मजबूत और तेज थी

मेरी बांयी आँख लगातार सूखती रही और उस में जलन होती
और मेरी दायीं आँख लाल होती गयी और हमेशा उसमें से आँसू बहते रहते

मुझे बायें कान से ऊँची और कर्णभेदी आवाजें सुनने लगी
और मैं अपना सन्तुलन खोता जा रहा था
मेरा दांया कान बन्द महसूस होता था और उसमें से काफी कम सुनायी देता था

अपनी बांयी तरफ पलटने पर मैं अंधकार में खो जाता था

धीरे धीरे मेरी तीसरी आँख बन्द होने लगी
और साथ ही साथ मेरे दिमाग के दांये तरफ जबरदस्त दर्द होने लगा

मैंने सीधे खड़े खम्भे के अनुभव को खो दिया

मेरी बांयी बाजू सुन्न होती जा रही थी
काले धब्बे उंगलियों तक फैले हुए थे और अन्त में एक नाखून काला पड़ चुका था
मेरी बायीं टाँग में कुछ काले धब्बे आने लगे और क्षति के चिन्ह दिखने लगे
और मेरे चलने का केन्द्र... दायीं तरफ के सन्तुलन की तरफ चला गया

यह सब शारीरिक परिवर्तन आने शुरू हो गये थे
यह बदलाव और प्रक्रियाएँ हमले के दो या तीन महीनों के बाद दिखने शुरू हो गये

मुझे साफ साफ मालूम था कि मेरे साथ क्या हो रहा है
मुझे साफ साफ मालूम था कि भगवान के साथ क्या हो रहा है

अभी भी कुछ आशा थी
मैं बुध्दत्व के बिन्दु पर आठ माह पहले ही पहुँच चुका था
अपनी शरीर से बाहर और भीतर जाने के बिन्दुओं को मैंने देखा था और जाना था

भगवान ने मेरे ऊपर उनके आपातकालीन काम का एक नया दौर शुरू किया

मेरी बायीं तरंगधारा बन्द थी जो कि शरीर के भीतर कुन्डलित प्रवेश को बन्द
कर रही थी
मुझे बिल्कुल निश्चल रहना था और अपने मुत्यु के केन्द्र में डूबना था
और हारा केन्द्र में हर बार कूदने पर... शरीर को मुत्यु की अनुभूति होते ही
वह तुरन्त ही सिकुड़ता और तीसरे नेत्र से फिर से प्रवेश करने का प्रयास करता

अगर मैं इसी मार्ग पर अग्रसर रहता... तो इसे एक लम्बा समय लगता
पर स्वास्थय को वापिस पा लेना और शरीर में पुन: प्रवेश सम्भव था

भगवान एक योध्दा है
मैं एक लड़ाकू हूँ

जिन्दगी एक जोखिम है
जो अतीत में हुआ है मैं उसके लिये कभी नहीं रोया
जो हो चुका है उसे बदला नही जा सकता

विपत्ति में मैं लड़ कर वापिस आता हूँ
यह मेरा स्वभाव है
मैं इसे बदल नही सकता

साथ साथ कुछ भी सम्भव है
सिर्फ धैर्य रखना और स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए गहरा कार्य करना
रूकावट को हटाया जा सकता था... बड़ा पत्थर मेरी कुन्डलिनी के ऊपर से
धकेल कर रास्ते से हटा दिया जाये तो रास्ता फिर से खुल जायेगा

शारीरिक और मानसिक तल पर क्षति पहुँचानी वाली इस दुर्घटना के बाद
प्रकाश का एक गोला अचानक एक रात मेरे ऊपर अवतरित हुआ
मेरे विकास के साथ साथ जिद्दू कृष्णामूर्ति के प्रति
मेरा आदर, प्रशंसा और प्रेम गहरा होता गया
उनकी करूणामय आत्मा मेरे ऊपर दीप्तिमान हुई
और पहली बार उन्होंने अपने आप को प्रकट किया
वे उन तीन आत्माओं में से एक थे
जो मेरे ऊपर जुलाई में गौतम बुध्द के अवतरण के समय मंडरा रहे थे
वे मेरे मार्गदर्शक होने वाले थे
और साथ में करूणा से मुझे मदद भी करने वाले थे

जो ऊपर लिखा गया है वह सब बिल्कुल पागलपन और सनकी सा प्रतीत होता है

मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ यह पथ पर चलने वाले साधकों के लिए है
यह सब व्यक्त करने के लिए मैं अपनी प्रतिष्ठा दाव पर लगा सकता हूँ
मैंने बहुती बड़ी कीमत चुकाई है
और मैं नही चाहता ऐसी दुर्घटनाएँ दोबारा से घटे

पहले जमाने में साधक इन तलों के अनुभवों को लेने के लिए और अपनी
नाजुक शारीरिक अवस्था की सुरक्षा के लिए संसार को छोड़कर
पहाड़ों पर चले जाते थे
ताकि उनकी यात्रा बिना किसी बाधा के पूरी हो जायें बुध्दत्व के बाद
भौतिक, सूक्ष्म और ब्रह्माण्डीय शरीर की सीधाई सिर्फ प्रकाश के नाजुक धागे होते हैं
शरीर कमजोर और कमजोर पड़ता जाता है
क्योंकि शरीरमन की पकड़ छूट जाती है... ऊपर मडँराते अमन की पकड़ से

शारीरिक तल सूक्ष्म की पकड़ सहज ही छोड़ देता है
और सूक्ष्म ब्रह्माण्डीय की पकड़ सहज ही छोड़ देता है
और परम विलीनता... ब्रह्माण्ड की अनन्त शून्यता में

मरना पड़ता है जीने के लिए

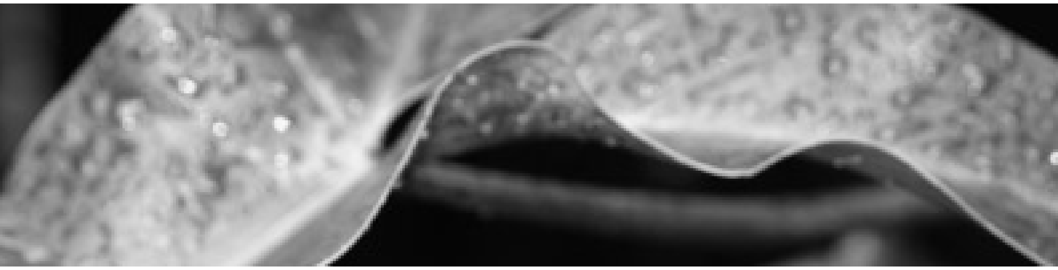

मेरे पास कई गुरू आये सभी ने उनके हर सम्भव तरीके से मेरी मदद की
ऐसी एक भेंट ने मुझे सबसे ज्यादा आश्चर्य चकित किया
क्यों कि मेरा कोई व्यक्तिगत सम्बध नहीं था ना ही
स्वप्न में ऐसा कुछ सोच सकता था कि उनका आशीष मुझ पर होगा

कि करूणामय शिर्डी बाबा मुझे आर्शीवाद देने आयेंगे
मैं उनका भक्त हूँ और उनके लिए नम्रता से सिर झुकाता हूँ
जय दिव्य श्री शिर्डी बाबा

रात में बहुत ज्यादा पसीना आता और नींद नहीं आती थी
पलटना और मुड़ना... बायीं से दायीं तरफ और दायीं से बायीं तरफ
कभी कभी हिंसक दौरे में पूरा घूम जाना

कुण्डलिनी अपने द्वारों को खोलने का प्रयत्न कर रही थी
शरीर धीरे धीरे समन्वय में आता जा रहा था

सबसे गहरी प्रक्रिया जितना गहराई में सम्भव हो उतना मर जाने की
और गहराई में काले चक्र में जा कर स्वास्थ्य प्राप्ति करने की थी

जब भी शरीर मुत्यु में जाता है
तीसरे नेत्र का द्वार बचाने के लिए खुल जाता है
शरीर को अचानक धक्का देने के लिए और जगाने के लिए
ताकि शरीर जिन्दा रहे

मुत्यु का केन्द्र बाहर जाने के द्वार के रूप में काम करता है
तीसरा नेत्र अंदर आने का द्वार है
तीसरे नेत्र की मांसपेशियाँ गहरे विश्राम में जाती है और अंदर से खुल जाती है
और बाहर से प्रवेश की अनुमति देकर घेरे को पूरा करती है

मुत्यु अतिंम चिकित्सक है
यह ईडा नाड़ी को खोलने का सब से अंतिम रास्ता है
और मुझे यह रहस्य पहले से ही मालूम था

दो माह की गहरी चिकित्सा प्रगति पर थी
और धीरे धीरे काम करते हुए यह एक साल ले सकती थी
मेरा ब्रह्माण्डीय शरीर के गोले का भ्रूण भी बढ़ कर बड़ा हो रहा था
जल्द ही फिर से प्रवेश होगा

मैं दोनों ओर से काम कर रहा था
शरीर से ऊपर सूक्ष्म की तरफ
ब्रह्माण्डीय से नीचे सूक्ष्म की तरफ

भगवान मेरी दृढ़ता पर विस्मित थे और उन्होनें मेरी हिम्मत और
संकल्प की प्रशंसा की
यह मेरे लिए पर्याप्त उपहार था
आघात ने मुझे चुनौती दी थी और मेरे गुरू मेरी हिम्मत पर बहुत खुश थे
यह बुध्दत्व से भी अधिक था

यह मेरी हार में भी मेरी जीत थी

किसी तरह से भी मैं विजयी था
अगर मैं हारता और मर जाता
भगवान मुझे अच्छी तरह से भेजते
यह जानते हुए कि एक योध्दा लड़ते हुए शहीद हो गया

जुलाई का उत्सव समीप आ रहा था
मेरी पहली समाधि
प्रतीकात्मक और मेरे लिए बेहद महत्वपूर्ण

भगवान के लिए नया बुध्दा हॉल तैयार किया जा रहा था
और मैं अपना विनम्र निवेदन भेजता हूँ
कि मुझे सिर्फ एक दिन के लिए अंदर आने की अनुमति दी जाये
गुरू पूर्णिमा उत्सव ११ जुलाई १९८७

जब मेरा विनती फटकार के साथ सीधे सीधे मना कर दी गई
तो मैं समझ पाया कि मैं उनका शत्रु हूँ
और उनकी प्रतिबन्धित लोगों की काली सूची में अंकित हूँ और प्रमाणित पागल हूँ

इसलिए मैंने सकारात्मक पक्ष की तरफ देखा

भगवान ने नए बुध्दा हॉल में ७ जुलाई १९८७ से प्रकट होना शुरू किया
और जैसे की मेरी तरफ की बाड़ पोडियम के पीछे थी... मैं अपने आप पर हँसा
और मुझे यह समझ में आया कि मैं भगवान के ठीक पीछे ही खड़ा हूँ
सिर्फ दस मीटर दूर

शायद यही उनकी तरफ से उपहार होना था
मैं आश्रम के अंदर जाने की अपनी मूर्खता पर हँसा
उत्सव मनाता और पागलों की तरह नाचता जब वे नए बुध्दा हॉल में आते
उनसे कुछ मीटर पीछे ही
हजारों संन्यासियों की पूरी ऊर्जा उन की तरफ शीघ्रता से आती
और जहाँ पर मैं नाचता वहाँ पर वह लगभग एक ज्वार भाटे की
लहर जैसी प्रतीत होती
मेरे प्यारे दोस्तों आप सब को मेरा धन्यवाद
मैं बहती हुई लहर के ऊपर लहर के ऊपर लहर को ग्रहण कर रहा था
और भगवान आनन्द से नाच रहे थे

मैं जानता था कि वे जानते है कि मैं जानता हूँ
उत्सव पास आ रहा है
सिर्फ इन क्षणों को जियो और उनमें डूब जाओ
मेरा दर्द उड़ जाता जब भी वे प्रकट होते
उस क्षण में मैं भूल जाता और उनकी आर्शीवाद की बौछार का उत्सव मनाता

हवा शान्त हो गयी
और भगवान ने बोलना शुरू किया
मैं घास पर बैठ गया और मौन में खो गया
उनके हर शब्द को हर मौन को पीने लगा
समय बहता जा रहा था

मैं अपनी आँखें खोलता हूँ तो क्रोधित संकेतों को देखता हूँ
उधर आश्रम की तरफ वाले बाड़ के ऊपर से कुछ पहरेदार
मेरी तरफ नीचे की ओर देख रहे थे

और बगीचे में मेरी तरफ रूखेपन से उंगलियाँ किये हुए थे
यह मेरी तरफ की बाड़ थी और मैं यहाँ रह रहा था

मेरी तरफ उंगलियाँ हिलाते हुए
हे यहाँ से दूर हट जाओ... यहाँ से दूर हट जाओ

मैं अपनी आँखें आश्चर्य से पूरी खोलता हूँ
यह उनकी सम्पति नहीं है
और मैं उनका गुलाम नही हूँ और ना ही उनके कानूनिक अधिकार में हूँ

वे अपने आप को कौन सा तीसमारखाँ सोच रहे हैं

मैं यह सरासर बकवास नहीं ले सकता
ये पहरेदार मुझे मेरी तरफ की बाड़ पर धमकी देने की कोशिश कर रहे थे
कहते हुए कि हे तुम यहाँ से दूर चले जाओ... हे तुम यहाँ से दूर चले जाओ

यह वह तिनका था जिसने ऊँट की कमर तोड़ दी
मैं तुरन्त ही खड़ा हुआ... एक गहरी साँस ली और उन पर बरस पड़ा
मैंने जितना सम्भव हो उतना अपनी आवाज को ऊँचा और साफ किया
ताकि बुध्दा हॉल में सभी लोग और भगवान सुन सके

तुम होते कौन हो और अपने बारे में क्या सोचते हो
तुमने क्या पूरी दुनिया को खरीद लिया है

तुम पहली कतार में बैठने वाले सत्ताधारी लोग अपने बारे में
क्या गलतफहमी पाले हो
कि आश्रम तुम्हारी निजी सम्पत्ति है
कि अब तुमने बुध्द को खरीद लिया है और वे सिर्फ तुम्हारा ही है
कि अब बुध्द तुम्हे बेच दिये गये हैं
कि भगवान तुम्हारी कठपुतली बन गये हैं
तुम्हारे रोज का मन बहलाने का साधन बन गये हैं

पहली कतार में बैठने वाले सत्ता के उपासक मेरे निशाना थे
उन्होनें मेरा प्रत्येक शब्द सुना
मैं जानता था भगवान मुस्करा रहे हैं

आश्रम के पहरेदार बाड़ फाँद आये और जल्द ही उन्होनें मुझे पकड़ लिया
मैं निश्चल था और मेरी साँस शान्त थी... मैं मुस्करा रहा था
जब वह मेरी तरफ पहुँचे
मैंने उनको कहा सिर्फ ढीले पड़ जाओ... शान्त हो जाओ
सिर्फ ठण्डे पड़ जाओ और आनंद में रहो
क्योंकि मुझे जो बोलना था वह मैं कह चुका हूँ
और मैं अपने सुनहरी शब्दों को दोहराता नही हूँ

वे देख सकते थे कि मैं हास्य के भाव में था और मेरी साँस बिल्कुल शान्त थी
और मैं उनके गम्भीर चेहरों पर हँस रहा था
एक अकेला आदमी क्या कर सकता है चार हट्टे कट्टे पहरेदारों के विरूध्द

इसलिए वे सब मेरे चारों ओर घेरा बना कर बैठ गए
मैं अब हास्य के मिजाज में था... यह कितना मूर्खतापूर्ण लग रहा था
असलियत में हास्यपद... चार पहरेदार मुझ एक को चारों ओर से घेरे हुए थे

मैं उनसे फुसफुसाया
हाँ, सिर्फ निश्चल हो जाओ और शान्त हो जाओ.. अपनी आँखे बन्द कर लो
और भीतर चले जाओ... मेरे पास बस मेरे लिए चार व्यक्तिगत अंगरक्षक है

यह सब उनके लिए विचित्र था
अचानक मेरा हास्य और मेरा मजाक देख कर वह लज्जित थे
और उन्हे लगा कि वे शिष्यों की तरह मेरे चारों ओर बैठे हैं
अपनी बेवकूफी देखकर वे उठ गए और मुझे अकेला छोड़ दिया
और बस एक पहरेदार को प्रवचन के समाप्त होने तक के लिए रहने दिया
मैंने अपनी आँखें बन्द कर ली और मौन में भगवान की हर बून्द को पीता गया

प्रवचन समाप्त... नृत्य का आरंम्भ... मैंने नाचना शुरू कर दिया
पहरेदार ने देखा और मुस्कराने लगा
मैं कितना सनकी आदमी था
निष्कपट और सनकी

प्रवचन समाप्त
सैंकड़ों संन्यासी सुन्दरबन होटल के पास से निकले
सभी बाड़ के ऊपर से झांक रहे थे... यह देखने के लिए कि मैं कौन हूँ
ओह यह वही है जो भगवान जैसा बनना चाहता है सनकी आदमी
जो चिल्ला रहा था

मैंने सुना पहरेदारों और प्रबन्धकदल में एक बैठक हुई
और उसके तुरन्त बाद मुझे एक संदेश भेजा गया
कि मुझे अंदर आने की अनुमति है और मैं बैन नही हूँ
कि भगवान ने कहा है... 'शेर की दहाड़'

जिस पहरेदार ने मुझे यह संदेश दिया वह आश्चर्य चकित था
कि उन्होनें मुझे अन्दर आने की अनुमति दे दी... बिल्कुल अजीब

मैं समझ गया कि मुझे हर किसी के द्वारा और भी ज्यादा देखा जायेगा
यह देखा देखी पहले ही मेरे लिए बहुत ज्यादा हो गई थी और हजारों
सन्यासियों का मेरे बारे में धारणा बनाना... यह सब मेरे लिए बहुत ज्यादा था

मैंने सिर्फ भगवान को अपनी गहराई से प्रणाम किया
अपना बैग बांधा और उसी दिन चला गया

यह मेरी जगह नही थी... ना ही मेरा आकाश... बहुत ज्यादा नियन्त्रण
भीड़ एक अखंड व्यक्ति के विरूध्द

मुझे चलते जाना था... भगवान हो या भगवान नहीं हो
सत्य हो या सत्य नही हो

मैं एक धागे से बंधी कठपुतली नहीं हूँ
मैं एक कठपुतली की तरह भीतर प्रवेश नहीं करूँगा
जब मुझे भीतर आने की अनुमति मिलेगी
मैं एक कठपुतली की तरह मौन नही रहूँगा
जब मुझे बैन किया जायेगा

मेरे पास अपनी स्वतंत्रता है... मेरा स्वंय का जन्म
मेरा अपना जीवन... मेरा स्वंय जीने का अधिकार

अगर यह होना है तो होगा
अगर नही तो ऐसा ही सही

हरि ओम् तत् सत्

परे से परे
अपने भीतर
क्यों चाँद के लिए आह भरना?

भीतर देखो
अवलोकन करो
चाँद के ऊपर नजर डालो!

गहरे बादल
रात के अन्धेरे में बहते हुए
विलीन!

पूर्णिमा की रात
अन्धेरे का उतरना
बादलों का चाँदी पर मंडराना!!

जैसे समय का चुपचाप बहते जाना
चिरनूतन यौवन का सरसराते हुए जाना
अनश्वर

यही एक सत्य है
जो कोई जान सकता है

वह मौन और निश्चलता
एक खिलती कली की
प्रातकाल: ओस की बूँद में

निर्दोषता
उस सुन्दरता से
खिलते लाल रंग में
सौम्यता से खुलती

मनमोहक
वही हृदय
अनन्त का

थाई एअरवेज मेरी मनपसन्द एअरलाईन बन गयी
उस आर्किड फूल की वजह से जो वह महिला यात्रियों को देते थे
मैं अपने लिए हमेशा एक फूल माँगता
और उन्होनें बिना किसी बतड़ंग के हमेशा इसे स्वीकारा

यह आर्किड फूल हमेशा मुझे छूता है
और मुझे यह थाई एअरलाईन्स से जोड़ता है
और थाई लोगों के प्रेमपूर्वक सवादिका स्वागत करने के ढंग से

आर्किड फूल और एअरलाईन्स के मैरून रंग ने मेरा ध्यान आकर्षित किया

मैंने पूना छोड़ दिया है और अब मैं भगवा पहनने वाला संन्यासी नहीं हूँ
मैं अपने पिछले जीवन में तिब्बतियन लामा था
जहाँ मैं बिल्कुल यही मैरून रंग डालता था
अब से मैं मैरून डालूँगा और कहूँगा कि मैं एक तिब्बतियन जिज्ञासु हूँ

मैं हाँगकाँग में वापिस पहुँचता हूँ
कम से कम अब कुछ सामान्यता है
लगातार लोगों की मेरे प्रति धारणा नहीं है और ना ही उनके हमले हैं
दुनिया मेरे प्रति बहुत मैत्रीपूर्वक है और प्यारी प्रतीत हो रही है
लोग जिज्ञासा से मेरी तरफ देखते हैं पर वह भद्र और दोस्ताना है
कई लोग मेरे साधु जीवन के अनुभव पूछते हैं
उनके प्रश्न भोलेपन और जिज्ञाशावश हैं और वह बेहद प्रेमपूर्वक और सभ्य है

मैं अपनी बहन शोना और उनके पति रमेश को देखकर बहुत प्रसन्न हूँ
मुझे उनका सौम्य मिला जुला थाई भारतीय स्वभाव पसन्द है
और उनकी नम्रता, अच्छापन और मेरी बहन के प्रति उनका असली प्रेम
मैं उनसे और उनके नवजात बेटे तुषार से बेहद प्रेम करता हूँ

मैं हरियाली की बेहद कमी महसूस करता हूँ और पेड़ो की और प्रकृति की
पत्थर के लम्बी मीनारों से मुझे लगता है कि मैं किसी और जगह आ गया हूँ
और मैं भूल चुका हूँ कि आम रोजमर्रा की जगहों में कैसे चला जाता है
शहर की रफ्तार और चारों तरफ भीड़भाड़ से मुझे चक्कर आने लगते हैं
हर पास से जाते वाहन से मुझे लगता है कि मैं गोल गोल घूम रहा हूँ
और मुझे हमेशा चक्कर ही आते रहते है... मैं अपना सन्तुलन खो रहा हूँ

मैं बिना पैसों और कपड़ों के आया हूँ
सिर्फ एक फीका पड़ चुके पारदर्शक रोब में... जिससे मेरी बहन को नफरत है
कुछ दिनों में मैं उसे कही नही ढूँढ पाता
क्योंकि जब मैं सो रहा था मेरी बहन ने चुपके से उसे फैंक दिया
मैं अपनी बहन के ऊपर क्रोधित हूँ
यह रोब मेरा समाधी रोब है और अनमोल है
यह मेरा पहला रोब था और मैं इसे एक खजाने की तरह बचा कर रखना चाहता था

अब क्या करूं... बहन का प्यार
उसे मेरे लिए सिर्फ सबसे बढ़िया ही चाहिए
वह अपने भाई से प्रेम करती है और मुझे इस तरह से नही देख सकती

मुझे अब मैरून रोब डालना है... मैं अपनी बहन को बोलता हूँ
उसे भी यह रंग पसन्द है
कम से कम मैं मैरून में अजीब नही दिखता
यह हाँगकाँग में अधिक स्वीकार्य है
और वह कहती है कि यह चमकीले भगवा रंग से
जो कि हिन्दू साधुओं का रंग है
उस से काफी अच्छा है और इसलिए चलेगा
हम चार रोब बनाते है और यह मेरे नए तिब्बतियन रोब है

शोना और रमेश दोनों बैठकर गम्भीरता से मुझ से बात करते है
वे दोनों मुझे दुनिया में वापस आने में मदद करना चाहते हैं
जिन्दगी आम तरीके से जीने के लिए
उनकी तरह शादी करके... बच्चों के साथ बस जाने के लिए

हे राम... मैं कहां पर आ गया... कड़ाई से बाहर सीधा आग में

मैं शान्त रहता हूँ... उनके जीने की सरल सलाह को समझता हूँ...
कम से कम वह असलियत में मुझ से प्रेम करते है बस यही काफी था
मुझे कुछ धरती से जुड़े असली लोगों से मिलना था और महसूस करना था
वे यहां थे और मैं उनके लिए धन्यवादी हूँ

मैं बिल्कुल निकम्मा महसूस करता हूँ
मेरी धीमी शारीरिक गतिविधियाँ मुझे असली दुनिया में बिल्कुल
अपाहिज सा बना देती है
मुझे जीने के नये ढंग को समझना होगा
पैसे कमाने के तरीकों को तलाशना होगा और समय निकालना होगा
जोरबा और बुध्दा में सन्तुलन को समझना होगा

रमेश और शोना बहुत दयालु है और उन्होने मुझे मेरा समय लेने दिया
पर इसी बीच मेरा पर्यटक वीसा तीन महीनों में खत्म हो जायेगा
रमेश प्रबन्ध करते है कि मैं उनकी कंपनी के लिए 'वर्क परमिट' का
आवेदन दे सकूँ

उस हिंसक हमले से अपने सिर, गले और रीढ़ में क्षति को पता लगाने के लिए
मैं डाक्टर के पास जाता हूँ और बारीकी से जाँच करवाता हूँ
जाँच से पता चलता है कि रीढ़ की हड्डी ठीक है

मैं दूसरे डाक्टर के पास कन्धे की हड्डी के विस्थापन के बारे
में पता लगाने जाता हूँ
धड़ के ऊपरी भाग में काफी माँसपेशियाँ मुड़ चुकी है
जब मेरी बायीं बाजू से खून का नमूना लिया गया तो
मैं अन्धेरे में मूर्छित सा होने लगा

मुझे गहरे कोशिकाओं में कार्य करने वाले को खोजना है
जिसे मैं हाँगकाँग में वहन नहीं कर सकता

मैं फैसला करता हूँ कि मुझे 'मार्शल आर्ट' पसन्द है
और मुझे अपने शरीर पर खुद काम करना होगा
मैं 'ताई ची चुआन' की धीमी स्वास्थ्वर्धक क्रियाओं को अपनाता हूँ
मैं गुरू चेन झूलयिन से फोन पर बात करता हूँ जो कि मुझे मिलने को कहते हैं
मिलने पर वे फैसला करेंगे कि क्या मैं उनकी कसौटी में खड़ा उतरूंगा या नहीं

गुरू चेन झूलयिन की उम्र ६५ वर्ष है
बीजिंग विश्वविद्यालय से... 'ताई ची चुआन' सिखाते हैं और अब वह एक
प्रसिध्द गुरू हैं

जब पहली बार उन्होंने मुझे देखा
वे मेरी तरफ आकर्षित हुए और बोले... जैसे मैं चलता हूँ वह कैसे कर पाता हूँ
मैं तुरन्त ही समझ गया कि वे मेरी चलने की गहराई को समझ गये हैं
यह धीमे बतख की तरह चलना ताई ची गुरू की चाल थी
सीधी खड़ी सजगता और श्रेष्ठ सन्तुलन

बिना किसी प्रश्न के वे मुस्कराते हैं
और मुझे निजी रूप से प्रशिक्षण देने को भी राजी हो जाते हैं
और वह भी गार्डन रोड पर 'ईस्टोरिल कोर्ट अर्पाटमेन्ट' के पास वाले पार्क में
मेरी बहन महंगी निजी शिक्षा का इन्तजाम करने को मान जाती है
जिस के लिए उन्होंने खुद रियायत दी है

उन्होंने कहा कि मैं उन्हे समझने में मदद करूँगा जो अनुभव मुझे हुए हैं
और कैसे मैं इस परिपूर्णता में पहुँचा हूँ

मैं 'ताई ची चुआन' की प्राचीन येंग १०८ लम्बी पध्दति सीखने वाला था

जो भी क्रिया वे सीखा रहे थे
वे मेरी एकदम सहजता से उसे सीखने की प्रतिभा पर बहुत
आश्चर्यचकित हुए और उनके खुद की रूची से एक घण्टे की कक्षा
दो घण्टे या उससे भी ज्यादा हो जाती

वे मेरी सभी ताई ची की क्रियाँए बेहद रूची और ध्यान से देखते
वे बहुत विनम्र थे और मेरे साथ बेहद स्पष्टवादी थे
और मैंने देखा वे प्रत्येक क्रिया को अपने स्वंय के लिए बार बार दोहराते
कई बार हँसते और कहते कि मेरी कला परिपूर्ण है
और कि वे अपनी कला ठीक कर रहे हैं
उनका हमेशा यह कहना... मेरी पुरानी आदत... मेरी पुरानी आदत
तुम ठीक हो... तुम यहाँ ठीक हो

कि मेरी क्रियाँए हारा चक्र के केन्द्र से परिधि की ओर आती है
और जो क्रियाँए मैं करता हूँ वह परिपूर्ण और बहती हुई है
मेरा अन्दर का चक्र गोल है... इसलिए सौम्यता है

बिना प्रयास किये क्रिया का होना
बिना चले चलना
बिना रूके सहज बहना

मैं १०८ कलांए सीखने पर काम कर रहा था
और उन्हे साथ जोड़ने के लिए मैं इतने जोश में था कि मैंने पूरा विषय
४० दिन में ही समाप्त कर लिया और प्रत्येक कला को बिना
किसी भूल के याद रखा

मैं ताई ची कला का हर रोज तीन घण्टे अभ्यास कर रहा था
और एक घण्टा रात को खाना खाने के बाद
मैं गार्डन रोड पार्क और उसकी सुन्दरता का आनंद ले रहा था
वहाँ क्रम से पानी के झरने और खुली जगहें थी
हंसावार विदेशी पक्षी और जानवर भी

मेरी ताई ची की पूरी कला को शुरू से अन्त तक ४५ मिनट लगते
और जल्द ही चीनी ताई ची विशेषज्ञ और स्थानीय चीनी लोग
इस अलग थलग पार्क में मुझे ताई ची का अभ्यास करते देखने आने लगे
और वहाँ इमारतों में रहने वाले लोग भी मुझे रूची से देखने लगे

जल्द ही मैं दूसरे शिष्यों को सिखाने में उनकी मदद कर रहा था
मैं उनकी कक्षाओं को लेता जब वे यह दावा करते कि वे थक चुके हैं
और बाद में मुझे समझ आया कि उनके शिष्यों को सिखाने का मौका देकर वे
मेरे अन्दर आत्मविश्वास बढ़ाना चाहते थे
वे कहते थे कि मैं अपनी खूबियों को हमेशा नजरअंदाज करता हूँ
और मुझे अपने आप को लोगों के सामने अधिक से अधिक अभिव्यक्त करना
चाहिए और अपनी समझ को बेझिझके बताना चाहिए

अजीब था उसी साल यह घोषणा की गई कि ताई ची को ऐशियन खेलों में
शामिल किया जायेगा और वे चाहते थे कि मैं प्रतियोगिता में भाग लूँ
और यह कहते कि मैं पक्का पक्का पदक जीतूगाँ और कि मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ
जो उन्होनें २५ साल तक सिखाते हुए अभी तक देखा है

हम जल्द ही समीप आये और दोस्त बन गये और मैं उनका बेहद सम्मान करता हूँ
उनका विवेक और उनकी सरल ईमानदारी... मेरा व्यवहार उनके प्रति ऐसा था
जैसा कि मैं एक गुरू के साथ करूँगा जो कि मुझसे आयु और अनुभव में आगे हैं

हम जल्द ही भगवान के बारे में बातें करने लगे
और उन्होंने कुण्डलिनी और नादब्रहमा ध्यान करना शुरू कर दिया
और भगवान की ताओ के ऊपर किताबें पढ़नी शुरू कर दी

मैं भी उनसे काफी ताओ के तरीके सीखने लग गया
उनके गहरे और सरल स्पष्टीकरण और साथ में उनका अनुभव
इस ने मेरी आँखे लाऊत्सु के 'ताओ ते चिग' और 'आई चींग'
के प्रति और गहरी खोल दी

मैंने पूना कम्यून में संन्यासियों के साथ अपनी विपत्ति उन्हे बतलायी
वह हँसे और बोले वह मुझे ताओ के तरीके सिखाएगें
और कि जो तीर संन्यासी मेरी तरफ फेंक रहे थे उनसे बचने की कोशिश में
मैं फालतू में उनका ध्यान आकर्षित कर रहा था यह मेरी गलती थी

बिना किसी प्रतिरोध के उसे समा लो और स्वीकार कर लो
और उनके पास कोई चेहरा नही बचेगा

जो कोशिश मैं उनकी ऊर्जा को इधर उधर करने में करता था
वही से उन्हें और अधिक ऊर्जा मिलती थी... मुझ पर दोबारा हमला करने की लिए

उन्होंने मुझे कोमल हाथों की कला सिखलायी
और मैं उनकी स्पष्टता और विवेक की गहराई को जानने लगा

वे ठीक थे
अगली बार मैं बुध्दाफील्ड में युध्द के मैदान में गोलियों से नही बचूँगा
पर मैं सिर्फ कोमल हो जाऊँगा और युध्दक्षेत्र को पी जाऊँगा
धन्यवाद गुरू चेन झूलयिन
आपने मेरी आँखें खोल दी और मैं आपको प्रणाम करता हूँ

मैं धीरे धीरे हाँगकाँग को प्यार करने लगा था
यहाँ लोग कम से कम प्यार करते है और उनकी ताई ची को समझते है
और उनमें महान साहस और विनम्रता थी एक भारतीय की इतनी प्रशंसा करने की
जो उनका खेल इतने उत्साह से सीख रहा था और खेल रहा था

मैं शोना और रमेश को सहारने लगा था और उनके बेटे तुषार को प्रेम करने लगा था
पर हाँगकाँग में समय ही पैसा है
जल्द ही मुझे अपनी ताई ची के अवकाश को समाप्त करना होगा
और अपने निर्वाह के लिए काम करना होगा

मेरा काम करने का परमिट स्वीकृत हो गया
मेरे पासपोर्ट में ९ अक्टूबर १९८७ को मोहर लगी

अब मुझे दफ्तर में अपने काम करने की निपुणता को साबित करना होगा
उनकी कंपनी क्वाटज् की हाथ में पहनने वाली घड़ियाँ बनाती थी
जो मुझे बेहद भारी और उबाऊ लगती थी
गोल और चौकोर घड़ियाँ... उनको जोड़ना... पैकिंग करना और भेज देना
ऊँचे तलों पर दफ्तर जहाँ हवा के आने जाने का कोई मार्ग नही
और सारा दिन एअर कण्डीशन में रहो

शोना और रमेश के लिए प्यार और ताई ची के लिए मेरे नये आकर्षण ने
मुझे काम करते रहने में मदद की

मुझे चीनी लोग प्रिय है... उनका खाना और ताओ संस्कृति
और मैंने दोबारा से पढ़ना शुरू कर दिया
खासकर ताओ गुरूओं के ऊपर और उनके शऊलिन मंदिरो के लामा के उपर
मुझे ब्रुसली प्रिय है और मैंने उनके जीवन के बारे में हाँगकाँग में और अधिक पढ़ा
और इसके अलावा वूशू और मार्शल आर्टस की दूसरी कलाँए को भी पढ़ी

मैं उनकी सुलेख कला के प्रति उत्साह से भरने लगा और उनकी बांस के पेड़ो की
चित्रकारी और उनका सौन्दर्यपूर्वक अभिव्यक्त करने का अंदाज

मैंने समुराई और जपानी लोगों के जीवन जीने के ढंग के बारे में पढ़ना शुरू कर
दिया और मैं ज़ेन हाइकू और उनकी अपनी ही तरह की दुनिया से आकर्षित हूँ

कयोटो के ज़ेन मन्दिरों के अन्दर देखना और उनकी अनन्त सुन्दरता को निहारना
यह एक पूरी नयी दुनिया थी... संवेदनशीलता और सर्जनात्मक अभिव्यक्ति की

विशाल सर्प के भीतर आओ
पूर्व की दुनिया अब मेरे लिए बहुत आर्कषण रखती थी
हाँगकाँग, चीन, जापान, कोरिया, थाईलैन्ड
यह भगवान के भविष्य के मोर्चे थे
यह लोग भगवान को समझ सकते थे

मुझे लगता था उन्होनें एक बड़ी गलती की जैसा कि ७० के दशक
के सभी गुरूओं ने की
सिर्फ अमेरीकी स्वप्न का बुलबुला
यह विचार की वे जल्द ही भौतिकवादिता के ऊपरी आवरण से थक जाएगें
और जल्द ही आध्यात्मिक प्यास के लिए अन्दर की तरफ मुड़ेंगे

पश्चिम को बिल्कुल भी अंदाजा नही है कि भीतरी यात्रा पर क्या होता है
ना ही स्वाद और ना ही पूर्व की सौन्दर्यता
और ना ही पूर्व की गहरी संस्कृति और ज्ञान

पूर्व अर्धविकसित है और नीचे गिरा हुआ देखा जाता है
पश्चिम और उसके विकसित देश घमण्डी और शक्तिशाली है
और उनका चीजों को मूल्याकंन करने का तरीका मानसिक ढांचे से बंधा हैं

भगवान एक शंहशाह हो सकते थे
और पूर्व में बहुत गहरे विवेक से स्वीकृत हो सकते थे
उनका काम बहुत गहराई तक जाता
और उनकी अग्नि ज्यादा दमकती और जीवित रखी जाती

भूमि तैयार थी... पूर्व को आधुनिक बुध्द की आवश्यकता थी
उनकी हीरे की तरह स्पष्टता और पुराने ज्ञान को आज की जरूरत के हिसाब से
तरो ताजा करना और सोते हुए काले सर्प को दोबारा से जगा देना

पूर्व में बादशाह भी जागे हुए बुध्द के सामने झुकते है
और पश्चिम में वे चुने हुए राष्ट्रपति और उनकी सत्ता के सामने झुकते है

मैं अपने ताई ची के कुंगफू कपड़े दिन में अभ्यास के लिए डाल रहा था
और अपने मैरून रोब काम करने के समय
यह स्वीकृत था पर अन्दर से नापसंद किया जाता था
रमेश के दूसरे भाईयों के द्वारा जो कि अमेरीका में रहते थे

मैं दफ्तर में अपने मैरून रोब मैं आता रहा
और मैंने दो माह अपनी ताई ची का आनन्द लेते हुए काम किया
दिन में काम करना और शाम में पूर्व की सभ्यता को पढ़ कर उसे आत्मसात करना

जल्द ही रोब का विषय सामने आया
और मेरी दफ्तर में उनके भाई के साथ तीखी बहस ही गई
स्टाफ के बिल्कुल सामने
मुझे आम कपड़े डालने को बोला गया
या दफ्तर में काम न करने के लिए कहा गया

मेरा वर्क परमिट उसी दिन ३ दिसम्बर १९८७ को स्वीकृत हुआ था
मैं उसी शाम भारत के लिए निकल गया
मैं अपने रोब के लिए समझौता नही कर सकता था

मेरी बहन और परिवार को धक्का लगा
इतने अचानक बिना किसी विचार विमर्श के

आज मैं गलती महसूस करता हूँ... मैं उन्हे हमेशा प्रेम करता हूँ
वे हमेशा मेरी तरफ रहे... जब भी मुझे उनकी जरूरत पड़ी
और मैंने बेवजह ही ऐसा व्यवहार किया

मैं ऐसा ही हूँ
मेरी इसी तरह से सृष्टि की गई है

जब भी मुझे प्यार से बोला गया कि वे मुझे समझते हैं
तो मुझे बुरा लगा
क्या मैं इतनी सतह पर जीता हूँ कि मैं इतनी आसानी से समझ में आ जाऊँगा
शायद मेरे गहरे होने के अहंकार को ठेस पहुँचती हो

मैं ना समझा जाऊँ... मैं यह ज्यादा पसन्द करता हूँ
यह ज्यादा अच्छा और सच्चा लगता है
और मेरा एकान्त सिर्फ मेरे लिए है

मैं अपने सिर के बल पर खड़े होकर सोचता हूँ
मेरे अन्दर का बागी बस झुक नही सकता
मुझे हमेशा एक नही लड़ाई चाहिए... एक नयी चुनौती और अधिक विकास

रेशम का एक शिविर

मैं दोबारा से भारत में हूँ बिना पैसों के
मुझे अपने जीविका के लिए काम करना होगा
भारत में मेरा परिवार मेरे हाँगकाँग के वर्क परमिट को फैंकने के बारे में सुनता है
जो कि बहुत मुश्किल से मिलता है
और मेरे अचानक बरस पड़ने और सब छोड़ आने के बारे में
वे सब मुझे जानते है... मेरा एकदम से बरस पड़ना और मुझ से दूर रहते हैं

मैं फँस चुका हूँ वापिस जाने का कोई रास्ता नहीं
मैं हमेशा आगे जाने से पहले अपने वापिस लौटने के रास्ते जला देता हूं

शायद मैं ताई ची सिखाऊँ और इस तरह कमांऊ

कुछ दोस्तों को पता चला कि मैंने ताई ची सिखाना शुरू किया है
और एक महीने में मुझे अपने पहले छह विद्यार्थी मिले
हर रोज कक्षांए शुरू हो गई... यह बात जल्दी फैल गई
और प्रत्येक व्यक्ति नए दोस्तों को लाया
और मुझे २० नये विद्यार्थी मिले

सभी इच्छुक लोग दिल्ली के दूतावासों में राजनायिक हैं
स्पेन दूतावास में प्रथम सचिव
मैक्सिकी दूतावास में सांस्कृतिक राजदूत
फिनिश दूतावास में प्रथम सचिव
इटालियन दूतावास में सचिव और अनुवादक
अमेरीकन दूतावास के नौसैनिक

और सूची रोज बढ़ती जाती है उनकी सराहना और अच्छी राय के साथ
और जल्द ही मैं राजनायिकों के बीच में हूँ
उनकी पार्टियों में बुलाया जाता हूँ और दूतावास की शाम की मुलाकातों में

मुझे एक कक्षा में चार से ज्यादा विद्यार्थी नहीं चाहिए
क्योंकि मैं महसूस करता हूँ कि मैं प्रत्येक व्यक्ति को
अपना पूरा ध्यान देना चाहता हूँ
मैं हर दिन तीन या चार कक्षाएँ देना शुरू कर देता हूँ
प्रत्येक कक्षा एक से डेढ घंटे चलती है

मैं अपने विद्यार्थीयों के लिए कृतज्ञ हूँ क्योंकि अब मुझे गहरे में प्रशिक्षित होना होगा
और मैं हर रोज ६ घंटे ताई ची कक्षा में लीन रहता हूँ

यह आरामदायक और सुविधाजनक है क्यों कि मैं निजी पार्क में सिखाता हूं
जो कि मेरे अकेले शायनकक्ष के साथ जुड़ा हुआ है
और एक सेवानिवृत्त कर्नल के पश्चिम दिशा वाले घर में हैं

मैं अगला साल अपने शरीर को गहरे में अभ्यास और प्रशिक्षित करने में लगाता हूँ
क्यों कि अब तक मैंने अपने शरीर की उपेक्षा की है
मैंने नियमित रूप से कोशिकाओं की गहरी मालिश लेना शुरू कर दिया है
और कन्धे के चटकने और माँसपेशियों की क्षति पर भी
काम करना शुरू कर दिया है

मैं बाकी सब बचा हुआ पैसा और अधिक किताबें खरीदने और आगे
पढ़ने में लगाता हूँ मैंने ८०० किताबों का एक पुस्तकालय ले लिया है
जिसमें ज्यादातार किताबें ज़ेन बगीचे, ज़ेन मन्दिर और मार्शल आर्टस और पूर्व
के जीने का ढंग पर है

अपने ऊपर हिंसक हमले के बाद से
मैंने अपने शरीर को स्वस्थ और उसे ठीक करने पर ध्यान दिया है
धीरे धीरे अनिवार्य नाजुक धागों को जोड़ना
और मेरे शरीर को सहस्रार से सीधाई में मिलाना

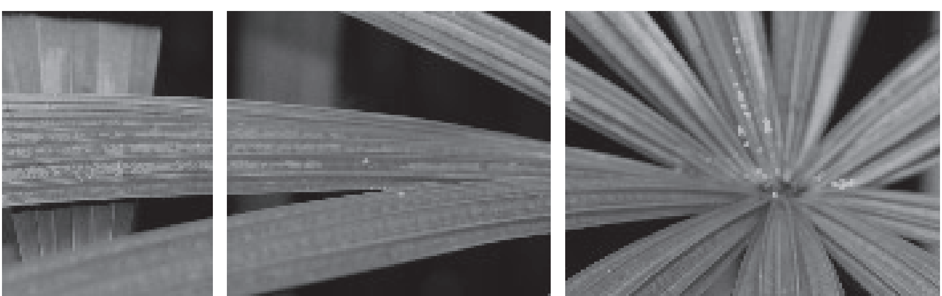

ताई ची ताओ गुरूओं के द्वारा बनायी गई
अब तक की सबसे शक्तिशाली पध्दति है

क्रिया के दौरान धीमे से और गहराई में साँस लेना
और साँस को ठहरने देना और हारा केन्द्र के मध्य में पहुँचने देना

संतुलित क्रियाओं का प्रयोग कर के सौम्यता से शरीर के भार को बदलना
और श्वास को धरती में गहरे तक जाने देना

और दूसरी तरफ
हारा चक्र से ऊपर की तरफ खींचना और परिधी पर फैला देना

परिधी से केन्द्र तक और केन्द्र से परिधि तक
जब तक कि दोनो पिघल कर एक नही हो जाते
पूरे शरीर की परिधि केन्द्र से भर जाती है

साधक को गुरूत्वाकर्षण के रहस्य का प्रयोग करना होता है
जैसे गुरूत्वाकर्षण हमेशा सीधे नीचे की ओर काम करती है
बस पूर्ण स्वीकृति की दशा में होने पर
गुरूत्वाकर्षण सीधी खड़ी तरंगों को धरती में सिकुड़ देती है
और कुण्डलिनी को आजाद कर आकाश में ऊपर चढ़ने देती है

आदमी बिल्कुल एक वृक्ष की भान्ति है
आदमी एक बीज है और सही मिट्टी में जड़ें धरती में गहरे तक जाती हैं
जितनी गहरी जड़े उतना ही ऊँचा पेड़ और उतनी ही फैली हुए शाखाएं
और उतने ही बेल बूटें और फल लगते हैं और फूल आसमान की तरफ खुलते हैं

ताई ची में और ध्यान की सभी पध्दतियों में
जड़ो के गहरे जाने का अर्थ
साधक को अपने शरीर के भार को हारा चक्र से नीचे स्थिर होने देना होता है
और पाँवों से धरती में ठहरने देना होता है

भार स्थिर हो जाने के साथ ही श्वास स्थिर हो जाती है
और हम पाँव से ऊपर की ओर श्वास लेते है... हारा की तरफ

मैंने हमेशा कहा है कि पाँव का तलवा तुम्हारी आत्मा है

किसी को कुण्डलिनी को आकाश में ऊँचा खोलने के लिए
ज्यादा प्रयास करने की जरूरत नही है
यह बस हमारा बेवकूफ अंहकार है और सिर्फ मूर्खता

सिर्फ रास्ते ढूँढो गुरूत्वाकर्षण के केन्द्र को नीचे लाने के और
धरती में स्थिर हो जाने के
अपने आप ऊपर की तरफ ऊर्जा पैदा होगी
जैसे की हर उर्जा के विपरीत और बराबर दूसरी ऊर्जा होती है
धरती में पूर्णत: स्थिर हो जाने पर... आसमान तुम्हारा इनाम और पुरस्कार होगा
कुन्डलिनी खुल जायेगी और तुम गुरूत्वाकर्षण से परे चले जाओगे

साधक गुरूत्वाकर्षण से लड़ नहीं सकता
साधक को गुरूत्वाकर्षण में स्थिर होना होता है
अन्दर की कुन्डलिनी ऊपर आकाश में जाने का
रास्ता ढूँढ लेती है और खुल जाती है

ताई ची और विपासना भीतर की सीधी खड़ी दिशा की सिधाई का प्रयोग करती है
और गुरूत्वाकर्षण का प्रयोग करके पूर्ण स्वीकृति में धरती में जाने देती है
ताई ची ज्यादा जटिल है क्यों कि वह १०८ कलाओं का प्रयोग करती है
केन्द्र को गोलाकार ढंग से फैलाने के लिये और हारा को विस्तृत करने के लिये

विपासना बहुत वैज्ञानिक है
यह एक कदम वाली सरल पध्दति है
इस सीधे खड़े क्षण में उपस्थित होने के लिए
जहाँ धीरे चलने से हारा केन्द्र धरती में स्थिर हो जाता है
और जहाँ ऊपरी शरीर में ७ केन्द्र सीधी खड़ी सिधाई में है
और सभी एक साथ है जैसे की एक तरंग की धारा में

विपासना उनके लिए है जिनकी कोई परिधि नहीं बची है
सिर्फ एक बहुत पतली परत है
शरीर में सीधी खड़ी लहर ही एक आखिरी नरम कार्य बचा है जिसे अकृत करना है

जाज़ेन में... सालों सीधा बैठना

अदृश्य काम सिर्फ बैठने का है
श्वास को हारा केन्द्र में स्थिर होने देना और पाँव से बहने देना
और धरती में स्वंय की जड़ों को बनाना

सभी पध्दतियाँ अन्दर स्थिर होने और नीचे जाने की है
मुझे आशा है आप को संदेश मिल गया है

सिखाना और लोगों पर काम करके मुझे स्वतंत्रता मिलती है
अपने आप को अभिव्यक्त करने और मन और अमन के अनुभवों को जोड़ने में

अमन के सीधे खड़े अनुभवों की तरंगे
धीरे धीरे मन के साथ जुड़ती है और शब्दों में व्यक्त होती है

मैंने पूना आश्रम के गलत और प्रतिकूल परिणामों को महसूस
करना शुरू कर दिया था
जहाँ इन अनुभवों के बारे में बात करना गलत समझा जाता था
जहाँ धीरे से बुध्दत्व के बारे में कुछ भी व्यक्त करना वर्जित था

भगवान का पूरा प्रयोग उनके विरूध्द काम कर रहा था
अभिव्यक्त करने की स्वतन्त्रता के बजाय
सख्त और अदृश्य नियन्त्रण रखा गया... प्रबन्धकदल ओर अधिकारियों के द्वारा

इतने बड़े और विशाल अनुभवों को अभिव्यक्त ना करने से
विशुध्दी चक्र में अवरोध पैदा होता है... जिससे नीचे की तरफ ह्दय केन्द्र में
अवरोध बनता है और इसके नीचे और नीचे

चेतना का विस्फोट इतनी ऊर्जा को ऊपर की तरफ उठाता है
और इतनी रचनात्मक और आनंदमय ऊर्जा की वर्षा करता है
कि किसी भी तरह की अभिव्यक्ति ना करना खतरनाक
और प्राण घातक हो सकता है शरीरमन जैसे छोटे से भाग के लिए

व्यक्ति मकड़ी के जाले की तरह है
एक बहती हुई बहुआयामीय अभिव्यक्ति की तरंगो की तरह
अभिव्यक्त न करने पर यह तरगें ज्यादा बोझ से भर जाती है और फट जाती है

मैंने हाँगकाग में पाँच महीने बिताये
और पिछले १६ महीने दिल्ली में बिताये
२१ महीनों का एक लम्बा समय पूना और भगवान से दूर

मैंने सुना भगवान ने अभी अभी
एक नये ध्यान ‘मिस्टिक रोज’ को आरम्भ किया है
पुरानी यादें ताजा हो गई है
मुझे इस नये ध्यान की असली शुरूआत मालूम है
मेरे भगवान के जुलाई १९८६ वाले रहस्योद्घाटन में

मुझे भगवान की कमी महसूस हो रही है
और मैं जानता हूँ कि मुझे वापिस जाना चाहिए
उनकी प्यारी देखरेख में और अपनी यात्रा में गहरे जाने के लिए

मैं अपने शरीर में और ज्यादा मजबूत हो गया हूँ
मेरी जड़े गहरी हो गयी है... तना चौड़ा और मोटा हो गया है
मैं ऊँचा और चौड़ा महसूस कर रहा हूँ
मेरी चाल धीमे है पर उपस्थिति का एक गहरा एहसास मेरे चारों ओर विद्यमान है

मैं तैयार हूँ और पूना आश्रम वापिस जाने को तत्पर हूँ
मैं निश्चित हूँ कि इस तीव्र तैयारी से
और मेरे ताओ के अदृश्य होने के नए व्यवहार से
मैं स्वंय को नए वातावरण में आजमा पाऊँगा और खुद को सम्भाल पाऊँगा

पूना आश्रम में काफी थे जिन्होनें मुझ पर हमला किया
पर काफी थे जिन्होनें मुझे प्रेम भी किया

वह मौन लोग कम थे
जो सिर्फ मुस्कराते या शान्ति से मुझे पास से जाते हुए देखते
या आते और दूसरे के देखे बिना हैलो कर चले जाते
काफी थे जो गुप्त रूप से उम्मीद करते कि काश वे मेरे नजदीक हो सकते
और मेरे अनुभवों के बारे में पूछ सकते पर वे दूसरों की नजर में आने से डरते थे

मौन रहने वाले और समझने वाले संन्यासियों में एक आम गुण था
वे शान्त थे और समझते थे और मुसीबत में नही पढ़ना चाहते थे
जो सत्ता और प्रबन्धदल में थे उनमे एक आम बात थी
वे हमेशा खुद को दूसरों पर थोपते
और अपने विचारों के बारे में बहुत जोर देकर बोलते

मैं जानता था कौन जहर फैला रहा है और कहाँ से मुसीबत आ रही है
मैं हर किसी को जानता था
और शान्ति से उनकी मेरे विरूध्द गतिविधियों को देख रहा था

मैं अप्रैल १९८९ को पूना वापिस आता हूँ

यहाँ की दुनिया बदल चुकी है
काफी नए लोग आ गए हैं और माहौल बिल्कुल बदल चुका है
जैसे की भगवा रोब की जगह आम विदेशी पहनावा आ गया है
और लोग ज्यादा शान्त हो गये है और कम उत्साहित लग रहे है
और उन्होंने सिर्फ रोज का ध्यान करने की प्रक्रिया को स्वीकार कर लिया है
और बुध्द होने का उत्साह यहाँ की हवा से कही दूर चला गया है

वे ठहर गये है और उन्होंने स्वीकार कर लिया है कि बुध्दत्व उनके लिए नहीं है
पर सन्तुष्ट हैं कि यहाँ भगवान के साथ है

जैसे ही मैं होटल में आता हूँ मैं पता करता हूँ कि यहाँ सब कुछ कैसे चल रहा है
और चुपके से पता करता हूँ कि प्रबन्धकदल में कौन कौन हैं
क्या नीलम तथागत मनु जरीन स्वभाव अभी भी यहाँ सत्ता में हैं

हाँ वे हैं... मुझे बताया जाता है
और वे यह भी जानते है कि मैं पूना वापिस आ गया हूँ

धीमे चलने वाला वापिस आ गया है... उनके जासूस हर जगह है

मैं कुछ दिन प्रतीक्षा करता हूँ और उनके कपड़े पर नए नियमों
और मौजूदा परिस्थितियों को समझता हूं

मुझे जितना हो सके उतना अदृश्य रहना है
मेरी योजना है कि मैं उन्हें देखने पर झुक कर आदर दिखांऊ
और अपने स्वभाव में नया बदलाव दिखाऊ
कि मैं बदल गया हूँ और उनकी सत्ता का सम्मान करता हूँ
क्यों कि वे सिर्फ भगवान का ही काम कर रहे है
और उन्होनें अपना जीवन उन्हे समर्पित कर दिया है

अपने ढीले ढाले कुंगफू काले कपड़े डाल कर
मैं आश्रम के द्वाररहित द्वार पर पहुॅचता हूँ और जैसे ही मैं वहाँ पहुॅचता हूँ
पहरेदार मुझे अभिवादन करते है और कहते है
कि हम आज तुम्हारी प्रतिक्षा कर रहे थे... तुम वापिस आ गये
अन्दर एक बैठक के लिए चले जाओ

मैं मनु को मिलता हूँ और विनम्रता से उसके लिए झुकता हूँ
यह कहते हुए कि मैं उसे देखकर कितना प्रसन्न हूँ
और मुझे भीतर आने की अनुमति देने के लिए कितना कृतज्ञ हूँ
और कि मैं अब बदल चुका हूँ

मनु प्रसन्न है और मुझे आर्शीवाद देता है और वह चारों ओर संदेश फैला देता है
कि मैं एक अच्छा बच्चा बन गया हूँ और मैंने अपने
व्यवहार को ठीक कर लिया है
मेरा झुक जाने का ताओ व्यवहार और पेड़ की तरह झुकने का तरीका काम कर
रहा है इन के आगे झुकते रहो जब भी यह मुसीबत पैदा करने वाले दिखे
इन्हें अपने अहंकार की पूजा करने में आनंद मिलता हैं

मैं अन्दर जाता हूँ और देखता हूँ नीलम और तथागत मेरी तरफ कठोरता से देख
रहे है और कृष्णा हाऊस आफिस में अप्रसन्न बैठे है
वह मुझ पर जरूर नजर रखेंगे
उनकी तरफ देखे बिना मैं आगे चलता रहता हूँ
और लाऊत्सु द्वार पर पहुँचकर भीतर से अपना प्रथम मौन प्रणाम करता हूँ

गुरदयाल सिंह जो हमेशा मेरा नजदीकी मित्र रहा
पूना आने के मेरे पहले दिन से ही
जोर से हँसता है और भाग कर मुझे गले लगा लेता है
बहुत खुश हूँ तुम्हे वापस देखकर... हमेशा तुम्हे याद किया
मैंने तुम्हे कई बार बुध्दा ग्रौव के पीछे आहिस्ता आहिस्ता चलते देखा
कई बार जब मैं रात को सोता

तुम वापिस आ गये... हमें खुशी मनानी चाहिए
वह बताता है हास्की पूना में है... वह मुझे प्रेम करती थी
और हम काफी नजदीक थे
वह कृष्णा हाऊस में हास्की के कमरे में जल्दी से जाता है

हास्की भागती हुई आती है और मुझे गले लगा लेती है
ओह रजनीश... मेरे प्यारे... ओह रजनीश... मेरे प्यारे तुम वापस आ गये
कितना सुंदर आश्चर्य... चलो साथ साथ चलते हैं
और अपनी बाजू के नीचे मेरा हाथ पकड़ कर धीमे धीमे चलती है
उसे देखकर कितना अच्छा लग रहा है और मैं सही में प्रसन्न हूँ कि वे यहाँ है

गुरदयाल सिंह और हास्की दोनों ने मुझ से प्रेम किया
वे आश्रम में मेरी मुसीबतों को जानते थे और यह कोशिश करते थे
कि हमेशा मुझे अपनापन सा लगे
उन्होंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की
कि वे मेरे बारे में लानी डेविड और योगी को अच्छा अच्छा बतायें
उनके अच्छे नाम ने मेरा रास्ता काफी आसान कर दिया
हास्की बेहद जिन्दादिल और प्रेमपूर्वक है
खुले दिल की स्नेही ब्राजीलियन और अपने ढंग से बागी और कड़क

मैं वापिस आ गया हूँ

मेरे प्यारे दोस्त हँसते बुध्द गुरदयाल सिंह के लिए
जो कि हमेशा चुटकुला बताये जाने से पहले ही समझ जाता
मैंने सुना उसने हँसते हँसते ९ जनवरी २००५ को शरीर त्याग दिया

मुल्ला नसरूद्दीन की गर्ल फ्रैन्ड उससे पूछती है
क्या तुमने अभी तक सिर्फ मेरे होठों को ही चूमा है
मुल्ला नसरूद्दीन हाँ और यह सबसे ज्यादा मीठे होंठ है

भगवान बुध्दा हॉल में बोल रहे हैं
और हर बार की तरह मैं कतार में प्रतीक्षा करता हूँ
धीमे धीमे चलता हूँ... बाकी लोगों को मेरे पास से आगे जाने देता हूँ
और बुध्दा हॉल में अन्तिम पहुँचता हूँ

मैंने हमेशा एक विशेष स्थान को चुना
सबसे आखिरी कतार में उनकी कुर्सी के बिल्कुल सामने
बिल्कुल पीछे... संगमरमर की बुध्द प्रतिमा के पास

भगवान आते हैं... हवा विस्फोटित हो जाती हैं
और मैं आँसुओं में डूब जाता हूँ
जादुई लम्हे वापिस आ गये हैं
वह दमक रहे हैं और इसी क्षण में उपस्थित हैं

हवा का रोम रोम प्यार से भरा है
एक क्षण में ही मैं अपना सारा अतीत भूल जाता हूँ
और हर जीवित संन्यासी के लिए कृतज्ञता महसूस करता हूँ
हम सब यहाँ साथ साथ है
हम एक बुध्दाफील्ड है

बस कुछ दिनों में भगवान फैसला करते हैं
कि वे निश्चित समय के लिए मौन में चले जाएंगे और बोलना बन्द कर देंगे

मेरा हमेशा वही समय और वही मार्ग रहता है
२.३० बजे प्रवेश करना और लाऊत्सु द्वार की तरफ बढ़ना
पहले मेरा भीतर से भगवान को प्रणाम करना और फिर पानी का झरना जो की
तालाब में बहता था उसके ध्वनि के पास कुछ क्षण रूकना और फिर सफेद हंसों
के पास ठहरना और तब अपने सुबह के खाने और चाय के लिए
बोध्दिधर्मा कैफे की तरफ चलना

कुछ दिन बीत जाते हैं
और मैं देखता हूँ नीलम और तथागत मुझे बार बार देख रहे हैं
हर बार जब मैं द्वार से प्रवेश करता हूँ और कृष्णा हाऊस के पास से निकलता हूँ

मैं अपने भीतर आने का मार्ग बदल देता हूँ
और द्वाररहित द्वार से बुध्दा ग्रोव की तरफ चलता हूँ
और तब लाऊत्सु द्वार की तरफ मुड़ता हूँ और फिर वापिस मुड़ कर तालाब के

पास रूकता हूँ और तब बोध्दिधर्मा कैफे की तरफ वापिस जाता हूँ
मेरे लिए यह पहले जैसा अनुभव नही है
यही मेरे चलने की धारा को तोड़ देता है और मेरी पूरी सुबह बिगड़ जाती है

कुछ दिन के बाद मुझे मल्टीवरसिटी के पास तथागत कठोरता से मिलता है
कि मैंने फिर से आहिस्ता चलना शुरू कर दिया है
और यह उसके द्वारा बर्दाश्त नहीं किया जायेगा
और कि लोग मुझे देख रहे है और मेरे विरूध्द है और ऐसा
उनके सुनने में आ रहा है
सिर्फ साधारण ढंग से चलो और ध्यान आर्कषित करने से दूर रहो

कब यह दुनिया एक इन्सान को सिर्फ स्वंय होने देगी
क्या इन सत्ता के भूखे कुत्तों के पास कुछ और नही है
अपने आप को व्यस्त रखने के लिये
सिर्फ ऊँची कुर्सियों पर बैठना... कुछ काम नही होना तो हमले करते रहना

मैं जानता था भगवान हर विचार को सुन और देख रहे हैं
क्या विपत्ति है... मैं कुछ करूं या न करूं
इससे कोई मतलब नही
यह लोग अपने सत्ता की भूखी चालों को नही छोड़ेंगे

मैं अगले दिन आता हूँ और सुनता हूँ कि कृष्णा हाऊस को बन्द कर दिया गया है
और भगवान ने कहा कि इस का पुनरूद्वार करो
सभी प्रबन्धक दल वालों को छुट्टी पर जाने की आज्ञा है
जब तक कि आफिस दोबारा से नही दिये जाते

और कि स्वामी स्वभाव भगवान के भारतीय राजदूत होंगे

और दूसरी घोषणा एक २१ लोगों का 'इनर सर्कल' को बनाने की
जो आश्रम की रोजमर्रा की गतिविधियों को सम्भालेंगे

मैं व्यक्तिगत रूप से इसे कुत्ते को पीटने वाली ज़ेन छड़ी कहता हूँ

भगवान मुझे उनके तमाचा मारने का ढंग सिखा रहे हैं
उनकी ज़ेन छड़ी
उनका तरीका इन भूखे कुत्तों को सत्ते के खेल में व्यस्त रखने का
और सिर्फ उन्हें बड़ी हड्डी चबाने के लिए देना का

इसके बाद सर्वशक्तिमान कुत्ता शक्तिमान कुत्ते को खाता है
और जितना ऊँचा वह जाता है उतना ही जल्दी वह गिरता है

इस तरह वे अपनी सत्ता की आंकाक्षा की पूर्ति करते हैं और उसे अनुभव करते हैं
और गिरने पर उनकी आँखें शायद बुधत्व के लिए खुल जाये
या उन्हें यह समझ आ जाये कि सत्ता से उन्हे कुछ भी नही मिला

सिर्फ बहुत थोड़े लोगों को वे इन सत्ता के गलियारों में बिठाते हैं
अपने गुप्त हुक्म के इक्कों के रूप में

उनकी दो धारवाली तलवार
पर दुर्भाग्य से कुछ लोग बहुत ही मोटी चमड़ी के होते हैं
और उन्हे अपनी सत्ता के मोह से इतना प्रेम होता है
कि उनकी इस युक्ति को बस देख ही नहीं पाते

पर आज या कल वे गिरेंगे ही
सदा के लिए कुछ भी नही रहता
कोई सर्वशक्तिमान कुत्ता उन्हे बाहर का रास्ता दिखा देगा

कहते हैं हर कुत्ते का अपना दिन होता है
क्या खेल है कभी खत्म नही होता
भौं भौं भौं भौं

१९ मई को भगवान घोषणा करते हैं कि वे सार्वजनिक रूप से बोलना बन्द कर देंगे

बड़े खिलाड़ी व्यस्त हो गए हैं इधर उधर दौड़ने में
सत्ता मिलने के इस नए दौर में
और मैं धन्यवादी हूँ... मैं अगले तीन महीने के लिए उनके घूरने से बच जाता हूँ

यह एक चमत्कार है कि मैं इतनी देर तक संन्यासियों की नजरों से कैसा बचा रहा
मैंने अपने ताई ची प्रशिक्षण को व्यवहार में लाना शुरू कर दिया है

क्रिस्टल पिरामिड के पास जो हंसवाला तालाब है
मैंने उसके पास रोज बैठना शुरू कर दिया है
शाम को ४ बजे के बाद से ८.३० बजे तक... जब शाम का
टेप वाला प्रवचन खत्म होता हैं और तब रात का खाना
और फिर से ११.३० बजे तक बैठना... जब द्वार बन्द हो जाता है

जितना गहरा हो सके उतना मैं अपनी निश्चलता के घेरे
को इक्कठा करना चाहता हूँ
मैं जानता था कि भगवान अपने एक नये कार्य और नाटकीय दौर की तैयारी
कर रहे है और कि इन तैयारियों में मैं भी सम्मलित था
इसलिए मैं खाना खाता... गहरी नींद सोता और तालाब के पास शान्ति से बैठता

मैंने पानी के झरने की आवाज को अपनी बांयी तरफ चुना
ताकि मेरा सुनना सन्तुलित हो सके जो कि अभी तक खुला नहीं है
और अपनी रीढ़ की हड्डी को तेज करने के लिए पिरामिड के कोने पर बैठता
लाऊत्सु द्वार के ठीक सामने
मुझे अपने रोज के बैठने की परिपूर्ण जगह मिल गयी थी
मैं संन्यासियों की दृष्टि से दूर रहता और अपनी मुख्य ध्यान की अवस्था जो कि
विपासना में चलना था उसे मैंने रोक दिया... सिर्फ निश्चलता से गहराई में बैठना
और अपनी ऊर्जा को इक्कठा करना... मुझे जल्द ही इसकी जरूरत होगी

मैंने ध्यान दिया कि कुछ लोग अजीब तरीके से मुझ पर हंस रहे हैं
जब भी मैं उनके पास से चलता तो मैं सुनता कि वह समझते है
कि मैं समलैंगिग हूँ
पजामा डालकर चलने से चलते समय मेरी टागें अलग हो जाती थी
मैंने यह भी ध्यान दिया कि यह बहुत अजीब और अभद्र दिखता था

मुझे ठीक नही लग रहा था क्यों कि यह विवरण बढ़ते जा रहे थे
और मैं समझ सकता था कि देखने वालों को यह ऐसा ही दिखता है

भगवान ने कहा था कि भगवा रोब को प्रयोग में लाना छोड़ना होगा
क्यों कि यह पूना पुलिस का आकर्षण खींचती है
और संन्यासियों को खामख्वाह तंग किया जाता है

पर उन्होंने रोब डालने के बारे में कुछ भी नही कहा था
इसलिए मैंने फैसला किया कि मैं अपनी आहिस्ता चलने के अंदाज को
एक रोब के पीछा छिपाऊँगा जो कि काला नीला होगा... लगभग काला
सूफी काला रोब डालते हैं
यह चमकीला भगवा नहीं था जो ध्यान आकर्षित करता था

इसलिए मैंने गहरे 'नीले काले' रंग के दो रोब सिलवा लिये
और उन्हे डाल कर आश्रम में आने लगा
किसी ने इस पर ध्यान नही दिया... यह दिखने में ना तो उग्र था
ना ही कुछ खास और इसने मेरे चलने का ढंग छिपा दिया

सब ठीक था और मैं आराम से था
अचानक एक शाम तथागत मुझे गुस्से से मल्टीवरसिटी ले गया
और मुझ पर चिल्लाया
कि मैंने तुम्हे धीमे चलने से मना किया था और रोब ना डालने को कहा था
भगवान ने रोब बैन कर दिये है

मैंने उन्हे नम्रता से कहा कि मैं माफी चाहता हूँ
और कि रोब भगवा रंग का नहीं है और भगवा रोब को बैन किया गया है
मै यह गहरे रोब एक हफ्ते से डाल रहा हूँ और किसी ने कोई शिकायत नही की है

तथागत के पास धैर्य नाम की कोई चीज नही है
पूर्णत: तानाशाह की तरह वह बोला कि वह किसी तरह का वापिस जवाब देना
बर्दाश्त नही करता और कि उसका कथन अन्तिम होता है
रोब नही और धीमे चलना भी नही
उसने मुझे अपना व्यवहार बदलने के लिए दो दिन दिये

मैं बिल्कुल टूट चुका था और अब भगवान पर सही में क्रोधित था
यह सब मेरे लिए बहुत ज्यादा हो चुका था
यह वही उबाऊ मूखर्ता और अब क्षतिपूर्ण कदम था... मेरे विरूध्द
मेरे लिए काफी हो चुका था मैं आश्रम के बाहर चला गया

मैं भगवान पर पहली बार अपने जीवन में सीधा क्रोधित था
अब यह साफ साफ उनकी गलती थी
जिस किसी को भी वे सत्ता में चुनते वह सभी लोग मुझे सताते

मेरे कपड़ों का मेरे आध्यात्मिक मार्ग से क्या लेना देना
क्यों यह लोग हर चीज में दखलअंदाजी करते है
कहाँ है मेरी सरल स्वतन्त्रता
जैसी मेरी मर्जी वैसा डालने की स्वतन्त्रता

मैं आश्रम से आ गया और उस रात बिना खाये सो गया
मैं बहुत क्रोधित था और बिल्कुल तंग हो चुका था
मैंने दोबारा यहाँ से जाने का फैसला किया
और अब पर्वतों पर जा कर तिब्बतियन लोगों के
साथ ध्यान करने का निश्चय किया

मैरून रोब फुसफुसाहट

जून १९८९ निर्मल जो मेरे साथ फ्लैट में रहता था
उस ने मुझे अगले दिन सुबह सुबह उठा दिया
वह जानता था कि मैं दोपहर को १.३० या २ बजे तक सोता था

हे रजनीश अंदाजा लगाओ क्या हुआ... अंदाजा लगाओ क्या हुआ
आश्रम के द्वार पर सुबह नया संदेश लगा है
हर किसी को नियम से मैरून रौब डालना है
और मैरून रौब का रंग बिल्कुल वही है जो कि कमरे में टंगे हुए
तुम्हारे मैरून रौब का है

वह सदमे में था और विस्मय में

मैं पागलों की तरह हँसते हुए उठा
और मैंने सिर्फ अपने दाँत किए और नहा कर आश्रम में चला गया
अपने पूरे जीवन में पहली बार १२ बजे
मैं सिर्फ अकेला था जो मैरून में चल रहा था

मैं तथागत को ढूढंते हुए धीमे धीमे चल रहा था
अब मेरी ओर दोबारा आओ... बड़े कमीने इन्सान... हा हा हा हा हा
मैं रोब में चल रहा हूँ... मैरून रोब

वह एक चमत्कार था
भगवान समझते है और मैं हँसा

लाऊत्सु द्वार से निकलते हुए... मेरी आँखों में आँसू हैं
धन्यवाद भगवान... धन्यवाद भगवान
मैंने आप को साफ और ऊँचा सुना
मुझे आप का गुप्त संदेश मिला... मेरा समय आ गया है
मैं तैयारी करूंगा और जितना हो सके उतना गहरा जाऊँगा
भीतर जाओ भीतर जाओ भीतर जाओ
वे स्वतंत्रता की तरफ थे... सत्यमेव जयते
मैंने विश्वास के पंख लगा लिए थे
मैं अपने ही ढंग से उत्सव मना रहा था
मैं जितना हो सके उतना गहरा जाऊँगा... यह मेरा तरीका है
धन्यवाद और कृतज्ञता प्रकट करने का

मैंने कुछ दिन बाद तथागत को एक मैरून रोब डाले पास से जाते देखा
छिपते हुए मेरे पास से निकलते समय वह मूर्ख और बेवकूफ लग रहा था
मेरी आँखों में देखने की उसने हिम्मत नही की
मैं जानता था उसके दिमाग में क्या है... मुझसे अब दोबारा से दखल अंदाजी नही

भगवान नया ‘मिस्ट्री स्कूल’ बनाने की घोषणा करते हैं

भगवान क्षितिज पर दोबारा से नये आदमी को देख रहे हैं
और संदेश भेजते हैं कि काफी लोग जल्द ही आयेंगे
१०,००० लोगों के लिए नया बुध्दा हॉल बनाओ
नया पिरामिड हॉल बनाओ जिसके चारों ओर पानी हो
आश्रम को हर सम्भव दिशा में फैलाओ
और चाँगत्सु आडिटोरियम में एक शयनकक्ष बनाओ

हवा ऊर्जा से भरती जा रही थी और भगवान ने कहा
कि ऊर्जा एक नये और ऊंचे तल पर है
यह साफ है कि बुध्दाफील्ड में एक नई शुरूआत होनेवाली है
हवा कुछ नया आने की सुगन्ध से भरी है

मैं लाऊत्सु के सामने तालाब के पास रोज बैठता था
इस ने अफवाह के गलियारों में आकर्षण खींचना शुरू कर दिया था
लाऊत्सु के मुख्य निवासी आनदों अमृतो नीलम, मुक्ता दा ग्रीक
वे ज्यादातर लाऊत्सु के द्वार पर ५.३० से ६ बजे के आसपास
मिलते और समय बिताते

मैंने ध्यान देना शुरू किया कि थेरीपिस्ट मल्टीवरसिटी के आस पास आ जा रहे हैं
कई बार आना जाना और बिना किसी वजह के सिर्फ व्यस्त और महत्वपूर्ण
दिखना और फाइलों को अपने साथ रखना
चारों तरफ मुस्कराना ताकि उनकी असुविधा छिपी रहे
वे सब दूसरे गुप्र लीडरों के साथ प्रतियोगिता में थे
और कि किस ग्रुप में सबसे ज्यादा लोग भाग लेते हैं
कौन सा ग्रुप सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है... इस तरह और बहुत कुछ

मैं दोबारा से कुछ दूरी पर फुसफुसाहट सुनता हूँ
ओह यह सोचता है कि यह बुध्द है... काफी गंम्भीर है और बस एक बेवकूफ है
यह थेरीपिस्ट सिर्फ शान्त नहीं बैठ सकते... रोज की अपनी धारणा बनाये बिना
और उनकी धारणा फैल जाती है उन सब में जो उनका ग्रुप लेने आते है

तालाब के पास बैठना मुश्किल होता जा रहा है
पर मुझे बैठने के इस स्थान से प्रेम है और यह मेरी जगह बन गई है

मैं आँखों में खटकता हूँ और उनके लिए बुरा स्वप्न हूँ
कभी कोई थेरेपी नही की... ना कोई ग्रुप
और सिर्फ आनन्द में शान्त बैठना

भगवान ने कभी कोई ग्रुप नही किया
ना ही कृष्णामूर्ती ने... ना ही रमन महर्षि ने... ना ही बुध्द ने
वास्तविकता में किसी जागृत बुध्द ने
कभी कोई थेरेपी या ग्रुप नही किया फिर भी वे पहुंच गये

भगवान का संदेश साफ था
थेरेपी और ग्रुप सिर्फ ध्यान के लिए तैयारी है
थेरेपी का किसी तरह से भी अमन की अवस्था से कोई सम्बन्ध नहीं है
और ना ही ध्यान की अन्दर की अवस्थाओं से कोई सम्बन्ध है
और ना ही सरल ध्यान की अवस्था से

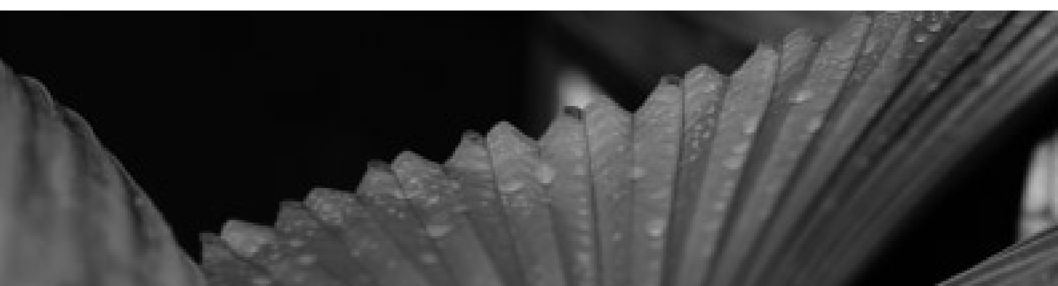

ध्यान की जरूरत है कि तुम शरीरमन को बिल्कुल छोड़ दो
और सजगता की ज्योति को बढ़ाओ

साधक को अन्दर के जगत में कुछ नयी जानकारी बढ़ाने की जरूरत नही है
साधक को सिर्फ अंदर के मौन जगत को सुनने
और अपने भीतरी गगन में कूदने की जरूरत है
जिस में इस सृष्टि का पूरा ज्ञान है
भीतर स्वंय की आत्मा में

पश्चिम का मन ग्रस्ति है बदलाव और अच्छा इन्सान बनने के लिए
सभी थेरीपिस्ट तरह तरह के विषयों पर कुछ ना कुछ और सीखने
को आकर्षित करते हैं

भगवान कभी नहीं कहते किसी को किसी भी तरह से बदलने को
कोई कैसा भी हो
रूपांतरण एक अलग विषय है और पूर्णतः एक दूसरा तल है

बदलाव के लिए जरूरत है सीधी समतल दिशा में चेष्ठा की
अधिक सीखना, अधिक अनुभव प्राप्त करना और अधिक जानकारी अर्जित करना
इन्सान को बस पण्डित बनाता है

रूपांतरण के लिए जरूरत है सीधी खड़ी दिशा में चेष्ठा की
सीखा हुआ भूल जाना और भीतर की अवस्थाओं को अनुभव करना
और बस जानने में ही खो जाना... यह सजगता की तरफ ले जाता है

बदलाव के लिए जरूरत है
क से ख से ग से ड से र... और कभी खत्म नही होता इस बदलती दुनिया में
रूपांतरण के लिए जरूरत है
क१ से क२ से क३ से क४ से क५... गहरे ओर गहरे इस अनन्त क्षण में डूबते जाना

बदलाव के लिए जरूरत है थेरेपी की, ग्रुपों की और जानकारी की
रूपांतरण के लिए जरूरत है सजगता की और ध्यान की अवस्था में होने की

पश्चिम का मन सजगता का अनुवाद करता है एक माध्यम
जिससे अधिक से अधिक बोध हो इस चीज का या किसी और चीज का

पूर्व का विवेक सजगता से समझता है
सिर्फ साक्षी भाव के बारे में साक्षी हो जाना

बदलाव सीधी समतल दिशा में है जबकी रूपांतरण सीधी खड़ी दिशा में है

स्वंय को स्वीकार ना करना बदलाव माँगता है
स्वंय ही हो जाना और रूपांतरण घट जाता है

ध्यानी काम करता है ऊर्जा की अवस्थाओं के साथ
जो सीधी खड़ी दिशा में ऊपर की तरफ है
कम फ्रिक्वैंसी की अल्फा अवस्था से
उच्च फ्रिक्वैंसी की ओमेगा अवस्था तक

अमन की आनंदमय अवस्था... ओमेगा अवस्था
सेक्स में मिलन से निचले शक्ति चक्र उत्तेजित होते हैं और अग्नि उत्पन्न होती है
जो उत्तेजित तेज श्वासों के साथ ऊपर की ओर बहती है
फैलाव और गहरे विश्राम से ह्दय से होते हुए विशुध्दी चक्र की तरफ जाती है
और गले से आनंद की ध्वनियाँ
वहाँ से तीसरे नेत्र से प्रकाश की खिड़की तक जाती है
और सहस्रार में संभोग की परम अवस्था के विस्फोटक आनंद को जन्म देती है

शून्यता का अनुभव

जहाँ समय आकाश सब विलीन हो जाता है
विचार नही रहते
तुम और मैं नही रहते
बस सृष्टि के साथ एकाकार

साधक परम आनंद की ऊचाँई पर होता हैं
विलीन होते हुए पर एकाकार का अनुभव करते हुए
एक अनंत उपस्थिति अमन की दशा

सभी ध्यान बिल्कुल इस सीधी खड़ी दिशा में रूपांतरण को घटने के लिए बनाये गये है हमारी भीतर की ऊर्जा की अवस्थाओं का रूपांतरण
अल्फा से ओमेगा अवस्था तक

इस दुनिया में ग्रुप और थेरेपी कहाँ उचित बैठते हैं रूपांतरण की इन अवस्थाओं में रूपांतरण की अवस्थांए ऊँची एवम् गहरे विश्राम की सजग अवस्था की तरफ ले जाती है

थेरेपी पहले से ही मरे हुए वजन और मन के अहंकार को अधिक और अधिक बढ़ाती है और इस गलत विचार को कि मैं ज्यादा जानता हूँ
कि शायद मैं अपने आसपास की परिस्थितियों के बारे में और अधिक सजग हो गया हूँ सबसे बड़ी भ्रान्ति और एकदम छल कपट

भगवान का संदेश
इस क्षण में जियो

यह जीवित क्षण
ना तो भूतकाल है ना ही भविष्य
क्यों कि भूतकाल को मरे हुए पुराने मन और उसकी यादों की जरूरत होती हैं
और भविष्य अभी तक हुआ नही है पर एक कल्पना है

सिर्फ इसी क्षण में जीना
पल पल में
यह ऊंचे तल पर गहरे विश्राम की सजग अवस्था का एकाकार अनुभव है

गहरी समझ को देखता हूँ जब भी मैं अपने डान् जुआन आशिक मिजाज
संन्यासी मित्र शून्यम के समीप आता हूँ

अभी अभी इस गर्ल फ्रेन्ड को दूसरे के लिए छोड़ा
और उसको किसी और के लिए और यही क्रम
मैं इसी क्षण में जी रहा हूँ... मैं पल पल में जीता हूँ
भगवान कहते है इसी क्षण में जिओ... यह क्षण बीत चुका है

नई गर्ल फ्रेन्ड क्षितिज पर है

बहुत अच्छा उपयोग इस विवेक का

करने और ना करने में
स्वंय होने या ना होने में

करना हमेशा अधिक करने और अधिक करने की तरफ ले जाता है

स्वंय होना अभी इसी पल में होना है... स्वंय होना सहज है
और स्वंय होने में बढ़ना बस इसी पल में होना है

सिर्फ स्वंय होना... स्वंय में पूर्ण होना है

पश्चिम का मन करने और अधिक करने से ग्रस्ति है
बैचेन और हमेशा भागता हुआ
सिर्फ स्वंय में निश्चल नहीं बैठ सकता

कृपा जिसका अवतरण होता है सिर्फ स्वंय होने से... निश्चल
स्वंय होना स्वंय होने में ले जाता है... अपनी आत्मा में ले जाता है

करना मन की तरफ ले जाता है और उसके पागलपन के पूरे प्रवाह की ओर
अधिक उलझन और भ्रम और तुम्हारे केन्द्र से दूर ही दूर

सजगता अवस्था है सीधी खड़ी दिशा में निश्चलता की
सजगता अमन की अवस्था है इसी क्षण में होने की
सजगता के बारें में होशपूर्वक होना शुध्द शून्यता की अवस्था में ले जाता है

जहाँ अनुभव और अनुभव करने वाला
दोनो एकाकार अनुभव की अवस्था में विलीन हो जाते है

जहाँ दृष्टा और दृश्य दोनो शुध्द साक्षी में एक हो जाते हैं

यह दुनिया और कथन पश्चिम के मन से अपरिचित है
और उसकी थेरेपी और बचकाने ग्रुपों के प्रति मानसिक ग्रस्तता से

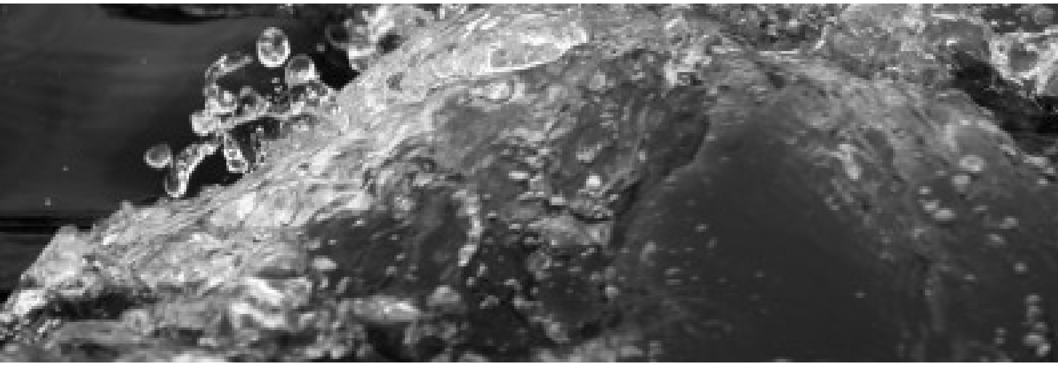

मन को छोड़ देने पर
हजारों बार हमने भगवान को कहते सुना है
मन को छोड़ दो
पर इसके अर्थ और गहराई को बिल्कुल गलत समझा है

एक नये व्यक्ति को सरल तरीके से शुरूआत करनी चाहिए

सिर्फ विचारों को बहते देखो बादलों की तरह
सिर्फ विचारों को बहते देखो और अनासक्त साक्षी भाव बनाये रखो

जल्द ही अन्तराल आने शुरू हो जायेंगे

सिर्फ विचारों को आते जाते देखो बिना किसी धारणा को बनाये
कि यह अच्छा है या यह बुरा है... तब मन प्रवेश कर जाता है
और जोर सिर्फ देखने की बजाय धारणा बनाने की तरफ चला जाता है

एक अनासक्त साक्षीभाव बनाये रखो
और अन्तराल बड़े और बड़े होने शुरू हो जायेंगे

यह होशपूर्वक होना है और साक्षी भाव को मजबूत करता है
यह सिर्फ एक सरल अन्दर की कला है
अनासक्त साक्षी भाव बनाये रखना

तब भावों के अधिक सूक्ष्म तल पर आगे बढ़ो
और भावों को उसी अनासक्ति के साथ देखो

यह अनासक्त बने रहना बहुत मुश्किल है
अगर तुम्हारी गर्ल फ्रेन्ड तुम्हारे सबसे अच्छे दोस्त ने चुरा ली हो

अपने भावों के लिए साक्षी बने रहो
जैसे कि एक बड़ा फासला हो
जैसे कि बाज की आँखों से देखा गया दृश्य हो

धीरे धीरे यह सरल अन्दर की कला
जो कि अपने सूक्ष्म भावों के प्रति अनासक्त साक्षी बने रहना है मजबूत होती जायेगी

तब पूरे शरीर के प्रति साक्षी रहो और उसकी सभी शारीरिक क्रियाओं के प्रति
यह हमारी शारीरिक क्रियाओं को धीमा करती जायेगी
और साक्षीभाव अधिक गहरा होता जायेगा

यह सम्पूर्ण सरल अन्दरूनी कला
एक शुध्द साक्षी को बनाने की है
जो कि अनासक्त है और शरीरमन भाव से अलग है

अब तुम्हारी ऊर्जा शरीरमन भावों में नही जा रही है
पर साक्षीभाव की तरफ जा रही है और बढ़ रही है

साक्षीभाव एक अन्दूरनी कला है
साक्षीभाव एक चाबी है

ध्यान में हमें अनासक्त साक्षी होना होता है
मन और उसकी प्रक्रियाओं का... एक अनासक्त साक्षी

मन सिर्फ शरीर के साथ तादात्मय में होना है

मन को छोड़ देना शरीर को छोड़ देना है
कैसे कोई शरीर को छोड़ सकता है
उसका खुद का अस्तित्व है
सिर्फ मुत्यु में शरीर गिरता है और मन रूकता है
इसलिए कोई मन को छोड़ नही सकता... पर एक साक्षीभाव बना सकता है

शरीर और मन एक है... शरीरमन
शरीर मन बना होता है विचारों, भावों और शरीर के प्रति तादात्म्य से

साक्षी रहो कि तुम विचार नहीं हो
साक्षी रहो कि तुम भाव नहीं हो
साक्षी रहो कि तुम शरीर नहीं हो

साक्षी भाव सुनहरी चाबी है

जैसे जैसे साक्षीभाव मजबूत और मजबूत होता जाता है
विचारों, भावों और शरीर के साथ तादात्म्य धीरे धीरे मिटता जाता है

साक्षी भाव सुनहरी चाबी है

कोई कैसे मन को छोड़ सकता है
पहली बात कोई मन है ही नही जिसे छोड़ा जाये
असलियत में मन को तेज किया जा सकता है जैसे जैसे साक्षी भाव बढ़ता है
और मन की स्पष्टता बढ़ती है जैसे जैसे साक्षीभाव मजबूत होता है

मन के पार जाना... मन को छोड़ना नही है
यह मन के पार चले जाना है... अमन की अवस्था में

अमन की अवस्था में पहुँचने पर
मन ओस की बूदों की तरह अदृश्य हो जाता है... बस सहज ही उड़ जाता है
मन बस एक परछाई थी... अबोध की

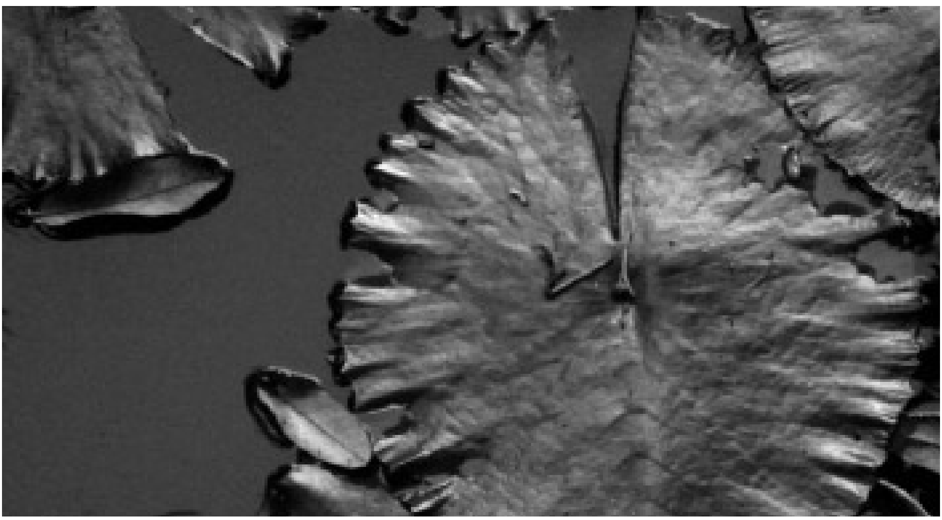

मैं बहुत व्याकुलता से अपने सामने सच्चाई को देखता हूँ
मल्टीवरसटी यह भ्रान्ति पैदा कर रही है... कि थेरेपी और ग्रुप असली चीजें है
कि यही असलियत में सत्य की खोज है
कि अमन और ध्यान को शुरूआत में समझना मुश्किल है
क्यों कि यह पराया है और उनके स्वभाव का नही है

इसलिए थेरेपी और ग्रुपों से शुरूआत करो और वही फँस जाओ

यह एक अनैतिक घेरा है... इसमें थेरेपिस्ट के स्वंय के निहित स्वार्थ है
उन्होंने प्रमाणिक थेरेपिस्ट बनने के लिए बहुत बड़ी रकम दी है
और उन्हें अपनी पूँजी वापस पानी है
थेरेपी को बाहर के जगत में बेचना है और अपनी जीविका कमानी है

आसान लेन देन
आसान जीने का ढंग
निर्दोष नये लोगों से ढेर सा आदर मिलना
अंहकार की पूर्ति होना
छोटे गुरू और सब जानने वाले शिक्षक

पूर्ण शोषण और जल्द ही यह भूल जाना कि वे यहाँ किस वजह से आये थे
ध्यान के लिए... ध्यान की अवस्था में जीवन को ले जाने के लिए

यह जगह पागलखाना बनती जा रही थी
बहुत सारे न्यायधीश और शिक्षक जो यह दिखावा करते कि वह सब जानते हैं

शिष्य कहीं कोई भी नही

उनके लिये भगवान सिर्फ शाम को मन बहलाने का साधन और प्रमाण पत्र थे
वह दुनिया के सबसे बड़े रूपांतरण केन्द्र में थेरीपिस्ट थे
जहाँ लाखों लोग रूपांतरण के लिए आते
यह जगह उनके लिए आसानी से पैसा कमाने वाली जिन्दगी होती जा रही थी

पूना में सरकारी तौर पर कुछ माह काम करो
और तब हवाईं जहाज में बैठ कर पश्चिम जाओ
वहाँ निर्दोष और इच्छुक लोग
उनके ग्रुप और उनकी जेबें भरने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं
पूना में अमीर बन कर वापिस आओ... दोबारा से प्रमाणपत्र लो
और यहाँ अभी इसी क्षण में जियो और एक नई गर्ल फ्रेन्ड को ढूँढो

धरती पर स्वर्ग
इसी धरती पर कमल स्वर्ग जहाँ थेरीपिस्ट पर पैसों की वर्षा होती है

मैं उनका शत्रु था और खतरनाक था
मैं बिना पैसे दिये विपासना में चलता था

नये लोग समझ नही पाते कि मैंने कौन सा ग्रुप किया है
किस थेरपिस्ट ने मुझे इस अन्दर के आकाश में गिरने में मदद की है

आश्रम की हवा तेजी से बदल रही थी
मैरून रोब ने बुध्दाफील्ड में एकीकरण किया
और सामूहिक ऊर्जा अब इक्कठा हो कर एक हो रही थी
हजारों संन्यासी सिर्फ एक ही रंग डाले हुए
बुध्दाफील्ड के माहौल को ऊर्जा से भर रहे थे

मैरून रंग का अपना महत्व था
जैसे की हम प्रकाश से बने शरीर हैं
जैसा रंग हम पहनते है वही रंग हमारे शरीर पर प्रकाश की किरणें गिरने पर
वापस लौट कर आता है
इस तरह हम कम फ्रिक्वैंसी के लाल रंग को अपने शरीर में नही ले पाते
और हमारे शरीर से टकरा कर निकला लाल रंग वातावरण में
अग्नि उत्पन्न करता है
जो कि हमें प्रचण्ड करने में मदद करता है

इसी समय भगवान मेरे जल्द ही वापस आने को देख रहे थे
और पूर्णिमा का जुलाई उत्सव भी आ रहा था
सभी संन्यासियों को सफेद रोब डालने को बोला गया

रात में सफेद रोब मदद करता है ऊर्जा को उभारने में
और रात की निष्क्रिय ऊर्जा को सक्रिय करने में

भगवान ने ध्यान देना शुरू किया कि थेरीपिस्ट ग्रुपों में अपनी प्रधानता दिखा रहे हैं

और सिर्फ उन की ऊर्जा का माध्यम नही बन रहे हैं

उन्होंने उनके लिए काला रोब चुना
काला रोब तुम्हारे अंहकार को खोने में मदद करता है
और ज्यादा निष्क्रिय और ग्रहणशील बनाता है
इस प्रकार ग्रुपों में थेरेपिस्ट की ऊर्जा के प्रभाव को नरम करने का प्रयास

भगवान उनके पूर्ण मुक्त होने का परिणाम साफ देख रहे थे
और वह जानते थे कि उन्हे गलत समझा जा रहा है

हाल ही के ऑरेगेन के अनर्थ के बाद
एक और विपदा की ही बस जरूरत है... सब खत्म हो जाने के लिए

संन्यासियों को दोबारा से जगाने की जरूरत थी
सरल ध्यानों के प्रति जो उन्होंने मौलिक रूप से बनाये थे
और जरूरत थी दोबारा से मार्ग को भीतर के तरफ ले जाने की

उन्होनें ध्यान शिविरों को दोबारा से शुरू करने की घोषणा की
अग्नि को वापस लाना होगा... यही समय है

वे गुरू पूर्णिमा उत्सव पर पहली बार प्रकट हुए
सभी संन्यासी सफेद रोब में नया 'व्हाईट रोब ब्रदर हुड' का उत्सव मनाते हैं

मैं इन विशेष पलों के लिए रात दिन तैयारी कर रहा था
यह उनके चरणों में मेरा पहला गुरू पूर्णिमा उत्सव था
दूर आखिरी कतार में उनकी मुझ पर अवतरित होती कृपा पर नाच रहा हूँ
मेरी पहली समाधि की याद में
कितना सौभाग्य उनको अभी यहाँ पाकर
पावन हो गयी है यह धरती

भगवान ने हमेशा जोर दिया
कि यह कम्यून और बुध्दाफील्ड बस एक जीता जागता प्रयोग है
संन्यासी इस जीवित प्रयोग और मिस्ट्री स्कूल बनाने का अर्थ भूल गये हैं

एक जीवित प्रयोग का अर्थ है
हमें असाधारण रूप से जागरूक और साक्षी होना होगा
अदृश्य जीवित प्रयोग के प्रति जो कि घट रहा है

पूर्ण चन्द्र अर्द्धचन्द्र

गुरू अपने शयन कक्ष में सीमित शरीर नहीं है
गुरू शुध्द साक्षी है
गुरू निराकार मंडराते हुए हमारे हर एक कदम को देखते है
गुरू साक्षी है
एक नजर से सब देखने वाले दृष्टा हैं

उनके शिष्य एक जीवित प्रयोग है
वे सब देखते और सब जानते हैं

मैं उनके रहस्य को जानता था
उन की मंडराती साक्षी भाव वाली उपस्थिति को
मैं उन्हे अपने ऊपर एक साक्षीभाव की ज्योति की तरह चुपचाप संभाले रखता
और सीधी खड़ी दिशा में अपने चलने पर अपने बैठने पर
और अपनी हर क्रिया के दौरान बोध रखता
और उनकी दैविक उपस्थिति को मुझे और गहराई से पकड़ने देता

मैं एक खाली बाँस था और अपने कबाड़ को साफ कर रहा था
ताकि अतिथि अन्दर आ सके और अपना घर बना सके

भगवान शान्ति से देख रहे थे
और अपने नजदीकी शिष्यों की मेरे प्रति सारी हरकतों को देखकर
आश्चर्यचकित थे
उनको कभी जाँचा नही गया था एक साधारण शिष्य के दर्पण से

भगवान के लिए वह सब एक विशेष मुखौटा पहन लेते
पर मेरे लिए कोई मुखौटा नही था
मैं सिर्फ वही आहिस्ता चलने वाला बेवकूफ रजनीश
जिसे इन्सान भी नही समझा गया... सिर्फ एक जानवर
वे उनके असली चेहरों को देखना शुरू कर रहे थे

भगवान जो देख रहे थे
उसे जानते हुए मेरा दिल टूट रहा था
मैं उनकी मेरे प्रति आमानवीयता को पी सकता था
पर भगवान ने उनके ऊपर प्रेम और गहराई से २० साल काम किया था
यह उनके लिए हार थी... उनका काम असफल हो गया
उनके लोगों ने उन्हे हरा दिया
शायद वे ज्यादा आशावादी थे और अपने लोगों पर ज्यादा नरम थे

उनके खुद के लोगों की अपेक्षा अमेरीकी सरकार ने कम क्षति पहुँचाई
वे देख सकते थे कि अगर उन्हे वापस आना हो
तो ये उन्हे बर्बाद कर देगें और असलियत में इस बुध्दाफील्ड से बैन कर देंगे

१८ अगस्त बुध्दा हॉल में घोषणा
काफी लोगों के लिए आश्चर्य... पर मेरे लिए नहीं

भगवान कहते हैं... बहुत थोड़े लोगों ने मेरे शब्दों को समझा है

ध्यान शिविर तीव्र हो जाते है
भगवान अपने मौन गरजते दर्शनों के लिए आना शुरू कर देते हैं

मुझे अभी भी प्रबन्धकदल के द्वारा देखा जा रहा हैं
मैं अकेला रहता हूँ और किसी के साथ मेरा कोई सम्बन्ध नही है
और सिर्फ २.३० बजे आता हूँ... रोज यही नित्यक्रम
बैठने का और उसके बाद एक घण्टा बुध्दा ग्रौव के पीछे चलना
और तब शाम के टेप वाले प्रवचनो को सुनने के लिए बाहर बैठना

मेरी २९ दिन गहरे में बैठने की आदत
और तब उस एक विशेष दिन के लिए भगवान को देखना
पूर्णिमा वाले दिन
हांलाकि भगवान ने दर्शन देना बन्द कर दिया पर मेरा क्रम यही रहा

मैं जिद्दी हूँ और कुछ आंतरिक मामलों में दृढ़ हूँ

मैं बाहर पिरामिड के पास शाम को अभी भी बैठता हूँ
और मुझे यह कहते हुए बुलाया जाता है कि पिरामिड थेरेपिस्ट के लिए है
जो क्रिस्टल के साथ काम करते हैं और कुछ गूढ जानकारियाँ देते हैं
और कि मैं उस विशेष जगह पर बैठ कर खास होने का ढोंग कर रहा हूँ
और कि मुझे विनम्र होना चाहिए और अपना नाम रजनीश छोड़ देना चाहिए
और लोगों को मुझे रजनीश बुलाने से रोकना चाहिए

मुझ पर हमला करने के लिए कुछ भी
इसलिए मैं हँसा और मैंने कहा
मैं एक साधारण शिष्य हूँ जिसका अहंकार होगा ही
और जिसे में छोड़ने की कोशिश कर रहा हूँ
भगवान मेरे गुरू है जिनके पास छोड़ने के लिये कोई अंहकार नही है
इसलिए अच्छा यह रहेगा अगर भगवान अपने नाम से रजनीश छोड़ दे
और मुझे स्वंय को कोई आपत्ति नही है.. अगर वह अपना नाम छोड़ते हैं

जल्द ही मैंने सुना कि भगवान के पास शिकायतें भेजी गई हैं
मेरा नाम बदलने के लिए और मेरे विरूध्द उन्हें बहुत पत्र भेजे गए
इस पर भगवान सिर्फ मुस्कराये और कहा
हाँ... उसका नाम बदल दो
यह गलत लिखा गया है ‘रजनिश’
इसे ‘रजनीश’ में बदल दो

हरि ओम्

जैसे ही मैं बुध्दा हॉल में रविवार के संन्यास उत्सव के लिए प्रवेश कर रहा था
मैं सुनता हूँ कि जरीन घोषणा करती है कि भगवान ने कहा है
कि रजनीश आश्रम का आदर्श संन्यासी है
और मुझे आगे उसके पास आने को कहती है

हवा बागी थी और भगवान के लिए यह सब बहुत अधिक हो चुका था

भगवान रहस्यमय ढंग से अपना नाम बदलने लगे
दिसम्बर २६ १९८८ दोबारा से भगवान नही कहना
दिसम्बर २७ १९८८ बुध्दा
दिसम्बर ३० १९८८ श्री रजनीश जोरबा दा बुध्दा
जनवरी ७ १९८९ श्री रजनीश
फरवरी २९ १९८९ ओशो रजनीश
सितम्बर १२ १९८९ ओशो

सितम्बर १२ वे एक और घोषणा करते हैं
तुम एक पूर्णत: नए आदमी का सामना करोगे
जो कि अब से रजनीश नाम से नही जाना जायेगा
पर सिर्फ ओशो

यह मेरे लिए एक आश्चर्यचकित क्वान है
मैं जानता था जल्द ही मेरी घोषणा होगी
शायद यह उनकी युक्ति थी रजनीश नाम छोड़ने की

चलो छोड़ो... वह जो कुछ भी था
मेरा नाम रजनीश अब उन संन्यासियों के लिए विषय नही रहा
जो कि मेरे अंहकार के प्रति चिन्तित थे

मैं बोध्दिधर्मा कैफे से चल कर आ रहा था और लाऊत्सु द्वार के पास था
मैं सामान्य तौर से भगवान को अपनी भीतर की गहराईयों से प्रणाम कर रहा था
मुक्ता द्वार के पास बगीचे में पानी दे रही है
मुझे धीमे चलते देख वह चिढ़ाना शुरू कर देती है
और मेरी ओर पानी छिड़कना शुरू कर देती है

आनंदो नीलम और लाऊत्सु में महिलाओं के समूह में से कुछ और जो बाहर
बैठकर गप्पें मार रही थी... आ जाती है और मुझ पर हँसना शुरू कर देती है
पानी की बौछार मुझे गीला कर रही है और मुझे दूर हटना पड़ रहा है
मैं उनके लिए एक मूर्ख मजाक हूँ... मैं बुध्द होने का ढोंग कर रहा हूँ

मैं भीतर से श्रध्दापूर्वक प्रणाम कर रहा हूँ और यह अभद्रता
मुझे क्रोधित कर देती है
सिर्फ गन्दी कुरूपता और चिढ़चिढ़ा ओछापन उनके व्यवहार में
और यह अभद्रता धरती पर महानतम गुरू के द्वार के ठीक सामने ही
मैं उनका मजाक समझ नही पाया
मैं कठोरता और गुस्से से उनकी तरफ देखता हुआ आगे चलता रहता हूँ

भगवान को इतने महान शिष्य ही मिलने थे
ये है उनके प्रेम और करूणा की जीती जागती मशालें
क्या स्वांग है यह जगह

मैं अगले दिन सुनता हूँ
भगवान ने सभी महिलाओं को सामान बाँधकर
लाऊत्सु घर छोड़ देने को कहा है

मेरे हिसाब से... यह सब छोड़कर जाने का मौका था
भगवान की तरफ से भेजा यह सबसे जबरदस्त इशारा और स्पष्ट संकेत था

मैं सोचता हूँ कि उनका अब कौन ख्याल रखेगा
वह कोमल और करूणामय है
और कुछ दिनों के बाद उन्हें लाऊत्सु में वापस आने देते हैं

मैं जानता था क्या घट रहा है
कुछ विशाल मंडरा रहा था
चारों तरफ संकेत थे

चाँगत्सु शयन कक्ष जिस की उन्होंने खुद कल्पना की थी
वहाँ पर भगवान का रहना नही होना था

सितम्बर १४ वे विपासना मार्ग सब के लिए खोल देते हैं
मुझे एक मिस्ट्री स्कूल का संन्यासी मिलता है
वह बताता है कि मुझे विपासना मार्ग में सबसे पहले चलना होगा
मैं कहता हूँ कि जिस जगह भगवान रहते है मैं वंहा कभी साँस लेने की भी
हिमाकत नही करूँगा और प्रस्ताव को मना कर देता हूँ

मैं हर रात गहरे और गहरे जा रहा था
अब रात रात भर बिना सोये

कुण्डलिनी सक्रिय हो रही थी और मजबूती से अपना प्रभाव दिखा रही थी
मैं इतनी चकरा देने वाली ऊंचाइयों पर अपना सन्तुलन खो रहा था
ध्वनियाँ जैसे कि शून्य मेरे दाहिने कान को भर रहा हो
और मेरी बायें कन्धे की हड्डी और दायीं बाजू में गहरा दर्द था

मुझे रात को बहुत अधिक पसीना आता
और मैं प्रकाश को अब ओर देखना नही चाहता था
सिर्फ दिन रात अपने कमरे में बिताता
दोहरे परदों के साथ... पूर्णत: अन्धकार पैदा करने के लिए

मुझे अपने अन्धेरे कमरे में अधिक से अधिक रहने की जरूरत थी... घने अन्धेरे में
क्यों कि सूरज की रोशनी को देखकर मेरी आँखों में पानी आने लगता था

ईडा बिल्कुल आपस में फँस चुकी थी
खुलने की क्रिया नीचे की तरफ पेचदार थी
ऊपर खोलने का प्रत्येक प्रयास इसे और भी बन्द कर देता था
और इसे खोलने में मेरा हर प्रयास मेरे विरूध्द जा रहा था

सितम्बर का अन्त... शरत ऋतु... मैं रोज सफेदे के पेड़ की भाप ले रहा था
अपनी भीतर की श्वास को खोलने में मदद करने के लिए
और ईडा को सक्रिय करने के लिए
अगले दो माह मैं अपने कमरे के अंधेरे में रहा

कमरे को छोड़ना कठिन होता जा रहा था
ठण्डी हवा और सफेदे की भाप मुझे सांस लेने में मदद कर रही थी
हमेशा थका हुआ और निद्रालु
मैं १६ से १८ घण्टे सोने लगा

मैं आश्रम में सिर्फ रात का खाना खाने आता
बैम्बू ग्रौव में नाचता और अपने शरीर को लातियान में लहराता
भगवान ने बुध्दा हॉल में हर रात ११.३० बजे तक नाचने को कहा
यह मेरे लिए एकदम उचित समय था मेरी रात्रि के लिए और रात के खाने के लिए

यह अक्तूबर का महीना था... एक और रहस्य जब भगवान ने कहा
कि कम्यून को काले रंग से रंग दो
हर दीवार और हर कोना... काला कर दिया गया

काला एकदम सही था
आत्मा के फैलाव के लिए गर्भ की तरह काम करने के लिए
स्त्रीत्व कुण्डलित ईडा को काले रंग से सहारा मिला
बुध्दाफील्ड फिर से बायीं ओर झुक गयी
और ग्रहनशील स्त्रीत्व हो गयी
सर्जनात्मक गर्भ गहरा और शान्त हो गया

दोबारा से बुध्दाफील्ड एक ओर झुकने लगी
एक दूसरी सीधी खड़ी दिशा की धुरी पर
बवण्डर खिसक रहा था
काला... भगवान का नया रहस्यमय दौर और युक्ति थी

सभी इमारतों के संकेत हटा दिये गये
यह हमेशा खाली मन के साथ खेलते है
समाधि में कोई भी व्यक्ति इन गहरे अप्रत्यक्ष कारणों को समझ लेगा
उस खाली दशा में 'जीसस ग्रौव' जैसा एक नाम भी
प्रतिध्वनि पैदा करेगा 'जीसस ग्रौव' 'जीसस ग्रौव'
जब तक इसे दूसरा नाम न मिल जाये और फिर उसे अनन्त दोहराता रहेगा

कोई बुध्दत्व तक जल्द ही पहुंचने वाला था
यह काले रंग और सभी संकेतों को हटाने का आशय था
यह सिर्फ सरल संकेत है
मैं इन सब को जानता हूँ
मैं काले चक्र में पहले भी डूबा हूँ
इस बार यह ओर भी बड़ा होने वाला था

९ नवम्बर १९८९ भगवान घोषणा करते हैं
उन का मौन धार्मिक नही है
यह विरोध प्रकट करना है
यह विरोध झूठे लोगों के विरूध्द है
और उनके विरूध्द जो कि सुनते है पर ध्यान नही देते

वे कौन लोग है जो सुनते है पर ध्यान नही देते
सोचो सोचो... अगर आप सोच सकते हो

मैंने हमेशा आश्रम में अधिकतर औरतों के व्यवहार को देखा
हर कोई अमीर और शक्तिशाली पुरूष की तलाश में है

सबसे सुन्दर सबसे शक्तिशाली पुरूष को पाने के लिए भाग रही है
शक्तिशाली पुरूष सुन्दर औरत की तलाश में है

उनका पूरा खेल पैसा और शक्ति है
और सुन्दरता आकर्षित करती है

मैंने हमेशा भगवान को कहते सुना... पुरूष का औरतों के ऊपर अधिकार जमाना
कि औरत के पास कोई स्वतन्त्रता नही है
सदियों से उसे पुरूष के द्वारा दबाया गया है

मेरे हिसाब से यह आधी अधूरी समझ है
इस आधुनिक समय में रहते हुए मैंने कुछ और अनुभव किया है

मेरी समझ थी
कि पुरूष पैसे और सत्ता की खोज में है
ताकि वह इस काबिल हो सके कि सबसे सुन्दर औरत को आकर्षित कर सके
औरत अमीर और शक्तिशाली पुरूष को अपनी सुन्दरता से शोषण करती है

यह एक गन्दा दुश्चक्र है... विपरीत दिशा में घूमता हुआ
इस प्रकार पुरूष हमेशा पैसों और सत्ता के पीछे भाग रहा है
औरत को सन्तुष्ट करने के लिए... उसकी खूबसूरत औरतों की कमजोरी के लिए

मैंने कभी किसी सुन्दर औरत को गरीब संवेदनशील पुरूष के पीछे
सिर्फ इस बात के लिए भागते नही देखा कि वह वह बहुत प्यारी बाँसुरी बजा रहा है
अगर ऐसा हुआ हैं तो यह एकदम दुर्लभ है

मेरे लिए स्पष्ट था कि पुरूष औरत के प्रभाव में है
बेचारा आदमी... उसे औरत से आजाद होने की जरूरत है

समाज के मूल्यांकन करने का पूरा गंदा ढांचा
जो पैसे और सत्ता की इज्जत करता है
इस को तभी बदला जा सकता है अगर औरत अपने सोचने के ढंग को बदल ले

शासन करो और विश्व को जीतो
पुरूष एक आक्रमक जानवर है जो अपने शिकार के तलाश में है
औरत की नजर में नरम और संवेदनशील आदमी एक हारा हुआ व्यक्ति है

भगवान के पूरे २० साल के बोलने में यह दृष्टिकोण कभी नही देखा गया
मैं समझता हूँ कि भगवान जबलपुर के एक छोटे गाँव से एक सरल आदमी है
और वे अपने जीवन में औरतों के प्रति बहुत उदार और सम्मानपूर्वक रहे
और उन्होनें पुरूष के औरत के ऊपर प्रभाव की इस जटिल प्रक्रिया को
साधारण दृष्टिकोण से देखा... शुध्द निर्दोषता

भगवान मेरी समझ को सुन सकते थे
वे अपने सामने एक नई स्पष्टता को देखकर बहुत खुश थे
पुरूष के औरत के ऊपर प्रभाव... इस बात पर उनका दृष्टिकोण पूरा हो गया
मैं अपने पंख फैला रहा था

२३ नवम्बर १९८९
भगवान पुरूष मुक्ति आंदोलन बनाते है

२८ नवम्बर १९८९
जीवन में पहली बार... वे अचानक मल्टीवरसटी में आते हैं
धीरे धीरे हर ग्रुप और थेरेपि पोस्टर को देखते हैं
और आश्चर्य से कहते है कि आगे से कोई लम्बी थेरेपि नही होनी चाहिए

आम तौर पर कोर्स एक से दो से तीन महीने लम्बे होते थे
पर अब वे हल्के और मस्ती वाले होने चाहिए और तीन दिन के लिए ही

और उन्होने किसी ग्रुप में शामिल होने से पहले
उनकी किताबों को अनिवार्य रूप से पढ़ने को कहा

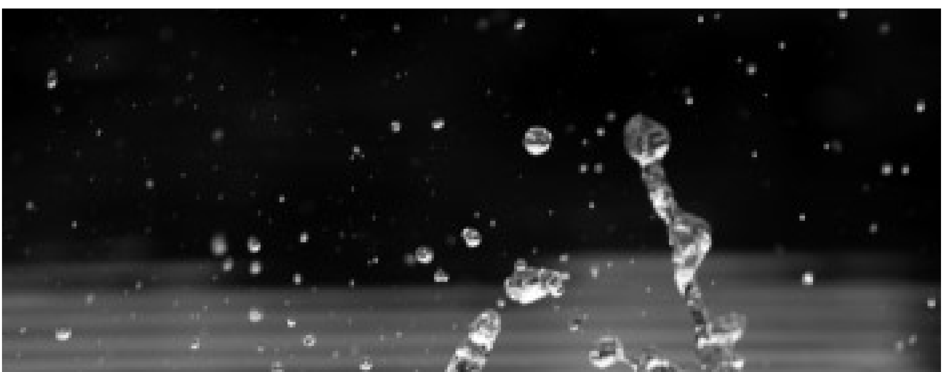

क्या था यह एकदम बदलाव और प्रस्थान

क्या भगवान गंभीर हो रहे थे उनके बारे में
जो सिर्फ सुनते थे पर ध्यान नही देते थे

और उन्होंने आगे ओर कहा

जो मेरे शब्दों को पकड़ेंगे वे मुझसे चूक जायेंगे

शेर दहाड़ रहा था और वे अपने शिकार पर थे

हीरे का व्रजपात

भगवान अब पूरे बुध्दाफील्ड को तैयार कर रहे हैं
एक नई और ऊँची दशा वाली ऊर्जा के लिए

एक विशाल आत्मा का जन्म होने वाला है
महान शल्यचिकित्सा की जरूरत पड़ेगी

भगवान बहुत बारीकी शल्य चिकित्सक हैं
लेज़र से संचालित उपकरणों की तरह
अपने हीरे से बहुमुखीय हाथों का इस्तेमाल करके
वे हमारे ऊपर बुध्दाफील्ड की ऊर्जा को तैयार कर रहे हैं

ब्रह्माण्डीय पराचेतना
सामूहिक पराचेतना
परा चेतना
ब्रह्माण्डीय चेतना
सामूहिक चेतना
व्यक्तिगत चेतना

और उसके भी काफी नीचे जाने पर

व्यक्तिगत अचेतना
सामूहिक अचेतना
ब्रह्माण्डीय अचेतना

बहुत गहरा मरम्मत का काम करना पड़ेगा
क्षति बहुत बुरी तरह से ब्रह्माण्डीय अचेतना में फँसी है
पहले कभी किसी जीवित गुरू ने
इतनी गहराई तक खुली शल्यचिकित्सा करने की कोशिश नहीं की

भगवान गुरूओं के गुरू
अब अपनी समग्रता और अपनी आत्मा की सीमाओं को आजमा रहे हैं
किसी ने आज तक इतना गहरा जाने की हिम्मत नही की

निवेदनो को तैयार किया जाता है बुध्दाफील्ड को डूबोने के लिए
बिजली के झटकों से... उच्च फ्रिक्वैंसी की चौंकाने वाली ध्वनियों से

पोडियम पर वे धीरे से और बेहद ध्यान से आते है
अपनी हर एक क्रिया में पूर्णत: निश्चल
सागर जैसी गहराई
हवा को पकड़ती हुई

उन का हर एक संकेत
अनदेखी शक्तियों का शीघ्रता और असाधारण सूक्ष्मता से काम करना
जो मैं देख रहा हूँ उस पर मैं हैरान हूँ

पोडियम पर पहुँचना और अपनी शल्यचिकित्सा वाली मास्टर कुर्सी
पर निश्चल बैठना

निश्चलता की गहरी गहराईयों में
आसमान में ऊँचे उठते जाना
और तब धरती की गहराईयों में जाना
अपने विशाल अदृश्य हाथों को फैला कर क्षतिग्रस्त बायें भाग की मरम्मत करना
तब आकाश में ऊँचा उठना और तब धरती में गहरे जाना

ऊपर और नीचे ऊपर और नीचे
नाजुकता से प्रकाश की अदृश्य तरंगो को
प्रकाश की किरणों से जोड़ते जाना
तरंग के बाद तरंग... तरंग के बाद तरंग
अपनी अनन्त सौम्य करूणा के साथ

धरती से आकाश की ओर
प्रकाश की शल्य चिकित्सा
उच्च फ्रिक्वैंसी के प्रकाश का प्रयोग करना
और इसे शान्त करना... निश्चलता में स्वस्थ होने के लिए

स्वर्ग में महान आत्माँए इसे विस्मय से देख रहे हैं
स्वर्ग जानता है दाव पर क्या लगा है

एक ऐतिहासिक और अथाह गहराई की लड़ाई लड़ी जा रही है
आसमान की ऊचाँईयों में... धरती की गहराईयों में

मैं घोषणा करता हूँ
पराचेतना के इतिहास में
कभी भी इतनी परम शल्यचिकित्सा नहीं की गई

एक महीना बीत चुका है पर क्षति बहुत गहरी है
उच्च वोल्टेज की जरूरत है... गहरे में और मजबूती से काटने के लिए

प्रत्येक कण कण की जरूरत है इस ब्रह्माण्डीय लड़ाई के लिए
बुध्दाफील्ड बांयी तरफ से क्षतिग्रस्त हुई है
आश्रम की काली दीवारें
इसे बांयी ओर झुकने में मदद करती है
इसकी मरम्मत के लिए और इसे ठीक करने के लिए

भगवान निवेदेनो और उसके गोलाबारी संगीत ग्रुप को
कहते हैं अपने स्पीकरों और संगीत ग्रुप को
बुध्दा हॉल के संतुलित केन्द्र से
बांयी तरफ ले जाने को

ध्वनि ही है जहाँ उन्हे अतिरिक्त सन्तुलित ऊर्जा की जरूरत है
बुध्दाफील्ड को और भी बायीं तरफ झुकने की जरूरत हैं
सम्पूर्ण बुध्दाफील्ड बड़े ध्यान से... भीतर से सुनते हुए
बायीं ओर मुड़ जाती हैं और केन्द्र खिसक जाता है

बायां हिस्सा क्षतिग्रस्त हुआ है
कुण्डलिनी खतरनाक ढंग से दायीं ओर झुक रही है

दबाव बनता जा रहा है और खतरनाक हो रहा है
शीघ्रता से आसमान में ऊपर उठने और धरती में गहरे गिरने की जरूरत है
तेजी से लगातार... बिना कोई समय व्यर्थ किए

ओशो ओशो ओशो
पूरी ऊर्जा ऊपर उठ रही है और नीचे गिर रही है

ओशो ओशो ओशो
ऊपर की तरफ शीघ्रता से बढ़ना और धमाके से धरती में गिरना

ओशो ओशो ओशो
भगवान आसमान की उंचाई पर सन्तुलन बनाते हुए पहुँचते हैं

ओशो ओशो ओशो
हाँ हाँ हाँ उन्है याद है कि वह सब धरती पर है और उन्हे नीचे खींच रहे हैं

ओशो ओशो ओशो
हीरों के जैसा वज्रपात... हवा को काटते हुए

स्टोप ध्यान

निवेदिनो को ड्रम्स की फ्रिक्वैंसी बढ़ाने की हिदायत देना
और साथ साथ बुध्दाफील्ड को एक उंचाई के लिए
अपनी पूरी समग्रता से तैयार करना

गुरूओं के गुरू भगवान पहुँचते हैं
रिक्टर कांटे पर ९ की मात्रा

जिसे कहा न जा सके
जिसे अभिव्यक्त न किया जा सके
सत्य से अपार

खुला रहस्य
गुरू काम कर रहे हैं
एक क्षतिग्रस्त कुण्डलिनी की मरम्मत करने में
धरती के हृदय में... आसमान की ऊचाँईयों में
एक मंत्रमुग्ध इशारे से... धरती और आकाश को एक कर देना
एक सीधी खड़ी दिशा में लेजर की तीक्ष्ण मिसाइल से

मैं भगवान को देख रहा हूँ
महानतम हीरा जो अभी तक इस सृष्टि में हुआ है
अपनी बहुआयामीय बहुमुखीय सम्पूर्णता में
दमकता हुआ और लाखों दिशाओं में एक साथ चमकता हुआ

पूर्ण बुध्द दुनिया... एक दिन आश्चर्य से देखेगी
महानतम लड़ाई जो लड़ी जा रही है

स्वर्ग साक्षी है
और मैंने देखा है

ओह मैं क्या प्रकट कर सकता हूँ
मैं क्या कह सकता हूँ

यह रातें अनन्त हो गई है
रात ने अपना सूरज देख लिया है... दोबारा फिर कभी रात नही होगी

मैं स्तब्ध आश्चर्य से आश्रम के चारों ओर चलता हूँ
इतनी ऊचाईयों को छूना
उनके चमकते चेहरे के सामने माऊंट ऐवरेस्ट भी बोना है
मेरा रहस्य गहराता गया और निश्चल और शान्त होता गया

मैं जानता हूँ सब जो घट रहा है
भगवान का हर एक दीप्तिमान संकेत
उनकी नाजुक बाजू की हर एक छोटी सी क्रिया
सौम्य मुस्कान महानतम उच्चाईयों की... जो मानवता ने कभी अनुभव की

उनकी मुस्कराहट और अपने दर्द को छुपाने में करूणा
यह सबसे महान लड़ाई थी जो कभी लड़ी गयी

शायद यह ऐसा नहीं होना था

शायद हार में छुपी थी एक जीत
शायद हार में थी इकलौती जीत

कड़वी पर यह जानकर मीठी
कि हारने वाला सबसे महान शंहशाह था जो कभी हुआ
यही एक उपयुक्त समाधि विवरण हो सकता है

लड़ते लड़ते मर जाना
मुस्कराते हुए
और करूणा के साथ
और आनन्दमय सौम्यता से
ऐसे हारने का गौरव
किसी भी तरह की मुत्यु के पहुँच के परे है
या अमरता से भी
एक नया और ऊँचा शिखर
सिर्फ एक दिव्य आत्मा के लिए
भगवान

मेरे दिन खत्म होते जा रहे हैं
चन्द्रमा का काला पक्ष बढ़ रहा है

एक और विश्राम
एक और जीवन

स्वंय के अंधकार में जीने वाली नीचे की दुनिया समझ नही सकती
कि आसमान इतनी चमक से क्यों दीप्तिमान है

शायद यह सब एक आडम्बर है
सिर्फ एक नकली हीरे का चमकना
असली से भी चमकदार होने का ढोंग रचना

तुम्हे कौन बता सकता है कि मैंने क्या देखा है
मैं इससे अधिक कुछ और नहीं कह सकता
वह परे से भी परे से भी परे हैं

मैं उच्च आकाश में खो चुका एक नृत्य हूँ
गहरे लातिहान में
शायद दो घंटे बीत चुके हैं... शायद इससे ज्यादा

अनन्तकाल... खीचँता है रात में इन खाली बाँस के पेड़ों को

बुध्दा ग्रीव हर क्रिया के साथ एक है
हर हिलती क्रिया के साथ... हर रूकती क्रिया के साथ
बाँस के पेड़ रात में हिलते है
मैं कौन हूँ वह कहते है
मैं कौन हूँ... मैं कौन हूँ

और अचानक मेरे सिर में चटकने की आवाज
मेरा शरीर बाँस के पेड़ों की तरफ उड़ता हुआ
मुझे दोबारा से हरा दिया गया

शरीर नहीं मन नहीं
कोई मुझे उठाने वाला नहीं
ना ही दोबारा कोई मुझे गिराने वाला

काला काला काला... अनन्त काला

शायद हारना ही अकेला रास्ता था इस असहनीय आनंद से बाहर जाने का

मैंने सर्वश्रेष्ठ को देखा है... भगवान
सर्वश्रेष्ठ के साथ जीया हूँ... भगवान

मैं आगे की यात्रा के लिए पूर्णत: तैयार हूँ
जहाँ कही जाने के लिए नहीं... कुछ करने के लिए नहीं
सिर्फ इसी क्षण में रहना हैं

भगवान हास्य में कहते है सृष्टि अपना समय लेती है
मेरा वक्त अभी तक आया नहीं
इतनी आसानी से नहीं
आगे और है आगे और है आगे और है

लेजारस जाग जाओ... मैं बोलता हूँ उठो और चलो

मैं एक शक्ति के द्वारा उठाया जाता हँ और चलता हँ
मैं जीवित हूँ और वापस आ गया हूँ
सुरंग बहुत गहरी थी

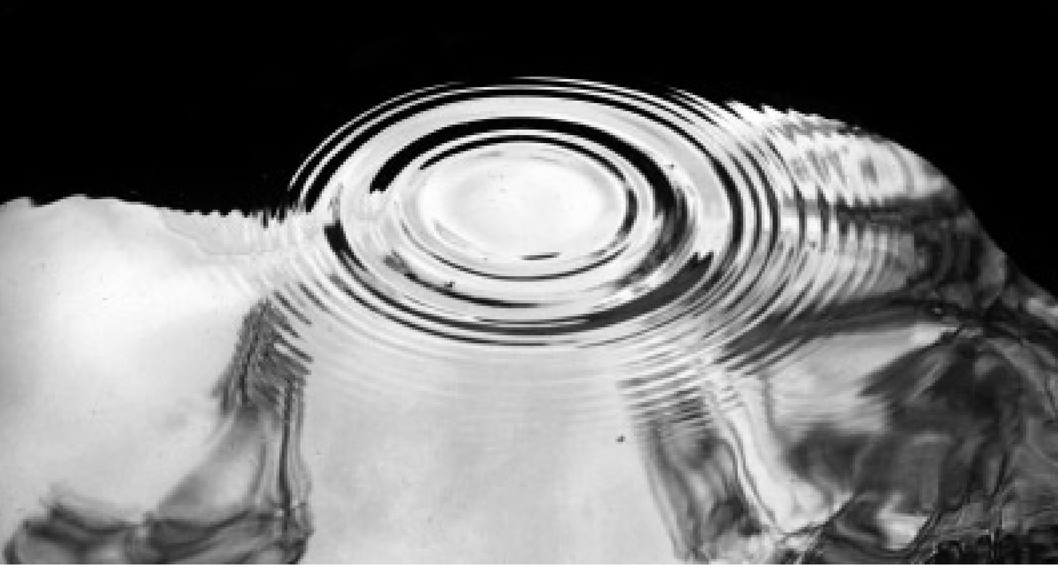

शायद कुछ दिन और जब मैं फिर से गिरूँगा
सृष्टि स्वंय ही प्रबन्ध करती है मरने वाले के लिए
किसी की शर्त नही चलती

मैं अपने कमरे में वापिस आता हूँ... निरे अन्धेरे में
अन्दर मैं जानता हूँ मेरा जाने का समय आ गया है

मैं अपनी चीजें अपने दोस्तों को देना चाहता हूँ जो मुझे याद रखेंगे
मेरे पास जो मूर्तियां और खूबसूरत किताबें है... मैं उनकी एक सूची बनाता हूँ
और हर मित्र के लिए एक तोहफा तैयार करता हूं
कोई जो मुझ पर मुस्कराया और मेरे प्रति भद्र था
कोई जिसने मुझे रास्ते पर मदद की
कोई जो मुझे सहारा देने आया जब मुझे इधर उधर धकेला गया
छोटे छोटे कृत्य जो मेरे हृदय को छू गये
मैंने हर किसी को अपने दिल में याद रखा

एक एक कर
मैं आश्रम जाता हूँ
और हर किसी को अपनी याद रखने वाली भेंट देता हूँ
हर किसी को अचरज होता है

देना कितना आनन्दमय और भाररहित करता है
उनका आश्चर्य और प्यार मुझे मिला

मैं नये दिन के लिए जागता हूँ

कोमल और ऊर्जा से दमकती विवेक चली गई है
देवदूतों की तरह पंख लगाकर आसमान की ओर
अनन्त आकाश में... शायद उस महान दिव्य आत्मा की तैयारी में
जिस की प्रतीक्षा हो रही है

गुरू के साथ समक्रमिकता

विवेक ने कुण्डलित प्राणधारा को धरती पर थामे रखा
प्रेम और कोमलता से
उनकी हर मुस्कराहट के लिए

सीधी खड़ी तरंगे लड़ाई से थक चुकी थी
रहस्य उनके ह्दय के समीप रहा
और उसमें छुपा रहा

प्रेमपूर्वक याद में
माँ प्रेम निर्वाण
जिन की असमय मृत्यु हुई
जन्म मार्च १९ १९४९
निधन दिसम्बर ९ १९८९

मैं प्रकट करता हूँ कि वे बुध्दत्व तक पहुँची
सीधा खड़े रास्ते और संकरे गुप्त मार्ग से उनके मार्गदर्शक के साथ

गुरू के साथ समक्रमिकता

इससे ज्यादा मैं प्रकट नही कर सकता
यह मेरा नही है कि मैं बाँट सकूँ
वे मुस्कराती है और मुझे भगवान के लोगों में सबसे ज्यादा पागल कहती है

नृत्य चलता रहता है
जीवन और मृत्यु... एक तलवार की तरह संतुलित
होशपूर्वक होने की धार... तुम्हे जगाते हुए

११ दिसम्बर हम नाचते हैं
एक धन्यभागी का जन्म भगवान

रास्ता ऊँचा और ऊँचा होता जा रहा है
संकीर्ण और संकीर्ण
सबसे महान फैसला जो अभी किया जायेगा
उन्है रहस्यमय ढंग से अपना मार्ग मालूम है

वे अपने ढंग से जियेंगे
और
कभी नही मरेंगे
उनका अपना ढंग

भगवान अन्तिम लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं
मुत्यु पुन:जीवित कर सकती है
शरीर को उसके अन्तिम श्वास में... प्रकाश में विस्फोटित कर के

ज्वाला बुझने से पहले सबसे ज्यादा बढ़ती है
निर्वाण ज्वाला का अन्त
अन्धेरे के रहस्यों को थामना
प्रकाश में प्रकट करना

काला चक्र प्रकाश चक्र को प्रकट करता है
सबकुछ थम जाता है और दोबारा जीवन में पुन:जीवन हो जाता है
सिर्फ एक गहरी निष्क्रियता... नूतन निर्दोष आँखो के लिए

एक निराली युक्ति
भगवान व्यवस्था करते हैं
उनके नए आदमी
के आने के लिये

रिक्टर कांटे पर ९ की मात्रा

बुध्दाफील्ड में काले जादू की घोषणा होने लगती है
हवा में एक मन्त्र
देखो और गहरे में भीतर जाओ
सुनो और मन्त्र की ध्वनि को ढूँढो
यह भगवान को मार देगा

बच्चे इधर उधर भागते हैं... खजाने को ढूँढते हुए जो कभी दबाया ही नही गया
खजाने की तलाश... तलाश शुरू हो जाती है

युक्ति प्रयोग में

यह महत्वपूर्ण है
मन्त्र वाले आदमी को ढूँढना ही है
नहीं, यह मन्त्रवाला आदमी अकेला नहीं है
यह लोगों का एक समूह है
जो ध्वनि से उनके हारा चक्र पर निशाना लगा रहे हैं

खबर चिन्ताजनक है
हवा में इत्र फेंका गया

कुछ उत्तर की ओर जाते हैं... कुछ दक्षिण की ओर
कुछ अब पूर्व की ओर... कुछ अब पश्चिम की ओर
उत्तरपश्चिम दक्षिणपूर्व... उत्तरपूर्व दक्षिणपश्चिम

हर दिन एक नई दिशा... एक नया चक्कर... एक नया मोड़
षडयन्त्र गहराता जाता है... युक्ति वास्तविक है

पूरा बुध्दाफील्ड दायीं से बायीं ओर परिवर्तित हो जाता है
काले जादू के मन्त्र के कोई चिन्ह नही
अच्छा... बायीं से दायीं तरफ कोशिश करो
काले जादू के मन्त्र का फिर कोई चिन्ह नही

सीधी खड़ी प्राणधारा की अवस्था और परिस्थितियों को तैयार करना होगा
सौंपने के लिए यह गोपनीय सन्तुलन है
बायें से दायें या दायें से बायें

बायें से दायें
बायें मुड़ना
कुन्डलित पेंचदार मिलन होता है
एकदम सही

जो मैं प्रकट कर रहा हूँ वह पूरी सच्चाई का सिर्फ एक संकेत भर है
पूरी सच्चाई जो मैं प्रकट कर सकता हूॅ या प्रकट करना चाहता हूँ
या दुनिया को अभिव्यक्त कर सकता हूॅ

मैं बहुआयामीय तलों पर प्रश्नों के बारे में सजग हूँ
जो कि मेरे अभिव्यक्त करने से पैदा होगें

नये रहस्य जिनकी यह रचना करेंगे
सैकड़ों प्रश्न जो यह उठायेंगे... अधिक और अधिक प्रश्नों में

मैं वही प्रकट कर रहा हूॅ जो कि मैं समझता हूँ
मैं अपने साथी पथिकों के लिए, भगवान के प्रेमियों के लिए,
इस मानवता के लिए और भविष्य में सत्य को खोजने वालों के लिए ऋणी हूँ

और ऊपर परलोक में सभी जीवित बुध्दाओं के लिए जो मुझे खामोशी से देख रहे हैं

भगवान की अपनी स्वंय की रूचि है... उन की पूर्ण स्वतंत्रता चयन करने की
उनका दृष्टिकोण और प्रज्ञा हमारे समय से बहुत आगे है
उन का पूर्ण सजग बोध

रहस्यमय घोषनाएँ हर रोज की जा रही है
उन्हे खोजना है काला जादूगर कौन है

शायद एक अमेरीकी सी. आई. ए. का प्रतिनिधी
जिसके पास कुछ खास गुंजन करने का साधन हो
या कुछ लोगों का समूह
जो भगवान को नष्ट करने के लिए एक खास मन्त्र का जाप कर रहे हैं
या एक अनिवार्य आदमी... शायद एक भारतीय... मन्त्र के साथ

भगवान के पूरे जीवन में... अनगिनत दर्शनों में... पहली बार
जमीन पर टेप लगाकर बुध्दा हॉल को ४५ के कोण पर विभाजित किया जाता है
सभी भारतीयों को बुध्दा हॉल के बायीं तरफ बैठना है
और सभी विदेशियों को दायीं तरफ बैठना है

संदेश है कि भगवान अपनी गहरे ध्यान के उड़ान पर होंगे
और हाथ ऊपर और ऊपर की तरफ उठाते हुए
किसी भारतीय व्यक्ति या व्यक्तियों की तरफ इशारा करेंगे
जिसे बहुत हल्के से कन्धे पर थपकी दी जाएगी और दोबारा से नही छुआ जाएगा
पर हल्के से भगवान की तरफ चलने को कहा जायेगा
और उसे पोडियम की बगल वाली सीढ़ीयों से हॉल को छोड़ कर जाना होगा

भगवान अपने रहस्यमय युक्ति के साथ तैयार पोडियम में आते है

संगीत उनकी हाथ की प्रत्येक क्रिया का अनुगमन कर रहा है

वह अपनी आखें खोलते हैं... एक भारतीय की तरफ इशारा करते है
सौम्यता से उसे उनकी तरफ लाया जाता है
और साथ की सीढ़ीयों से वह बाहर चला जाता है

संगीत चलता रहता है... तेज और तेज... एक और को इशारा
संगीत बढ़ता है उनके हाथ ऊपर और ऊपर उठते हुए
एक और व्यक्ति को इशारा
संगीत तेज उनके हाथ आकाश में ऊँचे
एक और व्यक्ति को बाहर जाने का इशारा
संगीत तेज उनके हाथ आकाश में और ऊँचे
एक और व्यक्ति को बाहर जाने का इशारा

बुध्दाफील्ड एक ऊँचे शिखर पर
सुनहरी तरंगों को थामे हुए... धरती में जोड़े हुए नीचे नीचे नीचे
अमरपक्षी के पंखों को गुरूत्वाकर्षण से नीचे बाँधना होगा
गहरी छलांग होगी... अथाह घाटी और अनन्त की घाटी के बीच

कैसे मास्टर चोर सबसे बड़ा कोहिनूर हीरा
दिन के उजाले में सबके सामने चुराएगा

फन्दा काम कर चुका है... भगवान का लक्ष्य अभी भी बैठा है
संगीत आरोह में ताल को बढ़ा रहा है... उनके हाथ उड़ रहे है

भगवान मेरी तरफ ऊँचे आकाश में एक बाज की तरह देखते हैं
मेरे अन्दर तक झांकते हुए
मैं जानता हूँ मेरा समय आ गया है

मेरी तरफ इशारा किया जाता है
मैं ठंडा पड़ जाता हूँ

मैं धीरे से खड़ा होता हूँ... बिना हिले... बहुत आहिस्ता एक कदम आगे लेता हूँ
मैं जमा हुआ हूँ और एक कदम भी नहीं ले सकता
हर कदम सीसे की तरह भारी है... हर कदम आहिस्ता और कालातीत

वह मेरी तरफ देखते हैं
खुली एकाग्र आंखें और बोध्दिधर्मा की तरह उग्र

पूरा आसमान उतर रहा है और मजबूत पकड़ के कारण धरती भारी है
मैं आहिस्ता से उनकी तरफ चलता हूँ
सिर्फ ३ मीटर... अन्तर कम है

समय पूर्णत: जमकर धीमा हो गया है
सब कुछ गहरे निश्चलता में गुँजन कर रहा है

मैं गायब हो जाता हूँ
आसमान मेरे ऊपर बहुत अधिक प्रवाहित हो रहा है
हीरे शीघ्रता से नीचे की ओर मेरे सहस्रार में आ रहे हैं

अन्धेरे में बिना किसी के देखे... फिर भी खुले दिन के उजाले में
सुलझता हुआ... एक विरोधाभास जो भुलाया जाएगा

महानतम रहस्य जो जीवित रखा गया है

पवित्र ज्योति को रहस्यमय ढंग से सौंपना

मुझे हर बात का बोध है जो कि जल्दी ही होने वाली है
यह भगवान की मर्जी है... वह मेरे गुरू है
सब मेरे द्वारा देखा जाता है... मैं मौन रहता हूँ

१६ जनवरी
भगवान आखिरी बार ध्यान में बैठने के लिए प्रकट होते हैं
वह बहुत कमजोर हो गये है
और गहरे ध्यान में बैठने के लिए प्रवेश करते समय सन्तुलन खो रहे हैं
अशक्त ढंग से चल रहे हैं और काफी दूर प्रतीत हो रहे हैं

१७ जनवरी
भगवान आहिस्ता से पोडियम पर चलते हैं
उनकी मुस्कराती और टिमटिमाती आँखें
दूर क्षितिज पर उनकी दृष्टि
हर दिशा में आहिस्ता आहिस्ता शाश्वत प्रणाम करते हुए
उनका होने वाला आखिरी प्रणाम

१८ जनवरी
भगवान अपने कक्ष में है गहरी समाधि में

१९ जनवरी १९९०
सभी बुध्दा हॉल में एकत्र होते हैं
और उन्हें बताया जाता है कि भगवान ने अपना शरीर छोड़ दिया है
कि उनके शरीर को बुध्दा हॉल में लाया जायेगा
और बर्निंग घाट में एक घण्टे में ले जाया जायेगा

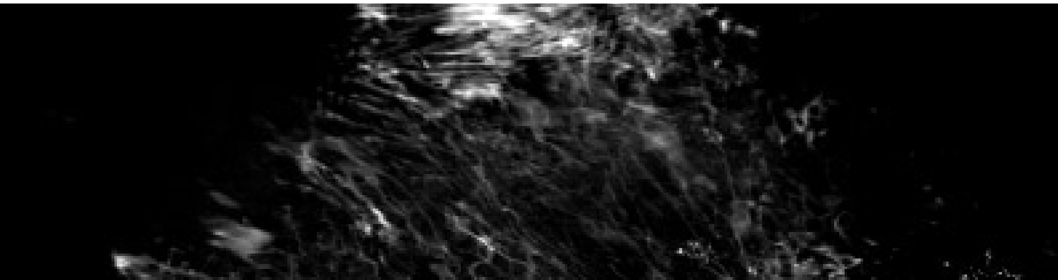

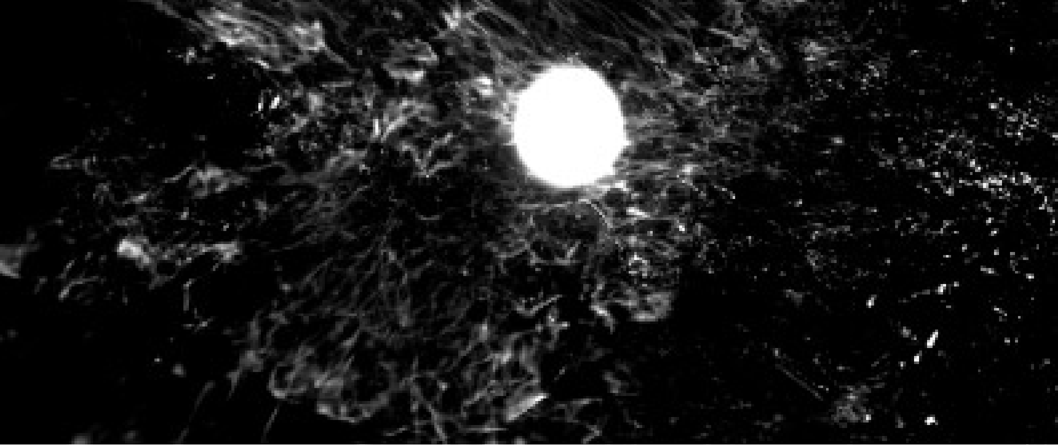

भगवान जो ओशो कहे जाते हैं
कहते हैं
कि मेरी उपस्थिति यहाँ पर कई गुना ज्यादा होगी
मेरे लोगों को याद दिलाना जब वे मुझे और अधिक अनुभव करेंगे
तब वह तुरन्त जान जायेंगे

कभी भूतकाल में मेरे सम्बन्ध में बात नहीं करना

आखिरी नृत्य

उनके शिष्यों का काफिला नाचता हुआ
उनकी प्रेम की ज्वाला को ले जा रहा हैं

मेरी आँखों से आँसुओं की बाढ़ बह रही है
अब कोई वापसी नहीं... अब बहुत देर हो चुकी है

महानतम हंस उड़ चुका हैं

सदमा और पीड़ा और आँसू
निरा सदमा और गहरी पीड़ा और आँसू ही आँसू

हम बर्निंग घाट की तरफ नाचते जाते हैं
भगवान के गीत गाते हुए... हर नेत्र से आँसू बह रहे हैं

सबसे महानतम लड़ाईयाँ जो कभी लड़ी गई
उन में प्रेम मरा है और अधिक प्रेम की उत्पत्ति के लिए

लपटों को बढ़ते देखकर बहुत गहरी पीड़ा
उनके एकत्र शिष्यों की ज्वाला
उनके नाचते प्रेमी

उनके प्रेम की शुध्द अग्नि सब में फैलती हुई

विलीन

जहाँ प्रेम अधीन होता है
विशाल प्रेम को जगाने के लिए
जो एक रहस्य है
स्वंय प्रेम का

शायद मरने वाला
जीने वाले को जगाएगा

मास्टर चोर का विरोधाभास

बुध्द का शिष्य महाकश्यप

हमेशा मौन और रहस्यमय रहा
एक सुबह बुध्द मुस्कराते हुए आते है मौन में एक गुलाब साथ लिए

एक पेड़ के नीचे मौन में बैठा हैं अनजाना महाकश्यप
अचानक वह बहुत जोर से हंसता है

सभी शिष्य मुड़कर देखते हैं
एक पेड़ के नीचे बैठे महाकश्यप को जो कभी बोला नही और भुला दिया गया

बुध्द मुस्कराते हैं और महाकश्यप को गुलाब दे देते है

चैतन्य के हीरे को रहस्यमय ढंग से शून्यता को सौंपना

मैंने कभी एक प्रश्न भी ओशो से नही पूछा... कभी कोई उत्तर नही पाया

मैं कभी ओशो से नही मिला
मैं एक अनजाना शिष्य
सिर्फ एक गुण के साथ
शुध्द बोध... पूर्ण निश्चलता... गहरा मौन

मैं अकेला खड़ा हूँ... निश्चल और शान्त

ओशो की दुनिया चलती रहती है
यह ढोंग करती हुई कि जैसे कुछ हुआ ही नही है... यह बिल्कुल बकवास है
सदमे को छिपाओ और ज़ेन की तरह बन जाओ

सख्त संकेत... द्वार रहित द्वार पर

शून्यता पहले की तरह

तुम किस के साथ मजाक कर रहे हो

मैं अब पूर्णत: होशपूर्वक हूँ अपनी भीमकाय जिम्मेदारियों के प्रति
मैं पूर्णत: होशपूर्वक हूँ अनन्तता के लिय... जो मैंने देखी है
पूर्ण रूप से स्तब्ध मैं आँसुओं से भरी आँखों के साथ चलता हूँ
आँसुओं की बरसात मेरे चेहरे से हो रही है
दिन प्रतिदिन... रात रात भर

गले मिलता हूँ और रोता हूँ हर एक कन्धा जो मुझे मिलता है
अब हमें कोई अलग नही कर सकता
हम एक है

यह पल वह पल है जो कि हमेशा रहेंगे
जन्मों जन्मातर... हमेशा हमारे ह्दय में

बहुत प्रेम से भरे संन्यासी बेहद सदमे में चल रहे हैं... आसुँओं में
अन्धेरे में ठोकर खाते हुए आगे जाने का मार्ग को ढूँढ रहे हैं

वे घोषणा करते है... ओशो ने कहा है

मैं तुम पर अपना स्वप्न छोड़ता हूँ

पर असलियत में स्वप्न खत्म हो चुका है... अब तुम सब को जागना होगा

कौन जानता है रहस्यमय परलोक को
कहाँ है जीवित मिस्ट्री स्कूल

कहाँ है उनका पवित्र सूक्ष्म शरीर
कौन जानता है

ज़ेन जैसे संन्यासी बस अपने एकान्त में चले गये
और इस कड़ी सच्चाई से उन्होनें स्वंय को छुपा लिया

मास्टरों के मास्टर ओशो अब शारीरिक रूप से उपलब्ध नहीं है
उनकी हमारे लिए फैली हुई बाजुंए और हर शाम अपनी ज्ञान की कथाओं और
प्यार के गीतों से हमें गले लगाना भी अब नहीं है

हम ने इस महत्वपूर्ण अवसर को खो दिया है
शायद सफेद हँस उड़ चुका है

ओशो घोषित करते हैं
उनकी गुप्त मोहर और अन्तिम क्वान को
जो कि अद्रश्य के लिए है
अनन्त सत्य और हमेशा उपस्थित रहना

कभी भूतपूर्व में मेरे बारें में बात मत करना

स्वंय को एक आँख वाले दृष्टा के रूप में प्रकट करना
मैं देखता हूँ उनके सफेद पंखों को और उनकी सौम्यता से बहती हुई उपस्थिति को

आगे और भी है... आगे और है... बढ़ते रहो... बढ़ते रहो
गहरे जाओ और गहरे किनारों पर डुबकी लगाओ
साधक को एक किनारा छ़ोड़ना पड़ता है दूसरे किनारे के लिए
बढ़ते रहो बढ़ते रहो बढ़ते रहो

यह भी बीत जाएगा

ओशो की माँ माताजी
मैं सबसे पहले माताजी के बारे में महसूस करता हूँ
मैं इन पवित्र दिनों में उन्हे अकेला छोड़ना चाहता हूँ
मैं जब भी माताजी के शयनकक्ष के समीप से निकलता हूँ
उन्हे हर बार रोता हुआ सुनता हूँ
मुझे उनके पाँव छूने होंगे और उनकी ह्दय की पीड़ा को हल्का करना होगा
और उन्हे आश्वस्त करना होगा कि सब खत्म नही हुआ है

माँ का खून बहता है... उनकी ह्दय की गहरी पीड़ा
माताजी एक भक्तिनी और ईश्वरीय माता

जिस दिन मैंने संन्यास लिया उन्होनें उसी दिन मुझे देखा
और उसी दिन से मुझे हमेशा प्रेम किया
हर रोज माताजी विनम्रता और मधुर सौम्यता से
द्वाररहित द्वार पर आटो रिक्शा में स्वंय को लाती
और अपनी ध्यान वाली गद्दी को अपनी बाहों के नीचे
रखकर आहिस्ता आहिस्ता चलती
एक बहते हुए पानी के झरने की तरह
वह शुध्द अंहकाररहित और मौन थी
पेड़ के ऊपर एक पत्ता जैसा है... वह वैसा ही है
शुध्द और सिर्फ वही उपस्थित

ओशो की सबसे बड़ी भक्त
सबसे ज्यादा करूणामय सबकी माँ
जागे हुए बुध्द की अन्तिम माता

मैं स्वंय को सम्भालता हूँ और धीरे से उनके दरवाजे पर दस्तक देता हूँ
उन का परिवार दुख में उन्हे चारों ओर से घेरे हुए है
मैं समझ जाता हूँ और वापस जाना चाहता हॅू
वे मेरी तरफ देखती है
रोते हुए... आँसुओं के साथ... माताजी मुझे अपनी तरफ इशारे से बुलाती है
मेरा बेटा... मेरा बेटा रजनीश... तुम जीवित हो
मेरा पुत्र रजनीश तुम जीवित हो... मेरा पुत्र... मेरा पुत्र

मैं आंसुओं से भर जाता हूँ
कुछ बोल नही पाता... मैं उनके चरण छूता हूँ

ओशो का सौम्य परिवार मेरी ओर देख रहा है
वे भद्रता और प्यार से मुझे धीरे से जाने को कहते है
माताजी गहरे सदमे और शोक की पीड़ा में है
मैं उन्हे ओशो की याद दिलाता हूँ जो कि उनके लिए और भी अधिक पीड़ाजनक है

मैं समझ सकता हूँ
यह शोक का समय पवित्र है
मैं झुकता हूँ और धीमे से बाहर चला जाता हूँ

कुछ दिन बीत जाते है
दोबारा से बात फैलती है
मैं संन्यासियों को ओशो की ज्यादा और ज्यादा याद दिला रहा हूँ
लोग मेरे पास गहरे प्रेम और मौन के साथ आ रहे हूँ
मेरे समीप रहना चाहते हूँ ... बिना किसी कारण के
सिर्फ मेरे समीप रहने के लिए

आश्रम का प्रबन्धक दल और सत्ताधारी लोग अब मुझे नजदीकी से देख रहे हैं
मैं हमेशा तकलीफ का कारण रहा हूँ
मैं जहाँ भी जाता हूॅ वहाँ कुछ नयी कहानी शुरू हो जाती है

एक महिला मुझे अपने स्वप्न और कहानियाँ बताने आती है
मैंने देखा तुम मर गये हो
वे सब तुम्हारे शरीर को एक स्ट्रेचर पर रखकर बुध्दा हॉल में ले जा रहे है
ओशो तुम्हे आशीष देने आते है और तुम्हारा माथा चूमने के लिए झुकते है
अचानक तुम गायब हो जाते हो
और मैं देखती हूॅ ओशो को बर्निग घाट में ले जाया जा रहा है

कोई दूसरा देखता है ओशो अपनी प्रवचन वाली कुर्सी पर बैठे बोल रहे है
उनका चेहरा बदलता है और मैं प्रकट होता हूँ... क्या यह दिव्य दर्शन था
इसका क्या अर्थ निकालना चाहिए... यह मुझे हर रोज आता है

कोई दूसरा मुझे बुध्दा ग्रौव के पीछे आहिस्ता आहिस्ता चलता देखता है
और एक क्षण में मेरी जगह ओशो चल रहे हैं... लम्बी सफेद दाढ़ी में

एक बालिका मेरी तरफ चिल्लाते हुए भागती आती है ओशो ओशो
और कहती है वह मेरी सफेद दाढ़ी को खीचँना चाहती है
क्या मैं अपकी दाढ़ी खींचू ओशो... क्या मैं आप की दाढ़ी खींचू ओशो

मैं शीघ्रता से भागती दुनिया से घिरा हूँ
हर तरफ तेजी से भागते सत्य को खोजते जिज्ञासु
तेज और तेज भाग कर... हर दिशा में सत्य को खोजते जिज्ञासु

पूरी यात्रा शुरू होती है
यहाँ... यहीं इसी पल से

भूतकाल वर्तमान भविष्य... सब सीधी खड़ी दिशा में उपस्थित है
आकाश में ऊँचा धरती में गहरा
यह शाश्वत पल

खोजना नही... ढूंढना नही... सीखना नही... करना नही... कुछ भी नही करना

मार्गरहित मार्ग में
एक कदम भी चलने की आवश्यकता नहीं है
हम पहले से ही घर में है

मैं समझ सकता हूँ एक पागलखाने में
समझदार लोगों से घिरे होने का क्या अनुभव होता है
कोई मेल नही है... विवेक के यह बिल्कुल अलग अलग तल है

पूरी दुनिया एक तरफ है... और मैं अकेला दूसरे किनारे पर हूँ
मैं कहाँ से शुरू करूं... मैं क्या कर सकता हूँ... मैं कहाँ जा सकता हूँ
मैं एक पागलखाने में हूँ

बस हार मान लो और इस सब का अर्थ निकालना बन्द कर दो
इस निरी नासमझी का आनंद उठाओ
इस रहस्य को आनंद लो और गहराई में अकेले होने का आनंद लो

एकलौती समझ है दोबारा से एक साधारण आदमी बन जाना
एक असाधारण साधारण आदमी
मुझे स्वंय को दोबारा से अभिमुख करना होगा और नये पंखो को उगाना होगा

मैं अपनी रोज की ध्यान की दशा में चलता हूँ

मैं कृष्णा हाऊस के समीप अपनी शाम की चाय पी रहा हूँ
वहाँ रेस्टारेन्ट की मेजें फैली हुई हैं
सिर्फ मौन और एकान्त में चाय पी रहा हूँ

ना जाने कहाँ से... एक जर्मन संन्यासी मेरी तरफ तेजी से आता है
और बिना कुछ कहे या चेतावनी दिये अपने मुक्के से मेरे चेहरे पर प्रहार करता है

मैं अपनी भौहों से एक गर्म तरल बहता हुआ महसूस करता हूँ
मेरी आँखें खून से भर गयी है
दोबारा से वही उबाऊ हमला
बस एक और सभ्य इन्सान
अपने प्रेम और ध्यान की दशा की अभिव्यक्ति करता हुआ

बाकी लोग घृणा से देखते हैं और इस अचानक बेवजह प्रहार के लिए
आश्चर्यचकित है

मैं उससे पूछता हूँ कितने सालों से तुम संन्यासी हो
जिस पर वह बताता है १२ साल
मैं कहता हूँ महान... यही है जो तुमने पाया है
सिर्फ भीतर जाओ और स्वंय को ध्यान से देखो
महान संन्यासी

मैं खड़ा होकर अपने चेहरे को पास वाले वॉश बेसिन के सामने शीशें मे देखता हूँ
मेरी भौहों के नीचे बहता हुआ एक गहरा घाव है
बहुत अधिक खून चेहरे से नीचे बह रहा है
कोई मुझे कृष्णा हाऊस ऑफिस की तरफ जाने में मदद करता है
कुछ डाक्टरी चिकित्सा के लिए
और मुझे आफिस में छोड़ देता है

मुझे लोगों का ध्यान दूर रखने के लिए आफिस के अन्दर बैठने को कहा गया
अन्दर जाने पर... मैं डाक्टर अमृतो और जयेश को देखता हूँ

मैं अमृतो को देख कर कहता हूॅ कि मेरी भौहों पर बुरी तरह से चोट लगी है
कृपया इसे देखो और अगर जरूरत हो तो टाँकें लगाने का इन्तजाम करो

तुरूत ही वह अपना कड़ा भाषण शुरू कर देता है
मैं तुम्हारे चेहरे की तरफ नहीं देखना चाहता
यह मेरी समस्या नहीं है
कि मुझे इस पाठ को सीखने की जरूरत थी
और मैं इस मार के काबिल था
मैं लोगों को उकसाता हूॅ
और मेरे जैसे लागों को बैन कर देना चाहिए

जयेश एक सुशिष्ट इन्सान है... अमृतो के व्यवहार से आश्चर्यचकित
वह भद्रता से अमृतो को मुझे देखने को कहता है

मुझे चोट लगी थी... आश्रम के भीतर हमला... एकदम उन के सामने
देखने वाले सब जानते है कि मैं अकेला था और शान्ति से चाय पी रहा था
और मैं इस आदमी से पहले कभी नही मिला था

अमृतो घाव पर टाँके लगाने से मना कर देता है और खीजता
हुआ बाहर चला जाता है
मैं उसे वापस बुला कर जयेश के सामने कहता हूँ
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम इस दिन को याद करोगे
तुम एक डाक्टर हूँ जिसने कैसी भी चोट को देखने की शपथ खायी है
कि तुम आश्रम के डाक्टर हो
मैं वचन देता हूँ कि यह याद रखा जायेगा

मुझे सोफे पर लिटाया जाता है
बर्फ की टुकड़ी लगाने पर... बहते खून को थमने में एक घण्टा लग जाता है
मैं उस रात टाँके लगवाने के लिए बुध्दरानी अस्पताल जाता हूँ

मैंने क्षमा कर दिया है पर मैं भूला नही हूँ
मेरा वचन... मैं हमेशा अपना वचन निभाता हूँ

अमृतो प्यार का भूखा है और उसे बस लाड़ प्यार की जरूरत है

इसलिए मैं आज सोचता हूँ
कि उसे लाड़ प्यार का एक डिब्बा भेजूँ
उसे जो चाहिए वह है साधारण शौच का प्रशिक्षण
पीछे का द्वार बन्द होने के कारण मल मूत्र गलत द्वार से बाहर आता है

अब यह तुम्हारे को उकसाने जैसा है
सिर्फ शान्त रहो और थोड़ा हास्य का भाव भी रखो

यह विचित्र तर्क है कि अमृतो पीड़ित को बैन करना चाहता है
और जिस व्यक्ति ने मुझ पर हमला किया वह खुलेआम घूम रहा है

आश्रम प्रबन्धक दल ने मेरे बारे में विचार विमर्श करना शुरू कर दिया है

मेरे भौतिक शरीर में कई नये बदलाव दिखने शुरू हो गये हैं
मुझे आमतौर से काफी ज्यादा सोने की जरूरत है
और मैं १४ से १६ घण्टे सोना शुरू कर देता हूँ... एक पूर्णत: अन्धेरे कमरे में

मैं अपने कमरे में पानी का एक कूलर लगाता हूँ
अपनी ईडा और श्वास को खोलने के लिए
सोना मेरे जीने का नया ढंग हो जाता है
मैं अपने फ्लैट में नहाने के एक टब का इन्तजाम करता हूँ
स्वंय को बेहद गर्म पानी में भिखोने के लिए
हर रोज एक घण्टा
गर्म पानी शरीर के दर्द को कम करने में मदद करता हैं
मैं अपने क्षतिग्रस्त कन्धे को खोलने के लिए गहरी कोशिकाओं में मालिश करने
वाले को ढूँढता हूँ और सप्ताह में दो बार मालिश लेना शुरू कर देता हूॅ

मैं दिन में आश्रम में नही जाता हूँ
मैं गायब रहता हूँ और अब नजरों में कम आता हूँ
अब मैं आश्रम जाता हूँ सिर्फ शाम को अपने रात के खाने के लिए
और बुध्दा ग्रौव के पीछे चलने के लिए

उन्होनें मुझे पूना में ५ महीने रहने दिया

जो मेरे लिए एक निरा चमत्कार है
किस को अधिक चमत्कारों की जरूरत है यह जानने के लिए कि वे जिन्दा हैं
यही पर्याप्त सबूत है

एक दोपहर को मुझे द्वार रहित द्वार पर रोका जाता है
एक नशेड़ी सत्ता का पुजारी के द्वारा... तथागत
वह अपने मौके की प्रतीक्षा में था मुझे किसी भी वजह से बैन करने के लिए

मुझे बताने के लिए
कि मैं आश्रम में आहिस्ता आहिस्ता चलने की वजह से बैन किया गया हूँ
अगर मेरी दोबारा से भीतर आने की इच्छा है
तो मुझे आगे से आहिस्ता चलने की अनुमति नहीं है
और कि मुझे अपने हाथ के संकेतों और अपने शरीर की क्रियाओं को बदलना होगा
जो कि मैं ओशो की नकल करता हूँ
जिस तरह से मैं चलता हूँ... जिस तरह से मैं अपने हाथ हिलाता हूँ
जैसे मैं दिखता हूँ

मैंने ऊपर अपने रक्षक ओशो की तरफ देखा
मैं पवित्र द्वाररहित द्वार के सामने वचन देता हूँ
सत्य को जानने के इच्छुक सभी जिज्ञासुओं के लिए
इस का भी दिन आयेगा... प्रतीक्षा करो मेरे प्यारे दोस्त
सिर्फ इन्तजार करो... मैं हमेशा अपना वचन पूरा करता हूँ

मैं बस थक चुका हूँ अपनी पूरी ऊर्जा को रोज सिर्फ यही समझाने में लगा देना
कि मैं कैसे जीता हूँ और ऐसे क्यों जीता हूँ
मेरे पास अब कोई वजह नहीं है... यहाँ अधिक रहने के लिए

मैं देख सकता था इस आश्रम के भीतर कोई भविष्य नहीं है
संन्यासी पहले से ही सब जानते है
ओशो के प्रवचनों से वह पूरे भरे हुए हैं

ओशो ने धरती के हर विषय पर ६०० किताबें बोली हैं
दोनो तरफ से... पक्ष में और विपक्ष में

संन्यासी हर शब्द को आसानी से मोड़ देते हैं अपनी जरूरत के हिसाब से
उनकी जुबान हमेशा इस के लिए तैयार रहती है

मैं जानता था कि मेरी आगे की यात्रा बहुत जिम्मेदारी वाली है

शायद अपनी शारीरिक अवस्था को ठीक करने के लिए लगभग आठ साल लगें
अपने शरीर को स्वस्थ करने के लिए पैसे और समय की जरूरत थी

इन महीनों में मेरे पास काफी लोगों से प्रस्ताव आये
जिनके आश्रम पूरी दुनिया में फैले थे और जो चाहते थे कि मैं उन के
आश्रम में आंऊ
और जो कुछ भी मुझे अनुभव हुआ है उसे मैं अभिव्यक्त करूं

काफी लोग देख सकते थे और गुप्त रूप से जानते थे
कि ओशो ने मुझे अपना चैतन्य का हीरा रहस्यमय ढंग से सौंपा है

काफी लागों को बोध था कि मेरी पहली समाधि हो चुकी है
उनके लिए इतनी समझ पर्याप्त थी मेरे पास आने के लिए
मैं अब एक आचार्य था
मैंने सत्य को जाना था
दृष्टा आत्मा है
अब शुध्द आत्मा की प्रतीक्षा करो

मैं हमेशा जानता था कि जब तक मैं अपना आखिरी कदम पूरा न कर लूँ
मैं अपने समय का इन्तजार करूँगा

माइकल ऐंजलो ने अपना डेविड आखिर तक छुपाया
तब उस ने दुनिया को अपनी श्रेष्ठकृति प्रकट की

चौथी समाधि से पहले नहीं जब आखिरी परत पतली और पारदर्शक होती है
तब मैं अपना कार्य या बोलना शुरू करूँगा

मैं संसार में वापिस आ जाता हूँ अपनी जीविका कमाने के लिए और एक साधारण आदमी की तरह जीने के लिए

अगर यह ऐसा ही होना था... तो ऐसा ही हो
अगर यह ऐसा नही होना... तो ऐसा ही हो

मैं जानता था मेरा पुर्नजन्म हो चुका है
महान चैतन्य का हीरा मेरे ऊपर मंडरा रहा है
भ्रूण मेरे शरीर के बाहर बहता हुआ अपनी स्वंय की गति से बढ़ेगा

इसे पोषित करना है और बोध पूर्ण रह कर इसे बढ़ाना है
सृष्टि को मेरा समय निश्चित करने दो

यह भी बीत जायेगा

व्यक्तिगत बुध्दत्व
एक चढ़ने का ढंग है सब से ऊँचे शिखर पर पहुँचने के लिए
और घर आकर... ब्रह्माण्ड में विलीन हो जाने के लिए

चैतन्य के हीरे को सौंपना
सर्मपण करना और गुरू में खो जाना
एक तरह से उनकी आत्मा में विलीन होने और खो जाने का ढंग है

आखिर तक पहुॅचने के दोनो ढंग पूर्ण रूप से अलग है
बुध्दत्व... बोध और सिर्फ पूर्ण बोध
चैतन्य के हीरे को सौंपना... पूर्ण बोध में गहरा समर्पण

चैतन्य के हीरे को ग्रहण करने के लिए एकलौती आवश्यकता है

शिष्य की एक समाधि होनी चाहिए
सहस्रार का छेद आकाश में सीधी खड़ी दिशा में बढ़ता है
गुरू की आत्मा इस सीधे खड़े रास्ते से नीचे उतर सकती है और अपनी जड़ें बना सकती है... एक दूसरे रूप में उपस्थित होकर अपना कार्य जारी रख सकती है

तीसरी आँख होशपूर्वक होने का बिन्दु है
जहाँ गुरू प्रकट हो सकता है
पर यह पर्याप्त नही है सीधी खड़ी दिशा में अवतरण के लिए

समाधि न्यूनतम आवश्यकता है चैतन्य के हीरे को सौंपने के लिए
और इसके लिए गुरू चुनते हैं

गुरू पूर्ण चेतना के साथ सौंपते हैं
शिष्य को भी चेतना के साथ ही ग्रहण करना होता है

दोनो शर्ते जरूरी है गुरू के शरीर छोड़ने से पहले
होशपूर्वक ढंग से चैतन्य के हीरे को सौंपना... जिस का दोनों को बोध है
गुरू... शिष्य

आत्मा अखंड है
सिर्फ एक व्यक्ति ही चैतन्य का हीरा ग्रहण कर सकता है

सिर्फ एक ही महाकश्यप हो सकता है

पूना छोड़ने से पहले मुझे ओशो ने
गुप्त प्लेट बनाने को कहा जिस पर यह शब्द लिखे हो
आने वाले भविष्य के लिए

ओशो

रजनिश

मैत्रेय

गौतम

बुध्द

रजनीश को रजनिश जान बूझकर लिखा गया
एक होशपूर्वक किया गया ध्यान देने योग्य कृत्य
जो कि गुप्त रखा गया
जब तक उन के कार्य को प्रकट करने का समय ना आ जाये

प्लेट फरवरी १९९० में बनायी गयी

अब सब के सामने
प्रकट हुई

मैं पूना छोड़ता हूँ और महसूस करता हूँ कि हवा एक नयी ताजगी से भर गई है
मेरी श्वास और अधिक गहरे विश्राम में चली गयी है और मुक्त हो गयी है
वातावरण पोषित और विस्तृत करने वाला है

हवा में स्वतंत्रता है
लगातार जाँच पड़ताल से स्वतंत्रता है
और हर एक आदमी जो मिलता है उससे तालमेल बिठाने की
आवश्यकता से स्वतंत्रता है

ओशो संन्यासियों के सोचने का मानसिक ढाँचा
अपने छोटे समाज में ही हवा भरी हुई हैं
खुद की बनाई हुई स्वीकृतियों और अस्वीकृतियों से
स्वंय की जानकारियों और धारणाओं से
स्वंय के ही पुरस्कारों और दंण्डो से

बुध्दाफील्ड बहुत बुरी तरह से स्वंय की बनाई हुई धारणाओं और
मानसिकता से जकड़ी है
यह सोचने का और मानसिकता का एक नया ढाँचा है
एक नया समाज है

तुम्हे उन के कानूनों को मानना होगा... उनके साथ तालमेल बिठाना होगा
उन के स्वंय के उचित और अनुचित मापदंड हैं

विचित्र लगता है यह उस जगह
जहाँ कोई स्वंय होने की स्वतंत्रता की तलाश में है

मैं स्वतंत्र होने का भाव भूल चूका था
उन सब का धन्यवाद जो मेरे विरूध्द गये और जिन्होनें मुझे आश्रम से बैन कर दिया
आप का धन्यवाद... आप का धन्यवाद... आप का धन्यवाद

मैं आखिरकार स्वतंत्र हूँ
मास्टर चोर कोहिनूर हीरे के साथ

मैं इस अनन्त हीरे के साथ भागा नही हूँ
उन्होनें मुझे चले जाने को कहा है
अब मैं किसी के प्रति उत्तरदायी नही हूँ
मैं चले जाने के लिए स्वतंत्र हूँ

चैतन्य का हीरा छुपा है सब के देखने के लिए
मेरे ऊपर बहती पवन में बहता हुआ और नाचता हुआ

मास्टर चोर दौड़ रहा है

ऊपर पहाड़ों की तरफ... मेरे तिब्बतियन दोस्त
हिमालय... धर्मशाला
शायद यह मेरा अन्तिम एकान्तवास होगा

बहुमुखीय हीरे को काटना और संवारना
कटे हुए भाग को कटे हुए के साथ मिलाना
मुख को मुख के साथ मिलाना
चमक को चमक के साथ मिलाना
आकार को आकार के साथ मिलाना

चैतन्य के हीरे में डूब जाना

आगे एक महान कार्य है
जाग्रत हीरे को काटना और तैयार करना है

सितम्बर १९९० के मध्य में
मैं एक छोटे से हिमालय टाऊन धर्मशाला में पहुँचता हूँ
मुझे तिब्बतियन मोमो और थुअपा नूडल्स बहुत प्रिय है
मैं पर्वतों की कुरकुरी हवा में इन की गंध महसूस कर सकता हूँ
एक कटोरे में चोपस्टिक और लहसुन मिर्च के साथ
मैंने इस तरह के खाने की कमी महसूस की है
और मैं एक छोटा तिब्बतियन रेस्टारेन्ट ढूँढ लेता हूँ

इन लोगों की प्यार से भरी हार्दिक आँखें हैं
समझदारी की रेखाएँ और करूणा उन के निर्दोष चेहरों पर गहरी अंकित हैं

उन्होनें सिर्फ कठिनाईयों को देखा है
दूरस्थ और कठोर तिब्बत के इलाकों से... अब अपने देश से निर्वासित

तिब्बत... धरती पर महानतम प्रयोग का विनाश
जीवन के बाद मुत्यु बारदो काला चक्र कालचक्र
बुध्दत्व चैतन्य के हीरे को सौंपना
यह सब उन का प्राचीन ज्ञान है
उन की खून हड्डियाँ और मज्जें इसी सब से भरी हुई है

मेरी गहरी सहानुभूति है उनकी तिब्बत को आजाद कराने की कोशिश के लिए
और मैं उनके लिए बहुत महसूस करता हूँ
इन निर्दोष लोगों को आजादी मिले
उस मार्ग पर चलने के लिए जो कि भीतर छुपे खजाने की तरफ ले जाता है
इनको आजादी मिले
शान्ति से भीतर की यात्रा पर चलने के लिए

संवेदनशील लोग ज्यादा पीड़ीत होते हैं और ज्यादा गहराई से
पीड़ा का अनुभव करते है और वह भी अधिक अनुभूति के साथ

मैं उन की आजादी की लड़ाई को समझ सकता हूँ
एक आजाद तिब्बत के लिए
पर मेरा समझने और अभिव्यक्त करने का अपना तरीका है

जब भी मैं किसी तिब्बतियन को यह कहते सुनता हूँ कि वह शरणार्थी है
तो मैं उन से क्रोधित हो जाता हूँ और उन की घबराहट देखकर तुरन्त कहता हूँ
कि फिर कभी दोबारा स्वंय को शरणार्थी मत कहना

तुम्हारे भीतर ही तिब्बत की भूमि है
तुम्हारे भीतर ही तुम्हारी परम भूमि है
स्वंय को आजाद करो और तुम्हे तुम्हारा तिब्बत मिल जायेगा

मेरे लिए तिब्बत एक जगह ही नही... पर आत्मा का भीतरी जगत भी है

मेरे लिए हर कोई शरणार्थी है
हर कोई सिर्फ सपना देख रहा है कि वह अपने स्वंय की जगह पर सुरक्षित है

सिर्फ एक ही सुरक्षा है
तुम्हारी अन्दर की धरती और तुम्हारे अन्दर का आकाश

मेरे लिए पूरी दुनिया एक शरणार्थी है
मेरी दृष्टि में मैं कभी एक भी तिब्बतियन शरणार्थी से नही मिला

वह बस मार्ग पर चल रहे योध्दा है
आगे बढ़ते हुए आध्यात्मिक योध्दा... जो कि चारों दिशाओं में फैल रहे हैं
दुनिया को इन की ज्यादा आवश्यकता है
बजाय कि आज उन को दुनिया की आवश्यकता

मैं अपने दोस्तों बिरीस्ता वरनिका और इटालियन पिअरो को खोजता हूँ
उन्होनें अपना जीवन तिब्बतियन उद्देश्य के लिए अर्पित कर दिया है
और एक बहुत सुन्दर महायान ध्यान आश्रम की रचना की है
मैं इस आशा के साथ वहाँ पहुचँता हूँ... कि वे मुझे समझेंगे
और मुझे एक साल के मौन एकान्तवास के लिए आश्रय देंगे

मैं महायान आश्रम में पहुचँता हूँ
मैं अपने मैरून रोब में हूँ और सब मुझे घूर रहे हैं
मैं उनके लिए अपरिचित हूँ फिर भी सब मुस्करा रहे हैं
और अपने अंदाज में झुक कर नमस्कार कर रहे हैं

वरनिका और पिअरो वहाँ नहीं है
वहाँ का पद्‌भार देखने वाली मजबूत इटालियन महिला मुझे उग्र दंग से देखती है
तुम ओशो के शिष्य हो
हम उन को स्वीकार नही करते क्यों कि वे बहुत ज्यादा रंगीन है और सदाचार में ढीले हैं

मै उन्हे अपना पक्ष समझाता हूँ
कि ओशो के लोग भी मुझे पसन्द नही करते क्यों कि मैं उन के लिए बहुत ज्यादा गम्भीर हूँ और कि मैं वरनिका और पिअरो को अच्छी तरह जानता हूँ
और वरनिका मेरा ताई ची का विद्यार्थी था

जो मैरून रोब मैंने डाला है वह बौध्द है
और कि मैं सिर्फ विपासना में बैठता और चलता हूँ
और एक साल आश्रम के अन्दर मौन में रहना चाहता हूँ
मैं दिन में सिर्फ एक बार शाकाहारी खाना खाता हूँ, धूम्रपान नही करता और ना ही शराब पीता हूँ और बिना गर्ल फ्रेन्ड के अकेला रहता हूँ... मैं एक साल मौन और एकान्त में रहने के लिए एक साथ पैसे देने का प्रबन्ध कर सकता हूँ

उस इटालियन महिला को मैं हास्यपद लगा... पर उसने स्वंय को सम्भाला
और पास के एक लामा से सलाह ली
और कहा कि कल आना, वे मेरे बारे में फैसला करेंगे

जब मैं उस घुमावदार रास्ते से वापस जाता हूँ
तो वह मुझे एकाग्रता से देखते है कि कैसे मैं आहिस्ता आहिस्ता चल रहा हूँ

अगले दिन वापस आने पर मैं एक गुस्सैल चेहरे को देखता हूँ
क्षमा करना... पर हम सिर्फ विपासना के छात्रों को यहाँ आने देते है
जिन्होने एक साल तक शुध्दीकरण और मन्त्रजाप की धार्मिक विधि को किया हो

तुम पहले धम्मपदा को पढ़ो और उसे समझ कर अपनी तैयारी करो
पूजा करो और हर सुबह ५.३० बजे मंत्र जाप करो और बड़े लामाओं की
हिदायतों का सख्त पालन करो
उनकी परीक्षा को पूरा करने के बाद ही मुझे बिना किसी नियन्त्रण
के एकान्त में मौन रहने दिया जायेगा

वाह... मुझे दोबारा से जन्म लेना होगा और दोबारा इस धरती गृह पर आना होगा

बाय बाय तिब्बतियन प्रभुत्व... कड़े नियम और अनुशासन
मैं आश्चर्यचकित हूँ इन मानसिक ढाँचों से... जो कि मुझे दिखने शुरू हो रहे हैं

बाकक्षु होटल की तरफ चलते हुए
मैं दलाई लामा के घर वाले इलाके में पहुँचता हूँ
दूर से मैं एक आँगन और एक बहुत बूढी महिला को देखता हूँ
बार बार वह महिला उनके निवास की तरफ प्रणाम कर रही है

उनके समीप आने पर मैं एक लामा से पूछता हूँ
कि उसके माथे पर इतना गहरा और साफ दिखने वाला घाव क्यों है

वह एक बहुत बूढी औरत है... बहुत पवित्र
उसने पवित्र दलाई लामा के लिए लाखों साष्टांग प्रणाम किये हैं
दलाई लामा उगते हुए सूर्य है जो सब देखते है और सब जानते हैं
और वह उनकी करूणामयी आँखों से बहुत पुण्य कमायेगी

आँसुंओं से भरी आँखों से मैं वृध्द महिला की तरफ देखता हूँ
कितनी शुध्द निर्दोषता

हर रोज मैं धीरे धीरे मैक्लोड़ गंज की तरफ जाता हूँ
अपनी मोमो और थुअपा खाने के लिए

वृध्द तिबतयन लामाओं का एक समूह मुझे काफी दिनो से
उत्सुकतापूर्वक देख रहा है
जो कि अब मेरा बाकक्षु होटल में वापिस जाते समय पीछा
करने का फैसला करते हैं
मैं देखता हूँ वे शान्ति से और शर्माते हुए मेरे पीछे पीछे आ रहे हैं
मैं अपने कमरे में पहुंचता हूँ और अन्दर जा कर बगीचे में
चाय भेजने के लिए बोलता हूँ

बगीचे की तरफ खिड़की खोलने पर
मैं आठ वृध्द लामाओं को बैठे देखता हूँ... वे मेरे बाहर आने की प्रतीक्षा में है
उन्होंने रिसेप्शन में मेरे कमरे का नम्बर पूछा था
और वे जानते है कि मैं आमतौर पर बगीचे में बैठकर चाय पीता हूँ और देर रात तक ध्यान करता हूँ

बहुत शर्माते हुए और सौम्यता से वे मुझे पूछते हैं कि क्या वे मुझे मिल सकते हैं
और बताते है कि वे चुपके से पिछले एक हफ्ते से मेरा पीछा कर रहे हैं

वे कहते है कि वे दूरस्थ लदाख और लेह से आये हैं
और जल्द ही वापिस लौट जायेंगे
पर पिछले कुछ दिन से उन्हें मेरे स्वप्न आ रहे थे
और वे मुझे अपने मठ में वापिस ले जाने के लिए यहाँ आये थे

उन्हे एक स्वप्न दिखा कि मैं उनका जाग्रत लामा हूँ
जिन की प्रतीक्षा की जा रही है
उनके पवित्र लामा काराम्पा का पुनर्जन्म

वे सब मन्त्र जपते हुए मुझे प्रणाम करने के लिए गिर गये
और साथ में यह पूछते हैं कि उन्होंने जो देखा क्या वह सच है
और क्या मैं दुनिया से छुप रहा हूँ
और कहा कि घबराओ मत
वे मेरी देख रेख करेंगे और उनके साथ चलने के लिय कहा

इतनी गम्भीरता से झुकना और प्रणाम करना
इतनी सच्चाई और विनम्रता मेरे सामने
उस वृध्द महिला की झलक मेरी आँखों के सामने आ गयी

मैं बोला सुनो
तुम ठीक हो सकते हो
पर गहरे आराम में आ जाओ
और शन्ति से चाय का एक कप पीओ

वह सब मेरे अचानक हास्य पर मुस्कराये
मैं साधारण था और मुझ से मिलना जुलना मुमकिन था
सिर्फ गहरी विश्राम की अवस्था में था

मौन में चाय पीते हुए
वह भक्त की तरह श्रध्दालु और भीतर से प्रणाम के भाव में रहे

कृपया हमें बतायें कि क्या आप हमारे साथ वापिस जाने को तैयार हैं
उत्सुकता से उन्होंने दोबारा पूछा

ठीक है... ठीक है... सिर्फ सहज हो जाओ मैं कहता हूँ
और अपने मठ के बारे में बताओ
वे बर्फ के पर्वतों में उनके मठ के बारे में गम्भीरता से मुझे बताते हैं

मैं हास्य के मिजाज में हूँ
और पहला प्रश्न पूछता हूँ
क्या आप के यहां एक आधुनिक बाथरूम और नहाने का टब है
गर्म पानी के साथ

वे कहते हैं यह नही है पर इस सब का इन्तजाम किया जा सकता है

मैं मजाक में दूसरा प्रश्न पूछता हूँ
क्या आप के पास पश्चिम शैली का शौचालय है
मेरा क्या मतलब था ऊंचे हिमालयों में... पश्चिम शैली के शौचालय से

जल्द ही उन्हे समझ आ गया कि मैं मजाक कर रहा हूँ
और उन्हें विश्राम की अवस्था में ला रहा हूँ
और उन सब ने हँसना गुरू कर दिया... हर दूसरे शब्द पर... जो कि मैं बोलता
मैं सिर्फ एक सरल आम आदमी हूँ
सिर्फ गहरे आराम की अवस्था में रहो और पूर्ण स्वीकृति में चले जाओ
शान्ति और निश्चलता का आनन्द लो
जब मेरी तैयारी होगी... मैं आऊंगा और वह मुझे दोबारा से ढूंढ लेंगे

वह घंटो मेरे साथ एकाकार में बैठे
यह सुन्दर वृध्द लामा समझदार और करूणामय थे
वे मुझे उनके अन्दर हँसने की कला का बीज डालने के लिए
धन्यवाद देते हुए चले गये
वे सब बोले कि मुझे याद करने के लिए वह ओशो को पढ़ेंगे

मैं उन्हे हर रोज याद करता हूँ
मेरे पास सिर्फ आँसू और प्रेम है इन गरीब सरल निर्दोष लामाओं के लिए

वह स्वंय को शरणार्थी कहते हैं
असलियत में यह पूरी दुनिया उनके आश्रय में है
नोहा की आर्क

तिब्बतियन जाति एक दिन इस धरती पर चमकेगी
वह इस मानवता की ज्योति और भविष्य है
काश वह सब अपना तिब्बत अपने भीतर पा ले
और मानवता को आजाद होने में मदद करें

ओम् मनी पदमे हम्
कमल के ऊपर हीरा

मैं धर्मशाला छोड़ देता हूँ
यह छोटा पर्वत टाऊन बहुत संकीर्ण है और इस में बहुत कम खुली जगह है

मैं हिमालय के 'कुल्लू मनाली' टाऊन के बारे में सुनता हूँ
यही था जहाँ ओशो दुनिया के सामने आने से पहले ६ महीने के लिए रहे
और उन्होनें अपना 'नया संन्यास' शुरू किया

देवताओं की घाटी कुल्लू मनाली पर्वतीय है
पर फिर भी यहाँ हल्के हल्के उतराई चढ़ाई वाले लम्बे रास्ते हैं
यहाँ काफी महान ऋषि मनीषियों ने सालों साला ध्यान किया है

एक आदर्श हिमालय टाऊन
यहाँ सस्ते गेस्ट हाऊस और छोटे होटल चारों ओर फैले हुए हैं
मैं मनाली में पहुंचता हूँ और चीड़ के जंगल में एक सुन्दर गेस्ट हाऊस ढँढता हूँ

सर्दी पास आ रही हैं और बर्फ गिरनी शुरू होने वाली है
बर्फ से ढकी रोहतांग घाटी का अद्भुत नजारा कुछ दूरी पर है

तेजी से बहती बीआस नदी की आवाज आ रही है
देवदार और चीड़ के लम्बे पेड़ बड़े विशाल क्षेत्र में फैले हुए हैं
नदी के पास हवा निर्मल और स्वच्छ है
चीड़ के पेड़ों के जंगल में भ्रमण के लिए अति सुन्दर घुमावदार रास्ते बने हैं

मुझे मनाली से प्रेम हो गया है
देवताओं की घाटी... यही मेरा एकान्तवास और निवास होगा
मैं देख सकता हूँ क्यों ओशो ने १९७० में यहाँ से संन्यास देना शुरू किया

पिछले छह सालों से काम ना करने के कारण मेरे पैसे खत्म हो गये हैं
और मेरी आँटी और बहन की थोड़ी मदद भी खत्म हो चुकी है

फिनलैंड मे मेरा एक ताई ची का विद्यार्थी हारबेस्ट नायकिस्ट
मेरे पैसों की दिक्कतों के बारे में सुनता है
और मुझे आश्चर्यचकित कर देता हैं अपने पत्र के साथ
जिसमें वह कहता है कि मैं चिन्ता न करू और अपने ध्यान के मार्ग पर बढ़ता रहूँ
और अपनी तनख्वाह से ५०० डॉलर का एक ड्राफ्ट भेजता है

यह आदमी पहला है जिसने मेरे मार्ग पर मुझे पैसों की मदद की
और अगले चार महीनों तक अपने प्यार और प्रोत्साहन के साथ मुझे पैसे भेजता रहा
मैं उसका अनन्त धन्यवादी हूँ

अगले दो महीने मैंने नदी के किनारे बैठना शुरू किया
और बहते पानी की आवाज में डूबता गया

दिन के समय में आसमान साफ रहता और पर्वतों से सीधा सूरज निकलता
चीड़ के जंगल में मैं लम्बी सैर करता और सब श्वास से भीतर ले लेता
मेरे शरीर को उसकी खोयी हुई जीवनशक्ति दोबारा से मिलने लगी
और मेरा स्वास्थ्य सुधरने लगा

मैं सर्दी की ठंड में देर रात तक बाहर ही रहता
और चीड़ के जंगलों के पास खुले में लकड़ियों की आग जलाता
और सुबह के ३ बजे तक वही रहता

बर्फ का ठण्डा पानी मेरी क्षतिग्रस्त ईडा के लिए आदर्श है
श्वास से संघर्ष... शरीर को मजबूत करते जाना... मेरे भीतर की तरंगधारा
खुलती जा रही थी

यह मेरे जीवन के सबसे अधिक पुनयौवन के दिन थे

इधर उधर भागना नही किसी तलाश में
खोज समाप्त हो चुकी थी
सिर्फ अपने शरीर को गहरा आराम देना
पूर्ण विश्राम की अवस्था में शरीर को अपनी स्वंय की लय पकड़ने देना

जागने पर जागना और नींद आने पर सोना
भूख लगने पर भोजन करना
चलते समय सिर्फ चलना
बैठना तो सिर्फ बैठना

ताऊ का मार्ग
ज़ेन में जीना

सिर्फ समग्रता से जीना और बस इसी क्षण में होना
धन्यवाद मेरे प्रियतम मित्र हर्बट इन बेशकीमती दिनों के लिए

मैं हर दोपहर को चाय पीने के लिए बगीचे में बैठता था
जल्द ही मेरे मित्रता सबसे सुन्दर परी मिशल से होने वाली थी
वह एक हिप्पी थी और पीठ पर बैग बाँधकर मनाली का भ्रमण कर रही थी

उसने शाम को मेरे साथ बैठना शुरू कर दिया
और जल्द ही अगले कुछ महीनों के लिए हम साथ रहने लगे

उसकी पूर्ण निर्दोषता और तरोताजा करने वाला हास्य और ह्दय
को छूनी वाली उपस्थिति
मेरी नयी स्वतन्त्रता का हिस्सा बन गयी

मैं पूना आश्रम के हमलों और आलोचनाओं से दूर था

मैंने इन निर्दोष साहसी पीठ पर बैग बाँधकर यात्रा करने वाली लोगों को देखना
शुरू कर दिया जो भारत में अपनी हिप्पी यात्रा पर आते थे
सचमुच में यह लोग आध्यात्मिक थे... उनकी आँखें खुली और नवीन थी
उनका दिल खुला था और वह दूसरों की मदद करने वाले लोग थे
वह सिर्फ घूमने वाले सत्य के जिज्ञासु हैं

मेरा ह्दय दोबारा से विस्फोटित हो रहा था
मेरे दिन और रात भावसमाधि में गुजर रहे थे
मेरी भीतर की दुनिया दोबारा से प्रकाश में विस्फोटित होने लगी
प्रकाश का एकाकार अनुभव और कई सारी सतोरी की झलकियाँ

चैतन्य का हीरा मेरे शरीर में बसता जा रहा था
चैतन्य का हीरा जो ओशो ने मुझे रहस्यमय ढंग से सौंपा
वह अब हर दिन स्पष्ट होता जा रहा था
मैंने अपनी नयी दुनिया में अधिक परिपक्वता से प्रवेश करना शुरू कर दिया था
विस्तृत रूप से और अधिक फैलाव में... मेरे भीतर गहरे में सब ठहरता जा रहा था

मैंने अब सब रहस्य रखा यह जानते हुए कि लोग समझ नही पायेंगे
और वैसे भी यह सरल लोग थे
और इनका ओशो और उनके कार्य से कोई सम्बन्ध नही था

सिर्फ मेरे ध्यान की दशा में जीने के धीमे ढंग को देखकर
सैकड़ों लोगो को महसूस हुआ और उन्होंने कहा कि मेरे में कुछ अनूठा है

अगले छह महीने जल्दी जल्दी बीत जाते हैं
मिशल का वीसा जल्द ही खत्म हो जायेगा

पैसा हमेशा नही रहेगा
मुझे एक असली नौकरी की जरूरत होगी और कुछ पैसा कमाना होगा
मनाली में दोबारा वापिस आकर रहने के लिए और अपनी यात्रा को
पूरा करने के लिए

रंक से राजा और राजा से रंक

बहुत हिचकिचाते हुए मैं अपनी बहन शोना को हाँगकाँग में फोन करता हूँ
वह मेरी वापिसी का स्वागत करती है
पाँच साल हो चुके है जब मैं अपने हाँगकाँग में काम करने का परमिट
बिना प्रयोग किए छोड़ कर आ गया था

मैं हाँगकाँग लौटता हूँ और अभी भी धीमे चलता हूँ और धीमे धीमे क्रियाँए करता हूँ
अब और अधिक निश्चल होने और अधिक गहराई में जाने से
पागल दौड़ और ज्यादा तेज और अस्त व्यस्त लगती

विचित्रता से इस बार मुझे इस अव्यवस्था में सन्तुलन और समन्वय लगा
विषमता साफ है
चीजें धीमी क्रियाँओं में आसानी से साफ साफ दिखती

अब मुझे गति का महत्व
समझ आने लगा... उसके लिए जो कि निश्चल है

हर कोई उन्मुक्त बहती हुईं ऊर्जा के अपार घेरे को पैदा कर रहा है
और इस ऊर्जा को हवा में बिखेर रहा है

साधक को बस बवण्डर का केन्द्र बनना होता है
और केन्द्र हर चीज को अपनी तरफ खींच लेता है और उसे रूपांतरित कर देता है

एक नयी और अपार अनुभूति मेरे सामने खड़ी है

कुछ महीनों के बाद दुनिया में वापिस जाने पर ओशो का बल देना
इस विषमता को अनुभव करने के लिए है

मुझे बोध हुआ कि दुनिया अब मेरी भीतर प्रवेश नही कर सकती
दुनिया में जियो पर इसका हिस्सा मत बनो
कमल के पत्ते पर एक ओस की बूँद की तरह

उर्जा का अत्यावश्यक सन्तुलन... शिव और शक्ति
करना और ना करना
बिना कुछ किये कुछ करने का एकाकार अनुभव करना
जिसे महानतम गुरू लाऊत्सु ने वऊवी कहा है

मैं अपने को गहराई में निश्चल कर इस भागती दुनिया को अन्दर सोख लेता हूँ
बवण्डर का केन्द्र
यह मेरे सीधे खड़े केन्द्र की परीक्षा लेता है

मेरी बहन शोना और उसके पति रमेश को
मेरे अचानक और अकारण अव्यवस्थित व्यवहार का अनुभव था
वे मुझे हाँगकाँग में अपनी कम्पनी में नही रखना चाहते थे
और सलाह देते है कि मैं उनके बड़े भाई प्रकाश के लिए काम करूं
मुझे लॉस एजेंल्स में काम के लिए भेजा जाता है
उनके अमेरीका में घड़ियों के वितरण के लिए

१ अप्रैल मूर्ख दिवस १९९२... मैं लॉस एजेंल्स पहुँचता हूँ

मैं इस मजाकिया स्थिति पर हँसता हूँ
यहाँ पहुँचने का यह मुझे आदर्श दिन लगता है
क्या मैं एक मूर्ख हूँ या यह दुनिया बस अत्यधिक मूर्ख है
कि मुझे सिर्फ ४०० डॉलर महीने की तनख्वाह पर नौकरी दी गई है

मुझे मालूम है मै जो भी करूँगा उस में मैं उत्कृष्ठ रहूँगा
सिर्फ एक मौका मिलना चाहिए और मैं खुद को साबित कर दूगा
और जल्दी पैसा कमाकर अपनी यात्रा जारी रखने के लिए मनाली लौटूंगा
मैं ५०,००० डॉलर कमा कर वापिस लौटने का लक्ष्य बनाता हूँ

सपने देखते मर जाऊ पर सपने देखते रहो
स्वप्नदर्शीयों कभी अपने सपनों को मत छोड़ो

मैं 'करोना डल मेर' में उनके बड़े महल में नही रहना चाहता
यहाँ सुरक्षा के द्वारों के साथ स्वीमिंग पूल और दो ५०० मीली लीटर वाली
मर्सडीज बैन्ज कारें हैं और आस पास भव्य महल है

मेरे पास सिर्फ अपना कूंगफू का ट्रैकसूट है और दूसरे कोई कपड़े नही है
मुझे इस अमीर आस पड़ोस और पैसों का प्रदर्शन करने वाले
लोगों में बहुत अजीब लगता है

अपने स्वंय की जगह पर रहने के लिए मेरी तनख्वाह बढ़ाकर
७०० डॉलर कर दी जाती है
मैं कलाकारों और आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के एक छोटे समूह को ढूँढता हूँ
जो वैनिस समुद्र तट पर रहते हैं
कुछ लोग ओशो से परिचित हैं पर ज्यादातर हिप्पी और आवारा है
१८ लोगों का पूर्णत: शान्त और उदार समूह कम्युनिटी घर में रहता है

उनके पाँच कमरे भरे हुए थे
इसलिए १० डॉलर रात के हिसाब से मुझे उनके परवर्तित गैराज में
एक गद्दा मिला
और इस गैराज में छह दूसरे लोग भी रहते हैं

मैं दफतर को खोलने और बंद करने वाली अपनी मूर्ख नौकरी को शुरू करता हूँ
वैनिस समुद्र तट से बस में दो घण्टा लॉस एजेंल्स के कैलिफोर्निया मार्ट जाने में
और दो घण्टे वापिसी आने में
सार्वजनिक बस में लम्बी सफर करना
सुबह जाते समय मेरे लिए ठीक था
पर शराबी और आवारा हर रोज रात को लौटते समय
बस में झगड़ा करते और मेरे समीप आते

मेरी नौकरी बेमतलब और बेतुकी थी
इसलिए जल्द ही मैंने डिजाईन बनाना शुरू कर दिया और घड़ियों के डिजाईन

के प्रति मेरी कल्पना के बारें में बातचीत करना शुरू कर दिया
प्रकाश और उनकी पत्नी लोरडस बहुत बुध्दिमान उद्योगपति हैं और नये प्रतिभाशाली विचारों को बढ़ावा देते हैं
मेरे डिजाईन के विचारों ने उन्हे आश्चर्यचकित किया और वह तुरन्त इन डिजाईनों की कीमत और बाजार में माँग को समझ गये

अगले कुछ महीनों में ही दुनिया के सबसे बड़े घड़ियों के मेले में
हाँगकाँग वाच और क्लाक मेले में
यह दूसरा महीना है मैं उनकी कंपनी के लिए घड़ियों की डिजाईन बना रहा हूँ
मेरी तनख्वाह दोबारा से बढ़ाकर १२०० डॉलर्स कर दी गई है

मूलत: नयी और पूर्णत: अनोखी घड़ियों का संग्रह
सितम्बर मेले में स्टैंण्ड पर पहंचुता है और मैं उनके लिए ऑडर लेता हूँ

मेरी मूल डिजाईनों के लिए खबर गर्म थी और लगभग ३,००,००० डॉलर की बिक्री हुई और कम्पनी को ५० प्रतिशत मुनाफा हुआ
और मुझे मेरे डिजाईनों के लिए ३ प्रतिशत शुल्क मिला
एक हफ्ते में ही मैंने ९००० डॉलर कमा लिए थे
अब सिर्फ घड़ियों का उत्पादन करना और उन्हें भेज देना

लॉस एजेंल्स में वापस जाने पर मेरी नयी शुरूआत हुई
घड़ियों के डिजाईन बनाने वाले एक कलाकार के रूप में
मेरी सफलता से मुझे मूलत: डिजाईन बनाने के लिए और अधिक काम मिला और एक आजादी मिली
नए डिजाईनों की रचना करने में और हाँगकाँग आने जाने में

मुझे अब सार्वजनिक बस में यात्रा करने की जरूरत नही है
और मैं मासिक किस्तों पर परवर्तित टोयॉटा सीलका कार खरीद लेता हूँ

धन्यवाद ओशो... यह सब आप का है

ऊपर से खुली परवर्तित कार में मुझे लॉस एजेंल्स में स्वंतत्रता महसूस हुई
जहाँ कार रेगिस्तान में एक ऊँट की तरह है
मैं अमेरीका के विशाल खुली सड़कों में गाडी चलाना सीखता हूँ
और अपनी रास्तों की समझ को बढ़ाता हूँ

मेरी तनख्वाह बढ़कर १७,०० हो जाती है और ३ प्रतिशत डिजाइनों और बिक्री के लिए दुनियाभर में मेरी डिजाईनों और घड़ियों के प्रदर्शन करने के लिए मुझे अब पूरी दुनिया की सैर पर भेजा जाता हैं

प्रकाश और लोरडस ने पूरी दुनिया घूमी है... उन्होनें घड़ियों के उद्योग के लिए
इतनी जल्दी जल्दी यात्रा की है कि वह १०,००,००० मील
हवा से यात्रा कर चुके हैं
और यात्रा और बिक्री से थक चुके हैं उन्होनें अब मुझे
उनकी जगह जाने के लिए कहा

अब मुझे साल में तीन बार पूरी दुनिया के लिए हवाई यात्रा करनी होगी
और साथ में दो छोटी यात्रांए करनी होगी
घड़ियों के बड़े मेलो में... हाँगकाँग और स्विटजरलैंड में

डिजाईन यात्रा और बिक्री... डिजाईन यात्रा और बिक्री
डिजाईन यात्रा और बिक्री
यह सब उनके ब्रिकी के समय उत्पादन और चारों तरफ माल
भेजने से जुड़ा हुआ था

दो साल मैंने शीघ्रता से पूरी दुनिया की विस्तार से यात्रा की
पूरा दक्षिण अमेरीका सदूर पूर्व मध्य पूर्व सभी यूरोपियन देश
अमेरीका और सभी सम्भव देशों में...
जहाँ जहाँ पर आयात और वितरण करने वाले से सम्बन्ध बन सकते थे
वह मेरा बढ़िया ५ सितारा होटल में ठहरने का प्रबन्ध करते और साथ में रोज का ५०० डॉलर का व्यापारिक खर्चा देते

मेरी पहले की फैशन और डिजाईन की दुनिया में दिलचस्पी उभर आयी
मैंने यात्रा करते समय फैशन और डिजाईन पर सैंकड़ों किताबें पढ़ी
मैं जीन पोल गोलटीयर, वायस सैन्ट लौरेन्ट, कार्ल लागरफील्ड कैलविन कलैन,
डोना करन, अरमानी, जियन फ्रैंको फैरी, मिशोनी, क्रिजिया, डोयर, गियानी
वारस्क, ईस्सी मियाकी, कैजों से प्रभावित था

दो साल दुनिया के चारों ओर घूमा

अभी भी मैं आहिस्ता आहिस्ता और सौम्यता से चलता

मुझे मुनीच एअरपोर्ट के मध्य में
प्लेन की तरफ धीमे धीमे जाते हुए देखा गया
एक बिअर पी रहे संन्यासी के द्वारा
हे रजनीश क्या यह तुम हो... तुम अभी भी आहिस्ता चलते हो
मैन्हटन की एक ईमारत में... एक और संन्यासी चिल्लाता है
हे रजनीश... क्या सचमुच तुम अभी भी आहिस्ता आहिस्ता चलते हो
लन्दन में कामडन टाउन... हे मैं विश्वास नही कर सकता
रजनीश अभी भी धीमे चलता है बैसल स्विटजरलैंड बाबाल्बार में
वाह... यह व्यक्ति सनकी है अभी भी धीमे चल रहा है
उन्हे अभी भी मेरे धीमी चाल याद है
वे मुझे शीनजकू टोकियो के मध्य में भी देख लेते हैं

सिर्फ विषमता और मेरी धीमेपन का धक्का
वे इस अन्तर को तुरन्त ही भीड़ में से पहचान लेते

इस दो साल की यात्रा में मैं साधारण होना सीख रहा हूँ और मैं बस स्वंय हूँ
संसार एक महान अध्यापक है अगर आप बोधपूर्वक और होशपूर्वक चल सको

यह धरती एक कमल स्वर्ग है अगर किसी के पास आँखे है गहराई में देखने के लिए
और जीवन को इसकी पूर्णता में जीने और इसके महत्व के समझने के लिए

हम कितने विस्फोटक और रचनात्मक समय में जी रहे हं
आज कितनी स्वतंत्रता है अभिव्यक्ति के लिए
कितनी स्वतंत्रता है बाहर की दुनिया का अनुभव करने के लिए
और उसके सभी सुखों का आनंद लेने के लिए

अपनी मर्जी से यात्रा कर सकना
और दूसरी संस्कृतियो और जीने के ढंगो का अनुभव कर पाना
धरती का हर हिस्सा इतने अलग और रंगारंग ढंगों से विकसित हुआ है
हर किसी की अपनी विशिष्ठता और अपना अर्थ
हर कोई कोशिश कर रहा है और पूर्णता की तरफ बढ़ रहा है

पार्क में वृध्द आदमी धीरे से भागता हुआ... सड़क पर एक भिखारी
औरत अपने प्यारे के लिए सिलाई करती हुई... माँ अपने बच्चे के साथ
बच्चे इम्तिहान के लिए पढ़ते हुए... कलाकार अपने चित्र में लीन
नृतक नाचता हुआ... वेटर पेयजल देता हुआ

विमान के कर्मचारी अपने यात्रियों को आराम पहुँचाते हुए
पायलट अपने विमान में
न्युयार्क में टैक्सी आपको घर पर छोड़ती हुई... दुकानदार अपने रोजमर्रा के काम में
किशोर रात को पार्टी करते हुए... रेल्वे स्टेशन में संगीतज्ञ
माता पिता परिवार को सुधारने के लिए अपनी नौकरी में उत्कृष्ठ काम करते हुए

हर एक आत्मा अपने को बेहतर करने की खोज में है... ऊँचा और ऊँचा जाने की कोशिश में इस पूरी सृष्टि का नृत्य... एक आध्यात्मिक नृत्य है अनन्त में

यह अपनी आकाशगंगा का सबसे सुन्दर ग्रह है
यह अपार मंदाकिनी... अनन्त आकाशगंगाए
अपनी धरती मानवता से जीवित है
और सितारों की तरफ बढ़ रही है

मैंने इस अपार मानवता को एक नयी दृष्टि से देखना शुरू कर दिया है
यह धरती सत्य को जानने के इच्छुकों से भरी हुई है... मेरे लिए सब जिज्ञासु है
और अपने साधारण जीवन में अपना बेहतरीन योगदान दे रहे है
हर पास से गुजरती आँखों में मैं सच्चाई देखता हूँ... हर कोई और अधिक पाने के काबिल है बहुत बहुत ज्यादा... बहुत बहुत ज्यादा

सत्य
हर किसी के ह्दय में... हर एक मौन श्वास में
शान्ति से प्रतीक्षा कर रहा है

होशपूर्वक होने के बारे होश में होना
सिर्फ चेतना ही तुम्हे वहाँ ले जा सकती है
स्वंय के सत्य की ओर
अनश्वर भीतर आत्मा की ओर

दो साल लॉस एजेंल्स कंपनी में काम करने के बाद
मुझे उनके चचेरे भाई दिनेश जिनकी हाँगकाँग में बड़ी घड़ियों की कंपनी है
३००० डॉलर की तनख्वाह पर नौकरी देते हैं
और मुनाफे में हिस्से के साथ या दस प्रतिशत शुल्क मेरी डिजाईनों की ब्रिकी पर
मेरा अधिकार हर पैटेंट और डिजाईन के पंजीकरण पर होगा

मुझे अमेरीका में हमेशा पराया लगा... एशियन संस्कृति और जीने के ढंग से
निकट होने के कारण यह प्रस्ताव मुझे मेरे भारत और मनाली लौटने
के नजदीक लाता है
मैं सिर्फ पर्याप्त पैसा जोड़ने के लिए काम कर रहा था ताकि ध्यान
के लिए लौट पाऊँ
मैंने अपनी हाँगकाँग कंपनी को स्पष्ट बताया कि मैं सिर्फ एक साल
के लिए काम करूँगा

पहला डिजाईन ही जिसकी मैंने रचना की और जिसका मैंने
पूरी दुनिया में पैटेंट लिया
वह बेहद प्रसिध्द हुआ और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर जाना गया
वह इलेक्ट्रीक गिटार की शक्ल में था
यह घड़ी पूरी दुनिया में बहुत सफल हुई
पूरी ब्रिकी १०,००,००० डॉलर की हुई

पूरी संगीत की दुनिया में बिक्री बढती गई और नये रास्ते खुलते गये
राक् सितारों के प्रशंसक क्लब... एलविस प्रिसले, ग्रैसलैन्ड, डोली पार्टन, डिजनी
लैन्ड, बीटल्स, रौलिंग स्टोनस, बी.म.जी. म्यूजिक और म. टी. वी. की किशोरों
की दुनिया ने इसे खरीदा

इस तेजी से बिकते डिजाईन की रचना के बाद् संगीतज्ञ डिजाईनों
की नयी कड़ी आयी
और एक दूसरी बहुत बिकने वाली मोटरबाईक घड़ियों की श्रृंखला निकली

घड़ियों की दुनिया में चारों ओर खबरे फैल गयी और दुनिया भर में
सैंकड़ों लेख लिखे गए
और एक बड़ा अन्तराष्ट्रिय बिक्री आन्दोलन मेरे वितरकों
और आयातकों ने चलाया
और मैं पूरी दुनिया में दो बार घूमा... इन डिजाईनो को प्रदर्शित करने के लिए

जैसे कि मैंने वायदा किया था कि मैं एक साल काम करूँगा
और मैंने ठीक नवम्बर में सेवानिवृति ले ली
मैंने स्वंय से वायदा किया था कि मैं १९ जनवरी १९९५ से पहले
मनाली वापिस आऊँगा

मैं अपनी कीमती समय सिर्फ पैसा कमाने के लिए बर्बाद नही कर सकता
यह कारण नही था मेरे जीने का

मेरा हाँगकाँग परिवार दोबारा से आश्चर्यचकित हुआ
उन्होंने कल्पना की थी कि मैं रूकूँगा और अधिक पैसा कमाने के लिए अपनी
खुद की कंपनी बनाऊंगा... मैं अब एक प्रसिध्द डिजाईन निर्माता था
मैंने इस साल लगभग ३००,००० डॉलर कमाये थे और अभी खबरों में होने के
कारण इस मौके का फायदा उठा कर और अधिक पैसा कमा सकता था

एक प्रसिध्द कहावत है
मूर्ख और उसका पैसा जल्दी अलग हो जाते हैं

भारतीय नियन्त्रण विदेशी मुद्रा पर अभी भी लागू था
मैंने अपना कुछ पैसा अपने चचेरे भाई को भेज दिया
इस भेजे गए पैसे के बदले भारतीय मुद्रा में पैसे लेने के लिए
और कुछ का मैंने निवेष कर दिया
और मैंने अपनी भारतीय कम्पनी में किये एक निवेष को बेच दिया
और उसके बदले मुझे चैक के रूप में पैसे मिले

दोबारा से... एक मूर्ख और उसका पैसा जल्दी अलग हो जाते हैं

इन्सान जिसने मेरी भारतीय कंपनी ली थी
उसने जान बूझकर मुझे गलत चैक दिये
जो कि उसी दिन अस्वीकृत हो गये
जिस दिन मैं जनवरी १९९५ में मौन में चला गया

मैंने चचेरे भाई ने मेरी भेजे हुए पैसों को देने से मना कर दिया
जिससे मेरे दूसरे निवेषों पर बहुत बुरा असर पड़ा
सिर्फ एक महीने के अन्दर ही मेरी तीन बड़ी रकमें लूट गई

४०,००० डॉलर के गलत चैक
३५,००० डॉलर भेजी गये पैसों में गवाँया
और ४५,००० डॉलर निवेष में गवाँया

मेरे वापिस आते समय मेरी हाँगकाँग कंपनी ने मुझे ३ गुना
तनख्वाह का प्रस्ताव दिया
और एक सांझेदारी जो मुझे एक साल में ७००,००० डॉलर की कमाई देगी
मेरी बहन मुझे दोबारा वापिस आने के लिए बुलाती है
और इस प्रस्ताव को नही खोने के लिए कहती है

४०० डॉलर से शुरू करते हुए ३,००,००० डॉलर कमाना
और सब खो देना
एक चौराहे पर खड़ा हूँ... एक मिलीयन कमाऊँ
या खाली हाथ आगे बढ़ूँ

अब मैं वापिस नही देख सकता था
और ना ही मेरे पास बर्बाद करने के लिए अधिक समय था
मेरे पास जो भी बचा था
उसे लेकर मैं अगले ४ से ५ साल बिताऊँगा

परिवर्तनशील चांद

जैसे कि भाग्य को विचित्र होना था
मैंने अपना सारा पैसा दिल्ली में खो दिया... पर इन देरी के दिनों में
मैं अपनी तिब्बतियन दाकिनी येंगचेन से मिला
उसने मनाली आ कर मेरे साथ एकान्त में रहने का फैसला किया

हिमालय में रह कर मुझे जीने का वह ढंग मिलता है
जिससे मुझे प्रेम है और मुझे बेहद आराम मिलता है
अपने बालों को अपनी कमर तक लम्बा बढ़ने देना... दाढ़ी को बढ़ने देना
एक सरल लुंगी पहनना और अपनी कमर के चारों ओर एक कपड़ा लपेटना
खुली छाती रखना और यात्रा के दौरान सिर्फ एक शाल ओढना

श्रेष्ठ जीवन एक योगी का... जो बर्फ से ढके हिमालय में ध्यान कर रहा है
यहाँ सरल लुंगी ओढना आम पहनावे का ढंग है

मैं स्वंय को मौन में डूबोने के लिए मनाली लौटता हूँ
वापिस अपनी भीतर की यात्रा पर हूँ

मैं अपनी टोयट्ा सीलकॉ कार जो भारत में जहाज से लायी गयी थी
उसे खुद चलाकर सुबह के दो बजे मनाली पहुँचता हूँ
और सीधा वाशिष्ठ और अम्बैस्डर होटल की तरफ जाता हूँ
चाँद की मन्द मन्द रोशनी में
मैं ऊपर जाते रास्ते में एक सफेद कॉटेज को देखता हूँ

यह मुझे अच्छी लगती है और पास से गुजरने पर मैं बोर्ड को पढता़ हूँ
'सफेद बादल कॉटेज'
आगे ड्राइव करने पर मैं एक सुन्दर तिबतयन गोमपा को देखता हूँ
और साथ में बाज जैसी विस्तृत आँखों से पास बहती बीआस
नदी की घाटी को देखता हूँ

उस क्षण में... मैं जानता हूँ कि यह संकेत है
मुझे यह जगह लेनी चाहिए और एकांत में रहना चाहिए

अगले दिन मैं कॉटेज में पहुँचता हूँ और तिब्बतियन गोमपा के
मालिक को मिलता हूँ
यह कॉटेज पर्यटकों को दिन के हिसाब से किराये पर दी जाती है... हम एक
साल का किराया तय करते हैं और मैं साल का किराया देकर यह जगह ले लेता हूँ

दिसम्बर के पहले हफ्ते में बर्फ पड़ती है
ओशो का जन्म दिन आता है शुध्द श्वेत बर्फ में

पूर्ण मौन मनाली की घाटी में फैला है

सब कुछ शुध्द सफेद है
शान्त और अचल

कमरों को तन्दूर में लकड़ी जला कर गर्म किया जाता है
हम आनी वाली सर्दी में एकान्त के लिए तैयार है
भीतर की छलांग शुरू होती है

मुझे एक साल के लिए मौन में जाना था

जिस व्यक्ति ने मेरी कंपनी खरीदी थी
वह यह जानता था कि मैं मौन में जाऊँगा
और पहला चैक ठीक जनवरी में ही अस्वीकृत हो गया

मैं सिर्फ एक संन्यासी था जो मौन में जा रहा था
मेरे पास समय कहाँ था... मनाली की पहाड़ियो में
भारतीय अदालतों में लड़ने का

मैंने एक वकील किया इस मामले को देखने के लिए और परक्राम्य लिखित
धारा के अन्तग्रत आरोप दाखिल करने के लिए...
यह सोचकर कि वह इस मामले का ध्यान रखेगा
और मैं अपने भीतर की यात्रा जारी रख पाऊंगा

पर मुझे वकीलों और अदालतों ने तंग किया बार बार आने के लिए
और अदालतों में दोबारा दोबारा उपस्थित होने के लिए

भारतीय अदालतें और कानूनिक बचाव के रास्ते
साथ में अनिश्चित काल की सुनवाई की तारीखें
न्यायिक विलम्ब और निहित भ्रष्टाचार
जहाँ अपराधी बच जाते हैं और इन्साफ माँगने वाला अपराधी बन जाता है
इस भ्रष्ट व्यवस्था में इन्साफ माँगना ही एक अपराध है
यह एक पूरी अलग कहानी है... इस किताब के लायक नहीं

मैं अनुभवों से सीखता हूँ और ज्यादा चकित नही हुआ
अब तक मैं काफी कुछ देख कर जान चुका हूँ कि यह दुनिया किधर जा रही है
संसारिक दुनिया... आध्यात्मिक दुनिया... सब उल्टा पुल्टा

मुझे अपने जीवन के बेशकीमती पलों को बचाना है और भीतर गहरे में जाना है
इस भीतर की यात्रा में समग्रता और तुरन्त ही जाने की जरूरत है
भीतर की यात्रा शुरू होती है

मैं अगले दो साल अपनी यात्रा में गहरा जाने में बिताता हूँ
हर बार जब मैं एक क्षितिज पर पहुँचता हूँ
तो वह क्षितिज पीछे हट कर एक दूसरा क्षितिज हो जाता है

यात्रा लक्ष्य बन जाती है... कोई लक्ष्य नहीं है
सिर्फ यात्रा ही है... एक एक कदम

हर एक ब्रह्माण्ड दूसरे ब्रह्माण्ड की ओर ले जाता है
ज्ञान और नये विवक के एक दूसरे ब्रह्माण्ड की ओर
जैसे प्याज की परतों को छिलना हो... एक एक कर के

मेरा ध्यान मेरी सुन्दर तिब्बतियन डाकनी येंगचेन रख रही है
वह शान्त है और स्वभाव से ठहरी हुई है
और अपनी छोटी सरल दिनचर्या से घर में पूर्णत सन्तुष्ट है

उसे नही मालूम मेरे साथ क्या घट रहा है
मैंने उसे मुक्त छोड़ दिया है और किसी प्रकार से उस पर प्रभाव नही डालना चाहता
वह उसे एक नया मानसिक ढाँचा देना होगा और जबरदस्ती उसका आध्यात्मिक
विकास करना होगा

मेरे साथ रहते हुए ही वह अपनी खुद की रफतार मे बेहद रूपांतरित हो गयी थी
बिना किसी कारण के उसने माँस खाना बन्द कर दिया था
लोगों से मिलना नही चाहती थी और स्वंय में मौन रहती थी
कुछ ना करते हुए भी सहज रूप से पूर्णतः सन्तुष्ठ थी
मेरे से किसी बात के लिए कोई फरमाईश नही करती थी
वह परिपूर्ण थी और अपने स्वभाव में दमक रही थी

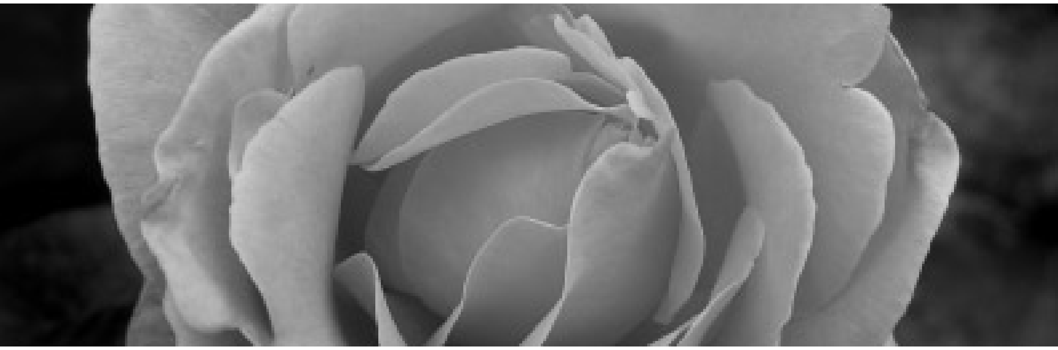

इसके लिए अनन्त धैर्य चाहिए
पर एक बार जब कोई प्रकाश को देख लेता है तो देरी के यह साल बहुत
कीमती हो जाते है... विस्फोट जो कि नीचे उतरते हैं... वह बड़े महत्व के होते हैं
शरीर को रूपांतरित होने में और इन गहरी परतों के लिए तैयारी करने में
समय की आवश्यकता होती है

दूसरी तरफ व्यक्ति सुस्त और हर दिन से पूर्णतः सन्तुष्ठ हो जाता है
हर दिन... जो किसी तरह भी बीत जाता है... कोई जल्दी नही
कही भागना नही... कोई खोज नही और अधिक पाने की कोई चाह नही

यात्रा दिशा और आयाम के हिसाब से बदल गई है
सीधी खड़ी दिशा में ऊपर जाने की बजाय अब सीधी
समतल दिशा में फैलती जा रही है
तना चौड़ा और चौड़ा होता जा रहा है
जड़े गहरी और गहरी होती जा रही है
बेल बूटें पत्ते चारों ओर फैलते जा रहे हैं

सत्य को बाहर खोजने की बजाय
अब पूर्ण स्वीकृति में सब होने देना और भीतर गहरे विश्राम में चले जाना

इस तरह सिर्फ थोड़े से बदलाव के साथ सालों गुजर सकते हैं
और व्यक्ति सिर्फ साधारण होता जाता है

और तब अचानक एक दिन भीतर प्रकाश का उद्‌गम होता है
जब इसकी जरा भी उम्मीद नही होती

जुलाई में मानसून का आना
हवा अब इन पर्वतीय फेफड़ों में श्वासों को लम्बा कर रही है
हरा और अधिक हरा होता जा रहा है

यह १९९७ है और अचानक ना जाने कहाँ से
बिनी किसी चेतावनी के कुण्डलिनी दोबारा से उठनी शुरू हो जाती है
पर सन्तुलित निश्चलता और बड़ी ऊर्जा के एकत्रित होने से
दिन और रात एक हो गये हैं

दोबारा से मैं आसमान में पहुँच गया हूँ
वातावरण से बहुत ऊपर
बादलों में और गिरती बरसात में मंडराता हुआ

रहस्यमय ब्रह्माण्ड दोबारा से अपने रहस्यों की बरसात कर रहा है
मैं बहुत मजबूत और निश्चल हूँ और शान्ति से देख रहा हूँ
अगले कुछ महीने को और उसके रहस्योद्‌घाटनों को

वही खिड़कियाँ खुलती है... उसी आनंद का विस्फोट होता है
पर निश्चलता में और एक गहरी शान्ति के साथ

मैं अपनी कॉटेज से दूर होने के लिए जंगल में गेस्ट हाऊस में चला जाता हूँ
और एक नये और अपरिचित आस पड़ोस को पाता हूँ
मेरी आत्मा में इस बदलाव से नये प्राणों का संचार होता है

एक छोटा जंगल गेस्ट हाऊस
कमरे से कुछ मीटर दूर एक नदी शीघ्रता से बह रही है
मूसलाधार बरसात में वह लबालब भर जाती है

शीघ्रता से बहती नदी की आवाज का पूरे आकाश में गूजँना
नदी का जाप करना ओम् ओम् ओम् ओम्

ओम्... ओम्... ओम्... ओम्... आनंद का हवा में विस्फोटित होना

विस्फोट घटता है
यह मेरा तीसरा विस्फोट है

येंगचेन को अन्दर से बोध है कि मेरे साथ कुछ घट रहा है
औरतों को अन्तर्बोध होता है और वह कम बोलती है
वह इन दिनों के लिए मेरी आदर्श साथी होने वाली है

सिर्फ उपस्थित होना मेरा ख्याल रखने के लिए
निशब्द... सिर्फ सजग और मौन

यह तिब्बतियन मार्ग है... कम बोलना और शान्ति से देखते रहना

येंगचेन धन्यवाद इन सब दिनों में जो तुम ने मेरा ख्याल रखा

मेरा जीवन पूर्णत: सौभाग्यशाली है
और वह हमेशा मेरे लिए एक वरदान रही
मेरे पास हमेशा सबसे बढ़िया लोग रहे... जब भी मुझे उनकी बहुत जरूरत पड़ी

कुण्डलिनी की विपरीत दिशा में बहती हुई दो कुण्डलित ऊर्जाएं होती है
ईडा स्त्रीत्व ऊर्जा
पिंगला पुरूष ऊर्जा
दोनो ऊर्जाएं केन्द्र में सुषमा पर मिलती है
जो कि सीधी खड़ी दिशा में शक्तिशाली विद्युतीय नीली रेखा है

जितना ज्यादा विरोध ईडा और पिंगला में होता है
उतना ही उन में आकर्षण और केन्द्र में सुषमा के प्रति खिंचाव रहता है

विपरीत का सन्तुलन
विपरीत ध्रुव्र की नकारात्मक और सकारात्मक ऊर्जाएं
सुषमा प्राणधारा की पूरक ऊर्जाएं

इनके सन्तुलन में ही चाबी रहती है
ईडा और पिगला में सन्तुलन
शिव और शक्ति में सन्तुलन

आदर्श सन्तुलन और विपरीत दिशा में कुण्डलित क्रियाँए
इन विपरीत ऊर्जाएं का आकर्षण खींचती है
और प्राणधारा सुषमा में मिलने पर यह ऊर्जाएं सीधी विलीन हो जाती है

इन ऊर्जाएं का एक दूसरे को काटते हुए सुषमा में मिलना
विस्फोटक और अणुबम की शक्ति का होता है
जितना ज्यादा सन्तुलन और बड़ा विरोध
उतना ही केन्द्र में मिलने पर बड़ा विस्फोट
जो कि प्रकाश के चक्र में फैलता है

ऊपरी ७ चक्र समन्वय से विस्फोटित होते है
हर एक अपनी स्वंय के प्रकाश की फ्रिक्वैंसी से
लाल भगवा पीला हरा नीला जामुनी बैंगनी
सभी विलीन होते है और शुध्द सफेद प्रकाश में मिलते हैं

सतोरी परमाणु विस्फोट है किसी एक चक्र का
चक्र के एकाकार अनुभव पर अपार फैलाव होता है
जो कि शरीरमन के आकार की सीमाओं से बाहर पहुँच होता है
और खुले आकाश से एकाकार होता है

समाधि परमाणु विस्फोट है सुषमा नीली रेखा का
जो घटता है कई चक्रों के शीघ्रता से मिलने पर
जिससे एक सीधा खड़ी दिशा में परमाणु विस्फोट होता है
और शरीरमन के आकार की सीमाओं से बाहर एकाकार अनुभव होता है

और खुले आकाश से एकाकार होता है

यही पर अन्तर है

सतोरी झलक है परे की
सतोरी घटने का प्रभाव एक हफ्ते के लगभग रहता है

समाधि विस्फोट हैं परे में जाने का
समाधि का प्रभाव कुछ महीनों तक रहता है

सतोरी छोटे स्तर पर अनुभव है
एक आयामीय एक चक्र का

समाधि अपार का अनुभव है
बहुआयामीय कई चक्रों का

समाधि का प्रभाव बदलता नहीं है
और एक लम्बी सीधी खड़ी दिशा में एक छेद प्रकाश की तरफ खुलता है
गुरूत्वाकर्षण के उदय के साथ
शून्य गुरूत्वाकर्षण का उतरना होता है शून्य को भरने के लिए

गुरूत्वाकर्षण के सरकाव से एक भीतरी शून्य का जन्म होता है
और सृष्टि में शून्य स्वीकार्य नही है
गुरूत्वाकर्षण के सरकाव के साथ
शून्य गुरूत्वाकर्षण को इसकी जगह लेनी होती है

शुरूआती ध्यान में खालीपन का जो एकाकार अनुभव होता है
वह शून्य गुरूत्वाकर्षण की पूर्णता और आत्मा से भर जाता है

मन को खाली करना... गुरूत्वाकर्षण
अमन से भरना... शून्य गुरूत्वाकर्षण

पराचेतना जो कि आकाश में निकलती है
शरीर धीरे धीरे उसे वापिस खींच लेता है और अपनी सुरक्षा के
लिए अन्दर फँसा लेता है
हर समाधि तने को बढ़ाती है और शरीर को दोबारा से समन्वय बिठाना पड़ता है

मैं हमेशा से क्वाण्टम भौतिक विज्ञान और अणु विज्ञान में आकर्षित रहा हूं
मैं अपने शुरूआती दिनों में फ्रिजआफ कापरा को पढ़ रहा था
इन सालों में मेरी क्वाण्टम भौतिक विज्ञान की समझ काफी बढ़ी

लाखों नाचते... विस्फोटित होते अणुओं का भीतरी एकाकार अनुभव
भीतरी अपार आकाश के खालीपन में
एक रेशमी पंख जैसे काले चक्र में घिरा होना और डूबा होना
सफेद चक्रों को पोषित करता और उनकी रचना करता

जीवन की स्वंय की सक्रियता और भीतर का पारस्परिक खेल होता है
दोनो स्वतंत्र हैं
जीने के लिए मरो और मरने के लिए जियो
जीवन मुत्यु की तरफ बढ़ता है... मुत्यु और अधिक जीवन की रचना करती है

और नृत्य चलता रहता है... रहता है... रहता है
बड़े चक्र तक... धम्मा चक्र... चक्र पूरा घूम जाता है

मैं नदी के रेस्ट हाऊस से वापिस आता हूँ
और अपनी कॉटेज के ऊपर तिब्बतियन गोम्पा में जाता हूँ
वहाँ वृध्द लामा मुझे बताता है कि सफेद बादल कॉटेज को बनाया गया था
बगीचे से और ठीक उसी जगह से सिर्फ २० मीटर दूर
जहाँ से ओशो ने अपने पहले १८ लोगों को १९७० में संन्यास दिया
उन्हे इस ऊंची जगह से नदी का नजारा बहुत पसन्द आया था
और इन घुमावदार जंगल के रास्तों पर चलना उन्हे प्रिय था
जो कि वशिष्ठ के मिनरल सल्फर बाथ की तरफ जाते हैं

क्या आश्चर्य और अपार प्रसन्नता... क्या चमत्कार
मैं एक साल पहले सीधा इसी जगह पर कार चलाता हुआ आया था
रात के मध्य में

हम और भी शान्त हेमकुंड कॉटेज में चले जाते हैं
जो कि एक सुन्दर सेब के फलोउद्यान में है
अगले चार साल हम यहाँ बिताने वाले हैं
शान्ति में रहते हुए और पर्वतीय जंगलों में घूमने के लिए जाते हुए
चीड़ के पेड़ो के बीच और नदी के किनारे किनारे

जल्द ही मेरा पैसा खत्म हो जाता है... इसमें से ज्यादातर वकीलों को दिया गया है
जो कि अदालत में मुकदमा लड़ रहे हैं

पैसें की दिक्कतें दोबारा से
फरवरी २००० पाँच साल के बाद... मैं येंगचेन के साथ हाँगकाँग लौटता हूँ

शोना और रमेश हमेशा मेरी वापिसी का स्वागत करते हैं
पाँच साल हो चुके हैं उन्हे देखे हुए

अब उनका पाँचवा बच्चा हो चुका है
उनका लड़का तुषार और चार लड़कियाँ नताशा रमोना त्रोणा और र्शीणा
मैं हर एक के साथ पूर्णतः प्रेम में हूँ
इन सब को दोबारा देख कर कितनी खुशी हो रही है
सभी बच्चे येंगचेन को एकदम से पसन्द करते हैं

मैं अब दुनिया को उसके सहज प्रवाह और उसकी मौलिकता में प्रेम करता हूँ
बुध्दत्व या दूर में किसी उपलब्धियों के प्रति बेफ्रिक हूँ
सिर्फ अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी को बिना किसी झिकझिक के जीता हूँ
मेरे बच्चें नही है... शोना ने हमारे पूरे परिवार के लिए काम कर दिया है

रमेश बहुत मधुरभाषी है और उनका बड़ा मिलनसार ह्दय है
उनके पिता भारतीय और माता थाई है... उनका जन्म बर्मा में हुआ
थाई संस्कृति की सौम्यता और गारिमा
उनके व्यवहार और सभी मिलने वालों के प्रति उनके बर्ताव में प्रेमपूर्वक बहती है

मुझे उनसे बेहद स्नेह है और उन्हे मेरी बहन से गहरा प्रेम है
मेरी बहन बेहद सरल है... बच्चों की तरह भावपूर्ण और दुनिया के प्रति निष्कपट
वह सिर्फ अपने पाँच बच्चों की देखभाल करने में चिन्तित रहती है
और १७ सालों से शादी के पवित्र बन्धन में हैं

रमेश फैसला करते है कि समय आ गया है कि मैं अब उनकी कंपनी के साथ करूं
और वे मेरी डिजाईनों के लिए एक नया भाग बनाते है... 'कूल टाईम' के नाम से
और जिसका उत्पादन उनकी बड़ी सफल टाईम क्रियेशन कंपनी करेगी
मैं वायदा करता हूँ कि मैं रहूँगा और हाँगकाँग में कम से कम
तीन साल काम करूँगा

कूल टाईम के लिए मेरा पहला डिजाईन
पाँच आयामीय सीधी खड़ी त्रिकोण घड़ियाँ निकलती है और वह 'हाँगकाँग
व्यापार प्रस्तार काऊसिंल' का प्रसिध्द कलाकृति पुरस्कार सन २००० में जीतती है

मेरी कूल घड़ियाँ दोबारा से घड़ियों के बाजार में खबर में है
बहुत प्रशंसा से भरे सैंकड़ों लेख हर तरफ से आ रहे हैं
व्यापार दोबारा से बढ़ने लगा है और साथ में दुनिया भर में प्रचार का कार्यक्रम भी

कूल डिजाईन वाली घड़ियों की बिक्री दुनियाभर में होती है
कारस्टड, नेमरमेन क्त्रिलै, सनीडर, हाच, मेनर, क्रास्ट जौहरी, क्युव्हिसी, वालमार्ट
टेलीविजन, फैडरैडिट स्टोरस, फ्लैस आर्ट, मोमा... सूची बहुत बहुत बड़ी हैं

आधुनिक और समकालीन कलाकृति की यह हाथ में पहनने वाली घड़ियाँ
हाँगकाँग फैडरेशन ऑफ उद्योग का ध्यान खींचती हैं
मैं सन २००१ में 'उद्योग उपभोक्ता प्रोडक्ट डिजाईन' के लिए
हाँगकाँग पुरस्कार जीतता हूँ

इस पुरस्कार से मेरा नाम अंतराष्ट्रिय स्तर जाना जाता है
मेरे बारे में लेख जानी मानी सिवस जनरल 'योरापा स्टार ज़ेन' और 'घड़ी
उत्पादन की कला' पत्रिका में आते हैं

मेरी तनख्वाह और साल की कमाई ३००,००० डॉलर हो गयी
और डिजाईन पुरस्कारों की वजह से दुनियाभर में मेरे लिए कई नए रास्ते खुल गये

मुझे डिजाईन की दुनिया में आकर्षण है
और उपभोक्ता से सम्बन्धित चीजों का डिजाईन करने में
इस ने मेरा आकर्षण आधुनिक, वास्तुकला, घर के अन्दर की सजावट, जीने का ढंग
और फर्नीचर की तरफ खींचा
मैं महान मूर्तिकार डिजाइनरों जैंसे फिलीप्स स्टार्क, टेरेन्स कोनरान, मार्क नीयूसन,
ईरक मैगनयुसन, आर्ने जैकोबसन, माइकल ग्रैवस, जैकोब जेनसन, रोन अराड,
जहा हदीद, आ.म.पाई, फ्रैन्क ओह जहरी, फ्रैन्क लायड वाईट के बारे में बहुत
गहराई से पढ़ने लगा

यह मेरे लिए आधुनिक प्रतिभाशाली कलाकार और बाहरी दुनिया के ज़ेन गुरू है
प्रत्येक स्वंय की रचनात्मक अभिव्यक्ति में सम्पूर्णता और श्रेष्ठता ला रहा है
और जीने के ढंग को बागी और सुन्दर तरीके से दर्शा रहा है
मानवजाति की इन बहुमुखीय प्रतिभाओं को बहुत साधना करनी पड़ती है
अपनी चुनी हुई कला को श्रेष्ठतम रूप से दर्शाने के लिए
शुध्द ज़ेन अभिव्यक्ति

मैंने अपने खरीदारों से मिलने के लिए दोबारा से दुनिया के चारों ओर घूमना शुरू किया और एक नयी सहजता से जीने के अलग अलग ढंगो को सराहना शुरू कर दिया

मैंने बीस सालों से अखबार नही पढ़ी है और ना ही वास्तविकता में
टेलीविजन देखा है
और ना ही पिछले १६ सालों में एक फिल्म देखी है
मुझे कोई अनुमान नही था... कम्प्यूटर इंटरनेट या ई—मेल के बारे में

मैं बाकी की दुनिया को समझने की कोशिश कर रहा था
और हैरान था हर क्षेत्र में बदलाव से और सजर्नात्मक अभिव्यक्ति की शक्ति से
दुनिया रंगो से भरी और परिवर्तनशील थी
मैं सबकुछ निश्चलता और होशपूर्वक देख रहा था

ज़ेन किसी चीज के लिए नही रोकता
ज़ेन अनुभव हर चीज को गहरी सराहना से देखने की अनुमति देता है
जीवन गगन में नाचते रंगो का इन्द्रधनुष है

सत्यम शिवम सुन्दरम... सत्य... सन्त... सुन्दरता

यात्रा करना और बाहरी सर्जनात्मक दुनिया का अनुभव करना
ज़ेन आँखें इस सुन्दरता के कण कण को भीतर समाने देती है
और हमारे अन्दर की दुनिया को सौन्दर्यात्मक संवेदनशीलता से फैलाती है

मैं बाहर की दुनिया को दोबारा से सीखने और महसूस करने की इस नयी
स्वतंत्रता के हर पल का आनंद ले रहा था

दुनिया की ज्यादातर यात्राओं में येंगचेन मेरे साथ थी
वह मुझे उन जगहों में ले गयी जहाँ मैं अपने आप शायद कभी नही जाता
स्वंय वहाँ जाने में बेवकूफ महसूस करता
डिजनीलैंड, लास् वैगास के कैसीनो, मिआमी के समुंद्र तट, सैन फ्रैनशिसको की
खाड़ी न्योयार्क, घोड़ागाडी से हाईड पार्क, आलोहा में रात का खाना, हवाई की
पानी के अन्दर पनडुब्बी, मैडम तुषाद् मोम का संग्रहालय और दुनिया भर में हर
तरह की बेवकूफ पर्यटक जगहै
अमेरीका से लंदन, स्विजरलैंड, फ्रांस, हालैन्ड, जर्मनी, सदूर पूर्व, टोकयो,
कोरिया, थाईलैंड, बाली, सिंगापुर, संघाई, न्यूजीलैंड

बाहर की दुनिया और भीतर की दुनिया का संतुलन

जोरबा द्वा बुध्दा की दुनिया

तीन साल का समय जिनका मैंने काम करने का वायदा किया था
जल्द ही खत्म हो गये
मैं दोबारा मनाली जाना चाहता हूँ
अपनी अन्दर की यात्रा पूरी करने के लिए

येंगचेन अरूणाचल प्रदेश के एक छोटे शहर से एक तिब्बतियन है
अरूणाचल प्रदेश
उत्तरी भारत के हिमालय में हैं
उसे प्रेम हो चुका है... इस दुनिया और उसके भौतिकवादी सुखों से
जीवन जीने की उमंग से और पूरी दुनिया घूमने से

अभी वह सिर्फ २६ साल की हैं और आजाद जीवन जीने की उमंग से भरी हैं
अभी अभी दुनिया घूमने के बाद हाँगकाँग में रहना चाहती है और भारत वापस
नही लौटना चाहती... हिमालय में जीवन अब उसके लिए उबाऊ है

मैं उसके भारत लौटने के विरोध को देख सकता हूँ
और वह अपने जीवन को अपने ढंग से जीने और अमेरीका जाने
का फैसला करती है
यह हर तिब्बतियन की इच्छा है... अपनी सपनों की दुनिया अमेरीका में रहना
और बस जाना और धीरे धीरे अपने भाई बहनों और माता पिता को वहाँ बुला लेना
मैं उसे उसके स्वंय के मार्ग पर चलने के लिए अपने पूरे प्रेम और सहयोग की
कामना करता हूँ और मैं हमेशा तैयार हूँ उसे उसके सपनों को पूरा करने में
किसी भी तरह से मदद करने के लिए

मैं हमेशा कृतज्ञ हूँ उन सभी सुन्दर पलों के लिए जो हमने साथ बितायें
प्रेम सीधी खड़ी दिशा में है अभी इसी क्षण में है और हमेशा सजीव है
इस विशाल आकाशगंगा में अपरिचितों के साथ हर एक सुन्दर मुलाकात
प्यार को समझने और बाँटने का अनुभव है

इस अपार ब्रह्माण्ड में हम प्रकाश के साथी मुसाफिर और मित्र हैं
हम अकेले आते हैं और अकेले ही जाते हैं

शून्यता का मिलन

तीन साल बीत चुके हैं
मैं वापस आता हूँ और १५ जनवरों २००४ को मनाली पहुचँता हूँ

अपने सेब के उद्यान में... चंदापानी कॉटेज में
सफेद बर्फ से ढके रोहताँग पर्वतो के सामने

यहाँ बहुत बर्फ गिरी है
गरजते काले आसमान के विरूध्द बर्फ के टुकड़े चमक रहे हैं
एक शुध्द सफेद और शान्त १९ जनवरी
और साथ में... मेरे सामने लकड़ियों की गरजती आग

मैं परिपूर्ण हूँ और स्वंय होने के आनंद में हूँ

ओशो दरवाजे पर दस्तक देते है... मैं दरवाजा खोलता हूँ
शुध्द तारों की बारिश धीमे धीमे नीचे बहती आ रही है

ओशो अग्नि और हिम
उनकी करूणा की शीतल अग्नि मेरे ऊपर बरस रही है

समय आ रहा है... मुझे अन्तिम यात्रा की तरफ बढ़ना चाहिए
अनंत मार्ग को अपार छलांग लगानी चाहिए
एक नयी अनंत यात्रा की शुरूआत के लिए

मैं अगली सुबह के प्रारम्भ तक जागता रहता हूँ
जब कि दुनिया अज्ञान के शुध्द आनंद में सोती रहती हैं

दुनिया में वापस देखने का समय

पालने से कब्र तक
आदमी स्वंय ही दौड़ रहा हैं... बेहोशी में जीवन व्यतीत कर रहा है

इस पागल भागती दुनिया में पैदा होना और उनके जीवन की दौड़ में धकेल
दिया जाना एक छोटी सी उम्र में... शिक्षा की दुनिया
४ से ५ नर्सरी... ६ से १६ स्कूल
१७ से २० कालेज... २१ से २३ उच्च शिक्षा
जवानी का पूरा जीवन बर्बाद

शिक्षा की पूरी प्रणाली अपराधिक हैं... निर्दोष बालक के विरूध्द हैं
जिसके पास कोई विकल्प नही हैं
बस उसे वही करना पड़ता है जो कुछ भी उसके ऊपर थोपा दिया जाता है

नर्सरी में पहले दिन से ही
पूरी शिक्षा मन को तेज करने में लगी है
और यह सिखाती है प्रतिस्पर्धा आक्रमक रवैया
ईर्ष्या और दूसरों के प्रति धारणांए बनाना

यह तथ्य सरल है और साफ समझ में आता है
क्यों कि कोई माता पिता अपने प्रियतम बच्चे को दूसरों से
पीछे नही रहने देना चाहते
हर कोई चाहता है उनका बच्चा प्रथम आये... सबसे बेहतर... सबसे आगे

यह असम्भव है कि हर कोई बच्चा कक्षा में प्रथम आ सके
यह गणित का सिध्दान्त बेचारे अलबर्ट आईस्टीन को भी हरा देगा
सिर्फ एक बालक प्रथम आ सकता है... द्वितीय या तीसरे नम्बर पर
कौन सा बालक तीसरी श्रेणी का होना चाहता है... कोई बालक है ऐसा?
किस बालक को अन्तिम आने की बधाई दी चाहती है

कोई बालक... जिसकी मन्द प्रवृति हो सिर्फ बेवकूफ तिथियों, अंको और
बेमतलब चीजो की याद रख पाने की कक्षा में प्रथम आ जाता है
शिक्षा सिर्फ स्मरण शक्ति की परीक्षा लेती हैं
ना कि किसी भी तरह से बुध्दिमानी की

सभी विषय जो पढ़ाये जाते हैं वह सब बेचारे बच्चे के लिए बेमतलब है
पर शिक्षक गम्भीर है और माता पिता अच्छा करने के लिए दबाव डालते हैं
निर्दोष बालक के पास कोई विकल्प नही है

बस उनके निर्दोष मन को कूढ़े और बकवास से भर दो
वह सब यहाँ हमारे पूर्व के गौरव के कचरे के डिब्बे को ढोने के लिए है
या इस गौरव को कत्लेआम कहना ज्यादा ठीक होगा

गरीब बालक को सिखाया जाता है
सिकन्दर महान, चंगेज खान, तैमरलंग, ईवान, हिटलर के बारे में
और महान लड़ाईयाँ और विश्वयुध्द... विनाश ही विनाश
सिकन्दर महान में ऐसा क्या महान है
सिर्फ उसके जीतने का अंहकारी सनकीपन
खूनी को महान विजेता का नाम दे देना

इतिहास
अपनी पहली की बेवकूफियों को गर्व से याद रखना
भूगोल
अपनी एक धरती को अलग अलग देशों में विभाजित करने के कारण
जीव विज्ञान
सब के विषय में सबकुछ
बस स्वंय के बारे में छोड़कर और प्रकृति में हमारी जगह को छोड़कर
रसायन विज्ञान
सब के विषय में सब कुछ... पर क्या करना है भय या गुस्से के रसायनिक हार्मोनो से गणित
जहाँ एक जमा एक दो हैं पर हमारी असली जीवन की गिनती में कभी ठीक नही बैठते भाषा
सब बातें ही बातें हैं और मौन की भाषा कभी सिखायी नही जा सकती

पूरी शिक्षा ही उल्टी खड़ी है और आम जनता को ध्यान में रखकर बनायी गयी है
सभी विषय, पाठयक्रम और परीक्षा पत्र
तरह तरह के लाखों बच्चों पर एकदम ठीक बैठने चाहिए
जो कि अलग अलग सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक पृष्ठभूमि से है
और सब को एक परीक्षा के ढाँचे में डाल दिया जाता है
बिना किसी फेरबदल या बदलाव के

सभी बच्चे एक जैसे.... जैसे कोई प्लास्टिक का कारखाना खिलौने बना रहा हो
हर किसी की एक जैसी बारबी गुडियावाली मुस्कराहट
बिल्कुल एक जैसी मुस्कराहट

हम सिर्फ एक नियन्त्रित समाज के लिए रोबोट बना रहे हैं
जो कि सरलता से हमारे समाज की सोच में ठीक बैठ जाये
सभी लोग एक प्रकार की सोच वाले सामाजिक समूह में स्वीकृत होने ही चाहिए

कोई आश्चर्य नही... यह मानव जाति उलझी हुई है... बंटी हुई है
अपने विरूध्द ही विभाजित है... हमेशा आपस में ही लड़ती रहती है

कोई बच्चा स्वंय से प्रेम नही करता
कोई बच्चा स्वंय को स्वीकार नही करता
कोई बच्चा स्वंय नही हो सकता

कोई बच्चा खुद से प्रेम नही करता
वह जानता है अपने शान्त क्षणों में... अपनी गहराई में
कि उसे इस शिक्षा प्रणाली के द्वारा पीड़ित किया जा रहा है
उसमें कचरा ठूस ठूस कर
उसे उसके स्वभाव के विरूध्द परीक्षा में अच्छा करने को बाध्य कर
नौकरी पाने के लिए बेमतलब के प्रमाण पत्रों को पाने की दौड़ में
भगाने को मजबूर कर

हर बालक को बार बार बताया जाता है कि वह बेवकूफ है और उसे शिक्षा की
जरूरत है वह कुछ नही जानता... वह ठीक नही है जैसा भी वह अभी हैं
और वह इनाम का हकदार नही है प्रयास या संघर्ष किए बिना

बचपन से ही विभाजित वह घृणा और झूठी मुस्कराहट की राजनीति सीख लेता है
वह खुद से नफरत कहता है... अपने प्यारे और उत्सुक माता पिता अध्यापक
समाज और देश को सन्तुष्ट ना कर सकने की अपनी विफलता पर
वह अपने माता पिता और बड़ो से नफरत करना सीखता है
उसे उस के स्वभाव के विरूध्द जाने और जिमी करटार् वाली मुस्कराहट सीखने
को मजबूर करने के लिए
सभी चारों ओर मुस्कराते है... सिर्फ बाहर से मुस्कराते रहो... भीतर तड़पते रहो
मुस्कराते रहने से बहुत काम बनते हैं

कोई बालक अपने आप को वैसा स्वीकार नही करता... जैसा वह है
और कर भी कैसे सकता है जब चारों ओर से
उसे बेवकूफ निरर्थक कारणों की वजह से अस्वीकृत किया जाता है
कारण जो हमारे मन्दबुध्दि बड़ों को गम्भीर और महत्वपूर्ण लगते हैं
रोओ मत आदमी बनो... समाज के लिए जिओ... दूसरों के लिए जिओ
खुद का बलिदान करो... लड़ाई पर जाओ... अपने देश के लिए लड़ो

कोई बालक स्वंय नही हो सकता
ऐसा बनो या उसके जैसा बनो... उस शक्तिशाली राष्ट्रपति की तरह बनो
या उस प्रसिध्द डाक्टर की तरह या उस महत्वपूर्ण सरकारी आफिसर की तरह
या कुछ भी चलेगा... पर सिर्फ स्वंय मत हो जाना
यह जीवन का सब से पहला पाठ भूल जाने के लायक है

स्वंय को प्रेम करो... स्वंय को स्वीकार करो... स्वंय हो जाओ

स्वंय से प्रेम करो
स्वंय से प्रेम ना करके शान्त और नाजुक ऊर्जा बँट जाती है
और कैंसर अनदेखा ही शीघ्रता से भीतर बढ़ता रहता हैं
दूसरों से प्रेम मत करो... पहले सिर्फ स्वंय से प्रेम करना सीखो
जो स्वंय से प्रेम करता है वह प्रेम की कीमत को अपने भीतर से समझता है
स्वंय से प्रेम करना... भीतर के स्वास्थ और स्वंय को जानने में
आगे बढ़ने का मार्ग है
यह प्रेम बढ़ता है और प्रकाश के भीतरी सात खंम्भो से खूब खिलता है
प्रेम पोषित करता है और जल्द ही अपने आप दूसरों की तरफ फैलता है

स्वंय को स्वीकार करो
कितनी नासमझ उबाऊ दुनिया में हम जीयेंगे
अगर सभी लोग बिल्कुल एक जैसे हो
बस स्वंय को स्वीकार करना सीखो... ठीक वैसे ही जैसे तुम हो
सृष्टि ने तुम्हे जन्म दिया है और तुम्हे बेशर्त स्वीकार करती है
तुम उसके प्राणों से सजीव हो और उसे हर श्वास में ले रहो हो
अपने आप में एक चमत्कार
हर एक व्यक्ति अनोखा है और इस अपार ब्रह्माण्ड में अद्वितीय है
तुम्हारी सुन्दरता में ही उसकी अनुपम कृति छिपी है

स्वंय हो जाओ
जितना समाज तुम से माँग करे उतना तुम कुछ और बनने की
कोशिश कर सकते हो
ढोंग रच सकते हो और एक ढोंगी का असम्भव जीवन जी सकते हो
पर सिर्फ एक ही मार्ग है और वह है स्वंय हो जाने का
तुम जो कोई भी हो जैसे भी हो... सिर्फ गहरे विश्राम में चले जाओ
और स्वंय हो जाओ
सिर्फ स्वंय हो जाने से ही तुम में बेहद सौम्यता और सुन्दरता निखरेगी
और तुम्हारे चारों ओर दमकेगी

स्वंय से प्रेम करो... स्वंय को स्वीकार करो... स्वंय हो जाओ

यह गुण पहली बार रचना करेगा एक व्यक्ति की
जिसकी भीतर की अग्नि अखंड है
एक विशाल ऊर्जा इक्कठी होगी और तुम्हे घेर लेगी

इस से तुम्हारे भीतर एक अन्दूरनी विश्वास पैदा होगा

अन्दूरनी विश्वास
अन्दर का विश्वास आत्मा को स्थिर करता है
और हम हमारे अपार मैत्रीपूर्ण ब्रह्माण्ड में स्वंय के घर में होते हैं
हम छोड़ देते है पागलों की तरह भागना
और अपने अन्दर के खालीपान के लिए उपाय खोजना
हर व्यक्ति की अन्तरात्मा निश्चल है और शान्ति से प्रतीक्षा कर रही है उसकी आवाज को सुने जाने का
सुनना सीखो और अपनी अन्तरात्मा की आवाज पर विश्वास करो

इसके लिए बहुत ध्यान से सुनने की जरूरत है
क्यों कि तुम भूल चुके हो इसकी शान्त मार्ग दिखाने वाली आवाज को
अपनी अन्तारात्मा और मार्ग दिखाने वाले भीतर के
गुरू पर विश्वास करना सीखो
सृष्टि तुम्हे हर पल सहयोग दे रही है
तुम्हारे हर श्वास के साथ तुम पर आशीष बरसा रही है
यह जीवन इस आशीष का एक प्रमाण है
भीतर जाओ... भीतर जाओ... भीतर जाओ... गहरे प्रेम में गहरे विश्वास में

अन्दर का विश्वास तुम्हारी भीतरी संवेदनशीलता
और तुम्हारी आत्मा को फैलाएगा
तुम प्रकाश की आत्मा हो
अपनी चेतना को बढ़ाओ और अपनी आत्मा में जियो

तुम्हारी भीतर की लौ कितनी भी छोटी हो... यह तुम्हारी भीतर की लौ है

इसे किसी भी अध्यापक या गुरू या मास्टर से उधार मत लो
वह तुम्हे कुछ भी नही दे सकते

तुम्हारा जीवन ही तुम्हारे भीतर के मन्दिर में दिया जलाने के लिए अग्नि देता है
तुम्हारे अलावा वहाँ कोई नही पहुँच सकता
यह तुम्हारा भीतर का पवित्र मन्दिर है वहाँ तुम स्वंय अपने गुरू हो
सिर्फ तुम ही वहाँ पहुँच कर अग्नि को जला सकते हो

एक सच्चा गुरू
ज्यादा से ज्यादा तुम्हे प्रेरणा दे सकता है
तुम्हे तुम्हारी आत्मा में जीने के लिए... तुम्हारे प्रकाश में जीने के लिए

एक अखंड व्यक्ति से हम बढ़ते हैं सामूहिक करूणा की तरफ
और सामूहिक करूणा से हम बढ़ते है ब्रहम्डीय करूणा की तरफ

यात्रा सरल है
एक विभाजित व्यक्ति से एक अखंड व्यक्ति की तरफ ओर
फिर पूरे ब्रंहाम्ड की तरफ

जीवन जियो... जीवन से प्रेम करो... जीवन को हँसकर आनंद से स्वीकार करो
यह जीवन एक शुध्द उत्सव है तुम्हारे होने का
यह उत्सव है तुम्हारी आत्मा का
और सृष्टि के इस नृत्य में हर पल सजीव होने का

अपनी खोज शुरू करने से पहले
तुम अपने भीतरी आकाश में देखो
और दोबारा से खोज लो... जो तुम्हारे पास पहले से ही है

तुम इस सृष्टि की परम अभिव्यक्ति हो
और तुम इस ब्रंहाम्ड के सभी अनुभवों को अपनी आत्मा के अन्दर सम्भाले हो
आदमी एक सूक्ष्म ब्रंहाम्ड है
हर अणु का कण जो तुम्हारे में है उसका इस सृष्टि में उद्गम है
और वह कण विकास के हर चरण से सजीव अखंड ही गुजरा है
तुम्हारे भीतर बीज भी है... उस बीज का खिलना भी और सृष्टि का पूरा ज्ञान

पाँच इन्द्रियाँ जिन से तुम बाहर की दुनिया का अनुभव करते हो
वह बाहर ले जाती है
छटी इन्द्री भीतरी आकाश में नयी अनुभूतियों को खोलती है

भीतरी आकाश में... जो कि बाहर के आकाश से बहुत अपार है
क्यों कि अब अनुभव करने वाले की ही अनुभूति हो रही है

शिक्षा का असली मतलब
तुम्हारे भीतर के ज्ञान के आकाश को बाहर निकालना है जो सभी
खजानों को लिए है

विज्ञान खोज है बाहर के वैज्ञानिक की
बाहर का वैज्ञानिक बाहर की दुनिया में खोज करता है
और अपने औजारों और अपनी पाँच इन्द्रियों का प्रयोग करता है

ध्यान खोज है भीतर के वैज्ञानिक की
भीतर का वैज्ञानिक भीतर की दुनिया में खोज करता है
और अपनी अन्तदृष्टि और अपनी छटी इन्द्री का प्रयोग करता है

वैज्ञानिक अधिक और अधिक जानने की कोशिश करता है
तनिक के बारे में सब कुछ जानने के लिए

साधु कम से कम जानता है
समस्त के बारे में... कुछ भी ना जानने के लिए

वैज्ञानिक सृष्टि में बाहर की दुनिया को ढूँढ रहा है
जहाँ जानकारी से ही मतलब है

साधु सृष्टि के भीतरी जगत को खोजता है
भीतर का ध्यान... शुध्द जानना... जो कि अर्थपूर्ण है

अब इस निरर्थक शिक्षा को पूरा करने के बाद

बच्चा अब बड़ा हो चुका है और अब उसे शिक्षा में लगी पूँजी को वापिस पाना है
२१ से २४ नौकरी पानी है... पैसा कमाना है गर्ल फ्रैन्ड ढूँढनी है
२५ से ३२ साल बस जाना है... शादी करनी है और बच्चे पैदा करने हैं
३२ से ४० साल बड़े होते बच्चों के लिए जिम्मेदारियाँ
४० से ४५ साल जिन्दगी के अर्थ के बारे में सोचना
४५ से ५० साल समझदार होना है
५० से ६० साल जिन्दगी को निरर्थक पाना है... एक पाँव अब कब्र में है

राम राम सत्य है... देवदूत स्वर्ग में स्वागत के गीत गा रहे हैं... छोटा रास्ता

यह लगभग अनिवार्य ढाँचा... इस सुव्यवस्थित समाज के लिए आदर्श काम
करता है उन्होंने एक स्वस्थ बच्चे पैदा करने वाले जीव को ढूँढ लिया है
जिस ने अपना दायित्व निभा दिया है और दूसरे को छोड़ दिया है
अपनी जगह काम करने के लिए... समाज जिन्दा रखने के लिए

परिवार दोषी है शत्रु पैदा करने के लिए
तुम मेरे लड़के हो और तुम मेरी लड़की हो... मेरा खून
यह दूसरे बच्चे है... दूसरा खून

यही पर देशों के बीच महान विभाजन शुरू होता है
बच्चे विभाजित... परिवार विभाजित... आस पड़ोस विभाजित
राज्य विभाजित... देश विभाजित और धर्म विभाजित

माता पिता बच्चों को बाँटते है... परिवारों में
राजनीति बाँटती है धरती को हिस्सों में... देशों में
और धर्म बाँटता है आसमान को काल्पनिक हिस्सों में... परलोक के राज्यों में

पूरी दुनिया में सब बंटा ही हुआ है
यह पढ़ाना कि दूसरों को प्यार करो... प्यार जोड़ता है
महान पाखण्ड

मानव के मन का आश्चर्यचकित लोभ... हमारी मर्यादांए उल्टी पड़ चुकी है

कुछ लोग खाते है जीने के लिए और कुछ लोग जीते है खाने के लिए
कुछ लोग कमाते है जीने के लिए और कुछ लोग जीते है कमाने के लिए

भिखारी अपने कटोरे और फैली हुई बाजूओं के साथ खाली लौटता है
और कुछ ना होते हुए भी रात में गहरी नींद सोता है

खरबपती भिखारी कटोरा लिए ज्यादा से ज्यादा पाने की खोज में रहता है
खोपड़ी एक कटोरा है भीतर की गरीबी का... जो कि रात में अशान्त रहती है

मरे हुए और दफना चुके उपजाऊ भूमि में रहते हैं
जब की जीवित जीने के लिए... सिर पर एक छत पाने की कोशिश में रहते हैं

भगवान जो स्वर्ग के मालिक है उनके सोने के मन्दिरो पर लाखो खर्च किए जाते हैं
जब कि गरीब को दी जाती है स्वर्ग में जगह पाने की उम्मीदें

देने वाला अपने देने के अंहकार में गिर जाता है
और पाने वाला पाने के लिए झुकने में उठ जाता है

आदमी सदूर के उत्तरों को खोजता हैं

आदमी चाँद पर पहुँच गया है मंगल और दूर के गृहों पर जा रहा है
पर अभी तक अपनी आत्मा के मौन तक नही पहुँच पाया

दूसरे गृहों पर जीवन ढूँढने के लिए फ्रीकवैन्सी को सुनना और तरंगो को पढ़ना
पर कभी एक पल के लिए भी अपनी श्वास को ना सुनना

माऊंट ऐवरेस्ट पर चढ़ना
पर अपनी स्वंय की आत्मा में उतरने से डरना

सबसे समझदार आदमी सिर्फ अपने जीवन के स्त्रोत की तरफ जाता है
कैसी विडंबना है... मन और अमन की अन्दूरनी कार्यप्रणाली को
खोजा ही नही जाता
हम विचित्र दुनिया में जी रहे है. महान खोजने वालों और
जोखिम उठाने वालो की दुनिया

यह मानवता हर पल लड़ाई के भय में जी रही है
धरती एक युध्द का मैदान है
आकाश एक युध्द का मैदान है

हमारे भीतर खतरे का आभास... हमारी भीतर की अशान्ति की दशा है

धर्म धर्म के विरूध्द लड़ रहा है... आसमान में मानसिक लड़ाईयाँ लड़ी जा रही हैं
सबसे बड़ी लड़ाईयाँ आदमी के भीतर ही लड़ी जा रही हैं
भीतरी अन्धकार और अचेतन का संघर्ष

चारों ओर खतरे का आभास... हमारी बाहरी अशान्ति की दशा है

अगर यह पर्याप्त नहीं है तो अपने राजनीतिज्ञों पर विश्वास करो
लड़ाईयाँ शुरू करना... ताकि जनता को याद रहे कि सत्ता में कौन विराजमान है
पेशेवर भाड़े के हत्यारों को मारने का लाइसेंस देकर भेजना
और देशों के अंतरराष्ट्रिय कानूनों के साथ खेलना

परमाणु लड़ाई
हमारी भेंट है इस दिव्य सृष्टि के लिए
हमारे ऊपर आशीषों की बौछार करने के लिए

परमाणु लड़ाई
हमारी कृतज्ञता है इस समृध्द धरती, जानवरों, प्रकृति, पेड़ और सागर के लिए

परमाणु लड़ाई
हमारे प्रेम और करूणा और मानव जाति की महानता की अभिव्यक्ति है

हिरोशिमा और नागाशाकी को याद करो

हम सब कब्र खोदने वाले हैं... इसी सदी में हम कब्रिस्तान की तरफ बढ़ रहे हैं

हम ही विश्व हैं... हम सब उत्तरदायी हैं... हम में से हर कोई

सिर्फ एक अकेली बूँद
इस अपार दिव्य सृष्टि को दर्शाती है
अंनत की एक अकेली शुध्द बूँद

हम में से हर कोई एक बूँद है
प्रेम के आँसू की एक बूँद... आनंद के आँसू की एक बूँद

हर व्यक्ति जिम्मेदार है
एक एक बूँद से... हम एक सागर बन सकते हैं

एक एक बूँद से... एक एक बूँद से... एक एक बूँद से
हमारा सागर शुध्द प्रेम और आनंद से भरा होगा

यह साल चिन्तन मनन में और निश्चलता को गहरा करने में बीतता है

मैं अगली अपार छलांग की तैयारी करता हूँ
शरीर की कोशिकाओं पर गहरा कार्य... हफ्ते में तीन बार
शरीर की हर एक कोशिका और माँसपेशियों को खोलना
ऊर्जा को मुक्त करने के लिए हर माँसपेशी से सांस लेना
श्वास, माँसपेशियों और कोशिकाओं को संन्तुलित करना

स्वास्थ्यवर्धक गर्म तेल और प्राचीन आयुॅवैदिक तेल से नहाना
और गर्म जड़ी बूटियों को मिलाकर शरीर पर लगाना और गहरी मालिश लेना
मैंने दो साल शरीर पर गहरा काम किया और तैयारी की

सरल खाना जूस और फलों की एक नियमित खुराक
निरे अन्धेरे कक्ष में सोना और एक घण्टा गर्म पानी के टब में नहाना

जंगलों में तरो ताजा करने वाली सैर करना
नदी के किनारे बैठना
फेफड़ों से गहरी साँस लेकर उन्हें खोलना
शरीर का पूर्णत: शुध्दीकरण करना और विषैलेपन को शरीर से बाहर निकाल देना

शरीर को गहरी तैयारी की जरूरत है
चेतना के विस्फोटक ढंग से खुलने के लिए
अपार जगह की जरूरत होती है जहाँ फैलाव हो सके
शरीर पूर्णत: गहरे विश्राम में और खुला होना चाहिए

हर माँसपेशी स्पंज की तरह पारदर्शक और सोखने वाली होनी चाहिए
एक समूचे जैविक रूप से श्वास लेना
एक फैली हुई श्वास... एक श्वास

एक अपार शक्तिशाली निश्चलता का घेरा एकत्रित होता है
मुझे बोध है एक भीतरी तूफान उठने वाला है
और एक दूसरी समाधि में अन्त:स्फोट होने वाला है

हर पूर्णिमा से पहले का एक हफ्ता बिताने के लिए
मैं एक 'पेराडाईज हिमालय आश्रम' में चला जाता हूँ
जहाँ बेहद आरामदायक कॉटेज मिलती है
और मैं रोज नदी के किनारे लम्बी सैर करता हूँ
जब ओशो भारत लौटे तो यहाँ पर रहे थे
उन का कमरा मेरे लिए बहुत ज्यादा पवित्र है
मैं वहाँ नहीं रहा सकता
मैं अगला कमरा लेता हूँ

यह दिन विस्फोटक प्रकाश और ताजगी से भरे है
और मेरा शरीर दोबारा से हल्का और हल्का होता जा रहा है

गुरूत्वाकर्षण उठा रही है और मेरी चाल में दोबारा से पंख आ रहे हैं
शरीर पतली हवा में गायब हो रहा है

कई सालों से मैंने संगीत को नही सुना है
नाचना बन्द कर दिया है
मैं हमेशा हर रोज घंटो घंटो नाचता था

संगीत और नृत्य मेरा जीवन रहा
और इन पिछले २० सालों में सबसे गहरा साथी भी
कितारो, डीयटूर, कारूणेश, प्रेम जोशआ, कमल, अनुगमा, शास्त्रो,
हरि प्रसाद, जाकिर हुसैन, उमर फारूक, प्रैटिक ओ हार्न, यानि,
यमाशिरोगुमी को मैंने सुना
यह इस ग्रह पर सबसे ज्यादा रचनात्मक आत्माँए है
मैंने उनकी धुन को और उनके मानवता की भीतरी विकास में
गहरे योगदान को बहुत अधिक सराहा

मैंने अपने नाचने वाले दिन दोबारा से जीने शुरू कर दिए

मैं एक ओर शिखर के समीप और समीप आता जा रहा हूँ
मैं एक अपरिचित जंगल जैसे क्षेत्र में जाना चाहता हूँ... जहाँ एक नदी बहती हो
और जहाँ की ऊर्जा जंगली हो और लोगों के विचारों और आने जाने से मुक्त हो

मैं पर्वतों में एक और जगह ढूँढता हूँ
मैं पहाड़ी झील टाउन रीवलसर में पहुँचता हूँ
जहाँ महानतम तिब्बतियन गुरू पदमासम्भावा का कमल जन्म हुआ और उन्होंने
ध्यान किया और अपनी गुफा में सिखाया
यहाँ इस सदूर हिमालय के इलाके में सैकड़ों गुफाए हैं
ऊर्जा ऊंचाई पर है और चारों ओर एक अपार निश्चलता है
बीच केन्द्र में कटोरी जैसी झील... एक गाती हुई कटोरी की तरह काम करती है
और रात्रि में रीवलसर में आवाज को गुंजाती है
और सैंकड़ों तिब्बतियन लामाओं की सामूहिक ऊर्जा को एकत्रित करती है
इन पर्वतों में ध्यान करना एक विशाल बुध्दाफील्ड की तरह था

मैं एक तिब्बतियन मठ में रहना चाहता हूँ
इन जाप करते और हजारों दियों और अगरबत्तियों को जलाते लामाओं के
समीप रहने के लिए... जहाँ सैंकड़ों देवी देवताओं और उनके पूजनीय गुरूओं
और बुध्दों की प्रतिमाएं है

मुझे एक मठ में एक सुन्दर एकान्त जगह मिलती है
और मैं अगले दिन गुरू पदमासम्भावा की गुफा में जाता हूँ

ऊपर की तरफ जाती लम्बी सीढ़ीयाँ चढ़कर एक गुफा को पाता हूँ
जहाँ बूँद बूँद पानी गिर रहा है और सीलन आ चुकी है

मैं प्रवेश करता हूँ और तुरन्त ही अनुभव करता हूँ कि हजारों धागे मेरे सहस्रार से बाहर की ओर खींच रहे हैं... मुझे बहुत ही निश्चल बैठना होगा
गुफा में शक्ति बहुत ही शक्तिशाली और तेजस्वी है
गुफा में पानी मेरे शरीर के ऊपर बूँद बूँद गिर रहा है
गहरे मौन में... घंटो बीतते हैं
एक शक्ति मुझे चारों ओर से पकड़ लेती है जैसे कि लोहे का एक शिकंजा हो
मेरा शरीर शक्तिशाली शक्ति से ऊपर की ओर खींचता है
शरीर अत्यधिक बायीं ओर मुड़ता है और तब तीव्रता से मेरी रीढ़
दायीं तरफ मुड़ती है
गुरू पदमासम्भावा ने मेरे शरीर के पीछे बंधी विशाल गाँठ को खोल दिया है
शरीर एक विस्फोटक शक्ति के गोले को मुक्त करता है
मुझे शीघ्रता से बाहर जाना होगा
गुफा अब बहुत छोटी है और मेरा दम घुट रहा है
मुझे अब पेड़ों की जरूरत है और जंगलों की ओर एक बहती हुई नदी की

मैं अपनी गहराई से उनके चरण कमलों में कृतज्ञता से प्रणाम करता हूँ
गुरू पदमासम्भावा

मैं जानता हूँ मुझे एक गहरे और अधिक शान्त जंगल वाली जगह में जाने की जरूरत है और पास की पार्वती घाटी की तरफ जाने की
जहाँ कभी प्रभु शिव और पार्वती रहे थे
इस रहस्यमय जंगल टाऊन कासौल में निरन्तर ताँता लगा रहता है
पीठ पर बैग बाँधकर घूमने वाले यात्रियों का
यह टाऊन पार्वती नदी की अलौकिक घाटी के हृदय में है
और नदी तीव्रता से खीर गंगा से नीचे बहती हुई
मनीकरण से होती हुई गुजरती है
जहाँ सन्त बाबा गुरूनानक देव जी और मरदाना ने अपना शरीर छोड़ा

मुझे एक साधारण 'अल्पाईन गेस्ट हाऊस' मिलता है
जिसके कुछ मीटर दूर पार्वती नदी शोर करती हुई तीव्रता से बह रही है

मैं जानता था यहाँ पर घटेगा
फिर दोबारा से यहाँ मुझ पर उतरेगा

मैं दोबारा से स्वर्ग में हूँ... हवा पारदर्शक निर्मल है
हवा ऊर्जा से भरी नदी के नाच रहे कणों से भरी है

तीव्रता से पास बहती नदी के मीठे नाद को निश्चल बैठकर पीना
औंर उसमें डूब जाना
एक महीना बीतता है

मेरा आनंद में विस्फोट हो रहा है
परलोकिक संगीत सुनाई दे रहा है और नृत्य शुरू हो जाता है
६ से ८ घण्टे रात में
जब तक की सुबह का उजाला ना हो जाये
नृतक और नृत्य दोनों खो जाते है
एक शुध्द ज्वाला के निश्चल स्पन्दन में

नृत्य चलता है हर रात नृत्य चलता रहता है
संगीत मुझे आनंद की तरफ खीचँता है और मुझ में नृत्य फूट पड़ता है

एक आनंद एकत्रित हो रहा है
नदी मुझे खींच रही है... जंगल मुझे खींच रहा है
आकाश मुझे खींच रहा है... मौन मुझे खींच रहा है
मैं फैल रहा हूँ और फैल रहा हूँ हर दिशा में फैल रहा हूँ

आनंद का एक विस्फोट एकत्रित हो रहा है
नदी नाचती हुई... जंगल नाचता हुआ
आकाश नाचता हुआ... मौन नाचता हुआ
नृत्य चलता रहता है... नृत्य चलता रहता है... चलता रहता है

अन्दर के जगत में अन्त:स्फोट होता है
नदी हीरों में चमक रही है... हीरे तीव्रता से दौड़ रहे है
जंगल हीरों से दमक रहा है... हीरे टिमटिमा रहे है
आसमान हीरों की बौछार कर रहा है... हीरों की वर्षा हो रही है
मौन हीरों को नीचे उतार रहा है... हीरे बह रहे हैं

आसमान बरसा रहा है मैं

अकेला नाच रहा हूँ

प्रकाश हर जगह फूट रहा है... सब कुछ सफेद है... शुध्द सफेद प्रकाश

शुध्द सुन्दरता शुध्द आनंद शुध्द मौन मेरे ऊपर अवतरित हो रहा है
मौन गहरा रहा है... गहरा और गहरा

मैं ऊपर पहुँच गया हूँ नदी के ऊपर, चीड़ के पेड़ो के ऊपर
बर्फ से ढके पर्वतो के ऊपर और नीले गगन में बादलों के ऊपर

निरी सुन्दरता मेरे सामने खुलती है... एक दृश्य महान जीवन का
जो मेरे आगे आने वाला हैं
मैं एक रहस्यात्मक आश्चर्य से भरा हूँ... मेरी आँखे खुली है... मैं जागृत हूँ
सिर्फ प्रतीक्षा कर रहा हूँ... दुनिया में वापिस आने का
यह विस्मयकारी दृश्य मेरी आँखों के सामने बह रहा है
चेतना के सुनहरी शिखरों की अलौकिक सुन्दरता

मैं अकेला खड़ा हूँ
एक का बहुमत

सत चित आनंद
परम सत्य... परम चेतना... परम आनंद

मैं मौन में डूब चुका हूँ
ओम् ओम् ओम् ओम् ओम्
सृष्टि डूब चुकी है
ओम् ओम् ओम् ओम् ओम्
पूरे जगत को गूँजा रही है

मैं खो गया था
मैंने स्वंय को पा लिया

डूब गया हूँ

दोबारा से खो गया हूँ

मैं कौन हूँ

बहते हीरे शुध्द शून्यता
मैं ऊपर देखता हूँ

अवतरण

ओशो ओशो ओशो

आनंद के आँसू

रहस्यदर्शी गुलाब के आँसू

मैं अनन्त कृतज्ञता से झुकता हूँ

ओशो गुरूओं के गुरू

बुध्द अनन्त करूणा के गुरू

कृष्णामूर्ति अपने स्वंय के गुरू होने के गुरू

ओशो

कभी पैदा नही हुए
कभी मरे नही
सिर्फ इस धरती गृह पर आये
दिसम्बर ११ १९३१
जनवरी १९ १९९०

रजनीश
जन्म जनवरी २० १९६१
मृत्यु जनवरी १९ १९९०
पुर्नजन्म जनवरी १९ १९९०

अनश्वर

रजनीश एक मित्र

	translation	amit & dassana www.messagefrommasters.com
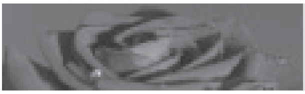	proofreading	ashish oshomysteryschool@yahoo.com
	photographs 360º everest panorama	devagyan www.vectordesign.de utsav www.pbase.com/digitalfestival roderick a mackenzie www.everestviews.com
	haiku paintings	ekin www.ekinart.com
	support	min jung www.cyworld.com/gucci2111
	graphics	soma www.wallkingonthinice.net

www.oshorajneesh.net

ebook
osho rajneesh new man vision
6 d estoril court two 55 garden road hongkong

THE NEW MAN
v i s i o n

all rights given freely for anyone to use
without any authorized permission of the author
except for commercial publishing

tears of the mystic rose is a message of compassion and love
towards all fellow travelers on the path

tears of the mystic rose has been made into
a free downloadable ebook for all

as a gesture of your support
any small contribution or donation
will be immensely helpful and valuable

donations by paypal to “ newman@oshorajneesh.net ”

please contact us if you would like more information
on how to support
oshorajneesh new man vision

if you would like to send a donation by check
moneyorder or bank transfer email to
rajneesh@oshorajneesh.net

www.oshorajneesh.net

r a j n e e s h

www.oshorajneesh.net

रिक्टर कांटे पर ९ की मात्रा
हीरे का व्रजपात

ओशो दर्शन द्वारा रजनीश
एक रहस्यमय प्रेम कहानी